माँ का हृदय

अर्थात्

रूस के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार मैक्सिम गोर्की

(Maxim Gorki) के प्रसिद्ध उपन्यास

'मदर' (Mother) का
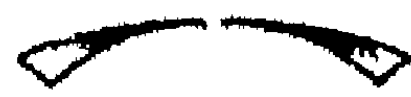
अनुवाद

अनुवादक

पं० छविनाथ पांडेय बी० ए०, एल-एल० बी०

प्रकाशक

साहित्य-सेवक-कार्यालय

ब्रह्मनाल, काशी ।

प्रथमावृत्ति]   रामनवमी १९८७   [मूल्य २॥)

समाज

इस नाटक में अछूतों के साथ किए जानेवाले अन्याय, पंडितों आदि की सामाजिक दुर्बलता, समाज में फैली हुई बुराइयों आदि का ऐसा चित्र खींचा गया है कि आपका हृदय पढ़ते-पढ़ते करुणा से परिप्लावित हो जायगा। प्रत्येक हिंदू को इसे ठंढे दिल से पढ़ना और सामाजिक स्थिति पर विचार करना चाहिए। बढ़िया मोटे कागज पर छपी हुई सुंदर पुस्तक का मूल्य केवल ॥=)

मुद्रक
श्रीसीताराम प्रेस, बिसेसरगंज, काशी।

माइकेल मधुसूदनदत्त

इसमें बँगला-साहित्य के क्रांतिकारी लेखक माइकेल मधुसूदनदत्त का चरित्र है और उनके ग्रंथों की आलोचना भी की गई है। पुस्तक मेंमाइकेल की कविता का थोड़ा-सा हिंदी अनुवाद भी दिया गया है। पुस्तक की उपयोगिता इसी से प्रमाणित है कि हिंदी के सभी पत्रों ने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की है। अब तक इस तरह की कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। लगभग १०० पृष्ठ की ऐसी अमूल्य पुस्तक का मूल्य ।) मात्र

स्नेहांजलि

मातृभाषा के परम सेवक, देश-भक्त, उदार-हृदय,

उन्नत-मना, भगवानपुर-(मुजफ्फरपुर)

निवासी मेरे अंतरंग मित्र

बाबू रामधारीप्रसादजी 'विशारद'

की

सेवा में—

प्रिय रामधारी,

हमलोग जिस स्नेह-सूत्र में बँधे हुए हैं, उसके दिग्दर्शन की आवश्यकता नहीं; फिर भी लोकाचार के नाते यह अनुवाद तुम्हें सस्नेह भेंट है। इसे स्वीकार करोगे।

तुम्हारा—

तुम्हारे ही शब्दों में—

छविनाथ

इन्हें रात-दिन काम करना पड़ता है, पकड़े जाते हैं, मार खाते हैं, शरीर को होम देते हैं पर शिथिल नहीं होते। उनकी प्रत्येक घटना पराकाष्ठा को पहुँची हुई दीखती है।

इस तरह हम देखते हैं कि जनसाधारण के प्रयास पराकाष्ठा पर पहुँचे हुए हैं। इस पराकाष्ठा की महत्ता बढ़ाने के लिये रूस की सर्दी का एक बार अनुमान कर लेना ही सहज है। कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। बरफ से अंगुल-अंगुल जमीन ढकी हुई है। घर से बाहर निकलना प्राणों की बाजी लगाना है। कभी-कभी दिन-दिन भर अँधेरा रहता है। सूर्य के दर्शन नहीं होते। गर्मी या वसंत ऋतु का पूर्ण आभास भी बहुत कम मिलता है; पर लोगों का उत्साह क्षीण नहीं होता, साहस में कमी नहीं आती। अपने अध्यवसाय में अनवरत उसी प्रकार लगे दिखाई देते हैं।

यह दृश्य एक दो दिन अथवा एक दो मास नहीं रहता। प्रायः एक सौ वर्षों तक इसी तरह का विकट संग्राम चलता दिखाई देता है। इस संग्राम में न जाने कितने लाख रूस के निवासी जेल में भेजे गए, काल-कोठरियों में सड़ाए गए, साइबेरिया सदृश प्रदेश में निर्वासन का भीषण दंड भोगते रहे, कितने ही मार डाले गए; पर इस संग्राम में लेशमात्र भी शिथिलता नहीं आई। एक पकड़ा जाता है तो उसके स्थान पर सैकड़ों आगे बढ़ते दिखाई देते हैं और भविष्य की सुखद आशा से बिना किसी चिंता और विषाद के जालिमों के जुल्म के शिकार बनते जाते हैं। एक क्षण के लिये भी कोई अपनी अवस्था पर एवं संग्राम के भविष्य पर विचार करने के लिये नहीं रुकता।

पुरुषों की चर्चा न कर यदि हम स्त्रियों के उत्साह, अध्यवसाय और साहस पर दृष्टि डालते हैं तो हमें विस्मय हुए बिना नहीं रहता। वे सदा उत्साहपूर्ण हैं, साहसयुक्त हैं और निडर हैं। भयानक-से-भयानक जुल्म भी उन्हें डिगा नहीं सकता, उनके हृदय की दहकती ज्वाला को ठंडा नहीं कर सकता और उनके अध्यवसाय को शिथिल नहीं कर सकता

सोफिया और माँ का चरित्र कैसा उज्वल, प्रकाशमान् और उत्कृष्ट है। माँ पुराने विचारों की स्त्री है पर इस अत्याचार और जुल्म को देखते-देखते उसकी आँखें खुल जाती हैं और वह परिस्थिति के परिवर्तन में विश्वास करने लगती है और उसके लिये अपना सर्वस्व निछावर कर देती है। उसके एकमात्र पुत्र को निर्वासन का दंड मिलता है पर उसे विषाद नहीं होता। वह शांत और धीर होकर कहती है—'पावेल वही काम करेगा जिसे वह उद्देश्य के लिये हितकर समझेगा।' कहिए, क्या नारी-हृदय की श्रेष्ठता की ऐसी पराकाष्ठा कहीं अन्यत्र देखने को मिलती है? अपने पुत्र के स्थान पर वह स्वयं काम करने के लिये उद्यत होती है और उसी अध्यवसाय में गिरफ्तार हो जाती है। उसे विषाद नहीं होता। यह माँ के हृदय का अलौकिक उदाहरण है।

श्रीगोर्की ने रूस की स्वाधीनता के इस संग्राम को चित्रित करने में जो सफलता प्राप्त की है उसकी तुलना नहीं की जा सकती। केवल काल्पनिक नामों को छोड़कर इस कथानक का प्रत्येक परिमाणु सत्य से सराबोर है। सभी घटनाएँ सच हैं। यही इस उपन्यास की महत्ता है और इसी में इसके लेखक की श्रेष्ठता है। घटनावली को केवल छूकर ही वह आगे नहीं बढ़ जाता है बल्कि उसके अंदर घुसकर उसका पूर्ण विश्लेषण करता है और उसका मर्म खोलकर जनसाधारण के सामने रख देता है। इसे पढ़कर हृदय पसीज उठता है। रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

श्रीगोर्की के इस उपन्यास में शासक और शासित दोनों की आँखें खोलने के लिये पर्याप्त सामग्री है। जहाँ शासितों को उत्साह और साहस मिलता है वहाँ शासकों को पर्याप्त शिक्षा मिलती है। श्रीगोर्की ने पूर्ण सफलता के साथ दिखलाया है कि निरंकुश शासन का किस प्रकार लोप हो जाता है। दलित और पीड़ित शक्ति आँख खोलने पर किस प्रकार ऊपर को उठती है और उसका बल किस प्रकार बढ़ता जाता है। अल्प-संख्यक होकर भी एक दिन दलित-समुदाय कितना अपार बल प्राप्त

करता है और किस आसानी के साथ निरंकुश शासन को उखाड़ फेंकता है। अत्याचार कभी भी स्थायी नहीं रह सकता। उसे किसी-न-किसी दिन जनसाधारण की शांत और अमोघ शक्ति के सामने सिर झुकाना ही पड़ेगा। यही इस अनुवाद का कारण है।

अनुवाद के संबंध में मुझे दो शब्द कहते हैं। यह अनुवाद अक्षरशः नहीं है। अक्षरशः अनुवाद का मैं पक्षपाती नहीं और न वह रोचक ही हो सकता है। मूल पुस्तक में रूस की अनेक अवस्थाओं का, रूसी जनता की अनेक मनोवृत्तियों का वर्णन है; जिनसे हम भारतीयों का कोई प्रयोजन नहीं। जिन मनोवृत्तियों को मैं भारतीय रूप दे सका हूँ उन्हें तो मैंने अंकित किया है, शेष को छोड़ दिया है। पुस्तक के प्रथम भाग में केवल उन्नीस परिच्छेद हैं पर मेरे अनुवाद में बीस। तेरहवें परिच्छेद को मैंने दो परिच्छेदों में विभक्त कर दिया है। क्योंकि एक ही परिच्छेद में दो भिन्न-भिन्न कथानकों का समावेश था जो विभिन्न परिच्छेदों में ही वर्णन किए जाने योग्य थे। राष्ट्रीय गान मेरी स्वतंत्र कृति है। श्रीगोर्की ने मूल पुस्तक में केवल गीत का एक ही पद दिया है, पर मैंने देखा कि बिना पूरे गीत का समावेश किए उस प्रकरण का पूर्ण आनंद नहीं मिल सकता। झंडा-गीत मैंने अपनी ओर से जोड़ दिया है। गोर्की ने केवल उसका उल्लेख मात्र किया है। मेरी धारणा है कि इन दो अंशों के जोड़ने से पुस्तक की रोचकता बढ़ गई है। इस अनधिकार चेष्टा के लिये मैं मूल-लेखक के प्रति क्षमाप्रार्थी हूँ।

प्रकाशन स्थान से सुदूर रहने के कारण मैं स्वयं प्रूफ न देख सका। माला के संपादक कार्य विशेष में व्यस्त हो जाने के कारण पुस्तक की छपाई की देखरेख उत्तम रीति से नहीं कर सके। इसका परिणाम यह हुआ कि पुस्तक में छपाई तथा भाषा संबंधी अनेक भूलें रह गई हैं। पाठकगण इसके लिये क्षमा करें। पुस्तक के विषय पर अधिक ध्यान दें; भाषा पर कम। यदि उन्होंने इस पुस्तक का समुचित आदर किया तो

दूसरे संस्करण में सभी दोष दूर कर दिए जायँगे। यह संस्करण तो अब छप गया। अशुद्धियों के लिये सिवा क्षमा-याचना के दूसरा उपाय ही क्या है? मेरी लाचारी का ख्यालकर सहृदय पाठकवृंद तथा चतुर समालोचक-गण मुझे अवश्य ही क्षमा करेंगे।

रामनवमी, १९८६ }
मुजफ्फरपुर }

मातृभाषा का तुच्छ सेवक—
छविनाथ पांडेय

शुद्धाशुद्धि

प्रूफ देखने का काम सरासर प्रेस के प्रबंधकों के ही हाथ में रहने एवं हस्त-लिखित प्रति के घसीट लिखी होने तथा उसपर की गई काट-छाँट के कारण पुस्तक में बहुत सी अशुद्धियाँ हो गई हैं। विशेषतः संबंध कारक के चिन्हों में बड़ी गड़बड़ी हो गई है। पृष्ठ २९ से ३२ तक 'नखोदका' के स्थान पर 'नरवोदका' हो गया है। इनके अतिरिक्त मात्राओं के टूटने, अनुस्वारों एवं रेफों के उड़ जाने से भी कितनी ही अशुद्धियाँ बढ़ गई हैं। आशा है विद्वान् पाठक इसके लिये क्षमा करेंगे।

माँ का हृदय

(प्रथम भाग)

पहला परिच्छेद

फैक्टरी के घंटे का शब्द मृत्यु के घंटे के शब्द से भी भीषण और कर्कश होता था। घंटे की घनघनाहट के साथ ही मजदूरों में विचित्र चैतन्यता आ जाती थी। अर्धनिद्रित अवस्था में ही अँगड़ाइयाँ लेते हुए वे कारखाने की ओर भागते थे। सोने के लिये पूरी नींद न मिलने के कारण शरीर में शिथिलता थी, सर्दी के मारे बदन सिकुड़ा जा रहा था, फिर भी उनकी फुर्ती का कोई ठिकाना न था। हर रोज सबेरे बस्ती में खूब चहल-पहल मच जाती। 'लाओ रे, दौड़ो रे, उठो रे' आदि शब्दों से सारा गाँव गूँज उठता। थोड़ी ही देर में सड़क पर भीड़-सी लग जाती। पास ही कारखाने का बड़ा फाटक यम की भाँति सर्वग्रास के लिये मुँह खोलकर खड़ा था। वहाँ पहुँचते ही इतनी बड़ी भीड़ का कहीं पता तक न चलता था। कल-पुर्जों की विकराल ध्वनि में इनका तुमुल रव न जाने कहाँ विलीन हो जाता था। भीतर इनका स्वागत डाँट-फटकार, झिड़कियों और गालियों से होने लगता। इनका दिन इसी अवस्था में बीतता था।

दिन भर कारखानों में काम करने के बाद शाम को जिस समय मजदूर अपनी झोपड़ियों की ओर लौटते थे, उनकी दयनीय दशा देखते ही बनती थी। सारा शरीर कालिख से इस तरह ढँका होता मानों चिमनी से सीधे निकले चले आ रहे हों। मशीनों के तेल के दाग उनके अंग को और भी वीभत्स बना देते थे। पेट सटकर पीठ से बातें करने लगता था और आँखें तो इस प्रकार धँस गई थीं मानों वे किसी पर्वत की गुफा तैयार कर रही हों। लेकिन इस दशा में भी वे प्रसन्न थे। रात भर की स्वतंत्रता उन्हें आह्लादित कर रही थी और डेरे पर पहुँचते ही भोजन मिल जाने की आशा से उनके पैर और भी तेजी से उठते थे।

इनका सारा दिन कारखानों में ही बीता है। कल-पुर्जों ने इनके शरीर का रस चूस लिया है। इन्हें बेदम बना दिया है। इनकी हालत मुर्दे से भी बदतर हो गई है। लेकिन शाम के घंटे की ध्वनि ने सूचना दी कि विश्राम निकट है और वे परम प्रसन्न हैं।

रविवार को तो इन्हें रामराज्य मिल जाता है। दस बजे से पहले किसीकी नींद टूटती ही नहीं। इतमिनान से उठते, हाथ-मुँह धोते, सुंदर वस्त्र पहनते, नौजवानों को अधार्मिकता और नास्तिकता के लिये दो-चार खरी-खोटी सुनाते और सीधे गिरजे का रास्ता लेते! धर्मचर्चा से फुरसत पाकर फिर घर वापस आते, चार कौर मुँह में डालते, फिर सो रहते और शाम के पहले उठने का नाम तक न लेते। इस वक्त शराब की दो घूँट अवश्य पीते

इसीमें इनकी जान थी, नहीं तो कारखानों ने इनके जीवन का रस खींच लिया था !

शाम के बाद जब ये लोग सड़कों पर टहलने निकलते इनकी शोभा देखते ही बनती। कोट-बूट से सुसज्जित बगल में छाता लगाए बाबूगिरी के ठाट से लैस होने की जी-जान से कोशिश करते।

जहाँ कहीं दस-पाँच मजदूर इकट्ठे होते कारखाने की चर्चा छिड़ जाती। कोई कड़े परिश्रम की आलोचना करता तो कोई मेंठ और जमादारों की बेरहमी के लिये उन्हें कोसता। कारखाने के अतिरिक्त अन्य बातें कदाचित ही किसीकी जबान पर आतीं। रात को जब वापस आते अपनी-अपनी बीबियों पर टूट पड़ते और लात-घूँसों से उनकी पूजा करते। नौजवान सरायों में जा डटते अथवा किसी दोस्त के घर इकट्ठे होते और विनोद में शाम का वक्त काटते; ताश और गंजीफा खेलते, गंदे गाने गाते और नशे में मत्त होकर नाचते, कूदते तथा उधम मचाते।

काम के बोझ और थकावट को हलका करने के लिये लोग भरपेट सुरा का सेवन करते और मदमिजाज बन जाते। नशे में चूर होकर एक दूसरे पर टूट पड़ते और आसुरी शक्ति का परिचय देते। साधारण मारपीट तो रोज का क़िस्सा था। कभी-कभी खून-खराबी और प्राणों के लेने-देने की नौबत तक आ जाती।

इनमें ये बुराइयाँ दिन-दिन बढ़ती जातीं। इनमें से कुछ तो

नैसर्गिक होतीं और अंत तक इनसे जघन्य से जघन्य और क्रूर कर्म करवातीं।

रात को जब ये घर वापस आते इनकी दशा दर्शनीय होती। शरीर के कपड़े टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं, शरीर से खून बह रहा है, नशे में चूर हैं, पैर ठिकाने नहीं पड़ रहा है, मुँह से अंड-बंड बकते जाते हैं, कोई हँस रहा है तो कोई रो रहा है, कोई गुस्से से लाल है तो किसी का चेहरा लज्जा और परिताप से पीला पड़ गया है।

इनसे कम उमरवाले लड़के तो सरायों में ही बेहोश हो जाते और उनके माता-पिता उन्हें जाकर उठा लाते, गालियाँ देते, कसम धराते, धौल-धप्पड़ भी जमा देते और अंत में चुमकारकर सुला देते जिससे सबेरे कारखाने के घंटे की कर्कश ध्वनि पर वे सब प्रकार हाजिर होने के लिये तैयार हो जायँ।

इस बेहूदगी में उन लड़कों का दोष ही क्या था? यह तो परंपरागत चाल थी। आज जो बड़े-बूढ़े लड़कों को मारते-पीटते हैं, झिड़कियाँ देते हैं, वे भी अपनी जवानी में इसी तरह शराब-खोर और लड़ाके थे। किसीने इस परंपरागत स्वभाव को बदलने का विचार तक नहीं किया था; चेष्टा और यत्न करना तो दूर की बात थी।

अगर कोई नया आदमी उनके बीच कभी आ जाता तो सब लोग उसे घेर लेते। उसकी बातें बड़े चाव से सुनते। लेकिन थोड़े ही दिनों के बाद उससे उदासीन हो जाते। उसकी बातें

में उन्हें किसी तरह का आनंद न आता, कोई नवीनता न झलकती मजदूरों की हालत तो सब जगह एक समान थी।

अगर कभी किसी नये आदमी से कोई नई बात सुनते तो बहस न करते, मन ही मन कटकटाते, अधीर होते, भय से काँप जाते और उत्तेजना को दबाने के लिये और अधिक शराब पीते।

जब कभी कोई उनसे नयी बात कहता, वे घबरा जाते। उन्हें भय लगता, विपत्ति की आशंका से काँप उठते। उनकी धारणा थी कि हमारे जीवन में किसी तरह का सुधार हो ही नहीं सकता। कोई भी नवीन घटना हम लोगों का दुःख बढ़ाने के सिवा घटा नहीं सकती। यही कारण था कि वे नये आदमी से सदा घबराते और ऐसे लोगों से सदा दूर रहने की कोशिश करते।

मजदूरों की यही अनवरत दिनचर्या थी। वे इसीमें पैदा होते और इसीमें मर जाते थे।

× × × ×

माइकल वासो भी एक मजदूर था। उसकी छोटी-छोटी आँखें सबकी ओर संदेह से ही देखतीं। उसकी मंद मुसकान में शरारत भरी रहती। कारखाने में उसके समान न तो कोई चतुर कारीगर था और न गाँव में कोई बलिष्ठ और हृष्ट-पुष्ट। लेकिन मेंठ, जमादार और निरीक्षक किसीसे भी उसकी पटरी नहीं बैठती थी। इससे उसे अल्प वेतन मिलता था। साथ में काम करनेवाला कोई भी मजदूर उसकी धौल-धप्पड़ से नहीं बचा था, इससे सभी उससे नफरत करते थे, साथ ही डरते भी थे।

उसके साथियों ने अनेक बार उसे नीचा दिखाने का यत्न किया, पर सब बेकार ! अगर अचानक लोग उसे घेर लेते तो वह इस तरह ईंट बरसाता कि सबके पैर उखड़ जाते; उसके सामने कोई न ठहर सकता। उसकी लंबी दाढ़ी और बुर्राक मोछों ने उसके कर्कश चेहरे को और भी भयानक बना रखा था। उसकी आँखें छोटी होते हुए भी बड़ी खूँखार मालूम होती थीं। वह जिसकी तरफ घूरकर ताक देता, वह भय से इस प्रकार काँप उठता मानों किसी भयानक जंगली जानवर से सामना पड़ गया है, जो दूसरे ही क्षण पूरी बेरहमी से तोड़-मरोड़ कर निगल जायगा।

'जंगली हूश' उसका मनोहर संबोधन था। प्रत्येक व्यक्ति को—कारखाने के अधिकारियों तक को—वह इसी नाम से पुकारता !

वासो को एक ही लड़का था। उसका नाम पावेल था। एक दिन वासो ने पावेल का बाल पकड़कर खींचना चाहा। पावेल की उमर इस समय १४ वर्ष की हो चुकी थी। वासो ने ज्यों ही हाथ बढ़ाया लड़के ने बगल में पड़ा हुआ हथौड़ा उठाकर कहा—'खबरदार ! आगे हाथ न बढ़ाना'।

वासो—क्या ?

पावेल—बस ! हाथ मत लगाना !

इतना कहकर वह अपने हाथ का हथौड़ा घुमाने लगा वासो ने मुसकुरा दिया पर दूसरे ही क्षण लंबी साँस लेकर कहा—'अच्छा ! जंगली हूश !'

वहाँ से हटकर वह अपनी पत्नी के पास गया और बोला—

'आज से मुझसे खर्च वगैरह मत माँगना। पाशा तुम्हारी परवरिश करेगा।'

पावेल का दूसरा नाम पाशा था।

उसकी पत्नी—और तुम सारी कमाई शराबखोरी में गँवाओगे?

वासो—तुमसे मतलब!

इस घटना के बाद वह तीन वर्ष तक जीवित रहा। लेकिन पिता-पुत्र में एक बार भी बातचीत न हुई।

वासो ने एक कुत्ता पाल रखा था। उसके भी बाल ठीक वासो की तरह थे। वह प्रतिदिन उसके साथ कारखाने के फाटक तक जाता और शाम को फाटक के एक कोने में बैठा हुआ उसकी बाट जोहता। छुट्टियों के दिन जिस वक्त वासो लोगों को घूरते हुए सराय की ओर चलता, उसका कुत्ता भी उसके पीछे-पीछे जाता। रात को जब वासो भोजन करने बैठता तो अपने भोजन में से कुत्ते को भी देता। वह न तो उस कुत्ते को कभी चुमकारता ही था और न मारता ही! भोजन के बाद अगर उसकी स्त्री ठीक समय पर तश्तरियों को हटाने के लिये मुस्तैद न रहती तो वह तश्तरियों को जमीन पर पटक देता, शराब की बोतल खोलकर सामने रख लेता, मुँह बाकर और आँखें बंदकर सप्तम स्वर में अलापना आरंभ करता। जब तक बोतल में शराब रहती वह इसी तरह गाता और पीता रहता। बोतल खाली हो जाने पर वह उसे पटक देता और टेबुल पर सिर रखकर सो रहता। बिचारा कुत्ता भी वहीं पड़ा रहता।

मृत्यु के समय वासो की बड़ी दुर्गति हुई। उसका सारा शरीर काला पड़ गया। बेचैनी के मारे वह पाँच दिन तक छटपटाता रहा। वह रह रहकर अपनी स्त्री से कहता—'कहीं विष मिले तो थोड़ा ला दो। जिसे खाकर मैं शांति से मर सकूँ।'

उसकी स्त्री डाक्टर को बुला लाई। डाक्टर ने परीक्षा की और कहा—'चीरा लगाना आवश्यक है। इससे इन्हें तुरत अस्पताल में पहुँचाना चाहिए।'

डाक्टर की बात सुनकर वासो ने कहा—'दूर हट, जंगली रूश कहीं का! मैं यहीं पड़ा-पड़ा मर जाऊँगा।'

डाक्टर चला गया। उसकी स्त्री ने रोकर कहा—चीरा क्यों नहीं लगवा लेते?

वासो—(दाँत पीसते हुए) अगर मैं जी उठा तो तेरे लिये खराबी ही है।

दूसरे ही दिन मजदूर लोग जब कारखाने की ओर जा रहे थे, उन्हें खबर मिली कि वासो मर गया। उस वक्त भी उसकी आँखें उसी प्रकार खुली थीं। लोगों ने कहा—'अच्छा ही हुआ! इसकी स्त्री को अब थोड़ा सुख और शांति मिलेगी!'

वासो का अंतिम संस्कार करके लोग तो वापस चले गए लेकिन उसका स्वामि-भक्त कुत्ता वहीं रह गया और कुछ लोगों का कहना है कि उसने वहीं प्राण-विसर्जन कर दिया।

दूसरा परिच्छेद

वासो के मरने के दो सप्ताह बाद की बात है। एक दिन रात को पावेल नशे में चूर घर आया। उसके पैर ठिकाने नहीं पड़ते थे। दीवाल पकड़कर वह किसी तरह घर में आया और अपने पिता की भाँति टेबुल पर हाथ पटककर माँ से बोला—'जल्दी खाना लाओ।'

पावेल की माँ उसके पास जाकर बैठ गई और उसे खींचकर छाती से लगाने लगी। उसे धक्का देते हुए पावेल ने चिल्लाकर कहा—'माँ, जल्दी करो!'

वह अपने को सँभालती हुई प्रेम-भरे शब्दों में बोली—मूर्ख!

पावेल—मैं चंडू भी पीऊँगा। पिताजी का सब सामान कहाँ है?

उसने पहले ही पहल शराब पी थी। नशे से उसका शरीर शिथिल हो गया था पर उसकी चेतना लुप्त नहीं हुई थी। बारंबार उसके दिल में हूक-सी उठने लगी—'शराब' 'शराब'।

माता के दुलार-भरे शब्दों से उसकी वेदना और भी बढ़ गई। माता की करुणाभरी आँखों ने उसे मर्माहत बना दिया। उसे रुलाई आती थी। अपनी यंत्रणा को छिपाने के लिये उसने खासे नशेबाज की-सी सूरत बना ली।

उसके बिखरे बालों पर हाथ फेरती हुई माँ ने धीमे स्वर में

कहा—'तुमने यह क्या किया! तुम्हें तो इसे छूना भी नहीं चाहिए था।'

पावेल का चेहरा पीला पड़ गया। सारा शरीर शिथिल हो गया और उसकी चेतना लुप्त होने लगी। उसकी माँ ने उसे धीरे से बिछौने पर लेटाकर सिर पर तौलिया भिंगोकर रख दिया। उसकी आँखें भारी हो गईं, मुँह फीका पड़ गया और सिर चक्कर खाने लगा। उसी हालत में उसने अपनी माँ के चेहरे की ओर देखा। वह सोचने लगा—"मालूम होता है मैंने पीने में जल्दबाजी की, क्योंकि और लोगों की हालत ऐसी नहीं होती।"

इसी समय उसकी माँ ने नरम शब्दों में कहा—"यदि तुमने शराब पीने की आदत डाली है तो मेरी परवरिश किस प्रकार करोगे।"

पावेल ने आँखें बंद कर लीं और कहा—"सब कोई पीते हैं।"

माँ ने लंबी साँस ली। वह सोचने लगी—'पावेल ठीक ही कहता है। सराय के अतिरिक्त कोई भी दूसरा स्थान नहीं है जहाँ यहाँ के लोग दो घड़ी सुख से बितावें। उनकी मानसिक एवं शारीरिक पीड़ाओं तथा यातनाओं को दबाने के लिये शराब को छोड़कर कोई दूसरा साधन भी नहीं है।' वह पावेल से बोली—"पर तुम उसके निकट मत जाओ। तुम्हारे पिता ने तुम्हारे बदले में काफी पी ली थी। उन्होंने मेरा सारा जीवन कष्टमय बना दिया था। अपनी बूढ़ी माँ पर तरस खाओ!"

माता की सरल और निश्छल बातें सुनकर पावेल की पुरानी

स्मृति जागरित हो उठी। उसे स्मरण हुआ—'पिता को जिंदगी में माँ की कहीं पूछ नहीं थी। मार के डर से वह सदा भीगी बिल्ली बनी रहती थी। पिता के डर से मैं खुद रात को देर से घर आता था। उस समय भी मैंने माँ की रक्षा का कोई उपाय नहीं किया।' ज्यों-ज्यों ये विचार उसके दिल में उठने लगे वह अपनी माँ की ओर स्थिरदृष्टि से देखने लगा।

माँ की आँखों से आँसू की बूँदें टप-टप गिरने लगीं। यह देखकर उसने नरमी से कहा—"माँ, रोओ मत। इस वक्त मुझे दो घूँट पानी दो।"

माँ ठंढा जल लेने चली गई। लौटकर देखा तो पावेल सो गया था। क्षण भर निर्निमेष दृष्टि से उसकी ओर देखती रही। उसका हाथ काँपने लगा। उसने पानी का गिलास टेबुल पर रख दिया और दीवार पर अंकित प्रतिमा के समक्ष घुटने टेककर बैठ गई; वह मन ही मन प्रार्थना करने लगी। बरफ के झोंके से खिड़की के शीशे कड़कड़ाते थे, अँधेरी रात में कहीं उल्लू चीख उठता था, मस्ती में झूम-झूमकर कोई उच्च स्वर से गाना गाता था। किसी घर में गाली-गुफ्ता का बाजार गर्म था, कहीं औरतें पूरे जोश-खरोश के साथ आपस में झगड़ रही थीं; पर उसकी माँ का ध्यान उसी प्रतिमा के चरणों में लगा था।

× × × ×

पावेल का पारिवारिक जीवन पहले की अपेक्षा शांति से बीतने लगा। अड़ोस-पड़ोस के लोगों से तो वह एकदम भिन्न था।

गाँव के अन्य युवकों की तरह पावेल भी शान-शौकत से रहना चाहता था। एक दिन उसने एक उल्लू खरीदा और फैशन के लायक कपड़े वगैरह भी खरीद लाया। वह शाम को सूट-बूट से लैस होकर टहलने भी चला जाता था। उसने नाच भी सीख लिया। छुट्टियों के दिन सराय की भी सैर होती थी। सुरा-सेवन भी हुआ करता था पर जब कभी वह पीता उसकी हालत खराब हो जाती। मुँह सूखने लगता, आँखें धँस जातीं, चेहरा पीला पड जाता, कलेजा जलने लगता और सिर में चक्कर आने लगता!

एक बार माँ ने पूछा—'आजकल तो सुख से रहते हो?' उसने उदास होकर कहा—'कल-पुर्जों की भाँति यह जीवन असह्य हो उठा है। इच्छा होती है कि एक बंदूक खरीद लूँ और शिकार को जाया करूँ।'

पावेल काम में सदा तत्पर रहता था। वह कभी भी गैर-हाजिर नहीं रहता था। उसके काम से किसीको कभी शिकायत भी नहीं थी। पर उसकी आँखों से निराशा टपकती थी। न तो उसने बंदूक ही खरीदी और न शिकार में ही गया। लेकिन धीरे-धीरे उसने अपने जीवन का स्रोत बदल दिया। सैर-सपाटे में वह बहुत ही कम शामिल होता। छुट्टियों के दिन कहीं न कहीं अवश्य जाता पर सदा गंभीर रूप से लौटता। उसकी माँ सदा अनुसंधान की दृष्टि से उसे देखती। उसे प्रत्यक्ष दीखने लगा कि पावेल की आकृति गंभीर और आँखें स्थिर होती जा रही हैं। उसकी भौंहों और ओठों में विचित्र तरह की शिकन आ रही है।

उसके चेहरे से विचित्र भाव टपकता है। मानों किसीके प्रति अनवरत क्रोध और घृणा के भाव का उसमें उदय हो रहा है अथवा कोई वस्तु उसके हृदय को नोच रही है। उसके पुराने साथी उससे मिलने आते; पर उसे बराबर अनुपस्थित पाकर उन लोगों ने भी आना-जाना बंद कर दिया।

उसकी माँ प्रसन्न थी। उसे इस बात का संतोष था कि उसके एकमात्र पुत्र का जीवन सर्वसाधारण से भिन्न स्रोत में बह रहा है। लेकिन जब वह इस बात पर विचार करती कि उसके जीवन-स्रोत का कहीं ओर-छोर नहीं है, बहुत दूर तक भी उसमें जगमगाहट नहीं दिखलाई देती तो वह एक अव्यक्त चिंता से विकल हो जाती।

पावेल अपने साथ पुस्तकें लाता। उसे चुपचाप पढ़ता और छिपाकर रख देता। कभी-कभी उन्हीं किताबों में से कुछ नकल करता और उसे भी छिपाकर रखता।

माँ ने पूछा—बेटा, शरीर तो अच्छा है ?

पावेल—बहुत अच्छा हूँ, माँ !

माँ—लेकिन तुम इतने दुबले क्यों होते जा रहे हो ?

पावेल चुप रहा !

माँ-बेटे में बहुत कम बातचीत होती थी। पावेल प्रातःकाल उठता। नित्य-कर्म से छुट्टी पा चुपचाप चाय पीता और काम पर चला जाता। दोपहर को भोजन करने आता और तुरत चला जाता। शाम को काम पर से लौटता; नहाता-धोता और पुस्तकें

लेकर बैठ जाता। रात को देर तक पुस्तकें पढ़ता रहता। छुट्टियों के दिन सबेरे घर से निकल जाता और बड़ी रात-गए लौटता। उसकी माँ समझती थी कि पावेल लोगों के साथ थियेटर वगैरह में जाता है पर शहर से कभी भी कोई साथी उसके पास नहीं आता था!

पावेल अपनी माँ से भी कभी अनावश्यक बातें नहीं करता था। समय की प्रगति के साथ-साथ बातचीत का सिलसिला और भी कम होता गया। पर उसमें नम्रता और सादगी की मात्रा बढ़ती गई। सफाई पर विशेष ध्यान देने लगा। घूमने-फिरने में स्वाधीनता के साथ-साथ सावधानी भी करने लगा। साथ ही ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग करने लगा जिनके भाव उसकी माँ की समझ में नहीं आते थे। इससे उसकी घबराहट और परेशानी बढ़ने लगी।

एक दिन वह बाजार से तसवीर लाया और दीवार पर टाँग दी। उसमें तीन व्यक्ति थे, जो परस्पर बात-चीत करते हुए वीरता और गंभीरता के साथ चले जा रहे थे।

पावेल ने माँ से कहा—यह प्रभु मसीह का चित्र है। कब्र से उठकर ईमास जा रहे हैं।

उस चित्र को देखकर उसकी माँ बड़ी ही आनंदित हुई। उसने कहा—'तुम प्रभु मसीह को मानते हो, तो गिरजा में क्यों नहीं जाते ?'

धीरे धीरे चित्रों और पुस्तकों की संख्या बढ़ने लगी। उसने

एक आलमारी भी बनवा ली और पुस्तकों को उसीमें सजाकर रखने लगा ! उसने एक दिन अपनी माँ से कहा—यदि मुझे रात को देर हो जाया करे तो घबराया न करना !

इससे उसे संतोष तो हुआ पर चिंता बढ़ती ही गई। उसकी दृष्टि में पावेल का व्यवहार और रहन-सहन सब कुछ समय के प्रतिकूल था। इससे उसे किसी भयानक दुर्घटना की चिंता बनी रहती थी। कभी-कभी उसे बड़ी वेदना होती। वह सोचने लगती—'वह इस प्रकार क्यों विरक्त होता चला जा रहा है। पर विरक्ति के साथ-साथ दृढ़ता बढ़ती जा रही है। इस उमर में तो ये बातें नहीं होनी चाहिएँ। संभव है कहीं दिल अटक गया हो। लेकिन वह अपने पास एक पैसा भी नहीं रखता है। जो कमाता है सब मुझे सौंप देता है।' इसी उधेड़-बुन में दो वर्ष बीत गए। पावेल की विरक्ति और माँ की चिंता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई !

एक दिन रात को भोजन के बाद पावेल अपने कमरे में गया और लालटेन जलाकर पढ़ने लगा। रसोई के काम से फुरसत पाकर माँ दबे पाँव उसके कमरे में गई और उसके सामने खड़ी हो गई। उसने अपना सिर उठाया और माँ पर मर्मभरी दृष्टि डाली !

"मैं यों ही चली आई थी" इतना कहते-कहते वह कमरे से बाहर हो गई। लेकिन उसका चित्त चंचल हो उठा, विकलता बढ़ गई। दूसरे ही क्षण वह लौट आई बोली:—"तुम हर वक्त क्या पढ़ते रहते हो ?"

पावेल ने पुस्तक बगल में रख दी और कहा—'माँ, बैठ जाओ !'

उसकी माँ का हृदय भारी था ! मन विकल था। वह इस मुद्रा से बैठी मानों कोई अनहोनी बात होनेवाली है।

पावेल ने आँखें फेर लीं। वह नम्रता और दृढ़ता से बोला—"मैं 'वर्जित पुस्तकें' पढ़ता हूँ। ये इसलिये वर्जित हैं कि इनमें मजदूरों की दशा का सच्चा चित्र अंकित है। ये गुप्त रूप से प्रकाशित की जाती हैं। यदि मैं इन पुस्तकों के साथ पकड़ा जाऊँ तो मुझे जेल जाना पड़ेगा। अपनी सच्ची हालत जानने के लिये जेल जाना पड़ेगा !"

माँ का कलेजा धड़कने लगा। साँस लेने में कठिनाई प्रतीत होने लगी। वह आँखें फाड़ फाड़कर पावेल की ओर देखने लगी। वह उसे विचित्र प्रतीत होने लगा। उसने पूछा—"बेटा, तुम ऐसी पुस्तकें क्यों पढ़ते हो ?"

पावेल ने सिर उठाया, माँ की ओर देखा और शांत तथा नम्र स्वर में बोला—"क्योंकि मैं अपनी वास्तविक दशा को जानना चाहता हूँ।"

उसकी वाणी में नम्रता के साथ-साथ दृढ़ता और स्थिर-प्रतिज्ञता थी।

उसकी माँ ने अच्छी तरह समझ लिया कि पावेल ने किसी अज्ञात और भयानक कार्य के लिये अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया है। जीवन की प्रत्येक घटना को उसने सदा अनिवार्य माना,

है और बिना विचारे उनके सामने सिर झुका दिया है। आज भी उसने उसी निरीहावस्था में अपने को पाया। वह सिसक-सिसक-कर रोने लगी। कहने के लिये उसे एक भी शब्द नहीं मिला। वेदना, शोक और संताप से वह मर्माहत थी।

पावेल ने बड़ी ही नर्मी से कहा—'माँ, तुम्हें इस तरह रोना न चाहिए।' उसके ये मधुर शब्द माँ के हृदय में इस प्रकार चुभे मानों वह सदा के लिये उससे बिदा ले रहा है।

पावेल बराबर बोल रहा था—"तुम्हीं विचारो कि किस तरह का जीवन तुम बिता रही हो? तुम्हारी उमर ४० वर्ष की हुई। पर क्या तुम्हें जीवन का कुछ भी सुख मिला है? पिताजी सदा तुम्हें मारते-पीटते ही रहे। आज मुझे प्रत्यक्ष मालूम हो रहा है कि अपनी दुर्दशा और हीनता का बदला वे तुमसे चुकाते थे। यह हीनता उन्हें दिन-दिन विपन्न बनाती चली जाती थी पर उन्हें नहीं मालूम हो सका कि इसका क्या कारण है? उन्होंने तीस वर्ष तक कारखाने में काम किया। जब वे गए केवल दो इमारतें थीं। आज सात इमारतें हो गई हैं। कारखानों की प्रति-दिन तरक्की हो रही है और हम मजदूर उसके लिये बलिदान किए जाते हैं।"

माँ पावेल की बातें उत्सुकता—पर घबराहट—के साथ सुन रही थी। पावेल की आँखों में तेज था। वह सरककर अपनी माँ के निकट चला गया और उसकी डबडबाई आँखों की ओर देखते हुए मजदूरों की वास्तविक अवस्था का दिग्दर्शन कराने लगा।

उस वक्त उसकी हालत ठीक उस विद्यार्थी की-सी थी जो नया-नया स्कूल में जाता है और नया पाठ पढ़कर घर आता है तथा अपनी किताब की चमत्कारिक बातें लोगों को सुनाता फिरता है। पावेल अपनी माँ को वास्तविक स्थिति से परिचित कराने के लिये कम लेकिन अपने मत को पुष्ट करने के लिये अधिक उत्सुक था। कभी-कभी उपयुक्त शब्द न पाकर वह रुक जाता और अपनी माँ की ओर निहारने लगता। उस समय वह देखता कि करुणा की मूर्ति माँ डबडबाई आँखों और विषाद-भरे चेहरे से उसकी ओर देख रही हैं। उनमें वेदना और चिंता है। वह अपना माँ के लिये दुखी था। माँ को लक्ष्य करके उसने कहा—"तुम्हें जीवन में क्या सुख मिला है?"

उसने पावेल की बातें सुनीं और वेदना से सिर हिला दिया। मानों उसके जीवन में कोई नया आविष्कार हुआ है। सुख-दुख-मिश्रित ये भावनाएँ उसे ऐसी प्रतीत हुईं जैसे दग्ध-हृदय को प्रियतम का आकस्मिक आलिंगन। अपने संबंध में उसे पहले-पहल इस तरह की चर्चा सुनने को मिली। उसके हृदय में अस्पष्ट और अव्यक्त भावनाएँ उठने लगीं जो अतीत काल से व्याप्त न थीं; उसके हृदय में हलचल मच गई और विषाद के प्रत्यक्ष चिह्न दिखाई देने लगे। आज उसे सहसा अपने उस अतीत यौवन के जीवन का स्मरण हो आया; जब पड़ोसिनें एकत्र होती थीं और इस तरह की चर्चा बहुधा चल जाया करती थी। जीवन की इस विषमता पर सभी दो आँसू बहाती थीं, पर आज से पहले कोई भी

इसका यथार्थ कारण नहीं बतला सका था। आज पावेल उसके सामने बैठा उस रहस्य का उद्घाटन कर रहा है और वह इस विषमता से व्यथित है। पावेल के प्रत्येक शब्द उसके हृदय पर अंकित हो गए। अभिमान से उसका हृदय पुलकित हो गया।

पावेल की माँ जानती थी कि स्त्रियों के लिये किसी के हृदय में ममता या दया नहीं है! यही कारण था कि जब तक वह सर्व-साधारण विषय की चर्चा करता रहा माँ की समझ में कुछ भी न आया पर जिस समय उसने स्त्रियों की दुर्दशा का प्रसंग उठाया माँ ने देखा कि उसके प्रत्येक शब्द सूर्य के समान सत्य हैं।

माँ ने रोककर पूछा—'इससे तुमने लाभ क्या सोचा है?'

पावेल— स्वयं ज्ञान प्राप्त करूँगा और दूसरों को बतलाऊँगा। मजदूरों को यह जान लेना परम आवश्यक है कि उनका जीवन इतना कष्टमय क्यों है?

उसने देखा कि पावेल की आँखें चमक रही हैं। उनमें नया तेज प्रगट हो रहा है। संतोष से उसका चेहरा खिल उठा पर विषाद के आँसू आँखों में ज्यों के त्यों वर्तमान थे। इस समय उसके हृदय में दो भावनाओं का विकट संग्राम चल रहा था। एक ओर तो उसे इस बात का अभिमान था कि उसका लड़का लोक-कल्याण की कामना से सबके दुःखों और कष्टों के जानने और उनके निराकरण के उपाय बतलाने के लिये उद्यत है; दूसरी ओर उसे इस बात का विचार था कि वह इस भरी जवानी में ही संसार के सुख और भोग-विलास से विरक्त होकर उस अवस्था

के विरुद्ध विद्रोह उत्पन्न कर रहा है जिसे चिरकाल से हमलोगों ने अपनाया है ! वह कहना चाहती थी—'मेरे हृदय के टुकड़े ! इसमें तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी। लोग तुम्हें कुचल डालेंगे, तुम रसातल में चले जाओगे ।' लेकिन पावेल के शब्दों में जो माधुर्य था, उसके भाषण में जो आनंद था उससे वह वंचित भी नहीं होना चाहती थी। उसने अपने मन में कहा—'पावेल ने आज एक नये सत्य का आविष्कार किया है। यह मेरे लिये साधारण गौरव की बात नहीं है। मैं क्यों इसमें बाधा दूँ।'

पावेल ने देखा कि माँ का चेहरा प्रसन्न है, उसकी आँखों में प्रेम उमड़ा आ रहा है और वह स्थिर-दृष्टि से उसकी ओर देख रही है। उसे प्रतीत होने लगा कि उसकी बातों का माँ पर पूरा प्रभाव पड़ा है। उसका हृदय पुलकित हो गया। वह दूने उत्साह से अपनी बातें कहने लगा ! कभी-कभी घृणा से उसकी आवाज कड़ी हो जाती थी। उस समय उसकी माँ डर-सी जाती और सहमकर पूछती—'क्या ये बातें सच हैं ?'

पावेल—'बिलकुल सच !' इसके बाद उसने उन लोगों की चर्चा की जो जन-साधारण की दशा सुधारने के लिये अनवरत प्रयत्न कर रहे हैं और इसके लिये उन्हें किस तरह की यातनायें झेलनी पड़ती हैं; उन्हें जेल में ठूंस दिया जाता है, निर्वासित कर दिया जाता है और तरह-तरह की यातनाओं-द्वारा उन्हें तंग किया जाता है। जोश में आकर उसने कहा—'ऐसे लोगों से

मेरा परिचय है। मेरा तो अनुमान है कि ऐसे लोग संसार में कम ही हैं।'

ऐसे लोगों की चर्चा सुनते ही माँ डर से कांप उठी। वह कुछ कहना चाहती थी, लेकिन चुप हो रही। वह पीछे की ओर झुक-कर उनलोगों की चर्चा सुनने लगी जो उसके एकलौते पुत्र को इस तरह की भयानक बातों की शिक्षा दे रहे थे। अंत में उसने कहा—'रात बहुत कम रह गई है। अब सो रहो। सबेरे ही तुम्हें काम पर जाना होता है।'

पावेल—'मैं तुरत सो जाऊँगा। तुमने मेरी बातें समझ तो लीं ?'

उसने लंबी साँस ली और कहा—'मैंने सब कुछ समझ लिया।' उसकी आँखों में आंसू भर आए और वह सिसकियाँ भरती हुई बोली—'तुम इस तरह अपना सर्वनाश करोगे।'

पावेल कमरे में टहलने लगा। वह बोला—'मैंने तुमसे सच-सच कह दिया यदि तुम मेरा कल्याण चाहती हो तो मेरे मार्ग में बाधा मत डालना।'

माँ ने रोकर कहा—'क्या ही अच्छा होता यदि मैं यह सब न जानती। मैं किसी तरह की बाधा नहीं उपस्थित करूंगी। तुम सावधान रहना।' पर उसे यह भी नहीं मालूम था कि वह पावेल को किस वस्तु से सावधान होने के लिये कह रही है और किस तरह की सावधानी चाहती है। रोते-रोते उसने फिर कहा—'भगवान तुम्हारी रक्षा करें। जिस बात से तुम्हें सुख मिले उसी में मेरी प्रसन्नता है लेकिन एक बात स्मरण रखना—लोगों से

सदा सावधान रहना, सतर्क होकर बातें करना। यहां चारों ओर डाह, द्वेष, ईर्ष्या और मत्सर का राज्य है। कोई किसी का भला चाहनेवाला नहीं है। एक दूसरे की बढ़ती देखकर जलते हैं; दूसरे को क्षति पहुँचाने में ही उन्हें संतोष है। जिस समय तुम उनकी भर्त्सना करने लगोगे वे तुमसे चिढ़ जायँगे, घृणा करने लगेंगे और तुम्हारे नाश के उपाय सोचने लगेंगे।'

पावेल दरवाजे पर खड़ा होकर माँ की विषादभरी बातें सुन रहा था। अंत में वह बोला—'तुम्हारा कहना सच है। पर जिस दिन से मुझे इस सत्य का ज्ञान हुआ है उसी दिन से मैंने जन-साधारण में भी विचित्र परिवर्तन देखे हैं। मैं स्वयं इसका कारण नहीं जानता। बचपन में लोगों से डरता था। बड़ा होने पर मैं उनसे घृणा करने लगा। इनमें-से कुछ तो सचमुच नीच थे। पर अब मैं उन्हें एकदम दूसरी दृष्टि से देखता हूँ। सबके लिये मेरे हृदय में संताप है, वेदना है। मैं इसका कारण नहीं बतला सकता पर जिस दिन से मुझ इस तथ्य का ज्ञान हुआ है, मुझे यह प्रतीत होने लगा कि हरएक आदमी नीच या बुरा नहीं है।'

इतना कहकर वह चुप हो गया मानों कुछ सोच रहा है। वह फिर गंभीर होकर बोला—'इसी तरह सत्य जीवित रहता है।'

माँ ने प्रेमभरी दृष्टि पावेल पर डाली और लंबी साँस लेकर कहा—'तुमने बड़े ही भयानक काम में हाथ डाला है। भगवान तुम्हारी रक्षा करें।'

तीसरा परिच्छेद

उसी तरह दोनों के दिन बीतने लगे। एक दिन पावेल ने अपनी माँ से कहा—'शनीचर को कुछ लोग यहाँ आवेंगे।'

माँ—कौन लोग ?

पावेल—कुछ गांव के लोग होंगे और कुछ शहर के !

'शहर के भी !' इतना कहते-कहते माँ रोने लगी।

पावेल ने झुंझलाकर पूछा—यह क्या ? यह रोना किसलिए ?

रुमाल से आँसू पोछते हुए उसने मंदस्वर में कहा—'मैं, इसका कारण नहीं बतला सकती पर न जाने क्यों मुझे रुलाई आ रही है।'

पावेल कमरे में टहल रहा था। उसने रुककर पूछा—'तुम्हें डर लगता है ?'

माँ—'निश्चय मुझे डर लगता है। उन शहरवालों को कौन जानता है ?'

उसने अपनी माँ की ओर घूरकर देखा और मर्माहत होकर बोला—'यही डर तो हमलोगों के नाश का कारण है हमलोगों की कायरता से लाभ उठाकर लोग हमें और भी भीरु बनाने का यत्न करते हैं। जब तक लोग इसी प्रकार कायर और भीरु बने रहेंगे तब तक पानी में काई की तरह सड़ा करेंगे । अब समय आ गया है कि हमलोग साहसी बनें।'

चलते-चलते उसने कहा—'जो कुछ हो, वे लोग यहाँ आवेंगे ही !'

माँ—'मुझसे खफ़ा मत हो। मेरा सारा जीवन कायरता और भीरुता में बीता है। मेरी नस-नस में भय समाया हुआ है। मेरा भयभीत होना स्वाभाविक था।'

पावेल ने नरमी से कहा—'मुझे क्षमा करना ! उन लोगों का आना अनिवार्य है। इसमें किसी तरह का परिवर्तन नहीं हो सकता।'

इतना कहकर वह बाहर चला गया।

तीन दिन तक उसकी माँ की बुरी हालत थी। जब-जब उसे यह ख्याल आता था कि उसके घर में अनजान लोग आवेंगे तब-तब वह डर से काँप उठती थी ! वह उन्हें भयानक समझती थी, अतएव उनका वास्तविक रूप वह समझ ही नहीं सकती थी। उन्हीं के संसर्ग में आकर ही तो पावेल ने इस भयानक मार्ग में कदम रखा है !

शनीचर भी आ ही गया। पावेल कारखाने से लौटा। हाथ-मुँह धोकर कपड़े पहने। घर से बाहर जाने लगा तब उसने अपनी माँ से कहा—'यदि वे लोग आवें तो उन्हें बैठाना। मैं थोड़ी देर में वापस आऊँगा। वे लोग भी हमलोगों की तरह मनुष्य ही हैं, डरने की वस्तु नहीं हैं !'

उसे गश आ रहा था। वह अपनी जगह पर चुपचाप बैठी रही।

पावेल ने अपनी माँ की दशा देखी। वह बोला—'अच्छा हो कि तुम कहीं अन्यत्र चली जाओ।'

इस बात से उसे वेदना हुई। उसने सिर हिलाकर कहा—'नहीं, मैं कहीं नहीं जाऊँगी।'

नवंबर का अंत था, दिन को बरफ गिर चुकी थी। पावेल के पैर के नीचे उसकी कड़कड़ाहट की ध्वनि स्पष्ट सुनाई दे रही थी। कुहासे के मारे खिड़की का शीशा काला हो गया था। माँ बेंच पर बैठकर आगंतुक सज्जनों की प्रतीक्षा करने लगी। थोड़ी देर के बाद उसे मालूम हुआ कि अँधेरे में कुछ लोग दबे पांव और चौकन्ने होकर मकान के आसपास चल रहे हैं। एक आदमी तो दीवाल के सहारे दरवाजे के समीप आ गया था।

उसी क्षण उसे सीटी का शब्द सुनाई पड़ा। वह शब्द मधुर होते हुए भी मनहूस था। धीरे-धीरे वह निकट आने लगा और यकायक गायब हो गया, मानों मकान की लकड़ियों में समा गया हो। बरामदे में पैर की आहट मालूम हुई। माँ चौकन्नी होकर खड़ी हो गई और भयभीत होकर उधर ही देखने लगी।

सहसा दरवाजा खुला। एक लंबे और दुबले आदमी ने कमरे में प्रवेश किया और माँ को प्रणाम किया।

माँ ने इशारे से आशीस दिया।

आगंतुक ने पूछा—'पावेल अभी तक बाहर से नहीं आए!'

आगंतुक ने इतमिनान के साथ अपना बालदार कोट उतारा।

एक-एक करके दोनों पैर उठाए और जूते में लिपटी बरफ झाड़ दी। टोप को किनारे फेंक दिया और कमरे में टहलने लगा। टेबुल के पास पहुँचा और उसकी मजबूती की जाँच करके उस पर बैठ गया और हाथ से मुँह ढँककर जम्हाई लेने लगा। कमरे के चारों ओर आँखें दौड़ाकर उसने पूछा—'यह अपना मकान है अथवा किराये का?'

माँ—किराये का!

आगंतुक—मकान बहुत बढ़िया नहीं है!

बात को टालने की गरज से मां ने मंदस्वर से कहा—'पाशा आता ही होगा।'

आगंतुक—मैं उनकी प्रतीक्षा करूँगा।

उसकी शांति, सौजन्य, सहृदयता और सादगी देखकर माँ को साहस हुआ। वह निर्भय होकर उसकी ओर देखने लगी। उसने देखा कि उसकी चमकीली आँखों में एक प्रकार का माधुर्य है। उसके दुबले-पतले और गोलमटोल शरीर में आकर्षण है। उसकी इच्छा हुई कि वह उसके बारे में पूछे कि वह कहाँ रहता है, उसका क्या नाम है, पावेल से उसकी कितने दिनों की जान-पहचान है। लेकिन इसी बीच में उसने पूछ दिया—'माँ, आपके ललाट में यह गड़हा कैसा है।'

इस प्रश्न में सादगी और सहृदयता थी पर उस रमणी को यह प्रश्न रोचक नहीं प्रतीत हुआ। वेदना से उसने अपने दोनों होठों को दबाते हुये कहा—'आपसे मतलब?'

आगंतुक ने उसी सरलता के साथ कहा–'आप नाराज़ न हों। मेरी सौतेली माँ के ललाट में भी इसी प्रकार का गड़हा था और उसके कारण उसके पति थे। वह जात का चमार था। मेरी माँ धोबिन थी। मुझे गोद लेने के बाद उसने उस शराबी से विवाह कर विपत्ति मोल ली। वह उन्हें बहुत मारता था उसके डर से मैं काँपा करता था!'

आगंतुक की स्पष्टवादिता ने माँ को परास्त कर दिया। उसके मन में यह ख्याल भी आया कि इसके साथ रुखाई से पेश आने पर कहीं पावेल नाराज़ न हो। इसलिये उसने हँसकर कहा—'मैं नाराज़ नहीं हूँ। आपने इतनी जल्दी यह प्रश्न किया कि मैं दूसरा उत्तर क्या देती। यह गड़हा मेरे पति का ही प्रसाद है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे। वह इसी प्रकार मेरी दुर्दशा किया करते थे। आप तातार हैं?'

उसने हँसकर कहा—'नहीं, अभी तक तो मैं तातार नहीं हूँ।'

माँ—आपकी बोली हम लोगों से मिलती जुलती नहीं है इसीलिये यह पूछा!

आगंतुक—मैं रूसियों से अच्छा हूँ। मैं कनेब का रहनेवाला हूँ।

माँ—आप यहाँ कितने दिनों से हैं?

आग०—करीब दो महीने से। महीने भर होते हैं कि मैंने इस कारखाने में नौकरी की है। वहाँ पावेल तथा दो-चार और भले आदमियों से परिचय हो गया। मैं ज्यादा दिन यहाँ नहीं रहूँगा।

आगंतुक से बातकर माँ को बड़ा संतोष हुआ। उसने पूछा—'कहिए तो एक प्याला चाय लाऊँ ?'

आग०—(प्रसन्नता से उछलकर) दावत ! सबको आने दीजिए।

इस अंतिम वाक्य ने औरों के आने का स्मरण दिला दिया और माँ का भय फिर ताजा हो गया। उसने अपने मन में कहा—'यदि और लोग भी इसी के समान सरल और हँसमुख होते।'

इसी क्षण बरामदे में पुनः किसी के पैर की आहट मालूम हुई। तेजी के साथ दरवाजा खुला और एक तरुणवयस्का युवती ने कमरे में प्रवेश किया। उसका पहनावा किसानों की स्त्रियों की भाँति एकदम साधारण और सादा था। माँ उठ खड़ी हुईं और विस्फारित नेत्रा से उसकी ओर देखने लगीं। उसने मुस्कुराकर पूछा—'मुझे देर तो नहीं हो गई है ?'

पहला—नहीं ! क्या तुम पैदल ही आ रही हो ?

रमणी—हाँ (माँ की ओर लक्ष्यकर) आप ही पावेल की माँ हैं ? मेरा प्रणाम स्वीकार हो। मेरा नाम नटाशा है।

माँ—(आशीस देकर) तुम्हारा दूसरा नाम ?

नटाशा—मेरा दूसरा नाम बसिलबेना है। आपका नाम ?

माँ—मेरा नाम पलेगिया निलोना है।

नटाशा—हमलोगों का पूरा परिचय मिल गया।

संतोष की साँस लेती हुई माँ ने "हाँ" कहा और मुस्कुराकर नटाशा की ओर देखने लगी।

आगंतुक ने उसका लबादा उतार दिया और पूछा–'क्या सर्दी अधिक है ?'

नटाशा–मैदान में बड़ी सर्दी है। बड़ी ठंढी हवा चल रही है।

नटाशा की बोली स्पष्ट और मधुर थी। उसका चेहरा छोटा पर हँसमुख था, उसका शरीर गोल और गठीला था। दस्ताना उतारकर उसने अपने कपोलों को रगड़ा जो सर्दी के मारे लाल हो रहे थे। धीरे-धीरे वह बैठकखाने की ओर बढ़ी।

माँ ने देखा कि बरफ से बचने के लिये उसके पैरों में बूट नहीं है !

नटाशा—आज भयानक सर्दी है। मेरे हाथ-पैर ठंढ के मारे सिकुड़े जा रहे हैं।

माँ०—मैं अभी आग जलाए देती हूँ।

दूसरे ही क्षण उसने आग जला दी।

माँ का स्नेह और सौहार्द नटाशा के प्रति बहुत बढ़ गया। उसे प्रतीत हुआ मानों इससे वर्षों की जान-पहचान है। वह रसोई-घर में आग जलाती थी और उसकी मनोहरता, स्निग्धता और सरलता पर मन-ही-मन मुग्ध होती जाती थी। उसकी बातचीत तो उसे और भी प्रिय मालूम होती थी।

नटाशा ने पहले के आगंतुक से पूछा—'नखोदका, तुम इतने उदास क्यों हो ?'

आगंतुक—जिसका नाम नखोदका था—का ध्यान दूसरी ही ओर था। उसी ओर लक्ष्य करके उसने कहा—'इस रमणी (माँ)

की आँखें बड़ी ही विशाल हैं। इसकी आँखें देखकर मुझे अपनी माँ का स्मरण हो आया। उसकी भी आँखें ऐसी ही हैं।

नटाशा—तुमने तो कहा था कि वे मर गईं।

नरवोदका—मैंने अपनी सौतेली माँ के बारे में कहा था। मेरी सगी माता तो अभी तक जीवित ही होंगी। मेरा अनुमान है कि आज भी वे कीव में भीख माँगती और शराब पीती होंगी।

नटाशा—तुम इस तरह की वीभत्स कल्पना क्यों करते हो।

नरवोदका—मैंने बहुधा देखा है कि पुलिस के सिपाही उसे सड़कों पर बेहोश पड़ी पाते हैं और गिरफ़्तारकर पीटते हैं।

माँ के मुँह से एक सर्द आह निकल पड़ी। उसने कहा—'अभागी औरत!'

नटाशा तेजी के साथ कुछ कह गई। उसके शब्दों में कठोरता थी। इसपर नरवोदका ने अपने उसी प्राकृतिक स्वर में कहा—'तुम अभी जवान हो। तुम्हें संसार का अनुभव ही क्या है। बिना माँ के कौन पैदा होता है, फिर भी अधिक लोग बुरे ही दीखते हैं। पालना और परवरिश करना जितना कठिन है, सुंदर और सच्चरित्र बनाना उससे भी कठिन है।'

माँ ने अपने मन में कहा—'यह कैसी बेसिर-पैर की बातें कह रहा है। मैं तो महा मूर्ख हूँ, पर मेरा पावेल? क्या उसके गुणों की समता की जा सकती है?' इतने ही में पुनः दरवाजा खुला और माँ ने देखा कि मशहूर चोर डेनियल का लड़का निकोले प्रवेश कर रहा है। निकोले लोगों से सदा दूर रहता था।
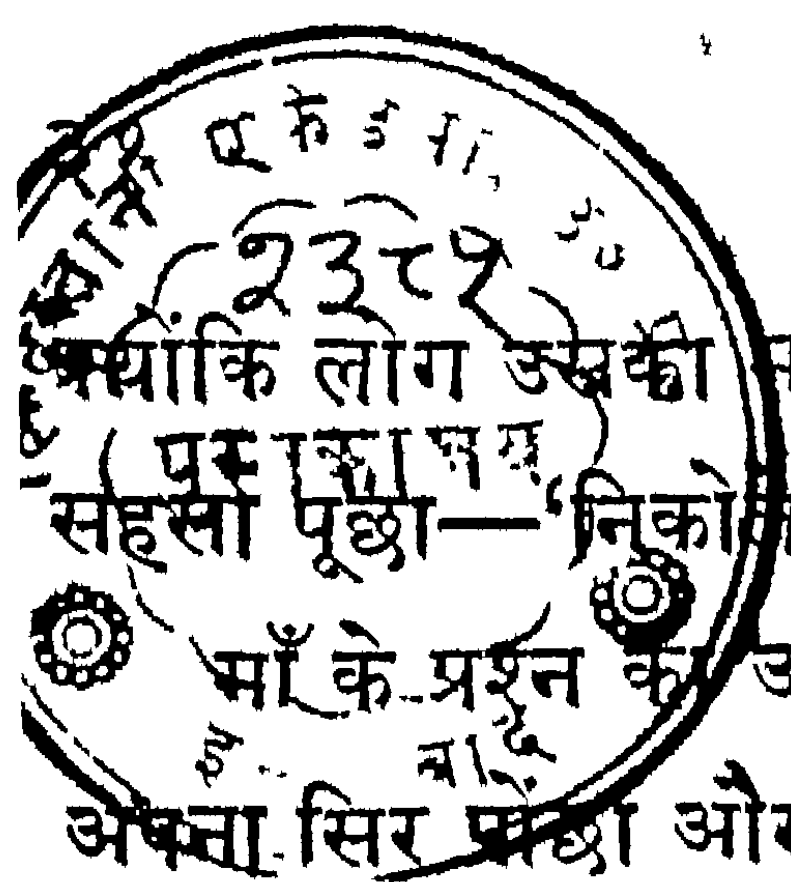
क्योंकि लोग उसकी मखौल उड़ाया करते थे उसे देखकर माँ ने सहसा पूछा—'निकोला ! तुम यहाँ कहाँ ?'

माँ के प्रश्न का उत्तर दिए बिना ही उसने दोनों हाथों से अपना सिर पोंछा और पूछा—'पावेल है ?'

माँ—'नहीं ।'

उसने कमरे की तरफ झाँका और लोगों को बैठा देखकर बोला—'नमस्कार भाई साहबान !'

माँ ने खिन्न होकर अपने मन में कहा—'क्या यह भी इन लोगों के साथियों में-से है ?' जब नटाशा ने उसका स्वागत करने के लिये अपना हाथ बढ़ाया तब तो माँ के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा ।

इसके बाद दो नौजवान और आए, दोनों अलपवयस्क थे । एक को तो माँ पहचानती थी वह कारखाने के जमादार का लड़का याकोब था । दूसरे को वह नहीं जानती थी पर वह इतना भयानक नहीं प्रतीत होता था ।

इतने में पावेल आया । उसके साथ और भी दो आदमी थे जो इसी के साथ कारखाने में काम करते थे ।

चूल्हे में आग जलती देखकर पावेल ने कहा—'माँ, तुमने यह बहुत ही अच्छा किया जो आग जला दी ।'

माँ—कहो तो कुछ जलपान तैयार कर दूँ ?

पावेल—नहीं, इसकी जरूरत नहीं होगी ।

माँ को अब प्रतीत होने लगा कि पावेल ने केवल विनोद के लिये

इस जलसे को इतना भयानक चित्रित किया था। वह बोली—'क्या ये ही लोग हैं जिन्हें भयावह और खतरनाक बतलाया जाता है ?'

पावेल—'ये ही लोग हैं ?' इतना कहकर वह बैठक में चला गया !

माँ ने स्नेहभरी दृष्टि से सबको देखा और अपने मन में कहा—"सबके सब निरे बच्चे हैं !"

इतने में चाय तैयार हुई। माँ चाय लेकर बैठक में ले आई देखती है कि सबके सब घेरा बाँधकर बैठे हैं और नटाशा रोशनी के पास बैठी कुछ पढ़ रही है ! नटाशा ने पढ़ा --'यह समझने के लिये कि लोग इतनी बुरी हालत में क्यों रहते हैं—।'

नरवोदका बीच ही में बोल उठा-'लोग खुद इतने बुरे क्यों हैं ?'

नटाशा—पहले देखना यही है कि इनकी यह हालत किस प्रकार हुई !

माँ—बेटा, जरूर इस बात का पता लगाओ !

माँ का शब्द सुनकर सबके सब चुप हो गये।

पावेल (भौंहें सिकोड़कर)—क्या है माँ ?

माँ ने देखा कि सबकी निगाहें उसीकी ओर फिर गई हैं। वह बोली-'कुछ नहीं मैं तो आप ही आप बोल रही थी।'

नटाशा हँस पड़ी, पावेल ने मुस्करा दिया लेकिन नरवोदका ने हाथ बढ़ाकर कहा—'माँ, इस चाय के लिये धन्यवाद !'

माँ—चाय तो पिया ही नहीं और धन्यवाद दे दिया। (पावेल को लक्ष्यकर) मैं किसी तरह की बाधा नहीं दे रही हूँ।

नटाशा—अपने ही घर में मेहमानों के रास्ते में भला कौन बाधा उपस्थित कर सकता है? माँ, पहले मुझे चाय दो। मैं सर्दी के मारे काँप रही हूँ। मेरे हाथ-पैर ठंढे हुए जा रहे हैं।

माँ—अभी लाई! अभी लाई!

चाय पीकर नटाशा ने संतोष की साँस ली और अपने बिखरे बालों को सम्हालकर फिर पढ़ने लगी। माँ प्यालों में चाय ढालती जाती थी पर उसके कान उसी ओर थे। जंगल में रहनेवाले आदमियों की गाथा से कमरा गूँज रहा था। माँ रह-रहकर पावेल की ओर आशयभरी दृष्टि डालती। उसकी समझ में यह नहीं आता था कि इसमें कौन-सी बात नाजायज है। उसका यह सिलसिला अधिक देर तक नहीं रहा। उधर से अपनी दृष्टि हटाकर वह मेहमानों की जाँच-पड़ताल करने लगी।

पावेल नटाशा के बगल में बैठा था। उस समुदाय में वह सबसे सुंदर था। नटाशा पुस्तक पर झुकी थी। रह-रहकर वह अपने बिखरे बालों को सुरझाती और कभी-कभी बाहरी बातें कहने के लिये अपना स्वर धीमा कर देती। नखोदका दाहिने हाथ का सहारा देकर टेबुल पर झुका हुआ था और अपनी मोंछें ऐंठा करता था। निकोले अपनी हथेलियों को घुटने पर रखकर कुर्सी पर तनकर बैठा था मानों वह साँस तक नहीं ले रहा है। याकोब अपनी होठों को इस तरह हिला रहा था मानों पुस्तक की बातें घोख रहा है और उसका घुँघुराले बालोंवाला साथी घुटनों पर दोनों ठेहुनियों को रखकर उसी के सहारे बैठा मुस्कुरा

रहा था। पावेल के साथ जो दो व्यक्ति आए थे उनमें-से एक जो दुबला-पतला और कम उमर का था—कुछ कहने के लिये बराबर उत्सुक दिखाई देता था क्योंकि रह-रहकर वह उठता-बैठता था और उसका दूसरा साथी दोनों हाथों को इस प्रकार सिर पर रखकर बैठा था कि उसका चेहरा दिखलाई नहीं देता था।

कमरा गरम और समय सुहावना था। माँ का हृदय आनंद और उमंगों से भरा था। नटाशा की सुरीली आवाज उसके मन को मोह रही थी। इस जमात से जब वह अपनी जवानी की गोष्ठी की तुलना करने लगती तो उसे जमीन-आसमान का अंतर दिखाई देता। उस समय लोग शराब के नशे में चूर आते और तरह-तरह की गालियाँ बकते। इस समय इस सुंदर जमात को देखकर वह अपने गलित-पतित और परितप्त हृदय पर तरस खाने लगी।

इस समय उसे अपने विवाह का दृश्य याद आया। किसी जलसे में उसके पति ने उसे एकांत कोठरी में पकड़ा और उसका गला दबाकर पूछा—'क्या तुम मुझसे विवाह करोगी ?'

इस तरह दबाए जाने से उसे बड़ी वेदना हो रही थी और वह अपने को अपमानित भी समझ रही थी, लेकिन पूरी निर्दयता के साथ वह उसके बदन में चिकोटी काटने लगा। और उसके मुँह के पास मुँह ले जाकर साँस लेने लगा। वह छटपटाने लगी पर वह उसे पकड़े ही रहा और बोला—'जल्दी उत्तर दो।'

वह बुरी तरह अपमानित हुई थी, उसका दम घुट रहा था। वह चुप रही।

उसने फिर कहा—'गदही! बातें न बना। मैं स्त्रियों की हालत से खूब वाकिफ हूँ। मन में भावे गर्दन हिलावे।'

इतने में किसी ने उस कमरे में प्रवेश किया, लाचार होकर उसने छोड़ दिया और कहा—'आगामी रविवार को मैं संबंध पक्का करने के लिये किसी को भेजूँगा।' और उसने वही किया।

माँ ने आंखें बंद कर लीं और लंबी साँस ली।

इतने में निकोले का धीमा और क्षुब्ध स्वर सुनाई पड़ा—'इससे हमें कोई मतलब नहीं कि लोग किस प्रकार रहते थे। हमें यह जानना चाहिए कि लोगों को किस प्रकार रहना चाहिए।'

याकोब—मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। यदि हमें आगे बढ़ना है तो हमें सब कुछ जानना चाहिए।

घुँघुराले बालवाले ने कहा—'याकोब का मत ठीक है।'

इसपर गर्मागर्म बहस छिड़ गई। माँ की समझ में नहीं आया कि यह विवाद क्यों उठ खड़ा हुआ। सबके चेहरे तमतमा गए पर क्रोध का कहीं नामो-निशान नहीं था क्योंकि किसी के भी मुँह से अपशब्द नहीं निकलता था। उसने अपने मन में सोचा—मालूम होता है कि स्त्रियों के रहने के कारण सबने जबान सम्हाल रखी है।

इस गंभीरता में भी नटाशा की आकृति में आकर्षण था। इस विवाद में भी नटाशा लोगों की ओर इस भाव से देखती थी मानों घर की बड़ी-बूढ़ी औरत लड़के की ओर देख रही है।

उसने कहा—'भाइयो, ठहरो'। सबलोग यकायक चुप हो गए और उसकी ओर देखने लगे।

उसने कहना शुरू किया—'जो लोग कहते हैं कि हमें सब कुछ जानना चाहिए, उनका मत ठीक है। हमलोगों में विवेक का प्रकाश होना चाहिए जिससे लोगों के अंधकारपूर्ण हृदय में हमलोग प्रकाश कर सकें। हमलोगों को हर तरह की शंकाओं का समाधान करने की सच्ची और पूर्ण योग्यता होनी चाहिए। हम लोगों को सत्य और झूठ सब कुछ जानना चाहिए।'

नखोदका ने सिर हिलाकर अपनी सम्मति प्रकट की। इसके बाद पावेल उठा और बोला—'क्या हमलोग सिर्फ पेट भरने के ही लिये पैदा हुए हैं? नहीं, हमलोग मनुष्य बनना चाहते हैं। जो लोग हमलोगों की गर्दन पर सवार होकर हमलोगों की आँखों में पट्टी बाँधे हुए हैं, उन्हें हमलोग बतला देना चाहते हैं कि हम-लोग सब कुछ देखते हैं, हमलोग निरे उल्लू नहीं हैं, हमलोग पशु नहीं हैं, हमलोग अधम जीवन नहीं बिताना चाहते बल्कि मनुष्य की भाँति रहना चाहते हैं। हमलोग उन्हें बतला देना चाहते हैं कि हमलोग मजदूर होने के कारण बुद्धि में उनसे घटकर नहीं हैं और बल में तो उनसे कहीं बढ़कर हैं।'

पावेल की वाग्धारा से माँ का हृदय उल्लसित हो उठा, अभि-मान से भर गया!

नखोदका—अच्छा भोजन और सुंदर वस्त्रवाले तो अनेक

मिलेंगे पर सुंदर हृदयवाले कहाँ हैं। हमलोगों का उद्देश्य इस सड़े-गले जीवन को परिष्कृतकर सुंदर-जीवन बनाना है।

निकोले—जब युद्ध का समय आता है उस वक्त लोग शरीर के साधारण घाव को अच्छा करने की चिंता छोड़ देते हैं।

नखोद्का—संग्राम में प्रवृत्त होने के पहले न जाने कितनी बार हम लोगों को अपनी-अपनी हड्डियाँ-पसलियाँ तोड़वानी होंगी।

इसी विवाद में आधीरात बीत गई और लोग जाने का उपक्रम करने लगे। सबसे पहले निकोले और लाल केशवाला युवक उठा।

उनका इस प्रकार जाना माँ को नागवार मालूम हुआ। उसने अपने मन में कहा—भला, इन्हीं को क्या जल्दी पड़ी है ? उसने उनलोगों को बेमन से बिदा किया।

नटाशा ने पूछा—'नखोद्का, आप मुझे पहुँचा देंगे ?'

नखोद्का—क्यों नहीं ?

नटाशा लबादा पहनने के लिये दूसरे कमरे में गई। माँ ने कहा—'तुम्हारा मोजा बहुत ही पतला है। यह शीत से तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे लिए एक जोड़ा ऊनी मोजा बना दूँगी।'

नटाशा—धन्यवाद! लेकिन ऊनी मोजे गड़ते हैं।

माँ—मैं इस तरह का बना दूँगी कि गड़ेगा नहीं।

नटाशा ने विस्मय के साथ माँ की ओर देखा। माँ को दुःख

हुआ ! वह बोली—'मेरा अपराध क्षमा करना । मैंने तो अपनी स्वभावजन्य सरलता से यह कहा था ।'

नटाशा ने गद्गद होकर कहा—'आपका हृदय कितना दयार्द्र है !' इतना कहकर उसने माँ को प्रणाम किया और मकान से बाहर हो गई ।

नखोदका ने भी माँ को प्रणाम किया और वह नटाशा के पीछे हो लिया ।

माँ पावेल की ओर देखती रही । वह बैठक के दरवाजे पर खड़ा मुस्करा रहा था । वह बोला—'आज का दिन बड़े आनंद का था ।'

माँ—बड़े आनंद का था ! समय हो गया है, सोने जाओ ।

पावेल—तुम्हें भी सो जाना चाहिए ।

वह बैठक में गई और प्रत्येक वस्तु सम्हालने लगी । उसे संतोष था कि सब कुछ शांतिपूर्वक बीत गया । वह बोली—'सबके सब भले आदमी मालूम होते हैं । नखोदका बड़ा ही सहृदय मनुष्य है । और वह लड़की ! बड़ी ही बुद्धिमान और तेज है । वह कौन है ।'

पावेल—अध्यापिका हैं । स्कूल में पढ़ाती हैं ।

माँ—बड़ी ही दीन है । कितने मामूली कपड़े थे । ऐसे ही सर्दी लग जाती है । उसके परिवार के लोग कहाँ रहते हैं ?

पावेल—मास्को में रहते हैं । उसके पिता संपन्न हैं ? उनके पास पूरी संपत्ति है और सोना-चाँदी का कारबार होता है ।

इसके इन्हीं विचारों के कारण उन्होंने इसे घर से निकाल दिया। एक दिन वह था कि यह विलासिता में अपना दिन बिताती थी, इच्छानुसार सब चीज़ें मिल जाती थीं और आज अकेले रात में चार-चार मील तक पैदल चलती है।

माँ को बड़ी वेदना हुई। वह चुपचाप पावेल का मुँह देख रही थी। उसने पूछा—'क्या वह शहर जायगी ?'

पावेल—हाँ।

माँ—और उसे किसी बात का भय नहीं !

पावेल—(मुस्कुराकर) नहीं।

माँ—वह गई क्यों ? रातभर यहीं रह जाती। हमारे साथ सो रहती।

पावेल—यह ठीक नहीं था। सबेरे लोग उसे यहाँ देख लेते। यह न तो हमीं लोग चाहते हैं और न वही चाहती है।

भय का भूत माँ के सिर पर फिर सवार हो गया। उसने खिड़की की ओर गौर से देखा और पावेल से पूछा—'मेरी समझ में नहीं आता कि इसमें क्या खतरनाक है। तुमलोग तो कोई भी बुरा काम नहीं कर रहे हो।'

उसे पावेल के कार्यक्रम के औचित्य और निर्दोषिता का पक्का विश्वास नहीं था और न वह उसकी ओर से पूर्णतया निश्चिंत थी। वह उसके ही मुँह से इसकी पुष्टि चाहती थी पर पावेल पूर्ण शांति से उसके मुँह की ओर देखता रहा और दृढ़ता के साथ बोला—'न तो हमलोग कोई अनुचित काम कर रहे हैं

और न भविष्य में करेंगे ही, पर जेल का फाटक हमलोगों की प्रतीक्षा कर रहा है।'

वह काँप उठी। उसका कलेजा बैठा जा रहा था। लड़खड़ाती जबान में उसने कहा—'ईश्वर तुम्हारी सहायता करें। वही तुम्हारा उद्धार भी करेंगे।'

पावेल—मैं तुमसे कोई भी बात छिपाना नहीं चाहता। हमलोग किसी तरह बच नहीं सकते। पर तुम थक गई हो जाकर सो रहो।

इतना कहकर पावेल अपने कमरे में चला गया। उसकी माँ वहाँ अकेली रह गई। वह खिड़की के पास गई और खड़ी होकर बाहर की ओर देखने लगी। बाहर भयानक सर्दी पड़ रही थी सन्नाटे की हवा चल रही थी और बरफ के टुकड़ों को इधर-उधर से बटोरकर दीवालों पर पटक रही थी और सड़कों पर बिखेर रही थी।

माँ ने हाथ जोड़कर कहा—'दयामय ! हमलोगों की रक्षा करो! भय का भूत उसके सिर पर फिर सवार हो गया और उसकी आँखों में आँसू भर आए। उस अँधेरी रात में उसे ऐसा मालूम होने लगा मानो विभीषिका उसके चारों ओर रेंग रही है।

उसने देखा—दूर तक बरफ़ फैली हुई है। वायु का झोंका साँय साँय शब्द करता हुआ बरफ से ढँके इन मैदानों के साथ खेल रहा है। उसी बर्फ़ीले मैदान में एक बालिका अकेली भटक रही है और हवा के झोंके उसके वस्त्रों को बिखेर रहे हैं। चलना

कठिन था। उसके पैर बरफ में धँसे जा रहे थे। भय और सर्दी के मारे वह बालिका इस प्रकार झुकी जा रही थी मानों खर के तिनके को उच्छृंखल हवा अपनी इच्छा के अनुसार खेला रही है। उससे थोड़ी ही दूर पर दाहिनी ओर जंगल था। झाड़ियों और लकड़ियों के आपस में टकराने से भयानक ध्वनि निकल रही थी बहुत दूर पर शहर की लालटेनों का मंद प्रकाश दिखाई दे रहा था।

किसी अव्यक्त भय से काँपती हुई वह हाथ जोड़कर फिर बोली—'स्वर्ग के देवता ! हमलोगों पर दया करो।'

चौथा परिच्छेद

धीरे-धीरे दिन बीतने लगा। दिन से सप्ताह, सप्ताह से पखवारा और पखवारे से महीना हुआ। हर शनीचर को पावेल के घर लोगों की भीड़ इकट्ठी होती और सुधार के पथ पर लोग एक कदम आगे बढ़ाते, पर अंतिम ध्येय अभी तक अदृश्य था !

हर शनीचर को कुछ-न-कुछ नये लोग आते और पावेल का घर खचाखच भर जाता। नटाशा उसी प्रकार सर्दी से काँपती दलपै चली आती पर उसमें सदा अक्षुण्ण उत्साह दिखाई देता। माँ ने मोजा बुनकर अपने ही हाथों से उसे पहना दिया। यह देख-

कर नटाशा हँस पड़ी, पर दूसरे ही क्षण उसका चेहरा गंभीर हो गया और बोली—'घर में मेरी एक दाई थी। वह भी इसी प्रकार मिहरबान थी। माँ! दीनता, हीनता और दुर्दशा का जीवन बितानेवाले इन गरीबों में जो सहृदयता पाई जाती है। उसका वहाँ आभास भी नहीं मिल सकता।' इतना कहकर उसने अपने हाथ से सुदूर कारखाने की ओर लक्ष्य किया।

माँ—मैं तो तुम्हारी हालत सुनकर विस्मित हूँ। तुमने अपना सब कुछ त्याग दिया है!

इतना कहकर वह चुप हो गई और सदय-दृष्टि से नटाशा की ओर देखने लगी। नटाशा उसके सामने बैठी मुस्कुरा रही थी। वह सिर झुकाकर बोली—'मैंने अपने कुटुंब का त्याग कर दिया है। यह कोई बड़ी बात नहीं है। मेरे पिता बड़े ही निठुर और मूर्ख हैं। मेरा भाई शराबी है। मेरी बड़ी बहिन बड़ी ही अभागिनी निकली। धन के लोभ में पड़कर उसने एक बुड्ढे से विवाह कर लिया। उसका पति बड़ा ही लोभी, कंजूस और पाजी निकला। मेरी माँ बड़ी ही सीधी-सादी स्त्री हैं। पिता के डर से सदा काँपा करती हैं। मुझे केवल उन्हीं की चिंता है।'

माँ ने लंबी साँस ली और कहा—'तुम भी अभागिनी हो।'

नटाशा ने सिर ऊँचाकर कहा—'हरगिज नहीं। इस जीवन में मुझे जो आनंद मिलता है, जो सुख मिलता है उसकी आप कल्पना तक नहीं कर सकतीं।'

इतना कहते-कहते उसकी आँखें चमकने लगीं। उसने माँ की

गर्दन पर हाथ रखते हुए उत्साह के साथ कहा—'यदि तुम समझ सकतीं कि हमलोग कितना महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं तो तुम निश्चय ही हमलोगों के आनंद का अनुभव कर सकतीं।'

माँ के मन में डाह के हलके भाव उदय हो गए। उसने उठते हुए कहा—'एक तो मैं मूर्ख दूसरे बुड्ढी, उन कामों के योग्य नहीं।'

पावेल की प्रगति बढ़ती जाती थी। वह नित नया उत्साह दिखाता था। पर साथ ही उसका शरीर क्षीण होता जाता था जब कभी वह नटाशा से बातें करता उसमें विचित्र नर्मी आ जाती, उसकी आँखें सरस हो जातीं और वह सादगी का पुतला बन जाता।

यह देखकर माँ ने अपने मन में कहा—'क्या ही अच्छा होता यदि नटाशा को मैं अपनी पुत्र-वधू के रूप में देखती। दयामय की लीला अपरंपार है।'

बैठक में जब कभी विवाद बढ़ जाता और लोग सरगर्मी से बहस करने लगते, नखोद्का उठता और घंटे के लटकन की भाँति अपने शरीर को हिलाता हुआ दृढ़ता से पर सादगी के साथ मधुर भाषा में सबको शांत करता और लोगों का ध्यान मुख्य विषय की ओर आकृष्ट करता। निकोले सदा उतावली प्रगट करता। वह और घुँघुराले बालवाला युवक-जिसका नाम समोलो था दोनों सदा विवाद का आरंभ करते। गोलमटोल चेहरेवाला और सफेद बालोंवाला इवानबुकिन तथा घुँघराले बालवाला •फीढियामेजिन सदा उनका साथ देते। यॉकोब शांत और गंभीर

रहता और आवश्यकता पड़ने पर सादी भाषा में दो-चार शब्द पावेल और नखोद्का के पक्ष में कह देता।

कभी-कभी इस बैठक में शहर से एक व्यक्ति और आता था। वह किसी दूर देश का रहनेवाला था और उसका नाम अलक्से इवानोविच था। वह चश्मा लगाता था और अपनी दाढ़ी कतराकर रखता था। उसकी आवाज सुरीली थी। बात-चीत से ही वह परदेशी मालूम होता था। वह सदा साधारण बातों की चर्चा किया करता था जैसे, परिवारिक-जीवन, बाल-बच्चे, व्यवसाय, पुलिस, भोजन की सामग्री का मूल्य इत्यादि जो प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुएँ हैं। वह सदा यही कहता कि इन चीजों के व्यवसाय में हद दर्जे की बेइमानी, जुआचोरी और दगाबाजी की जाती है कभी-कभी वह मजाक के रूप में भी इनकी चर्चा करता पर सदा वह यही दिखलाने का यत्न करता कि जन-साधारण को इससे बड़ा नुकसान उठाना पड़ता है।

मां भी यही समझती थी कि वह किसी दूर देश से आया है, जहाँ के निवासी सीधे-सादे, इमानदार और सुखी हैं और यहाँ की दशा देखकर वह विस्मित है। वह यह स्थिति अपने अनुकूल नहीं पाता है, पर अनिवार्य समझकर इसे बरदाश्त करता है। इससे वह असंतुष्ट है और उसने इसके सुधारने का मन ही मन दृढ़ निश्चय किया है। उसका चेहरा पीला था, उसकी आँखें चम-कीली थीं और उसकी आवाज़ धीमी थी। अभिवादन करते समय

वह माँ के हाथ को अपने दोनों हाथों में लेकर कसके दबाता था। इसमें मां को भी अपार आनंद मिलता था।

इनके अलावा शहर से और लोग भी आया करते थे इनमें एक युवती भी थी। उसका नाम शशेंका था। उसका शरीर पतला पर गठीला था और आँखें विशाल थीं। उसकी चाल में दृढ़ता और निरालापन था। क्रोध के समय उसकी भौंहों में शिकन पड़ जाती थी और बोलने के समय उसके नासापुट हिलने लगते थे।

"साम्यवाद" शब्द का प्रयोग सबसे पहले उसी ने किया था। उसने गरजकर कहा था—'हम लोग साम्यवादी हैं।'

जिस समय माँ के कान में यह शब्द पड़ा वह कांप उठी और चकित होकर शशेंका की ओर देखने लगी। लेकिन शशेंका ने आँखें बंदकर जोश भरे शब्दों में कहा—'इस अवस्था के सुधार के लिये हमें अपनी सारी शक्ति लगा देनी होगी। यह निश्चय मानिए कि हमलोगों के साथ जरा भी दया नहीं दिखलाई जायगी।'

माँ जानती थी कि साम्यवादियों ने ही ज़ार को मार डाला था। यह उसकी जवानी की घटना थी। उस समय जन-साधारण यही कहा करता था कि ज़ार ने किसानों को स्वतंत्रता दे दी है इसीसे भूमिपतियों ने ज़ार से बदला लेने की शपथ खाई है कि जबतक ज़ार मारे न जायँगे हम लोग केश नहीं कटवाएँगे। यही लोग साम्यवादी कहलाते थे। ऐसी दशा में पावेल और उसके साथी क्यों साम्यवादी बन रहे हैं, यही उसकी समझ में नहीं आया।

सबके चले जाने पर माँ ने पूछा - 'पाशा ! तुम साम्यवादी हो ?'

पावेल - हाँ ! क्यों ?

माँ ने लंबी साँस ली और आवाज़ धीमी करके पूछा—'वे लोग ज़ार के विरुद्ध क्यों हैं ? उन्होंने एक को मार भी डाला !'

पावेल कमरे में टहलने लगा और मुँह पर हाथ फेरते हुए मुस्कुराकर बोला—'पर हमलोग ज़ार को मारने का प्रयास नहीं करेंगे ।'

इसके बाद वह देर तक माँ को न जाने क्या क्या समझाता रहा। वह बराबर पावेल के चेहरे की ओर देखती रही और मन में सोचती जाती थी—'यह बुरा काम नहीं कर सकता। बुरे काम की ओर इसका झुकाव नहीं है ।'

इसके बाद 'साम्यवाद' शब्द की भयानक ध्वनि उसके कानों में अधिकाधिक पड़ने लगी और समय की प्रगति के साथ अन्य शब्दों की भाँति यह शब्द भी उसे चिरपरिचित-सा जान पड़ने लगा। इसकी भयानकता दूर हो गई। पर शशेंका से वह सदा डरती रही। उसका आना उसे अप्रीतिकर प्रतीत होता।

माँ ने एक दिन असंतोष दिखलाते हुए नखोदका से कहा-'शशेंका बड़े कड़े मिजाज़ की मालूम होती है हमेशा हुकूमत ही किया करती है।'

उसने हँसकर कहा—'माँ ! तुमने भी खूब पकड़ा। क्यों पावेल ! ठीक है न ? लेकिन माँ, पंप करने से दूषित रक्त बाहर नहीं हो सकता !'

पावेल ने रुखाई से कहा—'वह बड़ी ही अच्छी औरत है ?'

नखोदका—'तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन वह केवल इस बात पर विचार नहीं करतीं कि उसे—......................।'

इसके बाद उन्होंने ऐसे विषय पर बहस छेड़ दी जो माँ की समझ में नहीं आया। माँ ने यह भी देखा कि शशेंका पावेल के साथ बड़ा कड़ा बरताव करती थी और कभी-कभी उसे गाली देती थी। पावेल मुस्कुराकर चुप हो जाता था और उसी स्निग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखने लगता था जिस प्रकार कुछ दिन पहले वह नटाशा की ओर देखता था। इससे माँ को बड़ा असंतोष होता था।

बैठक में शामिल होनेवालों की संख्या दिन-दिन बढ़ती गई और बैठक भी सप्ताह में दो बार होने लगी। जब माँ ने देखा कि लोग पावेल, नखोदका, नटाशा, शशेंका अक्से इवानोविच आदि की बातें बड़े ध्यान से सुनते हैं तो उसका भय भाग गया और अपने जवानी के दिनों का स्मरणकर उसे परिताप होने लगा।

वहाँ संगीत की भी चर्चा चलती। कभी-कभी वे सब मिलकर वे ही पुराने गाने गाते। पर प्रायः नये गीत ही गाते जिनका स्वर तो परिचित होता किंतु ध्वनि निराली होती। इन गीतों को लोग बड़ी सावधानी, गंभीरता, तत्परता और अनुराग के साथ गाते मानों प्रार्थना के गीत हैं। उस समय उनका चेहरा पीला पड़ जाता पर उनके शब्दों में दृढ़ता भर जाती।

एक दिन निकोले ने कहा—'अब ये गीत हम लोगों को सरे-आम गाने चाहिएँ।

कभी-कभी वे लोग आनंद की लहरों में इस प्रकार झूमने लगते कि माँ को विस्मय होता। उसकी समझ में कुछ न आता इस तरह की घटना बहुधा शाम के वक्त हुआ करती जब वे अखबारों में अन्य देशों के मजदूरों की हालत पढ़ते उस समय उनकी आँखों में आनंद की उमंग छा जाती प्रसन्नता से वे फूले न समाते, हँसी से कमरा गूँज उठता और वे एक दूसरे की पीठ ठोंकने लगते।

आनंद में विभोर होकर कोई बोल उठता—खूब! खूब! वाह रे फ्रांस के वीर मजदूर! वाह!!

दूसरा बोल उठता—'इटली के हमारे मजदूर भाई चिरजीवी हों।'

अपने उन सुदूर-स्थित भाइयों के संबंध में इस प्रकार की भावनाएँ प्रगटकर उन्हें अपार आनंद मिलता मानों उनके कानों में ये उत्साहवर्धक शब्द पड़ रहे हैं और वे लोग इन शब्दों का पूरा आदर कर रहे हैं।

इसपर नखोदका कह बैठता—मित्रो! हमलोगों को उनके पास पत्र लिखना चाहिए। उन्हें यह ज्ञात करा देना चाहिए कि हमलोग रूस के मजदूर भी उनके साथ हैं और उनकी विजय से हमलोग पूरे प्रसन्न हैं।

इसी प्रकार वे लोग जर्मनी, इटली, फ्रांस, स्वेडन और इंगलैंड

के मजदूरों की चर्चा करते, उन्हें अपना सगा भाई समझते, उनके सुख में सुखी और दुःख में दुखी होते।

उस छोटे-से कमरे में एक नया संसार दिखाई देता। विश्वभर के मज़दूरों के साथ भाई-चारे का नाता प्रगट किया जाता। उन लोगों का यश-गान किया जाता जो गुलामी की इस बेड़ी से मुक्त होकर स्वतंत्र वायु में विचरण कर रहे हैं और नये जीवन में प्रविष्ट हो गए हैं। यह भाव सबके हृदय में समान भाव से उठता था और सबकी आत्मा को एकता के सूत्र में बाँधता था। इससे माँ को अपार आनंद मिलता। यद्यपि वह सब बातें नहीं समझ सकती थी फिर भी उनकी शक्ति, आनंद और विजय की भावना और विशाल आशा उसके हृदय में विचित्र हिम्मत का संचार कर रही थी।

एक दिन माँ ने नखोद्का से कहा—'तुम लोग भी विचित्र आदमी हो! तुम लोग सभी देश के निवासियों को अपना भाई समझते हो। उनके दुःख में दुःख और सुख में सुख मानते हो?'

नखोद्का—सब हमारे भाई हैं माँ! यह विश्व ही हमारा है। संसार केवल मजदूरों का है। हम लोगों की न कोई जाति है और न देश। हमलोगों के केवल दोस्त और दुश्मन हैं। सभी मजदूर हमलोगों के भाई हैं और सभी पूँजीपति और अधिकारीवर्ग हमलोगों के दुश्मन। जब तुम हमलोगों की अपार संख्या देखती हो, हमलोगों की अतुल शक्ति का परिचय पाती हो, तुम्हारा हृदय आनंद से विभोर हो जाता है और तुम पुलकित हो उठती हो।

यही हालत अन्य देशों के मजदूरों की भी है। हम सब एक ही माता की संतान हैं। विश्व के मजदूरों के हृदय में भ्रातृभाव की यह भावना दृढ़ता के साथ उठी है और इसकी दिन-दिन वृद्धि होती जा रही है, यह सूर्य की भाँति तेज है, न्याय के स्वर्ग में यह दूसरा सूर्य है और यह स्वर्ग मजदूरों के हृदय के भीतर है। चाहे वह किसी भी देश का हो, साम्यवादी सदा हमारा भाई है और रहेगा।

यह भावना उस दल में दिन-दिन दृढ़ होती जाती थी और इसका क्रमशः विकास होता जाता था।

जब माँ इसपर विचार करती तो उसे प्रत्यक्ष दीख पड़ता कि प्रत्येक सत्य के साथ संसार में नया प्रकाश फैला है, जिसका तेज सूर्य के समान होता है और जिसे सब लोग देख सकते हैं।

जब कभी निकोले के पिता चोरी में गिरफ्तार होकर जेल भेजे जाते तो निकोले आकर कहता—'अब हमारे घर पर सभा करने में सुविधा है क्योंकि पुलिस हम लोगों को चोर समझेगी और चोरों से उनका गुप्त प्रेम है।'

पावेल का एक साथी काम पर से रोज उसके साथ आता, पढ़ता और कुछ नकल करता। इस काम में वे दोनों इतने व्यस्त रहते कि मुँह-हाथ धोने का समय भी न मिलता। खाने-पीने के वक्त भी पुस्तकें इनलोगों के हाथ में ही रहतीं इनकी बातें ऐसी होतीं कि माँ उनका कुछ भी मतलब न समझ सकती।

पावेल बहुधा कहा करता—एक समाचार-पत्र निकालने की बड़ी आवश्यकता है।'

ज्यों-ज्यों दिन बीतने लगा उन लोगों की व्यस्तता बढ़ती गई। शहद की मक्खियों की भाँति वे लोग बराबर घर-घर घूमा करते, एक के बाद दूसरी पुस्तक उलटा करते।

एक दिन निकोले ने कहा—'वहाँ तक (पुलिस में) हमलोगों की चर्चा होने लगी है। हमलोगों को यहाँ से निकल चलना चाहिए।'

नखोद्का—साही के काँटे तो केवल फँसने के लिये बनाए ही गए हैं।

माँ का अनुराग नखोद्का के प्रति दिन-दिन बढ़ता गया। जब वह "माँ" कहकर पुकारता तो उसे अपार आनंद मिलता था। रविवार के दिन यदि पावेल व्यस्त रहता था तो नखोदाका लकड़ी चीर दिया करता था। एक दिन उसने बरामदे की सीढ़ी की मरम्मत भी कर दी, दूसरे दिन उसने बाड़े की मरम्मत कर दी। काम करते समय उसे सीटी बजाने की आदत थी उसकी सीटी में विचित्र ध्वनि थी।

एक दिन माँ ने पावेल से कहा—'यदि नखोद्का को यहीं बुला लो तो तुम्हें बड़ी मदद मिलेगी और इस तरह एक दूसरे के पास आने-जाने की परेशानी से बच जाओगे।'

पावेल—तुम इस प्रकार क्यों परेशान हो रही हो?

माँ—मेरा जीवन ही परेशानी में बीता है। यदि अच्छे काम के लिये परेशानी उठाई जाय तो कोई हर्ज नहीं।

पावेल—अगर वह राजी हों तो बुला लो।

दूसरे ही दिन से नखोदका शहर छोड़कर पावेल के घर में रहने लगा।

पाँचवाँ परिच्छेद

पावेल के मकान पर लोगों की दृष्टि पड़ने लगी। सशंकित आँखों में वह पहले से ही गड़ रहा था। उसके संबंध में अनेक तरह की अफवाहें उड़ रही थीं।

लोगों में उत्सुकता बढ़ गई। सब लोग भेद लेने की चेष्टा करने लगे। रात में लोग खिड़कियों से झाँकते। कभी-कभी कोई खिड़की का शीशा खड़खड़ाता और आहट पाकर तुरत भाग जाता।

एक दिन सरायवाले ने पावेल की माता को रास्ते में रोककर कहा—'निलोना, अब तो पावेल विवाह के योग्य हो गया है। आजकल जितनी जल्दी युवकों का विवाह कर दो उन्हें सम्हालने में उतनी ही आसानी होती है। गार्हस्थ्य-जीवन में प्रवेश करते ही मनुष्य के ऊपर जिम्मेदारी आ जाती है और वह हर तरह से अपनी रक्षा की चिंता करने लगता है। क्योंकि वह चारों ओर से घिर जाता है। अगर वह मेरा लड़का होता तो मैं बहुत पहले

ही उसकी शादी कर चुका होता। इस युग में युवकों को बहुत ही सम्हालकर रखना होता है। नहीं तो इन सबों के दिमाग में न जाने क्या-क्या घुस जाता है और सब ऐसे-ऐसे फसाद खड़े कर देते हैं जो एकदम नाजायज़ कहे जा सकते हैं। गिर्जों में जाना वे सब पसंद नहीं करते, सराय वगैरह से उन्हें दिली नफ़रत है। जब देखो तब गुप्त सभाएँ किया करते हैं और काना-फूसी में रत रहते हैं। मैं पूछता हूँ कि इस काना-फूसी का क्या अभिप्राय है? यदि हम लोगों के लिये कोई भी एकांत स्थान बना है तो वह गिरजा है। इसके अतिरिक्त जहाँ कहीं भी एकांत स्थान बनाए जाते हैं, सब धोखे की टट्टी हैं।'

इतना कहकर उसने विचित्र तरह से अपना हाथ हिलाया और टोपी को घुमाता हुआ आगे बढ़ गया। माँ चिंतित अवस्था में वहीं खड़ी रही।

उसकी पड़ोसिन लोहारिन कारखाने में जलपान बेंचने जाया करती थी। एक दिन उसने भी कहा—'निलोना, जरा अपने बेटे से सावधान हो जाओ!'

निलोना—क्या बात है?

पड़ोसिन—टोले-महल्ले में सब जगह उसी की चर्चा है। लोग तरह-तरह की किंवदंतियाँ उड़ा रहे हैं। कोई कहता है कि वह एक दल कायम कर रहा है और एक-न-एक दिन पुलिस सब को पकड़ेगी और कोड़े बरसावेगी।

माँ—क्या इस तरह बेसिर-पैर की बातें बकती हो!

पड़ोसिन—मैं सब सच कह रही हूँ। मैंने सब अपने कानों सुना है।

माँ ने घर आकर ये सब बातें पावेल से कहीं। उसने लापरवाही से सिर हिला दिया और नखोदका हँस पड़ा।

माँ ने कहा—'कुमारियाँ भी तुम लोगों से रार करने पर आमादा हैं। तुम सबके सब सुंदर युवक हो, चतुर मजूर हो, तुमलोग शराब भी नहीं पीते। इससे तुमलोग योग्य पति हो सकते हो। लेकिन तुमलोगों का ध्यान ही उधर नहीं है। इसके अलावे लोग कहते हैं कि बिगड़ी हुई युवतियाँ तुम लोगों के पास आती हैं।'

पावेल की भौंहें सिकुड़ गईं। उसने तनकर कहा—'हाँ, ठीक है। किसी का इजारा?'

नखोदका—अंधे को सब जगह अँधेरा ही दीखता है। (माँ से) आप उन मूर्ख लड़कियों को समझाती क्यों नहीं कि विवाह के लिये इतनी उतावली क्यों हो रही हैं? क्या अपनी हड्डी-पसलियों को तोड़वाने के लिये वे अधीर हैं?

माँ—विपत्ति उनके सामने खड़ी है। वे जानती हैं कि विवाह के दूसरे दिन से ही उनकी दुर्गति होने लगेगी पर चारा ही क्या है?

पावेल—यह तो उनकी समझ का फेर है। उपाय तो अनेक हैं और बहुत ही सुंदर हैं!

माँ पावेल के चेहरे की ओर देखने लगी। फिर बोल उठी—

'तुम लोग उनसबों को पढ़ाते-लिखाते क्यों नहीं ? अपनी बैठक में उन सबों को भी बुलाया करो।'

पावेल—यह नहीं हो सकता।

नखोदका—कोशिश की जाय तो हर्ज ही क्या है ?

पावेल कुछ सोचने लगा। क्षणभर के बाद बोला—'यहाँ जोड़े मिलने लगेंगे और थोड़े दिनों के बाद विवाह होने लगेगा। और सब काम चौपट हो जायगा।'

माँ चिंतित हो गई। पावेल की कठोरता उसे खलती थी। उसने देखा कि उसके शासन के अधीन उसके सभी साथी हैं। नखोदका तक उसकी बातें नहीं काट सकता। सब उससे डरते हैं पर उसकी कठोरता के कारण उससे कोई प्रेम नहीं करता।

एक दिन माँ लेटी थी। पावेल और नखोदका बैठक में पढ़ रहे थे। एकाएक नखोदका ने दबी जबान में कहा—'मैं नटाशा को चाहता हूँ।'

पावेल—(धीरे से) मैं जानता हूँ।

नखोदका—तब !

इतना कहकर वह अपनी जगह से उठा और कमरे में टहलने लगा उसके पैरों की ध्वनि स्पष्ट सुनाई दे रही थी। उसने रुककर कहा—'क्या वह भी मेरे इस भाव को समझती है ?'

पावेल चुप रहा।

नखोदका ने मंदस्वर में पूछा—'तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

पावेल—उस पर प्रगट हो गया है। यही कारण है कि उसने हमलोगों की बैठकों में आना बंद कर दिया है !

नखोदका की गति गंभीर हो गई। उसने पावेल से पूछा—'यदि मैं उससे कहूँ।'

पावेल—(कठोरता से) क्या ?

नखोदका ने दबी जबान से कहा कि मैं······।

पावेल ने—(बीच ही में रोककर) क्यों ?

माँ पड़ी-पड़ी सब बातें सुन रही थी। उसने देखा कि नखोदका खड़ा होकर मुस्कुरा रहा है और कह रहा है—मेरा मत है कि यदि तुम किसी से प्रेम करते हो तो उससे स्पष्ट कह दो नहीं तो व्यर्थ है ?

पावेल ने जोर से किताब बंद कर दी और कहा—'पर तुमने इससे लाभ क्या सोचा है ?'

थोड़ी देर के लिये दोनों चुप हो गए।

नखोदका—यह प्रश्न विचारणीय है।

पावेल ने धीरे से कहा—'हमलोगों को अपनी स्थिति स्पष्ट रखनी चाहिए। यद्यपि यह संभव नहीं है। फिर भी थोड़ी देर के लिये मान लो कि वह भी तुम्हें चाहती है। दोनों का विवाह हो गया। यह संयोग बड़ा ही सुखद होगा। एक शरीर का मालिक और दूसरा विद्या का। अब तो सृष्टि का क्रम शुरू हुआ। बाल-बच्चे हुए और तुम दिनरात उन्हीं के चक्कर में पड़ गए, तुम्हारा सारा

समय उन्हीं की चिंता में बीतने लगा और जो काम हमलोगों ने उठाया है उससे तुमलोग कोसों दूर हो गए।

क्षणभर के लिये सन्नाटा छा गया। फिर पावेल ने कहना आरंभ किया—'मेरी सलाह है कि तुम इस प्रसंग से मुँह मोड़ो। इसकी चर्चा ही छोड़ दो। उसे भी तंग मत करो और अपने को भी सम्हालो। यही सर्वोत्तम उपाय है।'

नखोद्का–पर अलक्से इवानोविच ने उस दिन क्या कहा था? मनुष्य की पूर्णता पर उन्होंने कितना जोर दिया था और कहा था कि शारीरिक और मानसिक उन्नति के लिये मनुष्य को एकांगी होकर नहीं रहना चाहिए।

पावेल—वह हमलोगों पर लागू नहीं है। तुम किस प्रकार पूर्णता प्राप्त कर सकते हो? तुम्हारे भाग्य में लिखा ही नहीं है। यदि भविष्य की सुखद आशा की कल्पना है तो वर्तमान में पूर्ण त्याग करना पड़ेगा।

नखोद्का ने धीमेस्वर में कहा—'पर मनुष्य के लिये तो यह बड़ा ही कठिन है!'

पावेल—चारा ही क्या है?

कमरे में टँगी हुई घड़ी बेरोक-टोक जीवन के एक-एक क्षण को उदरस्थ कर रही थी। नखोद्का ने कहा—'जिस हृदय में एक और प्रेम का निवास हो और दूसरी ओर घृणा का, क्या उसे भी हृदय कह सकते हैं?'

पावेल—लाचारी है।

इतने में माँ के कानों में किताब के पन्ने की खड़खड़ाहट सुन पड़ी। पावेल ने पढ़ना आरंभ कर दिया था। माँ आँखें बंद किए पड़ी थी। करवट बदलने में भी उसे भय मालूम होता था। नखोदका की दशा पर उसे दया आई। वह मन ही मन रो उठी। पर पावेल के लिये उसे और भी वेदना थी।

नखोदका ने यकायक पूछा—'तब मैं उधर से मुँह मोड़ लूँ।'

पावेल—मुझे तो यही सबसे उत्तम प्रतीत होता है!

नखोदका—अच्छी बात है। हमलोगों के लिये यही मार्ग समीचीन है। पर जब तुम्हारे सिर पड़ेगी तब देखेंगे।

पावेल—हमारे सिर तो पड़ चुकी है!

नखोदका—मैं भी कुछ-कुछ समझता हूँ।

हवा जोरों की चल रही थी और घड़ी टिक-टिक कर रही थी।

नखोदका ने कहा—'पर यह बड़ा बुरा है।'

माँ तकिए में मुँह गड़ाकर रोने लगी।

सबेरे माँ को नखोदका और भी बालक तथा आकर्षक मालूम होने लगा। पर पावेल उसी प्रकार दुबला-पतला लंबा और कठोर दिखाई दिया। सामना होते ही स्नेह-सने शब्दों में माँ ने कहा—'नखोदका, जरा जूते की मरम्मत तो करा लो। एकदम फट गया है। सर्दी लग जाने का भय है।'

उसने हँसकर कहा—'इस महीने का वेतन मिलने पर हम नया बूट ही खरीद लेंगे।' यकायक माँ के कंधे पर अपना दोनों

हाथ रखकर उसने कहा—'माँ, तुम्हीं मेरी जननी हो, पर मैं बद-सूरत हूँ इससे तुम मुझे स्वीकार नहीं करती।'

माँ उसको चुमकारने लगी। उसका हृदय प्रेम से सिक्त हो गया था। वह कुछ कहना चाहती थी पर वात्सल्य रस का वेग उमड़ आया और उसके गले से बाहर शब्द न निकल सके।

× × × ×

गाँव में साम्यवादियों की जोरों में चर्चा थी। साम्यवादी देहातों में परचे बाँटा करते थे। इन परचों में कारखानों के जुल्मों का विशद वर्णन रहता था। मजदूरों की हड़तालों की चर्चा रहती थी। और मजदूरों को संगठित होने और इस विषम अवस्था के विरुद्ध संग्राम करने के लिये अपील रहती थी।

जिन लोगों को बड़ी-बड़ी तनखाहें मिलती थीं वे इन परचों को पढ़कर जल जाते थे और कहते थे—'ये लोग क्रांति का बीज बो रहे हैं। इसके लिये इनकी आँखें निकवा लेनी चाहिएँ।' और ये लोग इन परचों को ले जाकर अफसर को देते थे।

नौजवान इन परचों को उत्सुकता के साथ पढ़ते थे और जोश के साथ कहते थे—'सब सच लिखा है।'

कारखाने ने जिन लोगों की हालत निरीह बना दी थी और निराशा ने जिन्हें घेर लिया था वे कहते कुछ होने जाने का नहीं है। यह सब असंभव है!

लेकिन परचों से एक तरह की उत्तेजना फैलने लगी। जब कभी बिना परचे के एकाध सप्ताह गुजर जाता तो लोग आपस में

कहने लगते—इस हफ्ते में कोई परचा नहीं निकला। मालूम होता है छापना रोक दिया गया है।

दूसरे ही दिन जब फिर परचा लोगों को मिलता तो फिर उसी प्रकार उसकी चर्चा छिड़ जाती।

सरायों और कारखानों में नई-नई सूरतें दिखाई देने लगीं। ये लोगों की जाँच करते, उनसे प्रश्न करते इससे लोगों का ध्यान इनकी ओर खिंचने लगा।

माँ जानती थी कि यह सब उत्तेजना पावेल के ही प्रयास का फल है। वह देख रही थी कि लोग किस प्रकार इसके चारों ओर इकट्ठे हो रहे हैं। वह अकेला नहीं है इसलिये किसी तरह का भय नहीं है। पर जहाँ एक ओर उसे अपने बेटे के लिये अभिमान था वहाँ दूसरी ओर उतना ही भय भी था क्योंकि उसके ही गुप्त प्रयास से इस संकीर्ण और गंदे जीवन में यह नया निर्मल स्रोत बह निकला था।

एक दिन शाम को उसकी पड़ोसिन बढ़इन ने खिड़की का दरवाजा खटखटाया। माँ दरवाज़े पर गई तो उसने दबी जबान से कहा—'निलोना, सावधान हो जाओ। आज रात को तुम्हारे निकोले और मेजिन के घरों की तलाशी होनेवाली है।

• माँ ने केवल उसकी आधी ही बातें सुनीं क्योंकि पड़ोसिन घबराई हुई थी और रह-रहकर चारों ओर इस प्रकार भय से ताक रही थी कि कहीं उसे कोई देख न ले।

उसने चलते-चलते कहा—'मेरा नाम किसी से न लेना! अगर

कोई पूछे भी तो कह देना कि मुझसे तो भेंट तक नहीं हुई थी।'

माँ ने खिड़की बंद कर दी और कमरे में आकर एक कुर्सी पर धड़ाम से गिर पड़ी। उसका शरीर शून्य हो गया और दिमाग चक्कर खाने लगा। पर आनेवाली विपत्ति की संभावना से वह चैतन्य हो उठी। उसने कपड़ा पहना और सिर में चादर लपेट-कर फीडियामेजिन के घर दौड़ी गई। उसे मालूम था कि फीडिया बीमारी के कारण आजकल काम पर नहीं जाता है। दूर से ही उसने देखा कि वह खिड़की के पास बैठा किताब पढ़ रहा है। संवाद पाकर उसका चेहरा पीला पड़ गया, उसके होंठ काँपने लगे और वह घबरा गया। बोला—'इधर आपने यह भयानक समाचार दिया और उधर मेरे अँगूठे में घाव हो गया है।'

पसीना पोंछती हुई माँ ने कहा—'अब करना क्या चाहिए?'

फीडिया—इस तरह घबराकर अधीर न होइए। जरा दम लीजिए।

माँ—तुम तो स्वयं भय से घबरा रहे हो।

फीडिया—मैं! हाँ, मैं बहुत जल्दी घबरा जाता हूँ। पर इससे क्या? पावेल के पास मैं अपनी छोटी बहिन-द्वारा संवाद भेज देता हूँ। आप निश्चिंत हो घर जाइए। वे लोग हमलोगों को पीटेंगे नहीं।

घर पहुँचकर उसने सब किताबों को इकट्ठा किया और कपड़े के नीचे उन्हें छिपाकर घर में चारों ओर घूमने लगी। वह कभी भट्ठे की ओर जाती, कभी चिमनी की तरफ जाती और कभी

नल की तरफ जाती। उसे आशा थी कि संवाद पाकर पावेल तुरंत घर आवेगा। लेकिन वह नहीं आया। अंत में वह थककर किताब लिए ही रसोई-घर में बेंच पर बैठ गई और जब तक पावेल और नखोद्का कारखाने से लौटकर नहीं आए उसी तरह बैठी रही।

उन लोगों के घर में प्रवेश करते ही माँ ने पूछा--'क्या तुम्हें मालूम है ?'

पावेल ने प्रकृत हँसी से कहा—'मैं सब कुछ जानता हूँ। क्या तुम डर गई।'

माँ—ओह ! डर से मेरे प्राण निकलने चाहते हैं।

नखोद्का—डरने से कोई लाभ नहीं।

पावेल—खाना भी तैयार नहीं किया ?

माँ ने किताबों की ओर इशारा करते हुए कहा—'इन्हीं के कारण। उस समय से अब तक मैं इन्हें.....।'

माँ की दशा देखकर दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े। इससे माँ को कुछ शांति मिली। पावेल किताबों को लेकर हाते में छिपाने के लिये चला गया और नखोद्का खाना बनाने लगा।

उसने कहा—'माँ, इन तलाशियों में भय की कोई बात नहीं। वे सब तो बेहये हैं कि इस तरह के जलील काम में लगे रहते हैं। बड़े-बड़े बूढ़े अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित आवेंगे और तलाशी शुरू कर देंगे। ओढ़ना बिछौना, आलमारी संदूक सभी देख डालेंगे। टाँड़ पर चढ़ जायँगे, तहखाने में घुस जायँगे। घर की इंच-इंच जमीन

ढूँढ डालेंगे। शर्म के मारे गड़ते जायँगे और उसे छिपाने के लिये विकृत और भयानक रूप बनाए रहेंगे। यह बड़ा ही निकृष्ट काम है। उसे ये सब भलीभाँति समझते हैं पर बाज नहीं आ सकते। एक बार मेरे घर की तलाशी लेने आए। जहाँ कहीं जो कुछ मिला फेंक दिया और अपना-सा मुँह लेकर चले गए। दूसरी बार आए, मुझे पकड़ ले गए और जेल में डाल दिया। मैं भी चार महीने पड़ा रहा। बहुत दिनों तक तो किसी ने पूछा तक नहीं फिर पुलिस की हिरासत में परेड शुरू हुई और सवाल पर सवाल किए जाने लगे। सबके सब ऐसे बेवकूफ होते हैं कि बेकार के प्रश्न करते हैं। जब उससे मतलब नहीं निकला तो फिर जेल में भेज दिया। इसी प्रकार इधर-उधर घुमा फिराकर छोड़ देते हैं। यदि ऐसा न करें तो उनकी नौकरी न रहे।

माँ ने कहा—'तुम बोलते किस तरह हो ?'

आग जलाते-जलाते उसने कहा—'क्यों ? मैं किस तरह बोलता हूँ ?

माँ—तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुम्हारे साथ किसी ने अन्याय नहीं किया।

नखोदका—(माँ के पास जाकर) इस विश्व में कौन ऐसा प्राणी होगा जिसके साथ अन्याय न किया गया हो ? पर मेरे साथ इतना अधिक अन्याय किया गया है कि मेरे हृदय से उसकी भावना ही उठ गई है। यदि लोग बुराई करने से बाज नहीं आ सकते तो चारा ही क्या है ? मेरे साथ जो अन्याय किया जाता है

उससे हमारे काम में भारी बाधा पड़ती है। पर उनसे पिंड छुड़ाना असंभव है। इसलिये उनका ख्याल करना ही व्यर्थ है, समय नष्ट करना है पहले इस अवस्था से मैं खिन्न हो जाया करता था पर मैंने देखा कि सबकी हालत विपन्न है। सबके हृदय टूटे हुए हैं। एक को दूसरे से भय हो गया है कि कहीं वह मुझे नुकसान न पहुँचावे और इसीलिये वही चट से उसे नुकसान पहुँचाने के लिये उद्यत हो जाता है। यही वर्तमान जीवन है।

उसने ये बातें बड़ी शांति के साथ कहीं। इन बातों का माँ पर इतना ज्यादा प्रभाव पड़ा कि पुलिस और तलाशी का भय उसके मन से जाता रहा। उसकी आँखों में इस तरह का तेज था जिससे स्पष्ट प्रगट होता था कि इसकी बलवती आत्मा कभी भी टूट नहीं सकती।

माँ ने दीर्घनिस्वास लिया और बोली—'भगवान तुम्हें सुख और समृद्धि दें।'

नखोदका ने कहा—'यदि भगवान हमें सुख देंगे तो हम इनकार भी नहीं करेंगे, पर मैं उनसे कभी मागूँगा नहीं और सुख के लिये प्रयास करने का तो मेरे पास समय ही नहीं है।'

इतना कहकर वह सीटी बजाने लगा। इतने में पावेल वापस आया और बोला—'अब उन लोगों को उन किताबों की गंध तक नहीं मिल सकती।' इतना कहकर वह हाथ धोने लगा और अपनी माँ की ओर लक्ष्य करके बोला—'लेकिन यदि तुमने जरा भी भय का भाव दिखलाया तो उन लोगों को संदेह हो जायगा कि इस घर में

कुछ आपत्तिजनक वस्तु अवश्य है। वास्तव में हमलोगों ने कोई बुरा काम नहीं किया है और न वैसा करने की नियत ही है। हमलोग सत्यमार्ग पर हैं और उसपर अविचल रहेंगे। अगर सत्यमार्ग पर चलना अपराध है तो हमें उसकी परवाह नहीं।

माँ—मैं जरा भी घबराहट नहीं दिखलाऊँगी। मेरी ओर से तुम निश्चिंत रहना। पर परेशानी को दबा न सकने के कारण उसने कहा—'आना ही है तो वे सब शीघ्र क्यों नहीं आते। जितनी जल्दी यह झंझट मिट जाय, अच्छा है।'

उस रात को तलाशी नहीं हुई। प्रातःकाल लोगों के मजाक से बचने के लिये माँ ने सबेरे ही हँसना शुरू किया।

छठवाँ परिच्छेद

तलाशी का वारंट ऐसे समय मिला जब उनलोगों ने उसकी एकदम आशा नहीं की थी।

एक महीने बाद की बात है; निकोले, पावेल और नखोदका बैठे अखबार निकालने का मशविरा कर रहे थे। आधीरात बीत गई थी। माँ सोने चली गई थी और विस्तर पर पड़ी अर्धनिद्रित अवस्था में उनलोगों की फुसफुसाहट सुनने का यत्न कर रही थी। नखोदका अपनी जगह से उठा और बाहर गया लेकिन वह तुरंत लौटकर आया और बोला—'सड़क में जूतों की आवाज सुनाई दे रही है।'

माँ उठ बैठी और घबड़ाहट के मारे अपने कपड़े सम्हालने लगी। पावेल ने उसे रोककर कहा—'तुम्हारी तबियत खराब है। चुपचाप पड़ी रहो।'

बरामदे में किसी के दबे पैर चलने का शब्द सुनाई दिया। पावेल दरवाजे के पास गया और खोलकर उसने पूछा—'कौन है ?'

उसी वक्त एक लंबा भूरा आदमी भीतर घुस पड़ा और दो कांस्टेबुलों ने पावेल को घेर लिया और किसी ने ताना देकर कहा—'जिनकी तुम प्रतीक्षा में हो उनमें-से कोई नहीं।'

ये शब्द एक अफसर के थे। वह कद का लंबा, शरीर का पतला और काली मोछोंवाला था। इंस्पेक्टर माँ के कमरे में घुस गया और उसकी ओर भयावनी सूरत से देखकर अफसर से बोला—'यह उसकी माँ है और (पावेल की ओर इशारा करके) वह पावेल है।'

अफसर ने आँखें दबाते हुए पूछा—'तुम्हारा ही नाम पावेल वासो है।'

पावेल ने सिर हिलाकर संमति जताई।

अफ़सर—मुझे इस मकान की तलाशी लेनी है।

इतना कहकर वह पीछे की ओर घूमा और बैठक के दरवाजे पर धक्का देते हुए उसने पूछा—'और कौन कौन है ?'

इसी समय बरामदे में-से दो और आदमियों ने घर में प्रवेश किया। दोनों उसी गाँव के रहनेवाले थे।

पावेल की माँ उठ खड़ी हुई और धैर्य धारण करने के लिये अपने आप कहने लगी—'यह कैसी बात है। ये लोग रात को धावा करते हैं। लोग सो रहे हैं। और ये लोग इस तरह आ जाते हैं।'

कमरा छोटा ही था और उसमें-से एक तरह की गंध आ रही थी। दोनों इंस्पेक्टरों और कांस्टेबिलों ने आलमारी में-से किताबें लाकर अफसर के सामने टेबुल पर रखनी शुरू कीं। दो आदमी घूसों से दीवाल ठोंकने लगे। एक कुर्सियों के नीचे देखने लगा और एक कोना-अँतरा ढूँढ़ने लगा। निकोले का चेहरा लाल हो गया उसने अफसर की ओर घूरकर देखा। नखोदका खड़ा-खड़ा अपनी मोछें ऐंठ रहा था और जब माँ ने कमरे में प्रवेश किया उसने हँसकर सिर हिला दिया।

भय को छिपाने के लिये माँ ने झुककर चलना मुनासिब नहीं समझा। छाती ताने हुए उसने कमरे में प्रवेश किया।

अफसर किताबों को उठाता। इधर-उधर उलटता-पलटता और जमीन पर फेंक देता। कमरे में पूर्ण सन्नाटा था। कभी-कभी अफसर की आवाज सुनाई देती—'वहाँ देख लिया!'

माँ पावेल की बगल में दीवाल के सहारे खड़ी थी। उसके दोनों हाथ छाती पर थे और अपने लड़के की भाँति अफसर की ओर आदर के साथ देख रही थी। इसे मालूम हुआ कि उसके पैर काँप रहे हैं, उस वक्त उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा रहा था।

अफसर को इस तरह किताबें फेंकते देखकर निकोले बोल उठा—'इस तरह किताबें जमीन पर क्यों पटकते हो ?'

माँ काँप उठी। दोनों गाँववाले इस प्रकार चौंक उठे मानों पीछे से किसी ने धौल जमाई हो। अफसर ने सिर उठाया, आँखें दबाई और क्षणभर निकोले की ओर देखकर तेजी के साथ पन्ने उलटने लगा। उसका चेहरा पीला था और वह बार-बार अपने होठों को चबा रहा था। कभी-कभी वह इस प्रकार तरेरता मानों उसकी आँखों में भयानक पीड़ा हो रही हो और वह चीखना ही चाहता हो।

निकोले ने एक सिपाही से कहा—'किताबें उठा लो।'

कांस्टेबिलों की निगाहें उसकी तरफ फिरीं ये लोग अफसर का मुँह देखने लगे। उसने फिर सिर उठाया और निकोले की ओर गौर से देखकर बोला—'किताबें समेट दो।'

एक सिपाही झुका और निकोले की ओर कनखियों से देखता हुआ किताबें समेटने लगा।

माँ ने पावेल के कान में कहा—'निकोले चुप क्यों नहीं रहता।' पावेल ने गर्दन हिला दी। नखोदका ने सिर नीचा कर लिया।

अफसर—शांति ! बाइबिल कौन पढ़ता है ?

पावेल—मैं !

अफसर—और ये सब किसकी किताबें हैं ?

पावेल—मेरी।

अफसर—'ठीक है!' कुर्सी के सहारे लेटकर उसने निकोले से पूछा—'तुम्हारा ही नाम अंद्रे नखोदका है?'

निकोले ने आगे बढ़कर कहा--'हाँ!' इतने में नखोदका ने उसे पीछे खींच लिया और बोला—'उसने गलती की है। मेरा नाम नखोदका है।'

अफसर ने सिर उठाया और निकोले को डाँटकर बोला--'खबरदार!'

इसके बाद वह कागजों के बंडलों की देखभाल करने लगा। खिड़की से चांदनी कमरे में पड़ रही थी। बाहर कोई टहल रहा था और उसके पैर के नीचे बरफ कड़कड़ा रही थी।

अफसर ने नखोदका से पूछा --'इससे पहले राजनीतिक मामले में तुम्हारी तलाशी हो चुकी है?'

नखोदका—हाँ, रोस्टोव और सरटोव में मेरे घर की तलाशी ली गई थी। पर वहाँ के अफसरों ने सब काम सम्मान के साथ किया था।

अफसर ने अपनी दाहिनी आँख दबाकर और हँसकर कहा—'अच्छा, कहिए मिस्टर नखोदका, क्या आप बतला सकते हैं कि कारखानों में गैरकानूनी परचे और किताबें कौन दुष्ट बाँटता है।'

नखोदका के चेहरे पर मुस्कुराहट दौड़ने लगी। वह उत्तर देने ही वाला था कि निकोले बोल उठा—'यह पहला ही अवसर है कि दुष्टों से संसर्ग हुआ है।'

कमरे में सन्नाटा छा गया। माँ का चेहरा जर्द हो गया। रिबिन की दाढ़ी हिलने लगी और वह हाथ मलने लगा। गुस्से से लाल होकर अफसर ने कहा—'इस कुत्ते को यहाँ से दूर करो।'

दोनों कांस्टेबिलों ने निकोले को पकड़ लिया और ठेलते हुए रसोई-घर में ले गए। वहाँ उसने पैर पटककर कहा—'ठहरो, हमें कोट पहन लेने दो।'

इतने में पुलिस-कमिश्नर हाते की ओर से आया और बोला—'यहाँ कुछ नहीं है। हमलोगों ने इंच-इंच जगह खोज डाली।'

अफसर—मैं तो पहले से ही जानता था। यहाँ एक पुराना पापी रहता है। यहाँ किसी तरह की आशा करनी व्यर्थ थी।

माँ उसकी नीरस बातें सुन रही थी। उसके चेहरे से निष्ठुरता और हिंसा के भाव टपक रहे थे। मानव-समाज के प्रति घृणा के भाव उसके हृदय में स्पष्ट झलक रहे थे। कुछ दिन पहले उसने ऐसे आदमियों को बहुधा देखा था पर इधर तो वह उन्हें एकदम भूल गई थी उसे यह भी ख्याल नहीं था कि ऐसे आदमी संसार में हैं। उसने अपने मन में कहा—'इसी अफसर को पावेल और उसके साथियों ने उत्तेजित किया है।'

अफसर—मिस्टर नखोद्का, मैं आपको गिरफ्तार करता हूँ।

नखोद्का ने पूर्ण शांति के साथ पूछा–'किस अपराध में?'

अफसर—यह आपको पीछे बतलाया जायगा।

इसके बाद उसने माँ से पूछा—'तुम लिख-पढ़ सकती हो?'

पावेल—नहीं।

अफसर—(कड़ककर) मैंने तुमसे नहीं पूछा है। (माँ से) तुम लिख-पढ़ सकती हो।

माँ थरथर काँप रही थी मानों घड़ों ठंढे जल से उसे नहलाया गया हो। अफसर की बात पर वह तनकर खड़ी हो गई और घृणा के साथ उसकी ओर हाथ बढ़ाकर बोली—'इतना चिल्लाते क्यों हो, अभी तुम नौजवान हो। मुसीबत का सामना नहीं पड़ा है।'

पावेल ने रोककर कहा—'माँ, शांत हो।'

नखोद्का—हृदय को कड़ा करके सब बरदाश्त करना होगा।

माँ—'ठहरो!' इतना कहकर वह टेबुल के पास गई और अफसर से पूछने लगी—'इस तरह आपलोग क्यों लोगों को पकड़ ले जाते हैं?

अफसर ने खड़े होकर कहा—'तुम्हें इससे मतलब! चुप रहो।'

वारंट को जोर से पढ़ते हुए अफसर ने कहा—'निकोले अभियुक्त—निकोले को यहाँ लाओ!'

निकोले लाया गया। अफसर ने किताब से आँख हटाकर कहा—'हैट उतार लो।'

रिबिन माँ के पास गया और सांत्वना देते हुए बोला—'माँ, उत्तेजित होना उचित नहीं।'

निकोले—मेरे दोनों हाथ पकड़े हुए हैं। मैं हैट कैसे उतार सकता हूँ।

अफसर ने वारंट टेबुल पर पटककर कहा—'इस पर दस्तखत करो।'

माँ ने देखा कि एक-एक करके सबों ने उसपर दस्तखत कर दिए। उसकी उत्तेजना कम हो गई और उसका हृदय नरम हो गया। उसकी आँखों में आँसू आ गए। ये अपमान और विवशता के आँसू थे। विवाह के बाद बीस वर्ष तक वह बराबर इसी तरह आँसू बहाती रही थी पर इधर वर्षों से वह इसकी विषमता को भूल-सी गई थी।

अफसर ने उसे घृणा से देखा और बोला—'तुम समय से आगे बढ़ रही हो। अभी से सावधान हो जाओ, नहीं तो भविष्य के लिये आँसू भी नहीं रह जायँगे।'

माँ—माँ का हृदय ही आँसू से बना हुआ है। अगर तुम्हारी माँ है तो वह इसे भली-भाँति जानती है।

कागजों को अपने बक्स में रखते हुए अफसर ने पुलिस-कमिश्नर से कहा—'यहाँ ये लोग कैसे गुलछर्रे उड़ाते हैं। यही तुम्हारी निगरानी है?'

कमिश्नर—सबके सब बेवकूफ हैं!

अफसर ने कहा—'सबको आगे बढ़ाओ।'

पावेल ने नखोदका और निकोले से हाथ मिलाते हुए कहा—'वंदे भाइयो!'

अफसर ने ताने के साथ कहा—'जब तक हमलोग फिर न मिलें तब तक के लिये!'

निकोले ने पावेल का हाथ दबाया और लंबी साँस ली। क्रोध से उसका चेहरा तमतमा रहा था और आँखें लाल हो रही थीं। नखोदका हँस रहा था। उसने सिर झुकाकर सबको प्रणाम किया और माँ से कुछ कहा।

उत्तर में माँ ने कहा—'सत्य की रक्षा भगवान करते हैं।'

धीरे-धीरे सब लोग बिदा हो गए। रिबिन सबसे पीछे गया। चलते वक्त उसने पावेल के ऊपर मर्मभरी दृष्टि डाली और खाँसता हुआ बाहर हो गया।

पावेल अकेला रह गया। वह पोथियों के ऊपर कमरे में टहलने लगा और बोल उठा—'कितने अपमान के साथ आज नाटक का अंत हुआ है। मुझे सबों ने छोड़ दिया।'

माँ ने कमरे में चारों ओर घबराहट के साथ देखा और उदास होकर बोली—'निश्चय ही तुम्हें भी वे लोग लेही जायँगे। पर निकोले ने इस तरह की उद्दंडता क्यों दिखलाई ?'

पावेल—मुझे मालूम होता है कि निकोले घबरा गया। उन सबों से बातें करना असंभव है क्योंकि वे सब किसी की परवाह नहीं करते।

माँ ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा—'वे आए और पकड़ कर ले गए।' पावेल के बच जाने से माँ को थोड़ा संतोष अवश्य था। वह बारबार अफसर की बातों को सोचती थी—वह किस प्रकार घुड़कता था और रह-रहकर धमकियाँ देता था।

पावेल ने कहा—'अच्छी बात है। चलकर सब चीजें समेट दी जायँ।'

माँ ने निकट जाकर पूछा—'उन्होंने तुम्हारा अपमान किया ?'

पावेल—घोर अपमान ! अच्छा होता कि मुझे भी उन्हीं के साथ गिरफ्तार करके ले गए होते।

माँ ने देखा कि पावेल की आँखों में आँसू भर आए उसे संतोष देने के लिये उसने कहा—'तुम्हें भी जल्द ही ले जायँगे।'

पावेल—यह तो मैं भी जानता हूँ।

क्षण भर ठहरकर माँ ने दुःखी होकर कहा—'तुम बड़े ही कठोर हो। आश्वासन के एक भी शब्द तुम्हारे मुँह से नहीं निकलते। यदि मेरे मुँह से कोई भयानक बात निकलती है तो तुम उससे भी भयानक कह डालते हो।'

पावेल अपनी माँ के निकट चला गया और बोला—'मैं तुमसे झूठ नहीं बोल सकता। तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता। तुम्हें इससे भी भीषण बातें सुनने और देखने के लिये तैयार रहना चाहिए।'

सातवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन मालूम हुआ कि बकिन, समोलो, समोव तथा अन्य पाँच व्यक्ति भी गिरफ्तार किए गए हैं। शाम को फीडियामेजिन ने आकर कहा कि मेरे घर की भी तलाशी हुई थी, वह अपने को वीर समझने लगा।

माँ ने पूछा—'तुम डरे तो नहीं ?'

फीडिया—मुझे डर था कि कहीं वह अफसर मुझे पीटे न ! उसका हृष्ट-पुष्ट शरीर, बालदार बाहें और काली दाढ़ी देखकर बड़ा भय लगता था। काले चश्मे के भीतर आँखें एकदम लापता हो गई थीं। वह रह-रहकर चिल्लाता था, जमीन पर अपना पैर पटकता था और मुझे धमकाता था कि तुम्हें जेल में सड़ा डालूँगा। आजतक मुझे घर पर भी कभी मार नहीं पड़ी है। मैं अपने बाप का एकलौता हूँ। इससे मेरे माता-पिता मुझे अत्यधिक प्यार करते हैं।

क्षण भर के लिये उसने आँखें बंद कर लीं, होठों को दबाया और दोनों हाथों से केशों को सँवारते हुए बोला—'अगर कोई मुझे पीटने का प्रयास करेगा तो मैं छूरे की तरह उसके शरीर में अपना सारा बदन घुसेड़ दूँगा। मैं उसे दाँतों से काटूँगा। अच्छा हो कि वह मुझे एकबारगी जान से मार डाले।'

पावेल—अपनी रक्षा करने का तुम्हें अधिकार है पर किसी पर आमक्रण करने का नहीं।

माँ—तुम तो दुबले-पतले और कोमल हो। तुम लड़ोगे किस प्रकार ?

फीडिया—मैं खूब लड़ूँगा।

उसके जाने के बाद माँ ने कहा—'यह युवक दूसरों से पहले पकड़ा जायगा।'

पावेल चुप रहा।

क्षण भर बाद दरवाजा खुला और रिबिन ने प्रवेश किया। अभिवादन करते हुए उसने कहा—'मैं आज फिर आ गया। कल तो वे लोग मुझे पकड़कर लाए थे और आज मैं स्वयं आया हूँ।' इतना कहकर उसने पावेल से हाथ मिलाया और माँ से कहा—'क्या एक प्याला चाय पिलाओगी ?'

रिबिन का चेहरा चौड़ा था, दाढ़ी घनी और काली थी उसकी सुंदर आँखों से गंभीरता के भाव टपकते थे। उसे देखकर श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होता था। पावेल चुपचाप उसकी ओर देखने लगा।

माँ रसोई-घर में चली गई। रिबिन बैठ गया उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और ठेहुनी को टेबुल पर रखकर पावेल की ओर दृष्टि डाली।

बातचीत का सिलसिला शुरू करने की गरज से उसने कहा—'मैं तुमसे स्पष्ट बातें करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारी गति-विधि की देख-रेख बहुत पहले से ही कर रहा हूँ। मैं तुम्हारे पड़ोस में ही रहता हूँ। मैं देखता हूँ कि तुम्हारे घर पर रोजाना लोगों की भीड़ लगी रहती है पर किसी तरह का शोर-गुल नहीं सुनता। यही बात मार्के की है। जहाँ दस आदमी इकट्ठे होने लगे और उनकी मजलिस से किसी तरह की शैतानी की बू नहीं आई कि अधिकारियों को शक होने लगा। लोगों का ध्यान उस तरफ गया। इसका मतलब ? तुम सबसे दूर रहते हो किसीको कष्ट नहीं देते इसीलिये सबकी आँखों में खटकने लगे।'

उसकी वक्तृता का प्रवाह अनवरत गति से बढ़ता जा रहा था। उसमें विश्वास के बीजाणु थे।

वह कहता गया—'सब लोगों के मुँह पर तुम्हारी चर्चा है। हाकिम लोग तुम्हें नास्तिक कहते हैं क्योंकि तुम गिरजा में नहीं जाते। मैं भी नहीं जाता। इधर इन परचों का उदय हुआ। क्या यह तुम्हारी सूझ थी?'

रिबिन के चेहरे की ओर देखते हुए पावेल ने कहा—'हाँ।'

रिबिन की आँखें पावेल के चेहरे पर गड़ी थीं।

इसी वक्त माँ ने कमरे में प्रवेश किया और बोली—'तुमने अकेले ही थोड़े यह सब किया था?'

पावेल और रिबिन दोनों ने मुस्कुरा दिया।

माँ वापस चली गई। उसे इस बात से दुःख हुआ कि उन्होंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया!

रिबिन—परचों की लिखावट बड़ी ही सुंदर है। मजदूरों के कान खड़े कर देती है। कुल बारह परचे निकले थे न?

पावेल—हाँ।

रिबिन—मैंने एक-एक को पढ़ा है। कोई-कोई स्पष्ट नहीं रहते और किसी-किसी में कुछ फजूल बातें भी रहती हैं। पर इतना अधिक लिखने में विषयांतर हो जाना स्वाभाविक है।

इतना कहकर वह मुस्कुराने लगा और फिर बोला—'और इस तलाशी ने मुझे भी तुम्हारे पक्ष का बना दिया। तुम, व्सोद्का और निकोले तीनों पकड़े गए।' इतना कहकर वह

इस प्रकार रुक गया मानों अपने भाव को प्रगट करने के लिये उसे उपयुक्त भाषा न मिल रही हो। टेबुल पर अँगुली चलाते हुए वह खिड़की की तरफ देखने लगा और बोला—'तुमलोगों का अभिप्राय उन्हें मालूम हो गया। तुम लोगों ने उत्तर दिया—आप लोग अपने कर्तव्य का पालन कीजिए और हमलोग अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। नखोदका भी बड़ा ही अच्छा युवक है। कारखाने में उसकी बातचीत निराली ही होती है। उस दिन उसकी बातें सुनकर मुझे पक्का विश्वास हो गया कि इस व्यक्ति पर मृत्यु के अतिरिक्त दूसरा कोई विजय नहीं पा सकता। तुम्हारा उसका दिल मिला हुआ है ?'

पावेल—हाँ।

रिबिन—मेरी उमर ४० वर्ष की हुई। तुमसे मैं २० वर्ष बड़ा हूँ और इस संसार का २० वर्ष का तुमसे अधिक अनुभव भी मुझे है। तीन वर्ष तक मैं सेना की परेड में पैर रगड़ता रहा। मैं काकेशिया भी हो आया हूँ। मैं इन पूँजीपतियों को खूब जानता हूँ। वे किसी की जान के मालिक नहीं हैं।'

माँ उत्सुकता के साथ रिबिन की स्पष्ट बातें सुन रही थी। उसे इस बात का संतोष था कि एक वयस्क व्यक्ति भी उसके पुत्र के सामने अपना क़िस्सा कह रहा है और पावेल उसकी ओर उतना उत्सुक नहीं है। विशेष सत्कार दिखलाने की अभिलाषा से माँ ने रिबिन से कहा—'कुछ खाओगे भी ?'

रिबिन—मैं भोजन करके आया हूँ। (पावेल से) तुम्हारा

मत है कि हमलोगों के जीवन का स्रोत निर्धारित मार्ग से होकर नहीं बह रहा है।

रिबिन की बातें सुनकर पावेल अपनी जगह से उठा। दोनों हाथों को पीछे की ओर मोड़कर कमरे में टहलने लगा। बोला—मेरी समझ में वह ठीक स्रोत में बह रहा है। यदि ऐसा न होता तो तुम इस तरह दिल खोलकर बातें कभी न करते। धीरे-धीरे मजदूरों में एकता के भाव उदय हो रहे हैं। वह दिन दूर नहीं है जब सभी मजदूर एकता के दृढ़-बंधन में बँध जायँगे। हमलोगों के जीवन की समस्या विषम है और इसीलिये वह बोझ प्रतीत होती है। पर वही विषमता हमलोगों की आँखें खोल रही है और उसकी प्रगति को उचित मार्ग पर ले चलने के लिये उपाय बता रही है। जैसे लोगों के रहन-सहन होते हैं उसी तरह के लोगों के विचार भी होते हैं।'

रिबिन—तुम्हारा कहना ठीक है। पर मनुष्य को सुधार का नया रूप देने की आवश्यकता है। गंदे आदमी को स्नान कराकर सुंदर वस्त्र पहना दो तो वह भला मालूम होने लगता है। इसी तरह से जब हृदय पर काई जम जाती है तो उसे भी छीलने की जरूरत पड़ती है। चाहे इस क्रिया में उससे रक्त ही क्यों न निकलने लगे पर उसे साफ करके ही उस पर मलहम-पट्टी की जाती है। दूसरा उपाय ही क्या है?

पावेल ईश्वर, ज़ार-सरकार, अधिकारी-वर्ग और कारखानों आदि की निंदा करने लगा। उसने बतलाया कि विदेशों में किस

प्रकार मजदूर अपने अधिकार के लिये अनवरत संग्राम करते हैं। रिबिन बराबर मुस्कुरा रहा था। कभी-कभी वह टेबुल पर अपना हाथ इस प्रकार पटक देता मानों किसी बात पर जोर दे रहा हो। बीच-बीच में "हां" कह देता। एकबार उसने हँसकर कहा—'तुम अभी नौजवान हो। तुम्हें संसार का बहुत ही थोड़ा अनुभव है।'

पावेल ने उसकी बातें काटकर कहा—'हमलोगों को जवान और बूढ़े का विचार नहीं करना है। देखना केवल यह है कि किसके विचार समीचीन हैं?'

रिबिन—तुम्हारे विचार से तो ईश्वर के बारे में भी लोगों को धोखा दिया गया है। मेरी भी धारणा है कि हमलोगों का वर्त्तमान धर्म विडंबना है और इससे हमलोगों की हानि हो रही है।

जिस वक़्त पावेल ने ईश्वर आदि के विरुद्ध चर्चा छेड़ी, जिसका संबंध विश्वास से था और जो माँ को बहुत ही प्रिय और पूजनीय था, माँ ने उसे रोका। वह उससे कहने जा रही थी कि इस तरह की नास्तिकता की बातें कहकर मेरा जी मत दुखाओ। माँ की धारणा थी कि इस तरह की बातों से रिबिन को भी वेदना होगी पर जब रिबिन ने भी पावेल के ही मत का समर्थन किया तब तो वह अपने को किसी भी प्रकार सम्हाल न सकी और बोली—'ईश्वर के संबंध में कुछ कहते समय तुम्हें सावधान रहना चाहिए। तुम जो मन में आवे करो। उसका पुरस्कार तुम्हारी सफलता है। मैं बुड्ढी हुई। यदि तुम मुझसे मेरे ईश्वर को भी छीन लोगे तो इस बुढ़ौती में मेरा कोई भी सहारा नहीं रह जायगा।'

उसकी साँस फूलने लगी, आँखों में आँसू भर आए और हाथ काँपने लगे ।

पावेल ने नरमी से कहा—'माँ, तुमने मेरा अभिप्राय नहीं समझा !'

रिबिन—मुझे क्षमा करना माँ। इतना कहकर पावेल की ओर देखकर उसने मुस्करा दिया। और माँ से फिर कहने लगा—'मुझे इस बात का ध्यान नहीं रहा कि तुम्हारी अवस्था के लोग अपने प्राचीन विचार को किसी भी प्रकार त्याग नहीं सकते।'

पावेल—मेरी शिकायत उस परमपिता के विरुद्ध नहीं है जिस पर तुम्हारी अटल श्रद्धा और भक्ति है। मैं तो उस ईश्वर की निंदा कर रहा था जिसके नाम पर गिरजों में हमलोगों को धमकियाँ दी जाती हैं, जिसके नाम पर समस्त जनसमूह को कुछ विशिष्ट जनों की कुवासनाओं का शिकार बनाया जाता है।

रिबिन ने टेबुल पर अँगुली हिलाते हुए कहा—'ठीक यही बात है। तुम्हारा कहना सर्वथा सत्य है। उन्होंने ईश्वर को भी पंगु बना दिया है। अपनी शक्ति भर उन्होंने सब कुछ हमलोगों के प्रतिकूल कर दिया है। तुम्हीं सोचो माँ, ईश्वर ने अपनी कल्पना के आधार पर अपनी इच्छा के अनुकूल आदमी को बनाया है। इसलिये यदि मनुष्य उसके समान है तो वह भी मनुष्य के समान है; लेकिन हमलोग तो पशु से भी खराब हो गए हैं। गिरिजों में उन्होंने चिड़ियों को ईश्वर का स्थान दे दिया है। हमलोगों को वही बदलना पड़ेगा। उन्होंने परमेश्वर को असत्य का जामा पहना

रखा है और हमलोगों की आत्मा का हास कराने के लिये उसके रूप को विकृत कर दिया है।'

वह धीरता, गंभीरता और शांति से बोल रहा था। उसके प्रत्येक शब्द स्पष्ट थे। उससे माँ के हृदय पर चोट लग रही थी। काली दाढ़ियों से घिरा हुआ उसका चेहरा उसे और भी भयभीत कर रहा था। उसकी काली चमकीली आँखों का तेज वह बरदाश्त नहीं कर सकती थी। उसके हृदय में पीड़ा होने लगी और वह काँप उठी। सिर हिलाकर बोली—'अच्छा होगा कि मैं यहाँ से चली जाऊँ। इन सब बातों को मैं नहीं सुन सकती।'

इतना कहकर वह रसोई-घर में चली गई। उसने रिबिन को कहते हुए सुना—'पावेल, तुम्हारा कहना ठीक है। वह हृदय में ही पैदा होता है, मस्तिष्क में नहीं। हृदय में दूसरा कुछ उत्पन्न ही नहीं हो सकता।'

पावेल—केवल विवेक से ही मनुष्य का उद्धार हो सकता है।

रिबिन ने ज़ोर देकर कहा—'विवेक से बल नहीं मिल सकता। बल देना हृदय का काम है, मस्तिष्क का नहीं।'

माँ विस्तरे पर जाकर लेट रही। उसने प्रार्थना तक नहीं की। उसका हृदय वेदनायुक्त और खिन्न था। रिबिन के प्रति उसके हृदय में घृणा के भाव उदय होने लगे। उसने अपने मन में कहा—'यह नास्तिक है, बलवाई है। न जाने कहाँ से आ पड़ा। क्या कहीं दूसरी ठौर ठिकाना नहीं था?'

वह शांति तथा निश्चिंतता से कहता गया—'गिरजों को एक-

दम खाली नहीं किया जा सकता। ईश्वर वेदना में रहता है। अगर उसे हृदय से हटा दिया जाय तो उसमें घाव हो जायगा। कोई नया मत स्थापित करना परम आवश्यक है। किसी ऐसे ईश्वर का निर्माण करना होगा जिसपर सबका विश्वास जमे। हमें न्याय-पति अथवा योद्धा नहीं चाहिए बल्कि ईश्वर चाहिए जो सबका शुभचिंतक हो।'

पावेल—ईसामसीह ऐसे ही थे।

रिबिन—ईसामसीह की आत्मा बलिष्ठ नहीं थी। उन्हें अपने ईश्वरत्व पर पूरा विश्वास नहीं था। उन्होंने सीजर का आदर किया था। ईश्वर मनुष्य-शक्ति का आदर नहीं कर सकता। वह तो स्वयं पूर्ण शक्ति है। वह यह नहीं कह सकता कि हमारी आत्मा का अमुक अंश ईश्वरत्व है और अमुक मनुष्यत्व! यदि ईसा-मसीह ईश्वर की अतुल शक्ति का प्रभाव दिखाने आए थे तो उन्हें मानव-शक्ति की सहायता की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन उन्होंने विवाह-शादी, वाणिज्य-व्यवसाय, सबका सहारा लिया। 'फिगट्री' की निंदा करना भी उनके लिये उपयुक्त नहीं था। क्या पेड़ का न फलना उसकी इच्छा पर निर्भर था। क्या कोई भी व्यक्ति आपही अपने ऊपर दोष का आरोपण कर सकता है? कभी नहीं।

दोनों की गरमागरम बहस से कमरा इस तरह गूँज रहा था मानों दोनों जोश में आकर लड़ने का उपक्रम कर रहे हों। पावेल तेजी के साथ कमरे में टहलने लगा। उसके पैर के नीचे की धरती

हिल रही थी। उसके शब्दों में उत्तेजना थी, उसकी वाणी में तीक्ष्णता थी लेकिन रिबिन नर्म और शांत था।

रिबिन—मैं उसी बात को अपनी भाषा में कहना चाहता हूँ। ईश्वर आग के समान है। वह किसी वस्तु की शक्ति को बढ़ाता नहीं। उसमें वह शक्ति नहीं है बल्कि जब वह प्रकाश देने लगता है तो स्वयं जलकर बुझ जाता है। वह गिरजों को जला देता है। वह उन्हें उठा नहीं सकता। उसका असली स्थान हृदय है।

पावेल—और मन भी!

रिबिन—ठीक है। हृदय और मन में दोनों जगह उसका निवास है। यही विपत्ति का कारण है। हर तरह की विपत्ति संताप और चिंता का यही कारण है। हमने आत्म से अपने को अलग कर लिया है। हृदय मस्तिष्क से अलग कर दिया गया और मस्तिष्क गायब हो गया। मनुष्य-समवाय नहीं है। ईश्वर मनुष्य को समवाय और संपूर्ण बनाता है। पूर्ण बनाने की उसकी प्रकृति है। उसने पृथिवी सूरज तारे सबको पूर्ण बनाया है। अधूरी चीजें मनुष्य-निर्मित हैं।

इसके बाद रिबिन चला गया। माँ सो गई इससे उसे उसका जाना नहीं मालूम हुआ।

रिबिन अधिक आने-जाने लगा पर जब पावेल के अन्य साथी उपस्थित रहते वह चुपचाप कोने में बैठा रहता अथवा कभी-कभी—'हाँ, ठीक है' कह देता।

एक बार सबकी ओर देखते हुए उसने कहा—'हमलोगों को

वर्तमान की ही चर्चा करनी चाहिए क्योंकि भविष्य के बारे में हमलोग कुछ नहीं जानते। जब लोग स्वाधीन हो जायँगे तो अपने लिए स्वयं सर्वोत्तम मार्ग ढूंढ लेंगे। जिन बातों की उन्हें सम्प्रति आवश्यकता नहीं है वे उनके दिमाग में भर दी गई हैं। इस तरह की क्रिया का यहीं अंत होना चाहिए। उन्हें अपने लिए व्यवस्था करने दीजिए। हो सकता है कि उन्हें कुछ भी पसंद न आवे अथवा सभी कुछ उन्हें अपने प्रतिकूल प्रतीत हो। उनके हाथ में किताबें रख दो और बाकी बातें उनके ऊपर छोड़ दो। वे उसका समुचित उत्तर स्वयं दे लेंगे। केवल एक बात का ध्यान रहे कि घोड़े की गर्दन जितनी अधिक कसी रहेगी उतनी ही असुविधा उससे काम लेने में होगी।'

पर जब कभी पावेल और रिबिन अकेले होते घंटों विवाद करते और माँ उत्सुकता के साथ उनकी बातें सुनती और उनका अभिप्राय समझने का यत्न करती। कभी-कभी तो उसे ऐसा प्रतीत होता मानों दोनों अंधे हो गए हैं। उस छोटे कमरे में रात के अँधेरे में ऐसा मालूम होता मानों दोनों प्रकाश और मार्ग के लिये टटोल रहे हैं और जो कुछ मिलता है उसे जोर से पकड़ लेते हैं, फिर मालूम होता है मानों जमीन पर गिर पड़े हैं और पैर के बल रेंग रहे हैं। हर चीज से ठोकर खाते हैं, उसे पकड़ते हैं और फेंक देते हैं, पर सदा शांत और गंभीर रहते हैं, आशा और विश्वास से पूर्ण हैं।

धीरे-धीरे माँ को उनकी बातें सुनने का अभ्यास हो गया।

जो शब्द उसे आरंभ में बड़े ही कटु और भयानक लगते थे उनसे भी वह धीरे-धीरे अभ्यस्त हो गई और उनकी कटुता न जाने कहाँ गायब हो गई। यद्यपि रिबिन से वह संतुष्ट नहीं थी पर उसके प्रति पूर्व का सा घृणा का भाव विद्यमान नहीं रहा।

सप्ताह में एक दिन वह नखोदका को कपड़े और पुस्तकें पहुँचा आती। एक बार उसे नखोदका से बातचीत करने की भी आज्ञा मिल गई। जेल से लौटकर उसने बड़े उत्साह से कहा—'जेल को तो उसने घर-सा बना लिया है। सब लोग उससे खुश हैं। सब लोग उससे मजाक करते हैं मानों उसके हृदय में हँसी का फौव्वारा हो। उसके हृदय में वेदना अवश्य है लेकिन वह किसी पर प्रगट नहीं होने देता।'

रिबिन ने कहा—'यही ठीक है। मनुष्य का यही धर्म है। हमलोग विपत्तियों से घिरे हैं। प्रति साँस में विपत्तियाँ शरीर में प्रवेश करती हैं। हमलोगों के वस्त्रों में विपत्तियाँ लटक रही हैं। पर इसके लिये रोना व्यर्थ है। सब लोग अंधे नहीं हैं। कितने जान-बूझकर आँखें बंद कर लेते हैं और यदि तुम बेवकूफ हो तो तुम्हें उसका फल भोगना ही पड़ेगा।'

आठवाँ परिच्छेद

ज्यों ज्यों दिन बीतने लगा, पावेल का झोपड़ा लोगों को अधिकाधिक आकर्षित करने लगा। अधिकाधिक संख्या में लोगों की भीड़ इकट्ठा होने लगी। जहाँ एक ओर अधिकारीवर्ग

संदिग्ध दृष्टि डालते वहाँ पड़ोस के लोग श्रद्धा के साथ आते और कहते—'भाई, तुम पुस्तकें पढ़ते हो, कायदा-कानून से वाकिफ हो। हमें भी कुछ बताओ !'

इसके बाद वह पावेल से पुलिस अथवा कारखानेवालों के अत्याचारों का रोना रोते। जहाँ तक पावेल से बनता उन्हें उद्धार का उपाय बताता और यदि मामला जटिल होता तो वह अपने किसी वकील मित्र के नाम पत्र लिख देता जो सब बातें उन्हें समझा देता।

लोगों में पावेल की प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। उसकी सादगी और साहस पर लोग मुग्ध थे। पावेल सबकी बातें ध्यान से सुनता और प्रत्येक समस्या पर गौर से विचार करता और उसे सुलझाने का कुछ-न-कुछ उपाय अवश्य निकाल देता। इस प्रकार वह धीरे-धीरे मजूरों को एकता के सूत्र में बाँधने लगा।

माँ अपने पुत्र की उन्नति देखकर अतिशय प्रसन्न थी। वह उसके अध्यवसाय को समझने का यत्न करती और यदि वह सफल होती तो प्रसन्नता से नाच उठती।

कारखाने के पिछवाड़े दूर तक दलदल का मैदान फैला हुआ था। उसमें अनेक तरह के घास-फूस उगे हुए थे और उसमें मच्छड़ों ने अड्डा जमा रखा था। यह जमीन कारखानेवालों की थी। नये मैनेजर ने देखा कि यदि इसका पानी निकाल दिया जाय तो इसमें सुंदर फसल हो सकती है। इसलिए उसने मजूरों को बुलाकर कहा—'अगर यह दलदल साफ कर दिया जाय तो

आस-पास के गावों के स्वास्थ्य और सफाई में बहुत बड़ा परिवर्तन हो जायगा। इसके लिये प्रत्येक मजूर के वेतन से प्रति रबुल एक केपक काट लिया जायगा।' इस आज्ञा से मजूरों में हल-चल मच गई। असंतोष का सबसे प्रबल कारण यह था कि कार-खाने के मुहर्रिर इस टिकस से बरी कर दिए गए थे।

जिस शनीचर को मैनेजर ने यह आज्ञा-पत्र निकाला, पावेल बीमार था। वह काम पर नहीं गया था इससे उसे इस घटना के बारे में कुछ मालूम नहीं था। दूसरे दिन रविवार था। गिरजा के मजलिस के बाद गाँव का बढ़ई सीजोव और लोहार मखोटिन उसके पास आए और सब किस्सा सुनाकर कहने लगे—'यह आज्ञा सुनकर हमलोगों की एक बैठक हुई और यह तै हुआ कि कि तुमसे पूछा जाय कि क्या 'मैनेजर को यह अधिकार है कि हमलोगों की कमाई से दलदल साफ़ करा दे।'

पखोटिन ने कहा—'अभी पार साल की ही बात है। स्नाना-गार के नाम पर टिकस लगाया गया और हमलोगों की गाढ़ी कमाई से तीन हजार रबुल ले लिया गया। लेकिन न आज तक स्नानागार ही बना और न उस तीन हजार रबुल का कोई जमा-खर्च ही बतलाया गया।'

पावेल ने उन लोगों को समझाया कि यह हमलोगों पर कितना बड़ा अन्याय है और इससे कारखाने के मालिकों को कितना अधिक लाभ है। इसके बाद वे लोग वहाँ से वापस गए। उसकी बातों से दोनों में उत्तेजना थी।

माँ उन्हें दरवाजे तक पहुँचाने गई थी। वापस आकर बोली—'पाशा, अब तो तुम्हारी सलाह लेने बड़े बूढ़े भी आने लगे हैं।'

माँ की बातों का उत्तर दिए बिना ही पावेल उठ बैठा और कुछ लिखने लगा। लिखना समाप्तकर उसने माँ से कहा—'शहर जाकर इस खत को दे आओ।'

माँ—क्या यह खतरनाक है ?

पावेल—हाँ, हमलोगों का एक समाचार-पत्र निकलता है उसके अगले अंक में दलदलवाला यह संवाद अवश्य प्रकाशित हो जाना चाहिए।

'मैं अभी जाती हूँ' इतना कहकर वह कपड़ा बदलने दूसरे कमरे में चली गई।

यह पहला अवसर था कि उसके लड़के ने उसे कोई काम सौंपा था। वह प्रसन्न थी कि पावेल उसे इतनी अधिक बातें बताता है और उसे विश्वास था कि वह पावेल की अधिक सहायता कर सकेगी। वह बोली—'मैं भी इन बातों को थोड़ा बहुत समझती हूँ। यह तो डाकेजनी है। यह खत किसे देना होगा ?'

पावेल ने हंसकर कहा—'इगोर इवानोविच को।'

शाम को जिस वक्त वह वापस आई वह एकदम थकी हुई थी पर संतुष्ट थी। पावेल से कहने लगी—'शशेंका से भी भेंट हुई थी। उसने तुम्हें अभिवादन कहा है। यह इगोर इवानोविच तो बड़ा ही सरल प्रकृति का है। सदा हँसता रहता है।

पावेल ने नरमी से कहा—'हमें खुशी है कि तुम उन लोगों से संतुष्ट हो।'

माँ—सब लोग सीधे-सादे हैं। सरल प्रकृति के लोग बड़े ही अच्छे होते हैं। सबके सब तुम्हारी इज्जत करते हैं।

सोमवार को भी पावेल काम पर नहीं जा सका। उसके सिर में दर्द था। दोपहर को फीडियामेज़िन दौड़ा हुआ उसके पास आया। उसका दम फूल रहा था। उसने कहा—'समस्त मजूर मैनेजर की इस आज्ञा के विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं। तुम फौरन चलो। तुम्हें लोगों ने बुलाया है। उन लोगों का कहना है कि औरों की अपेक्षा तुम मैनेजर को हमलोगों की बातें अच्छी तरह समझा सकते हो।'

पावेल चुपचाप कपड़ा पहनने लगा।

फीडियामेजिन—औरतें भी इकट्ठी हैं। वे भी रो रही हैं।

माँ—मैं भी चलूंगी। तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं है और वे लोग न-जाने क्या करें।

पावेल—चलो।

सड़क से होकर वेलोग चुपचाप आगे बढ़े। उत्तेजना और तीव्र गति के कारण माँ हाँफ रही थी। वह किसी भीषण घटना की कल्पना कर रही थी। कारखाने के दरवाजे पर हजारों स्त्रियाँ जमा थीं और जोरों के साथ इसी विषय की चर्चा कर रही थीं। कारखाने के अहाते में सब मजूर इकट्ठे थे और खूब जोश फैला हुआ था। माँ ने देखा कि सब मजूरों की दृष्टि उसी ओर थी

जहाँ कारखाने के मुअज्जिज मजूर सिजोव, मखोटिन, वगैरह खड़े हाथ हिला रहे थे।

किसी ने कहा—'पावेल आ रहा है।'

इतना सुनते ही लोग, उसकी ओर झुक पड़े और खींचकर बीच में ले गए। माँ पीछे रह गई।

चारों ओर से शांति-शांति की आवाज आने लगी। पासही रिबिन खड़ा था। उसने कहा—'हमलोगों को इस अन्याय का विरोध करना चाहिए। एक कोपक कुछ बड़ी बात नहीं है। पर यह सिद्धांत का प्रश्न है और इसके लिये हमलोगों को लड़ना चाहिए।

इसका लोगों पर विचित्र प्रभाव पड़ा। लोग उत्तेजित होते दिखाई देने लगे।

एक ने कहा—'रिबिन ठीक कह रहा है।'

दूसरा—चुप रहो! पावेल आ गया!

अहाते के मैदान में इतना भीषण कोलाहल मच गया कि उसके सामने कल-पुरजों की घड़घड़ाहट स्टीम की सनसनाहट पट्टे की फड़फड़ाहट-ध्वनि न जाने कहाँ गायब हो गई। चारों ओर से लोग आ-आकर वहीं इकट्ठा होने, बहस करने और एक दूसरे को उत्तेजित करने लगे। उत्तेजना की आग जो आज तक बाहर आने का मार्ग न पाने के कारण भीतर ही भीतर सुलग रही थी आज एकाएक बाहर निकल पड़ी, चारों ओर फैलकर आकाश में छा गई और लोगों पर अपना अधिकाधिक प्रभाव फैलाने लगी।

सबके चेहरे लाल थे और पसीने से तर थे । सबका चेहरा तम-तमाया हुआ था और आँखों से स्फुलिंग निकल रहे थे ।

पावेल सिजोव और मखोटिन के पास पहुँचकर कुछ कहने लगा। माँ ने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया है और उसके होंठ काँप रहे हैं । भीड़ को चीरकर वह आगे बढ़ने लगी ?

किसी ने क्रोध से पूछा—'बुड्ढी औरत ! कहाँ जा रही है ?'

वह इस प्रश्न की परवाह न कर आगे बढ़ती गई । लोगों ने उसे धक्का भी दिया पर वह विचलित न हुई उसे पावेल के पास पहुँचने की उत्कट इच्छा थी और लोगों को ठेलती हुई वह उसके निकट पहुँच ही गई ।

पावेल जिस वक्त बोलने लगा उसका गला भर आया, उसका हृदय उछलने लगा । सत्य-ज्ञान का प्रकाश उसके हृदय में फैल गया उसके जी में आया कि जन-साधारण के लाभ के लिये वह पूर्ण सत्य के प्रकाश करने में अपने को कुर्बान कर दे । उसने शक्ति संचय करके कहा—'हमीं लोग गिरजा और कारखानों को बनाते हैं । हमीं लोग कल-पुरजों को बनाते हैं और सिक्का ढालते हैं । खिलौना और बड़ी-बड़ी मशीनों को बनाते हैं । संसार को पालन-पोषण करनेवाली और अन्न-वस्त्र देनेवाली शक्ति भी हमीं लोग हैं ।'

रिबिन—ठीक है, ठीक है ।

पावेल—काम के वक्त हमलोग सबसे आगे ढकेल दिए जाते हैं, लेकिन हमलोगों के जीवन का मूल्य कुछ भी नहीं समझा

जाता। हमलोगों की कोई परवाह नहीं करता ? हमलोगों का कोई कल्याण नहीं चाहता ? हमलोगों की इनसान में कोई भी गणना नहीं करता ?

जनसमूह—कोई नहीं, कोई नहीं।

पावेल के चारों ओर इस प्रकार भीड़ इकट्ठी हो गई, लोग एक दूसरे से इस प्रकार सट गए मानों एक धड़ पर हजारों सिर रख दिए गए हों। लोगों की आँखें उसके चेहरे पर गड़ी हुई थीं और वे उसकी बातें ध्यानपूर्वक और एकाग्र मन से सुन रहे थे।

उसने अपने को काबू में किया और शांति के साथ कहा—'जबतक हमलोग एक सिद्धांत—अपने हक के लिये लड़ना—को लेकर एक सूत्र में इस प्रकार नहीं बँध जाते मानों हम सब मजूर एक ही कुटुंब के अंग हों, तबतक हमारी दशा कभी भी उन्नत नहीं हो सकती।'

माँ के पास ही खड़े किसी व्यक्ति ने कहा—'हमलोगों को इसके लिये प्रयत्नशील होना चाहिए।'

इसी समय दो तरफ से दो आदमियों ने बोलनेवाले को डाँटते हुए कहा—'चुप रहो, बाधा मत दो।'

कुछ लोग पावेल की ओर अन्वेषक-दृष्टि से देख रहे थे। उसमें-से एक ने कहा—'साम्यवादी है, पर बेवकूफ नहीं है।'

एक लंबे और बूढ़े मजूर ने माँ का कंधा ठोंककर कहा—'बड़ा साहसी और निडर होकर बोल रहा है।'

पावेल ने कहा—'यही समय है कि हमलोग उन लोभी

अधिकारियों का विरोध करें, जो हमलोगों की कमाई का सबकुछ हड़प जाते हैं। यही समय है कि हमलोग अपनी रक्षा करें। हमलोगों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि दूसरा कोई हमलोगों की सहायता के लिये नहीं आवेगा। यदि हमलोग शत्रु की शक्ति को चूर्ण करना चाहते हैं तो हमलोगों को यह महा-मंत्र सीख लेना चाहिए कि—'हम सबके लिये और सब हमारे लिये।'

मखोटिन ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा—'बिलकुल सच है। भाइयो! ये बातें आपलोग ध्यान से सुनें।'

पावेल—हमलोगों को मैनेजर से मिलकर पूछना चाहिए।

भीड़ में हलचल मच गई। लोग चिल्ला उठे। मैनेजर को आकर सफाई देनी चाहिए।

एक आदमी—किसी को भेजकर उसे बुलवाओ।

दूसरा—नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं है।

माँ भीड़ को चीरकर थोड़ा आगे बढ़ी और पावेल के पास पहुँच गई। उसका हृदय अभिमान से भर गया था। उसका पुत्र मजूरों के बीच में खड़ा था और बड़े-बूढ़े सब उसकी सलाह मान रहे थे थे। उसे इस बात से और भी संतोष था कि पावेल की सभी बातें दूसरों की अपेक्षा क्रोध-रहित, उत्तेजना-शून्य, शांत, धीर और गंभीर थीं। जन-रब का वेग बढ़ता जाता था। पावेल अपनी ऊँची जगह से सबके चेहरे को इस प्रकार देखता था मानों किसी वस्तु की तलाश कर रहा हो।

इतने में किसी ने कहा—'हमलोगों का प्रतिनिधि कौन होगा ?'

एक ने कहा—'सिजोव।'

दूसरे ने कहा—'पावेल।'

तीसरे ने कहा—'रिबिन। उसके शब्दों में जोर है।'

अंत में सिजोव, पावेल और रिबिन तीनों व्यक्ति मैनेजर से बात करने के लिये प्रतिनिधि चुने गए। इसी समय लोगों में काना-फूसी होने लगी—'वही आ रहा है।'

'मैनेजर!'

'हाँ'

लोग हटकर बगल में दब गए और मैनेजर ने प्रवेश किया। उसका डील-डौल लंबा था और दाढ़ी नोकीली थी।

लोगों को केहुनी से ढकेलता हुआ वह आगे बढ़ा। चतुर शासक की भाँति वह उपस्थित मजूरों के चेहरों को इस प्रकार देखता था मानों उनके हृदय के भाव को भाँप रहा हो। लोगों ने अपना हैट उतारकर उसका अभिवादन किया। उनके अभिवादनों की परवाह किए बिना ही वह आगे बढ़ा उसके आते ही लोगों में घबड़ाहट पैदा हो गई और लोग इस प्रकार दुबकने लगे जैसे अपराधी बच्चे।

इतने में वह लोहे की ढेर के पास पहुँचा। सहारा देने के लिये किसी ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया लेकिन उसने उसकी परवाह नहीं की और आसानी के साथ ऊपर चढ़कर पावेल तथा सीजोव के सामने खड़ा हो गया। भीड़ को देखकर उसने कहा—

'यह भीड़ क्यों इकट्ठी है। तुमलोगों ने काम क्यों बंद कर रखा है ?'

क्षण भर लोग चुप थे। सिजोव ने अपनी टोपी हवा में घुमाई, गर्दन हिलाया और सिर नीचा करके चुप हो गया।

मैनेजर ने कहा—'मैं तुमलोगों से एक सवाल पूछता हूँ।'

पावेल उसके पास गया। और सिजोव तथा रिबिन की ओर इशारा करके धीरे से बोला—'तमाम मजूरों की ओर से हमलोग आपसे यह कहना चाहते हैं कि कृपाकर केपकवाली आज्ञा उठा लीजिए।'

पावेल की ओर देखे बिना ही मैनेजर ने कहा—'क्यों ?'

पावेल ने जोर से कहा—'हमलोग यह कर नाजायज समझते हैं।'

मैनेजर—तुमलोगों का ख्याल है कि हम इस दलदल को दुरुस्त करने के बहाने केवल किसानों को लूटना चाहते हैं उनको लाभ पहुँचाने का कोई विचार नहीं है।

पावेल ने कहा—'हां !'

मैनेजर—(रिबिन से) तुम्हारा भी यही ख्याल है ?

रिबिन—हाँ !

मैनेजर—(सिजोव से) मेरे योग्य दोस्त ! तुम्हारी क्या धारणा है ?

सिजोव—मैं भी आपसे यही कहना चाहता हूँ कि यह केपक हमलोगों के जेब में ही रहने दीजिए। इतना कहकर उसने गर्दन

झुका ली। मैनेजर ने एक बार पुनः भीड़ की ओर देखा, गर्दन हिलाई और पावेल से कहा—'तुम तो समझदार आदमी मालूम होते हो। क्या इस व्यवस्था से तुम्हें लाभ नहीं दिखाई देता ?'

पावेल ने जोर से कहा—'यदि कारखाने के मालिक अपने व्यय से दलदल साफ करावें तो हमलोग समझ सकते हैं।

मैनेजर—कारखाना सदाव्रत चलाने के लिये नहीं खोला गया है। हमारा हुक्म है कि तुमलोग फौरन अपने-अपने काम पर जाओ।

इतना कहकर वह नीचे उतरने लगा। वह बड़ी सावधानी से पैर रख रहा था और किसी की ओर ताकता नहीं था।

भीड़ में हुल्लड़ मच गई।

मैनेजर ने घूरकर चारों ओर देखा।

सब लोग चुप हो गए। इतने में दूर से किसी ने कहा—'तुम अपने काम पर जाओ।'

मैनेजर—अगर १५ मिनट के भीतर तुमलोग काम पर नहीं जाओगे तो बरखास्त कर दिए जाओगे।

इतना कहकर वह आगे बढ़ा। लोगों की बड़बड़ाहट उसके कानों में स्पष्ट पड़ रही थी जो प्रतिक्षण तेज होती जाती थी।

एक ने कहा—'उससे कहो।'

दूसरा—क्या यही न्याय है ? अभाग्य !

किसी ने पावेल की ओर मुँह फेरकर पूछा—'अब बतलाइए

हमलोगों को क्या करना चाहिए ? तुम तो बड़ी-बड़ी बातें करते थे पर उस वक्त सब हवा हो गई ।

दूसरा—(पावेल से) अब क्या करना चाहिए ।

कोलाहल बढ़ता गया । पावेल ने हाथ उठाकर कहा—'भाइयो, मेरी राय है कि जबतक मैनेजर केपकवाली आज्ञा न उठावे हमलोगों को काम पर नहीं जाना चाहिए ।

लोग उत्तेजित होकर कहने लगे ।

'वह हमलोगों को उल्लू समझता है ।'

'हमलोगों को यही करना चाहिए ।'

'हड़ताल ?'

'केवल एक केपक के लिये ?'

'क्यों नहीं ? हड़ताल क्यों न की जाय ?'

'हमलोग सबके सब बरखास्त कर दिए जायँगे ।'

'तब काम कौन करेगा ?'

'और लोग भी हैं ।'

'कौन ? जूडासिस ।'

'हर साल मुझे केवल मच्छड़ों के लिये तीन रुबुल और साठ केपक देना पड़ेगा ।'

'हमलोगों को सबको देना पड़ेगा ।'

पावेल जाकर अपनी माँ के पास खड़ा हो गया । अब किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं था क्योंकि सब लोग कोलाहल मचा रहे थे, चीख रहे थे और आपस में गरमागरम बहस कर रहे थे ।

रिबिन ने पावेल के पास आकर कहा—'ये सब हड़ताल नहीं कर सकते। ये सब जितने लोभी हैं उतने ही कायर भी हैं। मुशकिल से तीन सौ आदमी तुम्हारा साथ दे सकते हैं। ये सब मिट्टी के पुतले हैं इनमें जान डालना आसान काम नहीं है।'

पावेल खामोश था। उसके सामने भीड़ खड़ी बेमतलब कोलाहल मचा रही थी और उसकी ओर ताक रही थी। उसका हृदय धड़क रहा था। उसे ऐसा प्रतीत होता था मानों उसका सारा परिश्रम व्यर्थ गया। एक के बाद दूसरे आते, उसकी बातों की प्रशंसा करते, पर हड़ताल की सफलता पर संदेह प्रगट करते और कहते कि मजूर लोग नासमझ हैं। अपनी हानि-लाभ का उन्हें ज्ञान नहीं, अपने बल का भरोसा नहीं।

पावेल हताश था। उसकी आत्मा को चोट पहुँची। उसके सिर में दर्द होने लगा। उसने अपने को निस्सहाय पाया। आज से पहले जब कभी उसने अपने सत्य ज्ञान की सफलता का चित्र खींचा था वह प्रसन्नता के मारे फूल उठा था, पर आज उसने अपने सत्य ज्ञान का वर्णन मजूरों के सामने किया लेकिन उसका क्या फल निकला? उसने देखा कि उसका लेशमात्र भी असर किसी पर नहीं पड़ा। उसे बड़ी वेदना हुई। उसे प्रतीत हुआ कि उसने अपनी इस महती कल्पना को समझ ही नहीं सकते।

वह घर की ओर वापस चला। वह एकदम थक गया था और चेहरे पर परेशानी छा रही थी। उसके पीछे-पीछे सीजोव और

माँ जा रही थी और रिबिन उसके बगल में भनभना रहा था—'तुम बोलते बहुत अच्छा हो। पर तुम्हारी बात हृदय में प्रवेश नहीं करती। यही कठिनाई है। आवश्यकता है हृदय में आग लगाने की।'

पावेल ने धीरे से कहा—'हमलोगों को विवेक से काम लेना चाहिए।'

रिबिन—जूता पैर में ठीक नहीं होता है। वह छोटा और तंग है। उसमें पैर जा नहीं सकता और अगर जाता है तो जूते को फाड़ देता है। यह विचारणीय प्रश्न है।

सिजोव माँ से बातें कर रहा था।

सिजोव—हमलोग बुड्ढे हो चले। मरने के किनारे आए। अब नए लोग आ रहे हैं। हमलोगों ने कैसा निकृष्ट जीवन बिताया है। हमलोग सदा पेट के बल रेंगते आए हैं और घुटने टेकते आए हैं। अब ये नए आदमी आए हैं। या तो इनलोगों को समझ आ गई है अथवा हमलोगों से भी भीषण भूल कर रहे हैं। किसी भी तरह ये लोग हमलोगों से भिन्न हैं। देखो न, ये लोग मैनेजर से इस प्रकार बातें कर रहे थे मानों बराबरी के हों। अगर मेरा लड़का मीटयो आजतक जीता होता। (पावेल से) तुमने जनसाधारण का काम अपने हाथ में लिया है। तुम्हारी कितनी प्रशंसा करें। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। तुम्हें अवश्य मार्ग मिलेगा।

इतना कहकर वह चला गया।

रिबिन—किसी तरह मरो भी। तुममें मनुष्यत्व है कहाँ? तुमलोग केवल धूर जमा करने के लिये कतवार हो। (पावेल से) तुमने देखा था कि तुम्हें प्रतिनिधि बनाने के लिये कौन इतना शोरगुल मचा रहा था? वही लोग, जो इस वक्त तुम्हें साम्यवादी और क्रांतिकारी बतलाते हैं। सोचते हैं कि तुम बरखास्त कर दिए जाओगे और तुम्हें करनी का फल मिल जायगा।

पावेल—जितनी उनकी बुद्धि है उतना ही सोचेंगे?

रिबिन—ठीक भेड़ों की-सी हालत है।

पावेल दिनभर उदास रहा। उसे मालूम होता था मानों उसने कोई बड़ी वस्तु खो दी है और अधिक खोने की आशंका है।

रात को जब माँ सो गई, और वह विस्तरे पर पड़ा किताबें पढ़ रहा था पुलिस इंस्पेक्टर आया और तलाशी लेने लगा। ये लोग बड़े बदमाश थे। हर तरह का उपद्रव मचाते थे, बुरी से बुरी गालियाँ देते थे। माँ कोने में चुपचाप पड़ी स्थिर दृष्टि से पावेल की ओर देख रही थी। पावेल ने हर तरह से अपने को सम्हाल कर रखा। लेकिन जब अफसर उसकी हँसी उड़ाता, उसकी अँगुलियाँ विचित्र तरह से हिलने लगतीं लेकिन इतने पर भी वह सब बरदाश्त कर रहा था। किसी बात का उत्तर न देता था। आज की तलाशी से माँ उतनी भयभीत नहीं थी जितनी पहले दिन हुई थी। हाँ, इन अफसरों के प्रति उसकी घृणा का भाव बढ़ने लगा। घृणा ने उसके भय को दबा दिया।

पावेल ने धीरे से कहा—'ये लोग मुझे गिरफ्तार करेंगे।'

सिर झुकाकर उसने धीरे से कहा—'मैं भी समझती हूँ।'

माँ भलीभाँति समझ गई थी कि उस दिन उसने मैनेजर से जो कुछ कहा था उसके लिये वे उसे गिरफ्तार करेंगे और जेल में ठूँस देंगे। पर उसे इस बात का भी विश्वास था कि वह अधिक काल तक जेल में नहीं रखा जायगा क्योंकि उसकी बातों से सब मजूर सहमत थे और सब उसका पक्ष ग्रहण करेंगे।

वह पावेल को हृदय से लगा लेना चाहती थी पर अफसर पासही खड़ा था और घूरकर उसे देख रहा था। उसके होंठ हिल रहे थे और वह अपनी मोछें ऐंठ रहा था। पावेल को ऐसा प्रतीत होता था कि अफसर माँ की बिनती और उसके आँसू की प्रतीक्षा कर रहा था। लेकिन माँ ने अपने को पूरी तरह सम्हाला। उसने पावेल का हृदय अपने हाथ में लेकर धीरे से दबाया और पूछा—'सभी आवश्यक चीजें ले ली हैं।'

पावेल—हाँ, तुम किसी तरह की चिंता न करना।

माँ—भगवान तुम्हारी सहायता करें।

नवाँ परिच्छेद

जब पुलिस के आदमी पावेल को लेकर चले गए। माँ फूट-फूटकर रोने लगी। और जैसा उसका पति किया करता था वह दीवाल से सटकर सिर पीछे की ओर लटकाकर बैठी। शोक के वेग और अपमान की पीड़ा से वह मर्माहत थी। उसी अवस्था

में पड़ी वह देर तक रोती रही और आँसुओं-द्वारा अपने हृदय की वेदना को निकालती रही। उसे मालूम होता था मानों कांस्टेबुल की वह निर्दय-मूर्ति उसी प्रकार मोंछे ऐंठती हुई खड़ी है और उसकी दैन्यता पर क्रूर हँसी हँस रही है। काले बादल के समान उसके हृदय में घृणा और द्वेष के भाव उनलोगों के लिये उठ रहे थे जो इस प्रकार पुत्रों को माताओं से छीन लेते हैं और उनलोगों का अपराध यही होता है कि वे न्याय के पक्ष पर रहते हैं।

जोरों की सर्दी पड़ रही थी। पानी की बूँदें रह-रहकर खिड़की के शीशे से टकराती थीं। इसी समय दीवाल के पास उसे किसी के चलने की आहट मालूम हुई। उसे ऐसा मालूम होने लगा मानों मकान के चारों ओर लाल-लाल चेहरेवाली दाढ़ी से ढकी हुई मूर्तियाँ होशियारी के साथ चल-फिर रही हों और वह उनके पैर की ध्वनि और उनके हथियारों की कड़कड़ाहट स्पष्ट सुन रही हो।

उसने अपने मन में कहा—'मुझे भी क्यों नहीं पकड़ ले गए।'

सवेरा हो गया! कारखाने का घंटा बजा। यह काम पर जाने के लिये संकेत था। इसकी ध्वनि मंद स्पष्ट और अनियमित थी। इसी समय दरवाजा खुला, रिबिन ने प्रवेश किया और पूछा—'रात पावेल को पकड़ ले गए।'

उसने आह भरकर कहा—'हाँ, कुत्ते उसे पकड़ ले गए।'

रिबिन—यही उन सबों का कारखाना है। सबों ने मेरे

घर की भी तलाशी ली। मनमानी गालियाँ दीं, पर इससे ज्यादा और कुछ नहीं किया। लेकिन पावेल को ले ही गए। इसमें मैनेजर का इशारा था। उसीके इशारे से इंस्पेक्टर ने यह कार्रवाई की है। कारखानेवालों और पुलिस में खूब मेल है। एक मजूरों का पैसा चूसता है और दूसरा प्राण लेने के लिये उतारू रहता है।

माँ ने खड़ी होकर कहा—'पावेल तुम्हीं लोगों के लिये गया है इसलिए तुमलोगों को उसका पक्ष ग्रहण करना चाहिए।'

रिबिन—किसे उसका पक्ष लेना चाहिए ?

माँ—तुमलोगों को सबको।

रिबिन—तुमने अतिशयोक्ति से काम लिया है। कोई कुछ नहीं करेगा। कारखानेवाले हजारों वर्ष से बल संग्रह कर रहे हैं। हमलोगों के हृदयों में उन्होंने कील ठोंक दी है। इतनी जल्दी लोगों का संगठन असंभव है। सबसे पहले तो लोगों को एक दूसरे के शरीर में-से लोहे की उन कीलों को निकालकर फेंक देना होगा जिनके कारण लोग एक दूसरे से मिल नहीं सकते।

इतना कहकर वह चला गया और अपने रूखे उत्तर से माँ को निराशा के और भी गंभीर गह्वर में ढकेलता गया।

माँ का दिन कोरी कल्पना में बीता। न तो उसने आग जलाई और न खाने-पीने का कोई आयोजन किया। सिर्फ शाम को एक टुकड़ा सूखी रोटी खाकर पड़ रही। विस्तरे पर पड़े-पड़े वह सोचने लगी कि उसका जीवन इतना शून्य, उद्देश्यहीन और

तुच्छ कभी नहीं था। इधर कुछ समय से वह प्रतिदिन किसी न किसी नई घटना की प्रतीक्षा किया करती थी। नित नये युवक उसे चारों ओर से घेरे दिखाई देते थे। पावेल का गंभीर, विचार-मग्न और अध्यवसायपूर्ण चेहरा देखते ही उसे इस बात का स्मरण हो आता था कि इन योजनाओं का यही जन्मदाता और नियंता है। आज पावेल के साथ ही सबकुछ गायब हो गया। सिवा रिबिन के किसी ने सूरत तक नहीं दिखाई।

बाहर पानी बरस रहा था। हवा का वेग बड़ा ही भयानक मालूम होता था। उसे मालूम होता था कि समूचा मकान हिल रहा है और मकान की सभी वस्तुएँ निष्प्रयोजन हैं।

इसी समय दरवाजे पर खटखटाने की आवाज सुनाई दी। एक बार, दो बार, तीन बार। इन शब्दों के सुनने का उसे अभ्यास हो गया था इससे वह डरी नहीं। प्रसन्नता की क्षीण रेखा उसके हृदय में उदय हुई और अनिर्दिष्ट आशा से वह उठ खड़ी हुई और जाकर दरवाजा खोल दिया।

समोलो ने भीतर प्रवेश किया। उसके साथ एक युवक और भी था, पर कोट के कालर और हैट से उसका चेहरा इस तरह छिपा था, कि माँ उसे पहचान न सकी। समोलो शोकाकुल और उद्विग्न था। माँ को अभिवादन किए बना ही उसने पूछा—'उन सबों ने तुमलोगों को जगाया?'

माँ०—(आशाभरी दृष्टि से उनलोगों की ओर देखती हुई)। हमलोग सोए नहीं थे।

इतने में समोलो के साथी ने अपना हैट उतारा और लंबी सांस लेकर पूर्व-परिचित की भाँति बोला—'माँ, प्रणाम ! आपने तो मुझे पहचाना ही नहीं।'

माँ ने प्रसन्न होकर कहा—'कौन ? ईगर इवानोविच ?'

ईगर इवा०—'हाँ, मैं ही तो हूँ।' इतना कहकर उसने माँ को पुनः प्रणाम किया। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट और आँखों में सहानुभूति थी। वह कद में नाटा था, गर्दन कोती थी और हाथ छोटे-छोटे थे। उसका शरीर पालिश की तरह चमकीला था और उसके गालों की हड्डियाँ मोटी थीं। वह जोर से साँस लिया करता था इसलिए उसकी छाती से सदा गड़गड़ाहट की आवाज निकला करती थी।

माँ ने कहा—'तुमलोग बैठक में चलो, मैं तुरत कपड़ा बदल कर आती हूं।'

समोलो ने गंभीर होकर कहा-'हमलोग काम से आए हैं।'

बैठक में प्रवेश करते-करते इवानोविच ने कहा—'माँ आज सबेरे निकोले जेल से छूटकर आया है। आपको मालूम है कि नहीं।'

माँ—वह कितने दिनों तक जेल में था ?

इवा०—पाँच महीना ग्यारह दिन। जेल में नखोदका और पावेल से उसकी भेंट हुई थी। दोनों ने आपको प्रणाम कहा है और कहा है कि आप किसी तरह की चिंता न करें। वह कहता है कि काम करते-करते थक जाने के बाद जेल विश्राम और

आराम के लिये सबसे उत्तम स्थान है। जिसे अधिकारी-वर्ग अपने खर्च से चलाते हैं। खैर, अब काम की बात पर आइए। आपको मालूम है कल कितने गिरफ्तार हुए ?

माँ—मुझे कुछ पता नहीं। क्या पावेल के अतिरिक्त और लोग भी गिरफ्तार हुए ?

इवा०—अड़तालीस और, पावेल का उनचासवाँ नंबर था। और दस की गिरफ्तारी की संभावना है। जैसे समोलो।

समोलो—मुझे भी आशंका है।

माँ को कुछ शांति मिली। उसने अपने मन में कहा—'पावेल वहाँ अकेला नहीं है।'

इतने में वह कपड़ा बदलकर कमरे से निकली और उत्साह से कहने लगी—'गिरफ्तारियों की संख्या देखकर अनुमान होता है कि अधिक दिन तक इनलोगों को नहीं बंद रखेंगे।'

इवा०—आपका अनुमान ठीक है। यदि हमलोग उनकी चालों को व्यर्थ कर देंगे तो उन सबों को भारी उल्लू बनना पड़ेगा। काम का यही तरीका है। यदि कल से हमलोग कारखानों में परचा बाँटना बंद कर देंगे तो पुलिस का काम बन जायगा। और पावेल के विरुद्ध यह जबर्दस्त सबूत हो जायगा।

माँ ने भयभीत होकर पूछा—'यह किस तरह ?'

इवा०—यह तो सीधी-सी बात है। पावेल की गिरफ्तारी के साथ ही कारखानों में परचों का दिखाई देना बंद हो गया, यह इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि इन परचों का जनक पावेल ही

था। इसके बाद ही पुलिसवाले पावेल को खा-जाना चाहेंगे।

माँ ने आतुर होकर कहा—'मैं समझ गई। पर किया क्या जाय?'

समोलो—उन शैतान के पुतलों ने करीब-करीब सभों को फँसाया है। यदि आंदोलन को अग्रसर करने के लिये नहीं तो अपने साथियों की रक्षा के ही लिये हमलोगों को पूर्ववत् काम जारी रखना चाहिए।

इवा०—मशाला तो हमलोगों के पास पर्याप्त है पर उन्हें कारखाने में ले जानेवाला कोई नहीं दिखाई देता।

समोलो—कारखाने के फाटक पर कड़ी तलाशी होती है।

माँ ने देखा वह सहायक हो सकती है। उसने पूछा—'आखिर हमलोगों को करना क्या है?'

समोलो—आप मेरिया कोरसोनोवा को जानती हैं जो कारखाने में सौदा बेचने जाती है।

माँ—हाँ।

समोलो—उससे पूछिए कि वह अपने बर्तनों में छिपाकर कुछ परचे ले जा सकती है?

इवा०—हमलोग उसे बखशीश देंगे।

माँ—यह असंभव है। वह बड़ी बकवादिन है। कहीं उसकी जबान से निकल गया कि ये सब परचे पावेल के घर से आते हैं तब····।

इतना कहकर वह सहसा रुक गई। क्षणभर के बाद प्रसन्न

होकर बोली—'उन परचों को मेरे हवाले करो। मैं स्वयं उन्हें पहुँचाने का प्रबंध करूँगी। मैं मेरिया से मिलूँगी। उससे कहूँगी कि मुझे नौकर रख ले। मुझे अब काम की जरूरत भी है। मैं कारखाने में भोजन की सामग्री ले जाऊँगी। इसी तरह मैं प्रबंध कर लूँगी। ठीक होगा ?

उसने विश्वास दिलाया कि मैं इस काम को पूर्ण सफलता से निस्पन्न करूँगी और किसी को पता तक नहीं लगेगा। वे देखेंगे और विस्मित होंगे कि पावेल जेल में है पर उसका हाथ यहाँ तक पहुँचता है।

सबके सब प्रसन्न हो उठे। इवानोविच ने कहा—'बड़ा जबर्दस्त काम होगा।'

समोलो—अगर यह सफल हुआ तो जेल में भी मैं निश्चिंत रहूँगा।

इवा०—माँ ने बड़ा उत्तम उपाय सोचकर निकाला।

माँ ने हँस दिया। उसे विश्वास हो गया कि यदि परचे पूर्ववत् कारखानों में बँटते रहे तो अधिकारियों को विश्वास हो जायगा कि इसमें पावेल का हाथ नहीं है। अपनी सफलता की निश्चिंतता से वह फूल उठी।

इवा०—तुम जेल में जाना तो पावेल से माँ की तीक्ष्ण बुद्धि और साहस की बात कह देना।

समालो—अवश्य कहूँगा।

माँ ने दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर कहा—'पावेल से कह देना कि जो कुछ आवश्यक होगा, मैं करूँगी ?

इवा०—अगर अधिकारियों ने समोलो को गिरफ्तार न किया तब ?

माँ ने लंबी साँस ली और उदास होकर कहा—'तब कोई उपाय नहीं है।'

इस पर दोनों हँस पड़े। माँ को अपनी भूल मालूम हुई। वह शर्मा गई और घबराहट के साथ हँसकर बोली—'अपने ध्यान में दूसरों का ख्याल ही नहीं रहता।'

इवा०—यह स्वाभाविक है। लेकिन पावेल के लिये तुम्हें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। जेल में उसकी हालत अच्छी ही हो जायगी। जेल तो हमलोगों के विश्राम और अध्ययन के लिये है। मैं तीन बार जेल गया और तीनों बार मुझे बहुत ही उपयोगी मानसिक खुराक मिली।

इवानोविच की ओर देखकर उसने कहा—'तुम्हें साँस लेने में तकलीफ होती है ?'

उसने अँगुली उठाकर कहा—'इसका भी कारण है। वही निश्चय रहा। हमलोग कल तुम्हें परचे दे जायँगे और उसके बाद ही क्रम पूर्ववत् जारी हो जायगा। भगवान् सबको माता का हृदय दे।'

इसके बाद दोनों ने माँ को प्रणाम किया और बिदा हुए।

चलते-चलते समोलो ने कहा—'एक मेरी माँ है कि उसके सामने इन सब बातों की मैं चर्चा तक नहीं कर सकता।'

उसे संतोष देने के लिये माँ ने कहा—'वह समय शीघ्र ही आनेवाला है जब सभी माताएँ इस बात को समझने लगेंगी।'

उनलोगों के जाने के बाद उसने दरवाजा बंद कर दिया और दालान में घुटने टेककर प्रार्थना करने लगी। उसकी प्रार्थना में शब्द नहीं थे। उसकी सारी प्रार्थना केवल उनलोगों के लिये थी जिन्हें पावेल ने उसके जीवन में सम्मिलित कर दिया था। उसे मालूम होता था कि उसके और प्रतिमा के बीच वे सबके सब खड़े हैं। और निरीह होते हुए भी आपस में एक सूत्र से बँधे हैं।

प्रातःकाल माँ मेरिया के पास गई। उसने बड़े आवभगत से उसका स्वागत किया। कहने लगी—'तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिए। एक समय था कि लोग चोरी करने के लिये जेलों में ठूँस दिए जाते थे। आज वह समय है कि लोग सच बोलने के लिये जेलों में ठूँसे जा रहे हैं। संभव है पावेल ने कुछ अनुचित कहा हो, पर उसने सबका पक्ष ग्रहण किया था। इस बात को सब लोग मानते हैं। चिंता न करो। वे लोग जबान से कुछ नहीं कहते लेकिन अच्छा आदमी देखते ही पहचान जाते हैं। मैं तो खुद तुम्हारे यहाँ आ रही थी, पर समय नहीं मिला। मैं सदा रोटी बनाकर बेचने का काम करती आ रही हूँ पर मुझे मालूम होता है कि मैं सदा दरिद्र ही रहूँगी। मेरी आवश्यकताएँ सदा मुझे सताती रहती हैं। वे चूहे की भाँति सदा मुझे काटती रहती हैं।

जहाँ दस रबुल मैंने संग्रह किया कि कोई-न-कोई काम आ ही जाता है और मेरा हाथ खाली हो जाता है। औरत होना ही बुरा है। अकेले रहना भी बुरा है और किसी के साथ रहना तो और भी बुरा है।'

माँ ने उसे रोककर कहा—'मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे नौकर रख लो।

मेरिया—क्यों ?

माँ ने अपनी अवस्था कह सुनाई। मेरिया राजी हो गई और कहने लगी—'यह ठीक है। तुम्हें स्मरण होगा तुमने मेरे पति से मेरी किस प्रकार रक्षा की थी। इस समय मेरा धर्म है कि मैं तुम्हारी रक्षा करूँ विशेषतः जब तुम्हारा पुत्र सार्वजनिक कार्य के लिये यातना सह रहा है। सभी अच्छे लोगों का यही ख्याल है। सब उससे सहानुभूति रखते हैं। इस तरह की गिरफ्तारियों से अधिकारियों के हाथ कुछ आ नहीं सकता। कारखाने में हलचल है। अधिकारियों का ख्याल है कि इस तरह लोगों को जेल भेजकर वे इस आंदोलन को पंगु बना देंगे, पर यह उनलोगों का भ्रम है। एक को वे लोग जेल भेजते हैं तो सौ उसके स्थान पर तैयार हो जाते हैं। मजूरों को बहुत ही सम्हालकर रखने की आवश्यकता है। वह अनंत काल तक मुसीबतों और ज्यादतियों को चुपचाप सह सकता है पर यकायक वह ज्वालामुखी की भाँति भड़क भी सकता है!'

दसवाँ परिच्छेद

इस घटना के दूसरे दिन कारखाने में माँ के दर्शन हुए। मेरिया की दुकान की सामग्री लेकर वह बेचने गई।

मजूरों ने उसे पहचाना। कितने उसके पास गए और पूछने लगे—'निलोना, तुमने काम थाम लिया?'

कुछ लोग उसे आश्वासन देने लगे कि पावेल शीघ्र ही छुटकारा पावेगा क्योंकि वह अच्छे काम में प्रवृत्त था। कुछ लोग उससे सतर्क होकर बातेंकर उसे भयभीत करने लगे और कुछ लोग मैनेजर तथा पुलिसवालों को गालियाँ दे-देकर उसके साथ ममता प्रगट करने लगे। कुछ ऐसे भी थे जो उसे गालियाँ देने लगे। इसे गर्बोव ने तो यहाँ तक कह डाला कि अगर गवर्नर यहाँ होता तो मैं तेरे लड़के को सूली पर चढ़वा देता ताकि लोगों को बहकानेवाला न रह जाय।

इस भीषण धमकी से वह काँप उठी। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उसके मुर्दे चेहरे की ओर देखकर सिर नीचा कर लिया।

कारखाने में भारी हलचल मची हुई थी। मजूर लोग छोटी-छोटी टोलियों में इकट्ठा होकर दबी जबान में बातें करते दिखाई देते थे। मेंठ इधर उधर घूमता और घबराहट के साथ सब की ओर आँखें तरेरकर देखता था। बीच-बीच में उद्वेगजनित उद्गार, गाली-गुप्ता और विचित्र हँसी सुनने में आती थी।

इसी वक्त दो पुलिस समोलो को गिरफ्तार किये हुए उसके सामने से गुजरे। उसका एक हाथ पैंट के जेब में था और दूसरे से वह सिर का बाल खुजला रहा था।

उसके पीछे-पीछे मजूरों की भीड़ हुल्लड़ मचा रही थी और पुलिस को गालियां दे रही थी।

एक मजूर ने कहा—'मालूम होता है हवाखोरी के लिये निकला है।'

दूसरे ने कहा—ये हमलोगों की इसी तरह इज्जत करते हैं।

तीसरे ने कहा—जब हमलोग हवाखोरी के लिये चलते हैं तो इसी तरह शरीर-रक्षक साथ चलते हैं।

एक लम्बे और काने मजूर ने चिल्लाकर कहा—'मालूम होता है कि चोरों को पकड़ने में अब कोई लाभ नहीं है। इसीलिये तो भले आदमियों को गिरफ्तार करते फिरते हैं।'

चौथे ने कहा—और यह काम रात को भी नहीं होता। पाजी नीच, दिन दहाड़े आते हैं जौर बेशर्मों की भाँति गिरफ्तार कर ले जाते हैं।

पुलिसवाले लंबी कदम बढ़ाते इस तरह चले जा रहे थे मानों उनके आस-पास कोई घटना नहीं हो रही है।

तीन मजूरे लोहे का सीखचा लिए जा रहे थे। पुलिसवालों का सामना होते ही उनसबों ने सीखचा उधर देखाकर कहना शुरू किया—'मछुए हैं, मछुए!'

समोलो जब निलोना के सामने पहुँचा तो अभिवादन किया और हँसकर बोला—'हम भी चले।'

माँ ने चुपचाप आशीस दिया। इन होनहार नवयुवकों की इस प्रकार हँसते-हँसते जेल-यात्रा ने माँ के हृदय को द्रवित कर दिया। उसके हृदय में मातृ-प्रेम का स्रोत उमड़ आया। चारों ओर से अधिकारियों की निंदा की गंभीर-ध्वनि सुनकर उसका मन प्रसन्न हो उठा। उसने पावेल के प्रयास का प्रत्यक्ष फल देखा।

कारखाने से लौटकर माँ ने शेष दिन मेरिया के घर काटा। शाम को घर लौटी। घर सूना मालूम होता था और काटने दौड़ता था। वह कोने-अँतरे घूम आई पर कहीं मन न लगा। ज्यों-ज्यों रात बीतने लगी उसकी चिंता बढ़ने लगी क्योंकि इवानोविच परचे लेकर तब तक नहीं आया था।

भयानक पाला पड़ रहा था। बरफ की छाप खिड़कियों पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। माँ बैठी-बैठी पावेल की चिंता कर रही थी। इसी समय किसी ने दरवाजा खटखटाया। माँ ने दरवाजा खोला तो शशेंका ने प्रवेश किया। शशेंका का आगमन बहुत दिनों के बाद हुआ था। इस समय वह खूब तगड़ी मालूम होती थी।

माँ ने बड़े आह्लाद के साथ उसका स्वागत किया। पूछा—'तुम कहीं बाहर गई थीं क्या ? बहुत दिनों से इधर आना नहीं हुआ ?'

शशेंका—निकोले के साथ मैं भी गिरफ्तार हो गई थी।

माँ—इवानोविच से मालूम हुआ कि निकोले कल छूटकर आ गया पर तुम्हारे बारे में किसी ने भी कभी कुछ नहीं कहा।

शशेंका—क्या फायदा था। इवानोविच के आने के पहले मैं कपड़ा बदल लेना चाहती हूँ।

माँ—तुम तो एकदम भींग गई हो।

शशेंका—परचे भी मैं साथ लेती आई हूँ।

माँ ने अधीर होकर कहा—'उन्हें मेरे हवाले करो।'

शशेंका—'अभी दिया।' इतना कहकर उसने अपनी साड़ी झाड़ दी। सूखी पत्तियों की तरह उसके शरीर से पतले कागज पर छपे परचों का ढेर झर पड़ा। माँ ने उन्हें बटोरते हुए कहा—'मुझे विस्मय हो रहा था कि तुम इतनी मोटी कैसे हो गई। तुम तो एक बोझ अपने साथ लेती आई हो! पैदल आई हो!'

शशेंका—'हाँ!' माँ ने देखा कि उसके पतले शरीर में आंखें उसी प्रकार चमक रही हैं पर उनके नीचे झुर्रियाँ और काले दाग पड़ गए हैं।

माँ—तुम्हारा अभी छुटकारा हुआ है। तुम्हें थोड़ा आनंद करना चाहिए। उलटे तुम बोझ का पहाड़ लादकर चली आ रही हो।

शशेंका—'इस काम को भी तो संपन्न करना था। अच्छा, यह तो बतलाइए कि पावेल की क्या हालत थी। वह घबराए तो होंगे ही नहीं। पूर्ण शांति और धैर्य का परिचय दिया होगा।' यह पूछते समय उसकी आँखें नीची थीं और उसका शरीर काँप रहा था।

माँ—पावेल कभी भी अपनी प्रकृति के प्रतिकूल आचरण नहीं कर सकता।

शशेंका ने अपने मन में कहा—'उसमें कितनी दृढ़ता है !'

माँ—वह कभी बीमार भी नहीं पड़ा था। (शशेंका को देखकर) पर तुम काँप क्यों रही हो ? ठहरो, तुम्हारे लिये चाय और थोड़ा जलपान लाती हूँ।

शशेंका—रात बहुत चली गई है। तुम कष्ट मत उठाओ। मैं स्वयं सब ठीक कर लेती हूं।

रसोई-घर में प्रवेश करते-करते माँ ने कहा—'क्या तुमसे भी ज्यादा मैं थकी हूँ ?'

शशेंका भी रसोई-घर में चली गई और माँ के पास बैठकर कहने लगी—'मैं अवश्य थक गई हूँ। जो कुछ हो जेलखाने में थोड़ी कमजोरी अवश्य आ जाती है। वहाँ की बेकारी सब से भयानक है। जेल के बाहर हमलोगों को दम लेने की फुरसत नहीं रहती। हर वक्त एक न एक काम लगा रहता है और वहाँ कठघरे में बंद कर दिये जाते हैं। वह हृदय के स्वत्व को चूस लेता है।'

माँ ने पूछा—'इन यातनाओं का तुमलोगों को कौन पुरस्कार देगा ?' पर दूसरे ही क्षण उसने आप-ही-आप इसका उत्तर दे लिया कि—'सिवा दयामय भगवान के दूसरा कौन ख्याल करेगा। पर तुम लोगों का तो ईश्वर में विश्वास ही नहीं।'

शशेंका ने सिर हिलाकर कहा—'नहीं।'

माँ ने उत्तेजित होकर कहा—'और मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करती।' हाथ पोछते हुए उसने फिर कहना शुरू किया—'तुम लोगों का क्या धर्म है, इसका ज्ञान तुम लोगों को स्वयं

नहीं है। बिना ईश्वर पर भरोसा किए तुमलोगों की जीवन-नौका किस प्रकार पार लगेगी ?'

ठीक इसी समय दरवाजे पर किसी के शब्द सुनाई दिए। माँ दरवाजा खोलने के लिये आगे बढ़ी। लेकिन शशेंका ने बीच में ही रोककर कहा--'दरवाजा मत खोलिए। यदि पुलिस-वाले हों तो कह दीजिएगा कि आप मुझे नहीं जानतीं। मैं भटक-कर इधर चली आई थी और यहाँ आते ही बेहोश हो गई। आपने मेरा कपड़ा उतारा तो ये परचे मेरे कपड़े में छिपे हुए मिले।'

माँ ने वत्सलता से पूछा--'क्यों ? किसलिए ?'

शशेंका--सो पीछे बतलाऊँगी। पर मेरी समझ में यह इवानोविच है।

सचमुच इवानोविच था। वह सिर से पैर तक भींग गया था और हाँफ रहा था। चूल्हे में आग जलती देखकर उसने कहा-'यह तो बड़ी अच्छी बात हुई ! (शशेंका से) तुम पहुँच भी गई।'

उसकी आवाज की घरघराहट से सारा रसोई-घर गूंज उठा। उसने आहिस्ते-आहिस्ते अपना ओवर कोट उतारा और माँ से कहने लगा--'यह लड़की पुलिस के रास्ते में जबर्दस्त काँटा है। जेल में ओवरसीयर ने इसका अपमान किया। इसने अनशन शुरू कर दिया और आठ दिन तक जारी रखा। जब ओवरसीयर ने माफी माँगी तब अन्न ग्रहण किया।'

माँ ने विस्मय से पूछा--'क्या सचमुच तुमने आठ दिन तक अन्न ग्रहण नहीं किया ?'

शशेंका--मुझे उससे माफी मँगानी थी।

माँ०—अगर इसमें तुम्हारी मृत्यु हो गई होती ?

शशेंका—चारा ही क्या था ? अन्त में उसने माफी मांगी। अपमान कभी भी बरदाश्त नहीं करना चाहिए।

माँ ने धीरे से कहा—'यह तो ठीक है। एक हमलोग हैं कि जिन्दगी अपमान ही सहते बीतती है !'

इवानोविच ने आकर कहा—'मैंने अपना बोझ हलका कर दिया। क्या चाय तैयार है ?'

चाय का प्याला मुंह से लगाकर उसने कहना शुरू किया—'मेरे पिता दिनभर में कम-से-कम बीस प्याला चाय पीते थे। यही कारण था कि उनका जीवन दीर्घ, शांत और सुखमय था। तिहत्तर वर्ष की आयु तक वे जीवित रहे और एकबार सिर में दर्द तक नहीं हुआ।'

माँ—तुम इवान के पुत्र हो ?

इवा०—हां, आप उन्हें किस तरह जानती हैं ?

माँ—मैं भी तो वोस्क्रेसेंस्की (Voskresenskian) की रहनेवाली हूँ।

इवा०—तब तो आप हमारे देश की ही हैं। आप किस खानदान से हैं ?

माँ—तुम्हारे पड़ोसी। मैं सरगुइन (Sreeguin) हूँ।

इवा०—आप नील की कन्या हैं ? आपकी सूरत बहुत कुछ मिलती जुलती है। उन्होंने तो अनेक बार मेरा कान पकड़ा था।

दोनों सामने खड़े सवाल जवाब कर रहे थे आर हँस रहे थे। शशेंका भी प्रसन्न थी और चाय तैयार कर रही थी। माँ अतीत-स्मृति में मग्न थी, केवल प्यालों की खड़खड़ाहट उसे वर्तमान अवस्था का बोध करा देती थी।

शशेंका को लक्ष्यकर उसने कहा—'मुझे क्षमा करना। अतीत-स्मृति बड़ी मधुर होती है। उसकी चर्चा में मैं सब कुछ भूल गई थी।'

शशेंका—मुझे क्षमा मांगनी चाहिए कि पराये घर को इस प्रकार स्वच्छंदता के साथ अपना लिया है। खैर, ग्यारह बज रहा है और हमें उतनी दूर जाना है।

माँ—(विस्मय के साथ) कहाँ, शहर जावोगी ?

शशेंका—हां।

माँ—नहीं। रात इतनी अधिक हो गई है और तुम थकी हो। रातभर यहीं रह जावो। इवानोविच रसोई-घर में सो रहेगें और हम तुम इस बैठक में।

शशेंका—नहीं, मैं निश्चय जाऊँगी।

इवा०—उसे जाना ही होगा। यदि सबेरे किसी ने उसे यहां देख लिया तो अच्छा नहीं होगा।

माँ—लेकिन वह जायगी किस तरह ? अकेले ?

इवा०—(हँसकर) और क्या ?

शशेंका ने प्याले में चाय डाली। एक टुकड़ा रोटी लेली,

निमक लगाया और खाने लगी। उस समय वह माँ की ओर स्थिर दृष्टि से देख रही थी।

माँ—तुमलोग अकेले किस तरह जाती हो? नटाशा का भी यही हाल था। मैं तो नहीं जा सकती। मुझे डर लगता है।

इवा०—इसे भी डर लगता है। सच है न शशेंका?

शशेंका—हाँ।

माँ ने बारीबारी से दोनों की ओर देखा और बोली—'तुम लोगों की बातें भी विचित्र होती हैं।'

इवा०—माँ, एक प्याला चाय दो।

चाय पीकर शशेंका ने इवानोविच से हाथ मिलाया और रसोई-घर में चली गई। माँ भी उसके पीछे गई। वहां उसने माँ से कहा—'भेंट होने पर पावेल से मेरा अभिवादन कहिएगा।'

माँ ने उसे हृदय से लगा लिया।

शशेंका ने प्रणाम किया और मकान से बाहर होगई।

बैठक में वापस आकर माँ चिंता के साथ खिड़की से बाहर झांकने लगी। रात की अँधियारी में भी बरफ के चमकीले टुकड़े जमीन पर गिरते हुए दिखाई देते थे।

इवा०—आप प्रोजरोव को जानती हैं? वह हमेशा पैर हिलाया करता था और मुँह से चपचपाया करता था। उसकी आकृति बड़ी ही शांत थी।

अपनी जगह पर बैठते-बैठते माँ ने कहा—'हां, याद है।' इसके बाद उसने उदासी से कहा—'बिचारी शशेंका किस तरह पहुँचेगी!'

इवा०—वह थक जायगी। जेल ने उसके स्वास्थ्य को नष्ट कर दिया है। वह पहले हृष्ट-पुष्ट थी। उसका शरीर कोमल है। मुझे शक होता है कि उसका फेफड़ा खराब हो गया है। उसकी आकृति से यक्ष्मा का संदेह होता है।

माँ—यह कौन है?

इवा०—एक बड़े जमींदार की बेटी है। इसका पिता बड़ा धनी है पर औव्वल दर्जे का पाजी है। आपको मालूम होगा कि दोनों विवाह करना चाहते हैं।

माँ—कौन?

इवा०—यह और पावेल! लेकिन अभी तक कभी अवसर नहीं मिला। जब यह बाहर आती है तब वह जेल चला जाता है और जब वह बाहर रहता है तब यह जेल चली जाती है।

माँ—मुझे कुछ भी नहीं मालूम। इस संबंध में उसने मुझ से कभी कुछ कहा ही नहीं।

शशेंका के प्रति उसका हृदय और भी दयार्द्र हो उठा। उसने इवानोविच से कहा—'तुम्हें उसे घर तक पहुंचा आना चाहिए था।'

इवा०—यह तो एकदम असंभव था। मुझे यहां बहुत अधिक काम करना है। कल प्रातःकाल से मुझे चलते ही बीतेगा। अपने रोग का ख्यालकर इतना काम मुझे सहज नहीं प्रतीत होता।

इवानोविच की बातें स्मरणकर उसने कहा—'बड़ी अच्छी

लड़की है।' माँ को यह स्मरणकर कष्ट हुआ कि स्वयं पावेल ने उससे इस संबंध में कभी कुछ नहीं कहा और आज तीसरे व्यक्ति से उसे यह समाचार मिला।

इवानो०—बेशक, बड़ी अच्छी लड़की है। अब भी उसमें सरलता का कुछ अवशेष है पर वह धीरे-धीरे लुप्त हुआ जा रहा है। तुम्हें उसके लिये खेद है। पर सब व्यर्थ है। हम विद्रोहियों की हालत ही यही है। हमलोगों का जीवन ही कष्ठमय और यातनामय है। किसके-किसके लिये वेदना प्रगट करोगी। मेरे एक मित्र की कथा है। थोड़ा ही दिन होता है वे निर्वासन से लौटे हैं। उनके आने के थोड़े ही दिन पहले उनकी पत्नी और पुत्र को जेल हो गया। एक की मुक्ति हुई तो दूसरे की बारी आई। विद्रोही बनकर वैवाहिक जीवन बिताना बड़ा ही कष्टकर होता है। इसमें पति और पत्नी दोनों को असुविधा होती है और इससे सिद्धांत को भी धक्का पहुँचता है। मेरी पत्नी थी। उसका भी स्वभाव बड़ा ही सरल था। लेकिन पाँच वर्ष की अनवरत यातना के जीवन ने उसका अंत कर दिया।

एक ही सांस में उसने चाय का प्याला खाली कर दिया। और अपनी कथा जारी रखा। उसने अपनी जेल—यात्रा और निर्वासन का वर्णन किया। अपने जीवन की अनेक घटनाओं और मुसीबतों का वर्णन किया। जेल की यातनाओं और निर्वा-सन की विपत्तियों की कथा कही। माँ चुपचाप सुनती रही। उसे विस्मय हो रहा था कि इस प्रकार के कष्टमय, यातनामय

और पीड़ायुक्त जीवन का वर्णन वह इतनी सरलता के साथ किस प्रकार कर रहा है !

इतना कहने के बाद उसने कहा—'अब काम की बात होनी चाहिए।'

उसकी आवाज बदल गई और आकृति गंभीर हो गई। सब से पहले उसने माँ से परचों को कारखाने में ले जाने के विषय में अनेक प्रश्न किए। उसकी जानकारी पर माँ को विस्मय हुआ।

इसके बाद उनलोगों ने अपने गांव की चर्चा छेड़ दी। माँ के हृदय में अतीत-स्मृति जागृत हो उठी। गाँव के आसपास के पहाड़ियों और उन पर उगी हुई झाड़ियों, पेड़ों तथा लताओं का दृश्य उसकी आंखों के सामने नाचने लगा। इससे उसने हृदय में तीव्र वेदना का अनुभव किया। दूसरे ही क्षण एक दृढ़प्रतिज्ञ बालिका का चित्र उसके सामने आ गया। लेकिन तत्काल ही वह चित्र भी अंधकार में न जाने कहां लुप्त हो गया और पावेल का चित्र उसकी आंखों के सामने आ गया। उसने देखा कि सीखचे-दार जंगले में उसका लड़का बैठा किसी चिंता में मग्न है। पर उसकी चिंता का विषय उसकी माँ नहीं है, माता से भी घनिष्ट उसे एक दूसरा व्यक्ति भी है। इस ख्याल के आते ही माँ की आंखों के सामने अंधेरा छा गया।

इवानोविच ने कहा—'माँ, तुम थकी-सी मालूम होती हो। अब सो जाना चाहिये।'

वह उठकर अपने कमरे में चली गई। उसका मन उद्विग्न था, हृदय व्यथित था और चित्त अशांत था।

प्रातःकाल जलपान के बाद इवानोविच ने उससे पूछा—'यदि तुम्हें गिरफ्तार कर लिया और पूछा कि ये परचे तुम्हें कहां से मिले तब क्या उत्तर दोगी ?'

उसने हँसकर कहा—'मैं स्पष्ट कह दूंगी, तुम से मतलब ?'

इवा०—पर इतने से ही वे शांत नहीं हो जायँगे। क्योंकि इसी से तो उनका मतलब है। वे तुमसे प्रश्न पर प्रश्न करेंगे। तुम्हें तंग कर डालेंगे।

माँ—पर मैं असली बात कभी भी नहीं बतलाऊंगी।

इवा०—तुम्हें जेल में डाल देंगे।

माँ—इससे क्या ? वह दिन भी तो आवे। इस संसार में मेरी आवश्यकता ही क्या है ?

इवा०—अपनी रक्षा तो हर एक आदमी को करनी चाहिए।

माँ—मुझे इसकी जरूरत नहीं है।

इवा तो चुप था। थोड़ी देर तक कमरे में टहलता रहा। फिर माँ के पास जाकर बोला—'यह काम तुम्हारे लिये कठिन प्रतीत होता है।'

माँ ने हाथ हिलाकर कहा—'सब के लिये यह कठिन है। जो लोग इसे समझते हैं उनके लिये सहज हो सकता है। मैं भी थोड़ा बहुत समझती हूं कि अच्छे आदमी क्या चाहते हैं।'

इवा०—अगर आप समझती हैं तब तो यह निश्चय है कि आपकी आवश्यकता सब को है।

माँ ने इवानोविच की ओर देखा और हँस दिया।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

दोपहर हुआ। माँ ने परचों को अपने कपड़े में इस तरह लपेटा कि इवानोविच देखकर खिल उठा। उसने कहा—'माँ, देखने से जरा भी नहीं मालूम होता कि तुमने अपने शरीर में कोई चीज बाँध रखा है। तुम्हारे शरीर की लंबाई और मोटाई में किसी तरह का परिवर्तन नहीं देख पड़ता है। भगवान इस साहसिक काम में तुम्हारी सहायता करें।'

घर से चलकर वह कारखाने के दरवाजे पर पहुँची। परचों के बोझ से वह झुकी जारही थी पर धीर और शांत थी। मजूरों के कल की हरकत से कारखाने के सभी कर्मचारी उत्तेजित थे। इसलिये आज बिना तलाशी के कोई भी कारखाने के अन्दर पैर नहीं रखने पाता था। तलाशी बड़ी बेमुरौवती और दुर्दशा से होती थी। फाटक पर एक पुलिस के साथ एक दूसरा आदमी भी खड़ा था जो भीतर जानेवालों को गौर से देखता था। वह खुफिया का आदमी था।

जिस समय एक मजूर की तलाशी लेने लगे उसने कहा—

'जेब में क्या रखा है, दिमाग की तलाशी लो तो कुछ मिलेगा भी।'

कर्मचारी—तुम्हारे दिमाग में तो कूड़ा भरा है।

मजूर—इस तरह निर्दोषों को फँसाने से तो यही अच्छा है कि तुमलोग कूड़ा ही साफ करो।' गुप्तचर ने उसकी ओर घूरकर देखा।

इतने में माँ ने कहा—'सामग्री के बोझ से मैं दबी जा रही हूं। मेरी कमर टूटना चाहती है। क्या मुझे जाने दोगे ?'

कर्मचारी ने चिढ़कर कहा—'जाती क्यों नहीं। यह भी बातें बनाने आई है।'

माँ भीतर चली गई। नियत स्थान पर सामग्री को रखकर पसीना पोंछा और चारों ओर देखने लगी।

उसे देखते ही मजूर लोग उसके पास आने लगे और यह चीज है, वह चीज है, पूछने लगे। जो चीज नहीं थी उसके लिये वह दूसरे दिन का वादा कर देती।

यही संकेत था। मजूर खुश हो गए। इवान अपने को रोक नहीं सका। बोला—'तुम धन्य हो माँ।'

वासिली झुक गया। बर्तन में हाथ डालकर टटोलने लगा। और इसी बीच में परचों का एक बंडल माँ ने उसके कपड़ों के अंदर डाल दिया। उसने इवान से कहा—'आज घर नहीं चला जायगा। इन्हीं से कुछ जलपान खरीद लिया जाय। नयी दुकानदारिन हैं। इसे उत्साह देना चाहिए।' इतना कहते-कहते उसनें परचों को अपने बूट में भर लिया।

इवान ने हँसकर कहा—'अवश्य।'

माँ इन लोगों की ओर गौर से देख रही थी। बोली—'हमारे पास कई तरह के शोरवे तैयार हैं।'

इसी तरह उसमे परचों के बंडलों को उन मजूरों के हवाले किया। जब दूसरे मजूर पास आते तो वह बंडलों का देना बंद कर देती और खाने की सामग्री बेचने लगती।

गसेव हँस देता और कहता—'निलोना अपना काम कितनी मुस्तैदी और होशियारी से करती है।'

इस पर कोई मजूर बोल उठता—'दुष्टों ने उसके एकमात्र सहारे को उससे छीन लिया। लाचार थी, बिचारी करती क्या? पर कोई हर्ज नहीं। भगवान सब के मालिक हैं।'

उत्तर में वह सब को धन्यवाद देती।

इतने में गसेव ने अपना कोट सम्हाला और कहा—'इतनी गरम चीजें खाईं पर सरदी न गई।'

इतना कहकर वह चला गया। इवान भी उसके पीछे भागा।

माँ प्रसन्न थी। वह अफसर के घृणित चेहरे की ओर देखती जाती थी और अपने मन में सोचती थी कि वह अपने प्रथम प्रयास के अनुभव का वर्णन पावेल से किस प्रकार करेगी। उसका हृदय उच्छ्वास से भरा हुआ था और उसी वेग में वह चिल्लाती जाती थी 'और सामान है, और सामान है।'

उस दिन वह आनंद में विभोर थी। मेरिया के घर का काम समाप्तकर शाम को वह घर आकर जिस समय चाय पी रही थी

उसे घोड़ों की टापों के शब्द सुनाई दिए। सवार के शब्द परिचित थे। वह दौड़कर गई और दरवाजा खोल दिया।

अभिवादन करते हुए नखोदका ने घर में प्रवेश किया। माँ उससे लिपटकर रोने लगी। हर्ष और विषाद का एक साथ ही उदय हुआ। नखोदका समझाने लगा—'माँ, रोओ मत। मुझे निश्चय है कि पावेल को शीघ्र ही मुक्त करेंगे। उसके विरुद्ध कोई प्रमाण अधिकारियों के पास नहीं है। सभी मजूर चुप और मौन रहेंगे।'

'पावेल ने तुम्हें प्रणाम कहा है। वह बहुत प्रसन्न है। इस वक्त जेल लोगों से भर गया है। सौ से भी ज्यादा मजूर गिरफ़ार किए गए हैं। तीन-तीन चार-चार साथ रखे गए हैं, जेल के सभी कर्मचारी भले आदमी हैं। कैदियों के साथ जरा भी सख्ती नहीं करते। बड़ी नरमी से पेश आते हैं। इससे दिन बड़े आनंद से कटता है। जेलखाना घर के समान हो रहा है। सबलोग स्वच्छंदता से मिलते-जुलते हैं, पुस्तकें पढ़ते हैं, भोजन करते हैं। पुराने कैदी भी बड़े भले आदमी हैं। वकिन को मुझे तथा चार और को रिहाई मिली है। मेरा विश्वास मानो। पावेल को भी शीघ्र ही छोड़ देंगे। निकोले को ज़ल्दी नहीं छोड़ेंगे। उससे सब नाखुश हैं। वह सबको गालियाँ दिया करता है। पुलिसवाले उसे देखना भी नहीं चाहते। मुझे डर है कि किसी दिन वह पीटा जायगा अथवा अदालत में पेश किया जायगा। पावेल उसे बहुत समझाता है। कहता है—तुम्हारी गालियों और झिड़कियों से इनका सुधार नहीं हो

सकता।' लेकिन वह जिद्दी हो गया है। कहता है—'जहाँ तक जल्द हो इन हरामजादों को नेस्तनाबूद कर दिया जाय।' पावेल का व्यवहार बड़ा ही अच्छा होता है। वह सबके साथ एक तरह का व्यवहार करता है। वह महान की भाँति दृढ़ है। लोग उसे जल्दी रिहा करेंगे।'

नखोद्का की बातों से माँ को बड़ी शांति मिली। बोली—'मुझे भी विश्वास है कि पावेल को जल्दी छोड़ देंगे।'

नखोद्का—अब अपना हाल-चाल कहो। इतने दिन कैसे बीते।

इतना कहकर वह माँ के चेहरे की ओर देखने लगा। उसकी आखों से शोकयुक्त पर प्रेम भरा उच्छ्वास प्रगट हो रहा था।

नखोद्का की ओर देखकर माँ ने कहा—'मैं तुम्हें हृदय से चाहती हूं।'

नखोद्का—लोगों की इसी तरह कृपा मेरे ऊपर बनी रहती है। और तुम्हारा हृदय तो और भी विशाल है।

माँ—मैं तुम्हें पुत्र से भी बढ़कर चाहती हूं। यदि तुम्हारी माँ जीवित होती तो तुम्हें देखकर लोग उससे डाह करते।

नखोद्का—(मंद स्वर से) कहीं न कहीं मेरी माँ तो है।

माँ ने बात का रुख बदलकर कहा—'तुम्हें मालूम है मैंने आज क्या किया ?' इतना कह उसने कारखाने में परचों के ले जाने का सारा किस्सा कह डाला।

प्रसन्नता के मारे उसके मुँह से स्पष्ट शब्द नहीं निकलते थे।

थोड़ी देर तक नखोद्का विस्मय के साथ माँ के चेहरे की ओर देख रहा था। मारे खुशी के वह उछल पड़ा और कहने लगा—'यह खेल नहीं है। तुमने बड़ा काम किया। पावेल की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहेगा। तुम नहीं समझ सकतीं कि इससे तुमने पावेल तथा अन्य गिरफ्तार हुए लोगों का कितना उपकार किया है !'

माँ के हृदय का वेग खुल गया और मधुर शब्दों का स्रोत बह चला। वह आनंद में विह्वल थी। बोली—'मैं सदा यही सोचा करती थी कि मेरा जीवन किस काम का है। पति के सिवा किसी से भेंट नहीं। डर के सिवा कुछ जाना नहीं। पावेल के निर्माण में भी मेरा कोई हाथ नहीं रहा। मैं यह भी नहीं कह सकती कि बाप की जिंदगी में मैंने उसे कभी प्यार भी किया उनकी जिंदगी में मेरे जीवन का एकमात्र यही उद्देश्य था कि जिस तरह हो उन्हें खुश रखना ताकि उनकी झिड़कियों और मार से बची रहूँ। जब कभी वे मुझे मारने लगते थे दुश्मन से बुरी तरह पीटते थे। बीस वर्ष तक मेरी यही हालत थी। विवाह के पहले मेरी क्या अवस्था थी, नहीं कह सकती। कल इवानोविच यहाँ आया था। हम दोनों एक ही गाँव के रहनेवाले हैं। उसने लड़कपन की अनेक बातें कहीं। पर मुझे सब याद नहीं। केवल दो-चार बातें स्मरण रहीं। मुझे मालूम होता है कि मेरी आत्मा जकड़-सी गई है। वह शून्य हो गई है। उसे कुछ सुनाई नहीं देता।

उसकी साँस तेज चलने लगी मानों वह सिसकियाँ ले रही

हो। वह आगे की तरफ झुक गई और मंदस्वर में कहने लगी—'पति के मरने के बाद मेरा ध्यान पुत्र की ओर आकृष्ट हुआ। लेकिन उसने यह मार्ग पकड़ा और मैं उसके लिये चिंतित होने लगी। मेरी चिंता का कोई ठिकाना नहीं। यदि इसी में उसका अंत हो गया तो मेरा क्या होगा, जब मैं उसकी चिंता करती तो मेरा हृदय विदीर्ण हो जाता।

'हम स्त्रियों का प्रेम निस्वार्थ नहीं होता। हमलोगों के प्रेम में स्वार्थ भरा रहता है। और एक तुम हो। तुम अपनी माँ के लिये शोकाकुल हो। तुम्हें माँ की क्या आवश्यकता है? कितने हैं जो लोगों के लिये जेलों में जाकर सड़ते हैं। साइबेरिया में निर्वासन की यातना सहते हैं। उन्हीं लोगों के लिये प्राण तक गवाँ देते हैं। नवजवान लड़कियाँ रात-रात बर्फ और ठंढक की परवाह न कर पैदल आती-जाती हैं। रोज रात को सात-आठ मील चलकर हम लोगों के यहाँ आती हैं। किसकी प्रेरणा से यहाँ तक आती हैं? प्रेम के। उनका प्रेम निस्वार्थ है। उनमें विश्वास है। मैं उनसे एकदम भिन्न हूँ। मेरा प्रेम उस तरह का नहीं है। मेरा प्रेम अपने निकटतम तक ही अवलंबित है।'

अपने मुँह पर हाथ फेरते हुए नखोदका ने कहा—'सब कोई अपने निकटतम को ही चाहता है। जिनका हृदय उदात्त है उनके लिये दूर और निकट सब बराबर है। तुम्हारा हृदय बड़ा उदार है। सच्चे मातृ-स्नेह का स्रोत तुम्हारे हृदय में बहता रहता है।

माँ—भगवान करें तुम्हारा वचन सच हो। वही जीवन

सार्थक है। मैं तुम्हें प्यार करती हूं। भगवान करे मैं तुम्हें पावेल से अधिक प्यार करूँ। वह सदा मौन रहता है। मैंने सुना है वह शशेंका से व्याह करना चाहता है। लेकिन उसने मुझसे चर्चा तक नहीं की।

नखोदका—यह सरासर झूठ है! दोनों में परस्पर प्रेम अवश्य है और शशेंका व्याह करना चाहती भी है पर पावेल इसके लिये तैयार नहीं है।

उदासी और प्रसन्नता के मिश्रित भाव से नखोदका की ओर देखती हुई माँ ने कहा—'तुम्हारी प्रकृति कैसी अच्छी है। तुम खुद आगे कदम रखने के लिये तैयार हो।'

नखोदका—पावेल अनोखा आदमी है। वह लोहे के समान दृढ़ है।

माँ—इस वक्त वह जेल में है। मेरे लिये यह कितना भीषण है। यद्यपि पहले के समान नहीं। जीवन में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया है। भीषणता की मात्रा पहले की अपेक्षा बहुत कुछ कम हो गई है। अब तो हृदय में सबके लिये दया आती है और सब के लिये चिंता उत्पन्न हो जाती है। अब वह हृदय ही नहीं रहा। अंतरात्मा जागृत हो उठी है। वह सतर्क है। हर्ष और विषाद का उद्वेग साथ ही होता है। बहुत-सी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं फिर भी मुझे इस बात से दुख है कि तुमलोग ईश्वर में विश्वास नहीं रखते। मैं लाचार हूँ पर मैं जानती हूं कि तुमलोग अच्छे आदमी हो। तुमलोगों ने सर्व-साधारण के लिये, तथा

सत्य के लिये अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया है। मुझे भी उसका कुछ परिचय मिल गया है कि जबतक धनिकों का आतंक रहेगा जन-साधारण का कल्याण कभी नहीं हो सकता। यह ध्रुव सत्य है। मैं भी तुमलोगों के साथ यह सब घटनाएँ देख रही हूँ। कभी-कभी रात को मुझे अपने अतीत जीवन की याद आ जाती है। मैं अपनी कुचली हुई जवानी पर विचार करने लगती हूँ। मेरा हृदय विषाद से भर जाता है। पर मेरा वर्तमान जीवन कहीं उत्तम है।

नखोदका—अपनी जगह से उठा और कमरे में टहलने लगा। वह चिंतायुक्त था। बोला—'तुम्हारी बातें सर्वथा सच हैं। कर्चे में एक युवक यहूदी रहता था। वह कविता किया करता था। एक बार उसने लिखा था:—

'निर्दोषों के रक्तपात से सच को प्रश्रय मिलता है।
जो उसे कुचलने चलता है वह खुद ही कुचला जाता है॥'

कर्चे में पुलिस-द्वारा उसकी हत्या की गई। पर उससे क्या? उसने सत्य-मार्ग का आश्रय लिया था और लोगों में उसका प्रचार करने का पूरा प्रयत्न किया। तुम भी ठीक उसी यहूदी युवक की तरह निर्दोष मारी गई हो। पावेल सत्य के पक्ष पर था।'

माँ—मैं बोल रही हूँ पर मुझे कुछ सुनाई नहीं देता। मुझे अपने ही कामों पर विश्वास नहीं रहा। जीवन भर मैं मौन रही। मेरे ध्यान में केवल एक ही बात थी। किस प्रकार यह जीवन अनदेखा और एकांत में व्यतीत हो और आज मैं हर बात पर

सोचती हूँ। संभव है तुम्हारे आंदोलन को मैं पूर्णरीति से न समझती होऊँ पर तुमलोगों से सहानुभूति है। मुझे सबके लिये वेदना है। मैं सबका कल्याण चाहती हूँ और सबसे ज्यादा तुम्हारा।

माँ का हृदय उद्वेग और उल्लास से धड़क रहा था। उसके रोम-रोम से प्रसन्नता की झलक दिखलाई दे रही थी।

नखोदका अब तक टहल रहा था। बोला—'माँ, निकोले पर दया करो उसे अपने हृदय के समीप बैठाओ। तुम्हारी दया की उसे नितांत आवश्यकता है। उसके पिता कैदी हैं। जब कभी निकोले उन्हें देख पाता है गालियाँ देने लगता है। कैसी करुणाजनक अवस्था है। निकोले अच्छा आदमी है। उसे पशु-पक्षियों से प्रेम है लेकिन मनुष्य से घृणा। उसका सुधार आवश्यक है।

माँ—उसकी माँ निकल गई और आजतक पता न लगा। उसका पिता नशेबाज़ और चोर है।

इसके बाद नखोदका सोने चला गया। माँ ने उसके लिये प्रार्थना की। तब पूछा—'तुम सो गए।'

नखोदका—नहीं माँ, क्यों ?

माँ—यों ही, सो रहो।

नखोदका ने संतुष्ट होकर कहा—'तुम सचमुच मेरी माँ हो।'

बारहवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन भी माँ सुसज्जित होकर कारखाने के फाटक पर पहुँची। जमादार ने उसे रोककर रुखाई से कहा—'सब चीज यहाँ रखो। तलाशी ली जायगी।'

माँ—मेरे सामान ठंढे हो जायँगे।

जमादार ने डाँटकर कहा – 'चुप रहो।'

दूसरा जमादार जो उसके शरीर की तलाशी ले रहा था, इतमीनान से कहने लगा—'इन परचों को कोई बाहर से फेंक जाता है।'

सिजोब दौड़ता हुआ उसके पास आया और धीरे से बोला—'माँ तुमने कुछ सुना ?'

माँ—क्या ?

सिजोब—कल फिर परचे कारखानों में चारों ओर पड़े पाए गए। न जाने उन गिरफ्तारियों और तलाशियों से क्या लाभ हुआ ? मेरे भतीजे मेजिन और तुम्हारे लड़के पावेल वगैरह को जेल में बंद कर दिया है। अब तो निश्चय हो गया कि उनलोगों का इससे कोई संबंध नहीं था। इसका संबंध व्यक्ति से नहीं मस्तिष्क से है और मस्तिष्क को तो मक्खी की तरह पकड़ नहीं सकते।

उसने अपनी लंबी दाढ़ी पर हाथ फेरा। माँ को ओर देखा और जाते-जाते कहा—'तुम कभी-कभी मेरे घर आ जाया करो। आजकल एकदम अकेली होगी।'

माँ ने उसे धन्यवाद दिया और अपने बर्तनों को सम्हालकर

रखने लगी। इसने देखा कि इसके आते ही कारखाने में हलचल मच गई। सभी मजूर प्रसन्न थे। छोटे-छोटे गरोह बाँधकर वे इधर-उधर दौड़ते फिरते थे और बोली-आवाजा कसते थे।

एक ने कहा—'मालूम होता है कि अधिकारियों से सबसे दुश्मनी है।'

युवक मजूरों में और भी अधिक उत्साह था। बुड्ढे मजूर कुछ सतर्क थे। कर्मचारी चिंतित थे और पुलिस का कड़ा पहरा था। पुलिस को आते देख मजूरे तितर-बितर हो जाते अथवा मौन हो रहते।

सभी मजूरे आज निडर थे। गुसेव की प्रधानता व्यक्त थी। उसके भाई का ठहाका मारकर हँसना और भी व्यक्त था। वविलों और क्लर्क इसे माँ के पास ही टहल रहे थे। इसे कभी-कभी गर्दन घुमाकर क्रुद्ध अधिकारियों की ओर देखता और इवान इवानोविच से कहता—वे सब हँस रहे हैं। इसे वे सब मजाक समझते हैं। वे सब खुश हैं यद्यपि मैनेजर के शब्दों में इसमें सरकार का नाश है।

वविलो पीछे की ओर हाथ मोड़कर टहल रहा था। बोला—'तुमलोगों के मन में जो आता है छापते हो। मेरे बारे में एक शब्द भी नहीं लिखते।'

गुसेव माँ के पास आकर बोला—'क्या आज का सामान बढ़िया है? ((और कान में धीरे से कहा)—'खूब हुआ! बड़ा काम निकला।'

उसने प्रसन्नता से सिर हिला दिया। उसे इस बात से संतोष था कि गुसेव उसका आदर करता है। कारखाने की हलचल से उसे और भी खुशी थी। वह अपने मन में कहती थी—'मेरे बिना यह सब क्या करेंगे?'

तीन-चार साधारण मजूर माँ से थोड़ी दूर पर खड़े होकर बातें कर रहे थे।

एक ने कहा—'मुझे तो एक भी परचा नहीं मिल सका। यद्यपि मैंने बहुत तलाशा!'

दूसरा—मैं तो पढ़ नहीं सकता पर सुनना चाहता था। जो हो। मैंने सुना है कि उस परचे का बड़ा असर हुआ है।

तीसरे ने इधर-उधर देखकर कहा—'यहाँ से कहीं एकांत में चलो। मैं पढ़कर तुमलोगों को सुना दूँगा।

गुसेव ने आँख के इशारे से ही माँ से कहा—'परचा अपना काम कर रहा है।

माँ परम प्रसन्न थी। उसने अपनी आँखों से परचों का असर देख लिया था। घर आकर उसने नखोदका से कहा—'कारखाने में मजूरों को दुख है कि वे पढ़ नहीं सकते और जवानी में पढ़ना सीखकर भी मैं भूल गई।'

नखोदका—फिर सीख लो।

माँ—इस उत्तर में तुम मेरी हँसी उड़ा रहे हो!

नखोदका ने चुपचाप आलमारी से एक पुस्तक निकाली और माँ के पास ले जाकर पूछा—'यह कौन अक्षर है?'

माँ ने हँसकर जवाब दिया—“र” ।

नखोद्का—और यह ?

माँ—“अ” ।

यह माँ को बहुत बुरा मालूम हुआ। उसे चोट-सी लगी। उसे मालूम हुआ कि नखोद्का हँस रहा है। उसकी ओर देखने का उसे साहस नहीं हुआ। लेकिन नखोद्का की वाणी में माधुर्य और नरमी थी। माँ ने कनखियों से नखोद्का की ओर कई बार देखा। उसमें प्राकृतिक सचाई थी।

माँ ने हँसकर पूछा-‘क्या तुम सचमुच मुझे पढ़ाना चाहते हो ?’

नखोद्का—कोई हर्ज है ? आपको पढ़ना आता था। अब तो सहज में अभ्यास हो जायगा। यह कोई असंभव बात नहीं है और न इसमें कोई हानि ही है।

माँ—पर लोगों का कहना है कि केवल मूर्ति की ओर देखने से ही कोई देवता नहीं बन सकता।

नखोद्का—कहावतों में कोई सार नहीं है। एक कहावत है—‘जितना ही कम जानो, उतनी ही शांति मिलती है।’ इसमें कितना सार है ? कहावतें आत्मा के लिये लगाम हैं पर आत्मा सदा स्वतंत्रता चाहती है। आगे चलिए यह कौन अक्षर है ?

माँ—“म”।

नखोदका—ठीक है। और यह ?

आँखों पर जोर दे-देकर वह अक्षरों को पढ़ने लगी। वह अक्षरों को पहचानने में इतना तल्लीन हो गई कि अपने को भूल

गई। लेकिन थोड़ी ही देर में उसकी आँखें थक गईं। उसमें पानी भर आए। उसने वेदनाभरे शब्दों में कहा—'मेरे मरने के दिन आ गए। और मैं पढ़ना सीख रही हूं।'

नखोद्का—माँ, रोओ मत ! जिस तरह का जीवन तुम्हें बिताना पड़ा उसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुम तो इतना भी समझती हो कि तुम्हारा जीवन बुरी तरह बीता है। यहाँ कितने लोग हैं जो पशु से भी बुरा जीवन बिताते हैं फिर भी अभिमान करते हैं कि मेरी जिंदगी सुख से कटी। पर उनके जीवन की क्या उपयोगिता है। केवल खाने के लिये जीते हैं। पहले तो लड़का पैदा करते अच्छा लगता है पर जब उन्हें अन्न-वस्त्र देना पड़ता है तो लाल-लाल आँखें दिखाते हैं और उन्हें भी उसी निकृष्ट जीवन में ले घसीटते हैं। न तो उनके हृदयों में उल्लास है और न हर्ष। कितने भिखमंगों का जीवन व्यतीत करते हैं और कितने चोरों का। उन्हीं में कितने जबर्दस्त चोर हैं जिन्होंने चोरों के लिये कानून बनाया है। आदमियों के ऊपर रखवार नियत किया है और उनसे कहा जाता है—'इन कानूनों की रक्षा करो। ये बड़े अच्छे हैं। इनकी सहायता से गरीबों का रक्त आसानी से चूसा जा सकता है।' इसी तरह ये लोग जन-साधारण का रक्त चूस लेना चाहते हैं और जब लोग विरोध करते हैं तो कानूनी दाँव-पेंच से उनका सर्वनाश कर डालना चाहते हैं।

वह केहुनी के सहारे टेबुल पर झुक गया और माँ की ओर मुखातिब होकर कहने लगा—'उन्हीं का जीवन सार्थक है जो

अपने लिये और सर्वसाधारण के लिये इन बेड़ियों को तोड़ना चाहते हैं। तुम भी अपनी योग्यतानुसार इस काम में सहायक हो रही हो।'

माँ—मैं क्या सहायता कर सकती हूँ।

नखोदका—पानी के हर बूँद से तालाब भरता है। एक बूँद का दूसरे बूँद से अलग कोई अस्तित्व नहीं है। और जब आपको भलीभाँति पढ़ना आ जायगा—।'इतना कहते-कहते वह रुक गया और हँसने लगा। फिर बोला—'तुम्हें पढ़ना अवश्य सीख लेना चाहिए। जेल से लौटकर पावेल चकित हो जायगा।'

माँ—युवक के लिये सब कुछ साध्य है। हमारी उमर में आकर चिंता बढ़ जाती है, शक्ति क्षीण हो जाती है और मन में उत्साह नहीं रहता।

शाम को नखोदका बाहर चला गया। माँ ने चिराग जलाया और बैठकर मोजा बुनने लगी। लेकिन थोड़ी देर के बाद वह उठी, दरवाजा बंद कर दिया और कमरे में चली गई। आलमारी से एक पुस्तक निकालकर बैठ गई और धीरे-धीरे पढ़ने लगी। जब कभी दरवाजे के पास किसी के पैर की ध्वनि सुनती चट किताब बंद कर देती और उधर ही कान लगा देती। इसी तरह पुस्तक खोलते और बंद करते वह पढ़ने का यत्न कर रही थी।

यकायक किसी ने दरवाजा खटखटाया। उसने फुर्ती से किताब बंदकर आलमारियों में रख दिया और पास जाकर पूछा—'कौन है?'

तेरहवाँ परिच्छेद

अपनी लंबी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए रिबिन ने पूछा—

'पहले तो लोग पूरी आजादी के साथ आया-जाया करते थे और तुमने इस तरह का सवाल कभी नहीं किया था? अकेली हो क्या? नखोद्का कहाँ है? आज सबेरे मैंने उसे देखा था। यदि लोग मूर्खता न करें तो जेल में लोगों की हालत में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता।

इतना कहकर वह एक जगह बैठ गया और माँ से बातें करने लगा। बोला—'मुझे कुछ कहना है। मुझे एक बात सूझी है।'

यह कहते समय उसके चेहरे का विचित्र भाव हो गया। माँ को भय मालूम हुआ। वह उसके पास बैठ गई और चिंता के साथ उसके कथन की प्रतीक्षा करने लगी।

उसने कहा—'हर जगह रुपये की जरूरत पड़ती है। जन्म-मरण में रुपये की जरूरत है। लिखने-पढ़ने के लिये रुपयों की जरूरत है। क्या तुम जानती हो कि यह सब रुपया कहाँ से आता है?

माँ ने भयभीत होकर कहा—'मुझे क्या मालूम!'

रिबिन—मुझे भी नहीं मालूम! दूसरी बात यह है कि इन किताबों और परचों को लिखता कौन है? पढ़े-लिखे लोग। शिक्षित-समाज! ये ही लोग इन पुस्तकों को लिखते हैं और बनवाते हैं पर पुस्तकों की बातें इनके ही विरुद्ध होती हैं। प्रश्न यह

उठता है कि ये लोग इस तरह अपने ही विरुद्ध जन-साधारण को उभाड़ने के लिये इस प्रकार अपना समय और रुपया क्यों नष्ट करते हैं ?

उसका चेहरा गंभीर था और आँखें लाल हो रही थीं।

माँ की आँखें क्षणभर के लिये बंद हो गईं। दूसरे ही क्षण उसने आँखें खोलीं और पूछा—'तुम क्या समझते हो ?'

रिबिन—जिस समय मेरे मन में यह विचार उठा मैं भी काँप उठा।

माँ—क्या तुम्हें इसका कारण मालूम हो सका ?

रिबिन—धोखा ! विश्वासघात ! मैं निश्चयात्मक कुछ नहीं कह सकता पर मुझे इसमें स्पष्ट धोखा दिखाई देता है। सभी रुपयेवाले किसी-न-किसी चाल की धुन में हैं और हमलोगों को उसका पता नहीं है। मैं सच बातें मानना चाहता हूँ। मैं उनकी चालों को समझता हूँ पर मैं उनकी निगाहों में नहीं आना चाहता क्योंकि मौका पाकर वे मुझे ढकेल देंगे और मेरी हड्डी-पसली तोड़कर नेस्त-नाबूद कर देंगे।

इन कठोर शब्दों को उसने ऐसा ज़ोर देकर कहा था कि माँ का कलेजा काँप उठा। बोली—'भगवान् ! सत्य कहाँ छिपा है ? क्या पावेल भी सच्ची बातें नहीं जानता क्या यहाँ आनेवालों में-से किसी को भी सच का ज्ञान नहीं है। ईगर इवानोविच, निकोले और शशेंका आदि सभी की निश्छल मूर्ति उसकी आँखों के सामने खड़ी हो गई। उसे आंतरिक वेदना हुई। उसने अपनी गर्दन

हिलाते हुए कहा—'यह हो नहीं सकता। अपने विश्वास के अनुसार वे सब-के-सब सच के लिये अपना सर्वस्व निछावर कर चुके हैं। उन सबों के मन में बुरी भावना हो ही नहीं सकती।'

रिबिन ने गंभीर होकर पूछा--'किसकी चर्चा कर रही हो?'

माँ--उन्हीं सबों के बारे में! जिस किसी से भी इस संबंध में मुझे मिलने का अवसर मिला है। वे व्यर्थ रक्तपात करनेवाले जीव नहीं हैं।

उसका शरीर काँपने लगा और चेहरे पर पसीने की बूँदों का जाल छा गया।

रिबिन ने सिर नीचा करके कहा—'तुम ठीक तरीके से पर्यवेक्षण नहीं कर रही हो। जो लोग इस आंदोलन में केवल भाग ले रहे हैं, स्वयं वे भी इन बातों को न जानते होंगे। वे तो इसके प्रगट रूप को ही ठीक समझते हैं। उनका हृदय शुद्ध है और वे सत्य पर दृढ़ हैं। पर इस आंदोलन के जो सूत्रधार हैं उनका अवश्य कुछ अपना निजी स्वार्थ है। नहीं तो स्वयं अपने प्रतिकूल कोई भी आचरण नहीं कर सकता। मैंने तो इसी में बाल पकाए हैं, मुझे किसी पर भरोसा नहीं रहा। मैं तो दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि रुपयेवालों से हमलोगों का कभी भी उपकार नहीं हो सकता।'

माँ का हृदय चिंता से उद्विग्न हो उठा। बोली—'तुमने भी क्या मनगढ़ंत बातें निकाली हैं?

"मैं?" इतना कहकर वह चुप हो गया और माँ की ओर

देखने लगा। फिर बोला—'मेरा तो यही कहना है कि रुपयेवालों से सदा दूर रहो।'

इतना कहकर वह इस तरह खामोश हो गया मानों किसी विचार में पड़ गया हो।

थोड़ी देर के बाद उसने फिर कहना शुरू किया—'मैं भी इन सबों का साथ देना चाहता था। मैं यह काम खूबी के साथ कर सकता था। मैं लिख-पढ़ सकता हूँ। मैं परिश्रमी भी हूँ। और सबसे बड़ी बात यह है कि जनसाधारण को समझाने का तरीका मुझे मालूम है। पर मैं उनसे दूर रहूँगा। मेरा दिल नहीं भरता। मैं जानता हूँ कि लोगों की आत्मा कलुषित है। लोग एक दूसरे से जलते हैं। सभी अपने-अपने पेट की धुन में हैं। पर किसी को पर्याप्त नहीं मिलता, इसलिये एक दूसरे को हजम कर जाना चाहते हैं।'

इतना कहकर वह चुप हो गया और कुछ सोचने लगा। अंत में उसने फिर कहा—'मैं स्वयं गाँव-गाँव घूमूँगा और लोगों को जगाऊँगा। आवश्यक है कि जन-साधारण सम्हल जाय और अपने हाथ में काम ले ले। उन्हें वास्तविक काम समझा भर दीजिए। वे स्वयं रास्ता ढूँढ निकालेंगे। मैं उन्हें समझाने का यत्न करूँगा। यदि वे अपने पैरों नहीं खड़े होते हैं तो उनके उद्धार की कोई आशा नहीं है। जबतक वे स्वयं चेष्टा नहीं करेंगे उनकी वास्तविक अवस्था का सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता। और यही तथ्य है।'

माँ ने धीरे से कहा—'तुम भी पकड़े जाओगे।'

रिबिन—मैं पकड़ा जाऊँगा फिर छोड़ दिया जाऊँगा। तब मैं आगे बढ़ूँगा।

माँ—किसान ही तुम्हें पकड़कर जेल में ठूँस देंगे।

रिबिन—मैं जेल में पड़ा रहूँगा। जभी छुटकारा पाऊँगा तभी अपना काम शुरू करूँगा। किसान लोग मुझे एक बार बाँधेंगे, दो बार बाँधेंगे; पर धीरे-धीरे वे लोग मेरी बात समझने लगेंगे। तब मुझे नहीं बाँधेंगे और मेरी बात सुनने लगेंगे। मैं उनसे कहूँगा—'मैं नहीं कहता कि मेरी बातों को मानिए। उन्हें ध्यान से सुनिए। और जहाँ ध्यान से सुनने लगे तब मानेंगे ही।'

दोनों इतनी सावधानी से बातें कर रहे थे मानों हरएक शब्द तौलकर मुँह से बाहर निकाल रहे हों।

रिबिन ने कहा—'मेरे लिए जीवन में कोई रस नहीं रह गया है। मैं बहुत दिनों तक जी चुका और बहुत जमाना देख चुका। मैं थोड़ा बहुत समझता भी हूँ, मेरी वेदना का हद नहीं है।'

माँ ने दुख से सिर हिलाते हुए कहा—'तुम अपना सर्वनाश करोगे।'

उसने मर्मभरी दृष्टि माँ पर डाली। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। कुर्सी पर हाथ टेककर वह माँ की ओर झुका और कहने लगा—'तुम्हें याद है कि प्रभु ईशा ने बीज के संबंध में क्या कहा था? 'तू मरेगा नहीं बल्कि नए पौधे के रूप में तू पुनः प्रगट होगा।' मैं अपने को मौत के निकट नहीं समझता। मैं थोड़ा

सतर्क हूँ। मेरा रास्ता औरों के बनिस्बत सीधा है। इस मार्ग से आगे बढ़ने में सुविधा है। केवल मुझे इतना ही दुख है पर मैं उसका कारण नहीं जानता।' वह कुर्सी पर बैठ गया और फिर उठकर कहने लगा—'मैं सराय की ओर जाता हूँ जरा लोगों से मिल-जुल आऊँ। नखोदका के आने की कोई आशा नहीं है। आज ही काम में लग गया!'

माँ—जेल से छुटकारा मिला कि काम की ओर दौड़े।

रिबिन—यही सच्ची लगन है। उससे मेरा अभिवादन कह देना।

माँ—कह दूगी।

रिबिन जाने लगा। माँ ने पूछा—'तुम काम कब छोड़ोगे?'

रिबिन—हमने छोड़ दिया।

माँ—तुम कब जाने की तैयारी कर रहे हो?

रिबिन—कल सबेरे ही।

इतना कहकर उसने सिर झुका लिया और बेमन मकान से बाहर हो गया। माँ दरवाजे पर खड़ी रही। जब उसके पैर की ध्वनि मंद पड़ने लगी तो वह कमरे में वापस आई और परदा हटाकर खिड़की से झाँकने लगी। निबिड़ अंधकार विशाल मुँह बाए हुए निश्चल खड़ा था।

'मैं सदा अंधकार में रहती हूँ।' इतना कहकर उसने लंबी साँस ली। उस गरीब किसान की दशा पर उसे दया आई। इतना हृष्ट-पुष्ट होते हुए भी अन्यलोगों की भाँति वह भी एकदम लाचार है।

इसी वक्त नखोद्का ने अंदर पैर रखा। माँ ने रिबिन के बारे में सब कुछ कह डाला।

नखोद्का ने कहा—'बहुत ही अच्छा है। यहाँ उसकी पटरी नहीं बैठती। देहातों में ही उसे जाने दीजिए और लोगों को जागृत करने दीजिए।'

माँ—वह कह रहा था कि इस आंदोलन में रुपयेवालों का हाथ है। वह जनसाधारण को ठगना चाहते हैं।

नखोद्का हँस पड़ा। बोला—'आप परेशान हैं! रुपए के प्रश्न से! आह! यदि हमलोगों के पास रुपया होता! हमलोगों का कुल काम दान से चल रहा है। उदाहरण के लिये निकोले को पचहत्तर रुबुल मासिक मिलता है और वह ५० हमलोगों को दे देता है। इतर मजूर भी यही करते हैं। गरीब विद्यार्थी पाई-पाई बटोरकर हमलोगों के पास भेजते हैं। रुपयेवालों में भी भिन्न प्रकृति के लोग हैं कुछ हमलोगों को धोखा देंगे, कुछ साथ छोड़ देंगे। लेकिन उनमें भी अच्छे लोग है। वे सदा साथ रहेंगे और हमलोगों की प्रगति के साथ-साथ आगे बढ़ते रहेंगे।'

उसकी बातों से माँ को बड़ी तसल्ली हुई। उसका भय जाता रहा।

नखोद्का उठ खड़ा हुआ और तेजी के साथ कमरे में टह-लने लगा। उसका एक हाथ सीने पर था और दूसरा सिर पर। धरती की ओर ताकते हुए उसने कहा—'कभी-कभी हृदय में विचित्र भाव पैदा हो जाते हैं। जहाँ कहीं जाइए सभी एक

उद्देश्य के मिलते हैं सभी उसी एक रंग में रँगे दिखाई देते हैं; सभों के हृदय में वही ज्वाला दहकती दिखाई देती है। बिना किसी भूमिका के लोग एक दूसरे को समझाने लगते हैं और कोई किसी को दुःख देना नहीं चाहता। क्योंकि इसकी आवश्यकता ही नहीं प्रतीत होती। भिन्न-भिन्न हृदयों का स्रोत एक ही धार में मिलने के लिये आगे बढ़ता है और आनंद तथा उल्लास की दरिया उमड़ आती है। इस अवस्था का अनुभव करते ही हृदय गद्गद् हो जाता है। आखों में आनंद के आँसू उमड़ पड़ते हैं।'

वह बोलता जाता था और इस प्रकार अन्वेषक दृष्टि से देख रहा था मानों अपने हृदय के भीतर कुछ टटोल रहा हो। माँ बड़ी सावधानी से उसकी बातें सुन रही थी और अपने को सम्हाले हुए थी जिससे नखोद्का को किसी तरह की बाधा न पहुँचे। नखोद्का की बातें वह बड़े गौर से सुना करती थी। उसकी बातें भी बड़ी सरल और आकर्षक हुआ करती थीं। पावेल भी इसी भविष्य पर आशा लगाए हुए था। जब उसका जीवन भी इसी तरह व्यतीत हो रहा है तब अन्यथा किस प्रकार हो सकता है। वह सुंदर भविष्य की चर्चा इस प्रकार कभी नहीं करता था। परंतु नखोद्का का हृदय खुला था। उसके हृदय में भविष्य की झलक दिखाई दे जाती थी। नखोद्का की बातों से माँ को इस आंदोलन का भविष्य कुछ-कुछ दिखाई देने लगा।

नखोद्का ने अपना सिर हिलाया। हाथों को सीधा किया और फिर कहने लगा—'जब निद्रा भंग होती है तब चारों ओर

विचित्र निस्तब्धता और गंदगी दिखाई देती है। सभी थके-माँदे और भूखे दिखाई देते हैं। मानव-जीवन कीचड़ की भाँति लथपथ और रौंदा हुआ दीखता है।'

इतना कहकर वह माँ के सामने खड़ा हो गया और दर्द भरे शब्दों में धीरे-धीरे कहने लगा— यह बड़ी हीनता का विषय है पर किया क्या जाय ! मनुष्य से डर लगता है। उसका अविश्वास करना पड़ता है। उससे घृणा करनी पड़ती है। मानव-जीवन सम नहीं है; उसमें विषमता है। यदि मनुष्य से केवल प्रेम करना चाहे तो भी संभव नहीं है। अगर कोई व्यक्ति हमारी नितांत अवज्ञा करता है, पशु से भी बुरी तरह हमारे साथ पेश आता है, हमारे शरीर में स्थित मानवी आत्मा की नितांत अवहेलना करता है, तो हम उसे किस प्रकार क्षमा कर सकते हैं ? हमें क्षमा नहीं करनी चाहिए। यह केवल व्यक्तिगत नहीं है। कोई भी मनुष्य व्यक्तिगत अपमान बरदाश्त कर सकता है पर हम उसका हौसला नहीं बढ़ाना चाहते। मेरे बरदाश्त कर लेने से वे दूसरों पर प्रहार करना सीख जायँगे।'

उसका चेहरा तमतमा उठा। आवाज और तेज हो गई। बोला—'हमें कोई भी अपमान बरदाश्त नहीं करना चाहिए चाहे उससे क्षति न हो। यह संसार मुझे ही लेकर तो नहीं है। आज हमने अपमान बरदाश्त कर लिया। हँसकर टाल दिया। माना कि उससे मेरी किसी तरह की क्षति नहीं हुई है पर इससे अपमान करनेवाले का हौसला बढ़ जाता है। कल वह दूसरे का अपमान

करने के लिये अग्रसर होगा। इसी के लिये अपने-पराए का ख्याल रखना पड़ता है।'

माँ को अफसर और शशोंका का ख्याल आ गया। उसने लंबी साँस लेकर कहा—'रोटी खुली रखने से वह अवश्य ठंढी हो जायगी।'

नखोदका—कठिनाई वही है। हर काम में भिन्न-भिन्न दृष्टि रखनी होगी। दो भिन्न हृदय रखना होगा। एक में विश्व-प्रेम का स्रोत बहता हो और दूसरा कहे—ठहरो, सबके साथ समान व्यवहार नहीं।

नखोदका कहता गया—'ये बातें इतनी स्पष्ट हैं कि देखने से ही बेहूदा प्रतीत होती हैं और इसका एकमात्र कारण यही है कि कहीं भी समता का राज्य नहीं है। सब समान कर दीजिए सबको बराबर खड़ा कर दीजिए। दिमाग और हाथ की उपज को सबमें बराबर बाँट दीजिए। ऊँच-नीच का भेद हटा दीजिए।'

इस तरह की बातें नखोदका और माँ के बीच बहुधा हुआ करतीं। नखोदका को कारखाने में काम मिल गया। वह जो कुछ कमाता माँ को दे देता। कभी-कभी वह माँ से पूछता—'कुछ पढ़ा भी जायगा ?'

जब वह इनकार करती नखोदका हँस देता। इस पर माँ कहती—'जब तुम्हें हँसी आती है तब हमें पढ़ने के लिये क्यों कहते हो ?'

• नखोदका ने लक्ष्य किया कि माँ बहुधा उससे नए शब्दों का

अर्थ पूछा करती है। जब कभी वह किताबी शब्दों का अर्थ पूछती है उसकी आँखें झुकी रहती हैं और लापरवाही से बोलती है। इससे उसने अनुमान किया कि माँ एकांत में पढ़ती है। प्रगट होने से शर्माती है। इससे उसने पढ़ने की चर्चा ही छोड़ दी।

एक दिन माँ ने कहा—'मेरी आँखें कमजोर हुई जा रही हैं। मालूम होता है चश्मा की जरूरत पड़ेगी।'

नखोदका—अगले रविवार को आपकी आँखों की परीक्षा कराकर चश्मा खरीद देंगे।

चौदहवाँ परिच्छेद

माँ पावेल से मुलाकात करने के लिये आतुर थी। वह तीन बार जेलर के पास गई पर तीनों बार उसने यह कहकर उसे लौटा दिया कि अगले सप्ताह आना। इस सप्ताह में मुलाकात नहीं हो सकती। असंभव है।

अफसर का मुँह लंबा और गोल था। चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं। लटकानी आ गई थी। वह हमेशा दाँत खोदा करता था। उसकी आँखों में शील था और वाणी में मुरौवत!

माँ ने नखोदका से कहा—'बड़ी मुरौवत के साथ सदा हँसकर बातें करता है। मैं इसे उचित नहीं समझती। इस तरह की जिम्मेदारी के काम में यह व्यवहार ठीक नहीं जँचता।'

नखोदका—हँसने की तो उनसबों को आदत है। अगर

उनसे कहा जाय कि अमुक व्यक्ति समझदार और ईमानदार है इसलिए राज्य के लिये खतरनाक है इसलिए इसे कत्ल कर दो। वे सब उसी प्रकार हँसते रहेंगे और उसका कत्ल कर देंगे।

माँ—जिसने यहाँ तलाशी ली थी वह सबों के बनिस्बत अच्छा आदमी मालूम होता है। वह सीधा-सादा है।

नखोदका—एक भी इनसान नहीं है। यही सब तो अधिकारियों के हथियार हैं। इन्हीं के द्वारा हमलोगों की दुर्दशा कराई जाती है। इनसबों की आत्मा मर गई है। जो कुछ आदेश इन्हें दिया जाता है बिना समझे-बूझे और चूँ किए सदा पालन करने के लिये प्रस्तुत रहते हैं।

अंत में माँ को आज्ञा मिली। अगले रविवार को वह पावेल से मिलने की प्रतीक्षा में जेल के दफ्तर के एक कोने में चुपचाप जा बैठी। वहाँ और कुछ लोग भी इसीलिए आए हुए थे। अनेक बार की मुलाकात से थोड़ी जान-पहचान भी हो गई थी। समय काटने के लिये आपस में बातें होने लगीं।

एक मोटी-ताजी स्त्री ने कहा—'आपलोगों ने सुना है, आज फिर गिरजा में प्रार्थना के समय पादरी ने गीत गानेवाले एक लड़के का कान पकड़ा था।'

बुड्ढे ने, जो सिपाहियाना लिबास में था खाँसते हुए कहा—'गीत गानेवाले ये लड़के पाजी होते ही हैं।'

एक ठिंगने आदमी ने कहा—'भोजन की सामग्री का मूल्य मँहगा हो गया है।'

कभी-कभी उस कमरे में कैदी भी आ जाते थे। उनकी बेड़ियों की झनकार से कमरा गूँज उठता था। उस स्थान की सादगी और खामोशी निराला दृश्य उत्पन्न कर रही थी। मालूम होता था कि सब-के-सब उस अवस्था के आदी हो गए हैं। कुछ खामोश बैठे थे और कुछ चुपके-चुपके इधर उधर देख रहे थे और कुछ वेदना के साथ मिलते-जुलते थे। माँ का हृदय अधीर हो उठा। वह घबराकर अपने चारों ओर देखने लगी। इस छोटी दुनियाँ की दर्दनाक सादगी पर उसे विस्मय था।

माँ के पास एक दूसरी औरत बैठी थी। उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं पर उसकी आँखों में तेज था। वह गर्दन घुमा-घुमाकर सबकी बातें सुनती थी और उत्कंठा के साथ चारों ओर देखती थी।

माँ ने नरमी से पूछा—'आपका यहाँ कौन है?'

उस रमणी ने कहा—'मेरा लड़का! कालेज में पकड़ा गया है, और आपका?'

माँ—मेरा भी लड़का। कारखाने में काम करता था।

रमणी—नाम क्या है?

माँ—पावेल वासोव।

रमणी—परिचित नाम नहीं है! कब से जेल में है?

माँ०—प्रायः दो मास से।

इस पर उस रमणी ने अभिमान के साथ कहा—'और मेरा लड़का तो दस महीने से जेल में है।'

एक दूसरी रमणी जो कद में लंबी और काली पोशाक पहने हुए थी बोली—'शीघ्र ही ये लोग सभी भले आदमियों को जेल में डाल देंगे। ये उनसे घृणा करते हैं।'

ठिंगने आदमी ने तेजी से कहा—'निश्चय ही। धैर्य गायब हो रहा है। सब उत्तेजित हैं। सबलोग चिल्ला रहे हैं और वस्तुओं का मूल्य बेहद बढ़ता जा रहा है। परिणाम यह हो रहा है कि आदमी का मूल्य घटता जा रहा है और एक भी आदमी ऐसा नहीं है जो संधि या शांति की बात करे।'

सिपाहिआना लिबासवाले ने कहा—'आपने बिलकुल ठीक कहा। अनर्थ हो रहा है। एक किसी शक्तिशाली व्यक्ति की आवश्यकता है जो सबको शांत कर दे।'

बातें जोर पकड़ती गईं। जीवन की समस्या पर सबलोग अपना-अपना मत देने के लिये अधीर हो रहे थे। पर सभी पहलू बचाकर बोल रहे थे। सभों के विचारों में द्वेष था। माँ के लिये यह नया अनुभव था क्योंकि उसके यहाँ जो लोग आते थे सभी स्पष्ट और खुलासा बोलते थे।

इतने में संतरी ने माँ का नाम पुकारा। सिर से पैर तक उसकी परीक्षा की और साथ जाने को आदेश देकर आगे बढ़ा। वह उसके पीछे हो ली। उसके पैर इतनी तेजी से उठ रहे थे मानों संतरी को ढकेलकर आगे चले जायँगे। पावेल एक छोटे कमरे में खड़ा था। माँ को देख उसने हँसकर प्रणाम किया।

मारे प्रसन्नता के माँ के मुँह से शब्द नहीं निकले। उसने सिर्फ इतना ही पूछा—'तुम कैसे हो ?'

पावेल ने कहा—'माँ, धैर्य धारण करो।'

माँ ने कहा—'सब ठीक है।'

संतरी ने जम्हाई लेते हुए कहा—'माँ, थोड़ा हटकर बैठो। दोनों के बीच थोड़ा फासला रहना चाहिए।'

पावेल ने माँ से घर का सब हालचाल पूछा। उसकी तबियत का हाल पूछा। माँ किसी अन्य प्रश्न की प्रतीक्षा में थी। सापेक्ष दृष्टि से उसने पावेल के चेहरे की ओर देखा भी पर कुछ लाभ नहीं हुआ। वह उसी प्रकार शांत और स्थिर था।

अंत में माँ ने कहा—'शशेंका ने अभिवादन कहा है।'

पावेल की आँखें झप गईं। उसकी आकृति नरम हो गई और चेहरा चमक उठा। माँ के हृदय में चोट लगी।

उसने वेदना और घबराहट के साथ पूछा-'क्या ये लोग तुम्हें शीघ्र छोड़ देंगे ? तुम्हें जेल में क्यों डाला है ? परचे तो कारखाने में बराबर प्रगट हो रहे हैं ?'

पावेल का चेहरा खिल उठा। पूछा-'सच ? कब और कितने ?'

संतरी ने फिर जम्हाई लेते हुए कहा—'इन सब विषयों की चर्चा वर्जित है। केवल घरेलू विषय की चर्चा की जा सकती है !'

माँ—क्या यह विषय घरेलू नहीं है ?

संतरी—मैं यह सब कुछ नहीं जानता। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि ये वर्जित विषय हैं। आप खानपान और कपड़ा

वगैरह की बातें कर सकती हैं, इसके अलावा और कुछ नहीं।

पावेल—अच्छी बात है। माँ, और क्या हाल-चाल है ?

माँ ने निडर होकर कहा—'यह सब मैं ही कारखाने में ले जाती हूँ। खाने की चीजें, पीने की चीजें, मैंने मेरिया के यहाँ नौकरी कर ली है।'

पावेल असली बात समझ गया। उसके चेहरे पर हँसी की रेखा दौड़ गई। उसने नर्मी से कहा—'माँ, तुमने बहुत ही अच्छा किया। तुम्हें समय काटने का कुछ सहारा मिल गया। अब तुम उदास नहीं रहोगी।'

माँ ने अभिमान के साथ कहा—'परचों के प्रगट होने पर कारखाने के फाटक पर मेरी भी तलाशी ली गई।'

संतरी ने चिल्लाकर कहा—'फिर वही बात। मैंने दो बार समझा दिया कि ये सब विषय वर्जित हैं। इसकी स्वतंत्रता का इसीलिए अपहरण किया गया है कि वह इन सब बातों को न जान सके और तुम यही सब समाचार लेकर आई हो। एक बार फिर चिताए देता हूँ।'

पावेल—छोड़ो उन बातों को माँ। ये संतरी बड़े ही भले आदमी हैं। इन्हें क्रुद्ध करना ठीक नहीं है। हमलोगों की इनसे खूब पटती है। भाग्य की बात है कि इस समय भी इन्हीं का पहरा है नहीं तो मुलाकात के समय स्वयं सहकारी जेलर उपस्थित रहते हैं। इसीलिए यह बराबर तुम्हें सावधान करते जा रहे हैं कि कोई भी अनुचित बात यहाँ मत कहो।

इतने में संतरी ने कहा—'समय हो गया। अब बिदा लो।'

पावेल—अच्छी बात है। (माँ से) तुम घबराना नहीं। ये लोग हमें शीघ्र मुक्त करेंगे।

इतना कहकर वह माँ के हृदय से लग गया। माँ की आँखों से अश्रुधारा बह निकली।

संतरी—'अब यहाँ से चलो।' इतना कहकर उसने माँ से चलने का इशारा किया। माँ को रोती देख बोला—'रोओ मत। सबलोग शीघ्र ही मुक्त किए जायँगे। जेल भर गया है। स्थान तक नहीं है।'

घर पहुँचकर माँ ने सब बातें नखोद्का से कहीं। उसके चेहरे से संतोष झलक रहा था। बोली—'मैंने इशारे से परचे की कथा भी कह दी। उसका मधुर व्यवहार ही बतला रहा था कि उसने इसे समझ भी लिया। नही तो आजतक उसने उतनी नरमी का बर्ताव कभी नहीं दिखलाया था।

नखोद्का—वाहरे माता का हृदय! उसे केवल प्रेम चाहिए। तुम्हारे हृदय की उदारता अतुलनीय है।

माँ ने विस्मय के साथ कहा—'लेकिन जब मैं उन अन्य मुलाकातियों पर विचार करती हूँ तो विस्मय होता है। मानों उन्हें सहन पड़ गई है। उनके लड़के गिरफ्तारकर जेलों में ठूँस दिए गए हैं पर इसकी उन्हें रत्ती भर भी चिंता नहीं है। वे लोग वहाँ आते हैं, बैठते हैं और आनंद के साथ इधर-उधर की बातें करते हैं। तुम्हारा क्या विचार है? यदि पढ़े-लिखे लोगों की यह हालत

है तब साधारण लोगों के बारे में क्या कहा जा सकता है ?'

नखोदका ने स्वभावगत मुस्कुराहट के साथ कहा—'यह स्वाभाविक है। कानून की जितनी सख्त पाबंदी हमलोगों के साथ है उतनी उनलोगों के साथ नहीं। और उन्हें कानून की आवश्यकता भी हमलोगों से अधिक पड़ती है। इसलिये जब कानून का चाबुक उनकी पीठ पर पड़ता है तो वे उतनी जोर से नहीं चिल्लाते जितना होना चाहिए। अपनी लाठी की चोट उतनी भयानक नहीं प्रतीत होती। एक तरह से कानून उनकी हिफ़ाजत का जरिया है। केवल हमलोगों के लिये वह बंधन है क्योंकि हमलोग उसे ठुकरा नहीं सकते।'

तीन दिन बाद की बात है। माँ बैठी मोजा बुन रही थी और नखोदका रोम की क्रांति का इतिहास माँ को सुना रहा था। इसी समय किसी ने दरवाजे पर जोर का धक्का दिया। नखोदका ने जाकर दरवाजा खोला। निकोले ने प्रवेश किया। उसकी बगल में एक पुलिंदा था और घुटने तक शरीर कीचड़ से लथपथ था। बोला—'मैं सीधे जेल से चला आ रहा हूँ। रोशनी देखकर इच्छा हुई कि आपलोगों से भेंट करता चलूँ। पावेल ने प्रणाम कहा है।'

इतना कहकर वह सामने कुर्सी पर बैठ गया और शंकित दृष्टि से कमरे में चारों ओर देखने लगा।

माँ उससे कभी भी संतुष्ट नहीं थी। उसके गोलमटोल चेहरे और छोटी आँखों से माँ न जाने क्यों सदा घबराती थी। पर आज वह उससे प्रसन्न थी। उसने प्राकृतिक सरलता से

पूछा—'तुम बड़े दुबले हो गए हो ? एक प्याला चाय लाऊँ क्या ?'

नखोद्का—मैं भी इसी फिक्र में था।

माँ—पावेल कैसे हैं ? और किसी को भी छोड़ा है ?

निकोले—केवल मुझे ही ! मैंने उनलोगों से साफ साफ कह दिया कि एक-न-एक दिन मेरे हाथों से किसी का प्राण जायगा और मैं भी मारा जाऊँगा। इससे उनलोगों ने डरकर मुझे छोड़ दिया।

अंतिम वाक्य उसने बड़े अभिमान से कहा।

माँ—ठीक है !

नखोद्का—फ़ीडिया मेजिन कैसे हैं ! क्या वहाँ भी कविता किया करता है ?

निकोले—अच्छी तरह है। पर एक बात मेरी समझ में नहीं आती। उनलोगों ने उसे एक पिंजड़े में बंद कर दिया है और वह गाया करता है। एक बात और है। मैं घर नहीं जाना चाहता।

माँ ने दुख से कहा—'तुम्हारे घर पर रखा ही क्या है ? घर सूना पड़ा है। इस सर्दी में कोई आग जलानेवाला भी नहीं है।'

निकोले चुप था। उसकी आँखें झप रही थीं। उसने जेब से सिगरेट निकालकर जलाया और उठते हुए धुएँ की ओर देख-कर बोला—'आपका कहना ठीक है। मकान की वही हालत है और भयानक सर्दी पड़ रही है। क्या मुझे रात भर अपने यहाँ रहने दोगी ?'

माँ ने फुर्ती से कहा—'यह पूछने की जरूरत नहीं है।'

इससे अधिक वह कुछ न कह सकी, उसकी समझ में नहीं आया कि क्या बोले। निकोले बोल उठा—'वर्तमान परिस्थिति में अधिकांश युवकों को अपने माता-पिता के लिये लज्जित होना पड़ता है।'

माँ ने चौंककर पूछा—'क्या ?'

निकोले ने माँ की ओर देखा और आँखें बंद कर लीं। बोला—'मैं कह रहा था कि कितने ही युवकों को अपने माता-पिता के आचरण के कारण लज्जित होना पड़ता है। तुम पर यह लागू नहीं है। तुम्हारे कारण पावेल का सिर कभी भी नीचा न होगा पर अपने पिता के कारण मुझे लज्जित होना पड़ता है। अब मैं उस घर में पैर नहीं रखूँगा। समझ लूँगा कि न मेरा पिता जीवित है और न मेरा अपना घर है। इनलोगों ने मुझे पुलिस की निगरानी में रखा है नहीं तो मैं साइवेरिया चला जाता। मेरा विश्वास है कि मेरे सदृश लोग साइवेरिया में बड़ा काम कर सकते हैं। मैं तो वहाँ रहकर अनेक कैदियों को मुक्तकर भगा देता।'

माँ निकोले के हृदय की व्यथा का पूरा अनुभव कर रही थी पर उसके हृदय में सहानुभूति नहीं थी। बोली—'यदि ऐसी बात है तो तुम्हें जाना चाहिए।'

उसने सोचा कि कदाचित मेरे मौन रह जाने से निकोले के हृदय को चोट पहुँचे, इसलिए उसने इतना कह डाला।

इतने में नखोदका ने बाहर आकर कहा—'क्या धर्मोपदेश दे रहे हो ?'

माँ उठी। वहाँ से जाने लगी। बोली—'कुछ खाने के लिये लाती हूँ।'

निकोले ने स्थिर दृष्टि से नखोदका की ओर देखकर कहा—'कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें जान से मार डालना चाहिए।'

नखोदका ने धैर्य के साथ पूछा—'क्यों ?'

निकोले—ताकि उनका अंत हो जाय ?

नखोदका—इस तरह जीव-हत्या का तुम्हें अधिकार है ?

निकोले—अवश्य।

नखो०—यह अधिकार कहाँ से मिला ?

निकोले—स्वयं लोगों ने दिया।

नखोदका बीच कमरे में सीधा खड़ा था। उसका एक हाथ पैंट की जेब में था। टाँगें हिल रही थीं पर निकोले की ओर टक-टकी लगाकर देख रहा था। निकोले अकड़कर कुर्सी पर बैठा था। सिगरेट का धुआँ उसके चारों ओर फैल रहा था। उसने मुट्ठी बाँधकर कहा—'यह अधिकार लोगों ने मुझे दिया है। यदि कोई मुझे ठोकर मारता है तो मुझे हक है कि मैं उसे पीटूँ और उसकी आँखें निकाल लूँ। अगर कोई मुझसे छेड़छाड़ न करे तो मैं उसे नहीं तंग करूँगा। मेरे मार्ग कोई बाधा न खड़ा करे तो मैं क्यों किसी को तंग करूँगा ? हो सकता है मुझे जंगल में रहना पसंद

हो। झरने के किनारे कहीं अपना झोपड़ा बनाकर मैं शांति से जीवन बिताऊँगा ?'

नखोदका ने गर्दन हिलाते हुए कहा—'अगर तुम्हें उसी में संतोष है तो वही करो।'

निकोले ने सिर हिलाकर कहा—'अब ? असंभव है !'

नखोदका—क्यों ? कौन बाधक है ?

निकोले—लोग ! मौत के बाद भी अब मैं उनका पिंड नहीं छोड़ सकता। उनलोगों ने मेरे हृदय में घृणा के भाव भर दिए हैं; बुराई भर दी है। क्या यह साधारण बंधन है। मैं उनसे घृणा करता हूँ। अब मैं कहाँ जा सकता हूँ ? मैं तो उनका पिंड नहीं छोड़ सकता। मैं उनके जीवन को संकटमय बना दूँगा। उन्होंने मेरा जीवन नष्ट कर दिया है। मैं उनका जीवन नष्ट कर दूँगा। मैं अपना उत्तर आप दे लूँगा। केवल अपने लिए, दूसरों के लिये नहीं। यदि मेरा पिता चोर है तो—'

नखोदका ने बीच में ही रोककर कहा—'ओह ! जाने दो !'

निकोले—और इसे गरबोव के लिये ! तुम देखोगे कि एक दिन मैं उसका भेजा निकाल लूँगा।

नखोदका ने पूछा—'किसलिए ?'

निकोले—उसे गुप्तचर का काम नहीं करना चाहिए। वह लोगों को धोखा देता फिरता है। उसी के कारण मेरे पिता इस अधोगति को पहुँचे और अब वह उन्हें भी गुप्तचर बनाने के लिये कोशिश कर रहा है।

नखोद्का—क्या यह बात है ? पर इसके लिये तुम्हें कौन दोष देगा ? सब गदहे हैं।

निकोले—भले और बुरे सबकी यही हालत है। तुम और पावेल तो भले आदमियों में हो। क्या तुम सत्य के नाम पर कह सकते हो कि तुमलोगों की आँखों में मेरी भी उतनी ही कद्र है जितनी फीडिया मेजिन की अथवा समोलो की। क्या तुम लोग मुझे उतना ही चाहते हो जितना एक दूसरे को। यह मैं कभी भी मानने के लिये तैयार नहीं हूँ। तुमलोग हमेशा मुझे दूर रखना चाहते हो।

नखोद्का—उसके पास बैठ गया और नरमी से बोला— 'निकोले, तुम्हारी हालत ठीक नहीं है।'

निकोले—तुम्हारा कहना ठीक है। पर तुम्हारी भी यही हालत है। लेकिन तुम अपनी हालत मुझसे अच्छी समझते हो। मैं तो साफ कहता हूँ कि हमलोगों का व्यवहार एक दूसरे के प्रति दुष्टों का-सा है। क्या तुम इसे अस्वीकार करते हो ?

वह नखोद्का की ओर घूरने लगा। उसका चेहरा लाल था और होंठ काँप रहे थे मानों जल रहे हों।

नखोद्का शांत और गंभीर था। उसने वेदना-भरे शब्दों में कहा—'भाई, इस समय तुम्हारी बातों का उत्तर देने में तुम्हारी उत्तेजना बढ़ेगी। तुम्हारे घाव ताजे हो गए हैं और तुम मर्माहत हो।'

निकोले ने आँखें नीची कर लीं। बोला—'मेरी बातों का उत्तर देना असंभव है। मैं स्वयं असमर्थ हूँ।'

नखोदका—एक-न-एक वक्त हम सब लोगों की यही दशा रही है। सबके पैरों में काँटें चुभे हुए हैं। निराशा के समय हम-लोगों की भी यही दशा हुई थी।

निकोले ने धीरे से कहा—'तुम्हें कुछ नहीं कहना होगा। मेरे हृदय की विचित्र हालत है। मुझे ऐसा मालूम हो रहा है मानों भेड़िए मेरे कलेजे के मांस को नोच रहे हैं।'

नखोदका—मैं तुमसे कुछ नहीं कहना चाहता। मैं सिर्फ इतना कह सकता हूँ कि तुम इस अवस्था से मुक्त हो जाओगे। हो सकता है पूर्ण रूप से नहीं। इतना कहकर वह हँसा और निकोले की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोला—'यह तो लड़कों की बीमारी है। हम सब पर इसका आक्रमण होता है। जो जितना कमजोर रहता है उसपर उतना ही अधिक जोर होता है। इस रोग का आक्रमण उसी वक्त होता है जब मनुष्य जीवन में प्रवेश करता है पर जीवन की समस्याओं को अच्छी तरह समझ नहीं सकता। इस दशा में उसे अपनी अवस्था का ठीक अनुभव नहीं होता, वह अपने मूल्य को स्वयं नहीं समझ सकता, घबरा जाता है और उसे मालूम होता है कि सबसे कमजोर वही है और सबलोग उसे हड़प जाने की ताक में हैं। कुछ समय के बाद मालूम होगा कि तुम्हारी हालत लोगों से बहुत अच्छी नहीं है और तब तुम्हें सांत्वना मिलेगी, शांति मिलेगी, कुछ शर्म भी मालूम होगी।

जब तुम्हारी आवाज इतनी मंद है कि साधारण जनरव में विलीन हो जायगी तो तुम्हे ऊँचे चढ़ने की आवश्यकता ही क्या है ? इतना ही नहीं, तुम्हें मालूम होगा कि जनरव के सामने तुम्हारी आवाज का कोई मूल्य नहीं। क्या तुमने मेरा अभिप्राय समझा ?

निकोले—संभव है मैं समझता होऊँ पर उसमें मेरा विश्वास नहीं है।

नखोदका खिलखिलाकर हँस पड़ा और कमरे में चारों ओर उछलने लगा। बोला—'इसी तरह मुझे भी विश्वास नहीं होता था ! ये काठ के देवता ?'

निकोले—काठ के देवता क्यों ?

नखोदका—क्योंकि दोनों की हालत मिलती है।

यकायक निकोले खिलखिलाकर हँस पड़ा।

नखोदका ने रुककर पूछा—'यह क्या ?'

निकोले—मैंने देखा कि जो तुम्हारा अपमान करने चलेगा वह स्वयं बेवकूफ बन जायगा।

नखोदका ने गर्दन हिलाते हुए कहा—'तुम किस तरह मेरा अपमान कर सकते हो ?'

निकोले—मैं कुछ नहीं जानता। पर मैं इतना कह सकता हूँ कि तुम्हारा अपमानकर कोई भी शांत और सुखी नहीं रह सकता।

नखोदका—अब बतलाओ तुम्हारी क्या हालत है ?

इतने में माँ ने रसोई-घर से पुकारकर कहा—'खाना तैयार है।'

नखोद्का रसोई-घर में खाना लाने चला गया। कमरे में निकोले अकेला रह गया। उसने चारों ओर देखा, पैर फैलाया, अपने मोटे और खुरखुरे जूतों पर निगाह डाला और अपने घुटनों को टोने लगा। अपने हाथ को मुँह पर फेरा। हथेली की परीक्षा की और उसे फेर लिया। उसके छोटे हाथों में बाल भर गए थे। वह हाथ झटकाकर उठ खड़ा हुआ।

जब नखोद्का खाना लेकर आया निकोले शीशा के सामने खड़ा था। बोला—'बहुत दिनों के बाद शीशे में मुँह देखने का मौका मिला है। कैसा भद्दा चेहरा हो गया है।'

नखोद्का ने विचित्र तरह से उसकी ओर देखकर कहा—'इससे तुम्हें क्या ?'

निकोले ने धीरे से कहा—'शशेंका कहती है कि मुख की आकृति हृदय का प्रतिबिंब है।'

नखोद्का—पर यह सच नहीं है। उसकी नाक गुंबज की तरह है। गाल की हड्डियाँ कैंची की तरह हैं। लेकिन उसका हृदय चमकते हुए नक्षत्र की भाँति है।

दोनों खाने बैठ गए।

भोजन करते-करते निकोले ने पूछा—'यहाँ का क्या हाल है ?'

यहाँ का वर्णन नखोद्का के मुँह से सुनकर उसने गंभीरता से कहा—'बड़ी मंद प्रगति है। आंदोलन और भी द्रुतगामी होना चाहिए।'

माँ ने उसकी ओर देखा। उसके हृदय में डाह उत्पन्न होने लगी।

नखोदका—मनुष्य-जीवन घोड़ा नहीं है कि कोड़ा पड़ते ही उछलकर भागेगा।

निकोले—पर मुझमें इतना धैर्य नहीं है। मैं क्या करूँ? इतना कहकर लाचारी दिखाने के लिये उसने हाथ फैलाया।

नखोदका ने सिर झुकाकर कहा—'हमलोगों को सीखना और सिखाना चाहिए।'

निकोले—संग्राम का दिन कब आवेगा?

नखोदका—मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ कि उस समय तक हमलोग अनेक बार कत्ल किए जायँगे। मैं नहीं कह सकता कि लड़ने का दिन कब आवेगा। मेरी समझ में पहले दिमाग दुरुस्त करना चाहिए।

निकोले—और हृदय?

नखोदका—हृदय भी।

निकोले चुप हो गया और भोजन करने लगा। माँ कनखियों से उसकी ओर देखने लगी। वह यह ढूँढ रही थी कि पिता-पुत्र की आकृति में कोई समता है या नहीं। नखोदका सिर पर हाथ रखकर बैठा था। वह बेचैन हो रहा था। वह एकाएक हँस पड़ा। फिर तुरत चुप हो गया और सीटी बजाने लगा।

माँ उसकी वेदना का कारण समझ रही थी। निकोले चुप-

प्रकाशकीय वक्तव्य

साहित्यिकों के मत से आधुनिक काल उपन्यासों और आख्यायिकाओं का युग है। यही नहीं प्रकाशकों का अनुभव भी साहित्यिकों के कथन का समर्थन करता है। आजकल औपन्यासिक-साहित्य की जैसी खपत है, वैसी अन्य की नहीं। मौलिक और अनूदित दोनों प्रकार के उपन्यासों का प्रचार इस समय हिंदी में प्रचुर मात्रा में हो रहा है। हिंदी में मौलिक उपन्यासकार कम हैं। इसे हिंदी का दुर्भाग्य ही समझना चाहिए; जो हैं भी, उनमें-से दो-एक को छोड़कर शेष लेखकों में-से अधिकांश लेखकों की कृति में विदेश और विभाषा की छाप स्पष्ट झलकती है। इस प्रकार की छाया-ग्रहण करने की अपेक्षा हम कहीं अच्छा समझते हैं कि विदेशी अथवा विभाषी ग्रंथों में-से प्रामाण्य रचनाओं के स्वतंत्र अनुवाद ही हिंदी जनता के सामने प्रस्तुत किए जायँ। यद्यपि हम अनुवादों के पूर्ण पक्षपाती नहीं हैं, पर उक्त साहित्यिक दासता की अपेक्षा अनुवादों से साहित्य-भंडार भरने को कहीं अच्छा समझते हैं।

उपन्यास-क्षेत्र के अनुवादकों का झुकाव अधिकतर बँगला की ओर है, यहाँ तक कि बहुत से उपन्यास सीधे मूल-भाषा से अनूदित न होकर बँगला में भाषांतरित होते हुए हिंदी-संसार के सामने आते हैं; अन्य भाषाओं की ओर लोगों का झुकाव कम है और विदेशी भाषा के उपन्यासों की ओर तो बहुत ही कम। हम स्वदेशी भाषाओं के अनुवादों से विदेशी भाषाओं के अनुवादों को अपेक्षाकृत अच्छा मानते हैं; क्योंकि स्वदेशी भावों का गुंफन तो हिंदी-भाषा के लेखक स्वयं भी कर सकते हैं; पर विदेशी

भावों का वैसा नहीं। भारतीय लेखकों का और विशेषतः हिंदी के लेखकों का विदेशों में प्रायः यातायात न होने से किसी विदेशी कथानक पर सफलतापूर्वक कुछ लिख लेना तो अभी कठिन ही है; इसलिये यह कहीं अच्छा होगा कि विदेशी भाषाओं के अच्छे अच्छे उपन्यासों का अनुवाद हिंदी-जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जाय।

इसी विचार को दृष्टिकोण में रखकर हम आज हिंदी संसार के संमुख अँगरेजी भाषा के प्रसिद्ध उपन्यास 'मदर' (Mother) का अनुवाद रख रहे हैं। विदेशों में इस उपन्यास की बड़ी धूम है। इसके लेखक मैक्सिम गोर्की (Maxim Gorki) एक सिद्ध-हस्त उपन्यासकार हैं। चरित्र-चित्रण करने में उन्हें अच्छी सफलता मिली है। गोर्की महोदय अतरंग और बहिरंग दोनों प्रकार के चरित्रांकन में पटु हैं। हिंदी में 'मदर'-ऐसे मौलिक उपन्यास कहाँ हैं ?

अब प्रस्तुत अनुवाद के संबंध में भी हम दो शब्द कह देना चाहते हैं। पुस्तक की भाषा चलती रखी गई है, उसमें पात्रानुकूल भाषा-विभेद भी नहीं किया गया है; क्योंकि पात्रों के विदेशी होने के कारण ऐसा करने की न तो कोई आवश्यकता थी, न लाभ; वरन् साधारण जनता के लिये पुस्तक कुछ क्लिष्ट ही हो जाती। पुस्तक में यत्र-तत्र जो त्रुटियाँ रह गई हैं, उनका कारण यह है कि अधिक कार्य-भार से प्रूफ-संशोधन का उत्तरदायित्व पूर्णतः प्रेस के कर्मचारियों पर ही छोड़ दिया गया था। यदि हिंदी-संसार ने इस अनुवाद को अपनाया तो हम शीघ्र ही और भी साहित्यिक अनुवाद निकालने का उद्योग करेंगे।

मेरी ओर से

प्रियवर श्री शिवपूजनजी के शब्दों में मैं साहित्य-क्षेत्र से विश्राम ले चुका हूँ। पर इस खेत की मिट्टी ढोनेवाले मजूर जानते हैं कि जिसे इसका चस्का लगा, उसकी लत नहीं छूटती।

उसी लत का फल प्रस्तुत अनुवाद है। संवत् १९८५ वि० के सावन मास की बात है। 'मुजफ्फरपुरी संमेलन के बाद मैं कतिपय बनारसी मित्रों के साथ साहित्य-संमेलन की स्थायी समिति की बैठक में शामिल होने प्रयाग जा रहा था। गाड़ी में साहित्यिक चर्चा छिड़ गई। मित्रवर श्रीविनोदशंकर व्यास ने रूस के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री मैक्सिम गोर्की के प्रसिद्ध उपन्यास 'मदर' (Mother) की चर्चा की। रूसी उपन्यासों से मुझे विशेष प्रेम है क्योंकि जहाँ तक मेरा विश्वास है मानव जीवन की विविध अवस्थाओं का जैसा ज्वलंत चित्र उनमें चित्रित रहता है वैसा दूसरों में नहीं। अथवा यह भी हो सकता है कि उनका वृत्तांत पढ़ने से अपने देशवासियों की दशा का स्मरण हो आता है और यह समता ही सहानुभूति का रूप धारण कर अधिक आकृष्ट करती है। जो हो उसी समय से मैं उसकी तलाश करने लगा। एक दिन अकस्मात् एक मित्र के हाथ में उसे देखा। उसे छीनकर घर लाया और पढ़ने बैठ गया। पुस्तक समाप्त भी न होने पाई थी कि मन में इसके अनुवाद कर डालने की अभिलाषा उठ खड़ी हुई।

श्री गोर्की ने इस उपन्यास में रूस की लाल क्रांति के कथानक को घटना का आधार बनाया है। बड़ा ही रोचक विषय है। बीसवीं शताब्दी के इस वर्तमान चरण में रूस विश्व के लिये एक समस्या हो रहा है। सब की आँखें उसी ओर लगी हुई हैं। वह मानव-जीवन के इतिहास में काया पलट कर देने के लिये कटिबद्ध है। यदि इस विश्व को रंगमंच मान

लिया जाय और मनुष्य को उस रंगमंच के चतुर नट के रूप में देखा जाय तो रूस की घटनाओं को सबसे जाज्वल्यमान और बृहत् नाटक कहा जा सकता है।

रूस का इतिहास उत्पीड़क और उत्पीड़ित का सबसे रोमांचकारी इतिहास है। देश की स्वतंत्रता के संग्राम में सभी जातियों को कष्ट सहने पड़े हैं, अत्याचार के बोझ उठाने पड़े हैं और उत्पीड़न का शिकार होना पड़ा है; पर रूस की स्वतंत्रता के संग्राम का इतिहास सबसे निराला है। जहाँ अत्याचारियों का अत्याचार पराकाष्ठा को भी पार कर गया है। वह पीड़ितों की सहनशीलता एवं अनवरत अध्यवसाय में अपनी समता नहीं रखता।

रूस की स्वतंत्रता के संग्राम का प्रत्येक परिमाणु विचित्र और रोमांचकारी है एक ओर अधिकारी-वर्ग प्रजा को दलित और पंगु बनाने के लिये सतत प्रयत्न कर रहा है। उनकी आत्मा को निर्जीव और चेतनाहीन बनाकर रखने के लिये अनवरत उद्योग कर रहा है। गुप्तचर दिन-रात गश्त लगाते फिरते हैं। जन साधारण की नब्ज को सदा टोते रहते हैं। उसमें गर्मी का लवलेश पाते ही वे चौंक उठते हैं, अधीर और अशांत हो जाते हैं। उस गर्मी के कारण का पता लगाने चलते हैं और उसकी लपट को सदा के लिये शांत कर देना चाहते हैं। दूसरी ओर पीड़ित प्रजा है। उसकी दशा सुधारने के लिये सतत प्रयत्न करनेवाले वीर सभी यातनाएँ सहन करते हैं, सभी जुल्मों को बिना चूँ किए बरदाश्त करते हैं, जेल का दंड भोगते हैं, कालकोठरियों में सड़ते हैं, निर्वासन की भीषणता को भोगते हैं पर अपने उद्योग से पैर पीछे नहीं हटाते। गुप्त सभाएँ करते हैं, गुप्त समितियाँ स्थापित करते हैं, गुप्त-प्रचार का आयोजन करते हैं, गुप्त रूप से सब लोगों को उनकी वास्तविक दशा का ज्ञान कराते हैं, अत्याचारियों के अत्याचार का दिग्दर्शन कराते हैं और जनसाधारण की आँखें खोलने का यत्न करते हैं। अपने इस उद्योग में

चाप भोजन कर रहा था। जब कभी नखोद्का उससे कुछ पूछता वह उदासीनता के साथ कुछ कह देता।

इस अवस्था से दोनों मेजमान अधीर हो उठे। दोनों बारी-बारी से मेहमान की ओर देखने लगे।

अंत में निकोले उठा। बोला—'मैं सोना चाहता हूँ। जेल में काफी बैठा रह चुका हूँ।'

इतना कहकर वह सोने चला गया और थोड़ी ही देर में खर्राटे लेने लगा।

माँ ने नखोद्का से धीरे से कहा—'इसने कोई भयानक बात ठान ली है।'

नखोद्का—हाँ, इसे समझना जरा कठिन है। पर इससे क्या ? आप सो जायँ। मैं थोड़ा पढ़ूँगा।

माँ अपने कमरे में चली गई। नखोद्का किताब खोलकर बैठ गया पर बहुत देर तक वह निस्तब्ध बैठा माँ की प्रार्थना और उँसासों की धीमी आवाज सुनता रहा। सायँ-सायँ हवा चल रही थी और घड़ी उसी भाँति टिक-टिक कर रही थी। उसने माँ को कहते हुए सुना—'भगवन्! सबको एक-न-एक चिंता लगी हुई है। फिर सुखी कौन है ?'

नखोद्का ने अपनी जगह से कहा—'वह समय शीघ्र ही आनेवाला है जब सब सुखी होंगे।'

———

पंद्रहवाँ परिच्छेद

जीवन-तरी मंद-मंद गति से आगे बढ़ती जाती थी। हरएक कदम के बाद कुछ-न-कुछ नई बात देखने अथवा सुननें को मिलती थी पर अब माँ को पहले का-सा भय नहीं लगता था। नई बातें उसे डराती नहीं थीं शाम को लोगों का जमावड़ा दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा। रोज नए-नए आदमी नखोदका के पास आते और चुपचाप बातें करते और बड़ी रात गए चुपचाप वहाँ से प्रस्थान करते थे। घर से निकलते वक्त वेलोग अपने चेहरे को इस तरह ढँक लेते, पैर को इस तरह दबाकर रखते कि कोई उनकी आहट न पा सके।

सबों में घोर उत्तेजना के लक्षण दिखाई देते पर उपयुक्त अवसर न समझकर सब-के-सब मन के भाव मन में ही दबा रखते थे। सबों में एक प्रकार का उतावलापन था। भिन्न-भिन्न आकृति होने पर भी सबों के चेहरे से एक ही भाव टपकता था। माँ को स्पष्ट दिखाई देता था कि सबों का हृदय एक ही भावना के गाढ़े रंग से रँगा हुआ है और सबों में एक ही प्रकार की तरंगें उठ रही हैं। माँ को ऐसा मालूम होता था मानों सबों ने मिलकर पावेल को अपने बीच में इस प्रकार सुरक्षित रख लिया है कि शत्रुदल की उसपर आँख ही नहीं पड़ सकती।

एक दिन घुँघुरूदार बालवाली एक सुंदरी नखोदका के लिये एक पार्सल लेकर आई। जाते वक्त उसने माँ से कहा—'नमस्कार बहिन।'

माँ ने हँसी रोककर उन्हीं शब्दों में उत्तर दिया और उस रमणी को दरवाजे तक पहुँचा आई। वापस आकर वह खिड़की पर खड़ी हो गई और उत्सुकता के साथ उसकी ओर देखने लगी उसने देखा कि वह रमणी परम उल्लास और प्रसन्नता के साथ कदम बढ़ाती हुई सड़क पर चली जा रही है।

उसके चले जाने के बाद माँ ने अपने मन में कहा—'उसने मुझे बहन और संगी शब्द से संबोधित किया था। कैसा मधुर शब्द था। भगवान करें मैं उसके उस संबोधन को चरितार्थ कर सकूँ।'

शहर से जो लोग आते थे उनके स्वभाव में एक तरह का लड़कपन दिखाई देता था। माँ विस्मित थी पर उनके दृढ़ विश्वास पर उसे अटल श्रद्धा थी और ज्यों-ज्यों दिन बीतने लगे उसके ये भाव और भी दृढ़ होते गए। सत्य के विजय की वे जो रूपक बाँधते उसका माँ के हृदय पर बड़ा गहरा असर पड़ता। जिस समय वेलोग अपने भविष्य के विजय की कल्पना करने लगते माँ उसासें लेने लगती और किसी अज्ञात वेदना से उसका हृदय भर जाता। उनकी सादगी और त्याग का उसके हृदय पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता था।

धीरे-धीरे माँ भी मनुष्य-जीवन के संबंध में बहुत कुछ समझने लग गई थी। धीरे-धीरे उसे इस बात पर विश्वास होने लगा कि मनुष्य की दीनता का वास्तविक कारण इनलोगों को विदित है और यही कारण था कि वह उनलोगों के विचारों से सदा

सहमत हो जाती थी। पर उसे इस बात का विश्वास नहीं था कि वेलोग जनसाधारण के जीवन को अपनी कल्पना के अनुसार उन्नत कर सकेंगे और अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये समस्त मजूर-दल को संगठित कर सकेंगे। क्योंकि जनसाधारण में भविष्य की चिंता का लेशमात्र भी चिह्न नहीं दिखाई देता था। कल क्या होगा इसकी किसी को भी परवाह नहीं थी। यदि वह अपना सर्वस्व आज ही उठा सकता है तो कल के लिये एक छदाम भी वह नहीं छोड़ेगा। कठिनाई और यातना झेलने के लिये कोई भी तैयार नहीं है। भविष्य के सुखद-साम्राज्य में वह किसी का विश्वास नहीं पाती थी जहाँ सबलोग भ्रातृ-भाव की समता के बंधन में बँधे रहकर सुख और शांति से जीवन बितावेंगे। यही कारण था कि इनलोगों के इस कठिन अध्यवसाय और कठोर तपस्या को माँ कभी-कभी केवल लड़कों का खेल समझने लगती थी।

कभी-कभी वह अपने मन में कहती—'आह! बेचारे! सभी तो अपने अध्यवसाय में तत्पर और प्रवीण मालूम होते हैं। सबों के मुँह पर जनसाधारण के कल्याण की ही बातें हैं और जहाँ तक हो सकता है लोगों को उनकी वास्तविक दशा का ज्ञान कराने तथा उद्धार का मार्ग बताने में कोई भी यत्न बाकी नहीं रखते।' उसे प्रत्यक्ष दीखने लगा कि भय और यातना से घिरे रहने पर भी इस तरह का जीवन सुखमय है। इस बात का ख्याल आते ही उसे अपने अतीत जीवन के लिये विषम वेदना होने लगती थी; क्योंकि

उसके जीवन का उत्तम और अधिक भाग निरीह अवस्था में ही बीता था, जिसका कोई भी उपयोग नहीं हो सका था। उसने देखा कि इस नए प्रवाह में उसका जीवन उपयोगी हो सकता है और इससे वह सुखी तथा संतुष्ट थी। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसके जीवन का कुछ भी उपयोग हो सकता है। पति के जीवन-काल में वह जानती थी कि उसके मरने के बाद उसका पति दूसरी रमणी से विवाह कर लेगा। उसके पति को इस बात की जरा भी परवाह नहीं थी कि उसके घर में जवान स्त्री है कि बूढ़ी। पावेल के उत्पन्न होने के बाद भी उसे अपने जीवन की उपयोगिता नहीं दिखाई दी थी क्योंकि वह भी उसकी परवाह नहीं करता था पर आज उसने प्रत्यक्ष देखा कि वह भी इस नए प्रवाह में कुछ सहायता कर रही है। उसका हृदय उल्लसित हो उठा और अभिमान से सिर ऊँचा हो गया।

कारखाने में परचे ले जाकर बाँट आना उसका साधारण कर्तव्य हो गया। अधिकारियों की आँखों से बचने के लिये उसने अनेक उपाय भी निकाले। प्रतिदिन आने-जाने के कारण गुप्तचरों के मन से उसके प्रति संदेह उठ गया था और उसकी जाँच उन लोगों ने छोड़ दी थी। अनेक बार उसकी तलाशी भी ली गई थी पर सदा परचों के प्रगट होने के बाद। जब उसके पास परचे न होते तब इस प्रकार की आकृति बनाती कि पहरेवालों और गुप्तचरों को संदेह होने लगता। वेलोग उसे रोकते, उसकी तलाशी लेते, वह आनाकानी करती, बुरा-भला कहती और अंत में अपनी

चातुरी की सफलता पर मन-ही-मन प्रसन्न होती हाते के भीतर चली जाती थी।

जेल से वापस आने के बाद निकोले को कारखाने में काम नहीं मिला। उसने स्वतंत्र काम कर लिया। उसने एक जोड़ा घोड़ा रख लिया और लकड़ियाँ तथा तख्ते ढोने का काम कर लिया। माँ ने बहुधा उसे सड़कों पर बोझ लादकर जाते देखा था। उसके बुड्ढे और दुबले-पतले घोड़े बोझ के भार से दबे रहते थे, ठोकर खाकर गिरते पड़ते रहते थे, रास्ते में लोगों की गाड़ियों अथवा लदे बोझों से टकरा जाते थे। लोग गालियाँ देते थे पर निकोले गर्दन झुकाए सब बरदाश्त कर लेता था। वह आँख उठाकर किसी की ओर देखता तक नहीं था। उसकी दशा बड़ी ही दयनीय थी। शरीर पर फटा-पुराना कोट, सिर पर फटा हुआ हैट, धूल, मिट्टी और कीचड़ से लथपथ पैर उसकी गरीबी की प्रत्यक्ष घोषणा कर रहे थे।

निकोले पावेल के घर पर नियम से आता, नखोदका के पास बैठकर हर तरह की चर्चाएँ सुनता, विदेशी पत्रों की खबरें गौर से सुनता, लोगों के बहस-मुबाहसों पर कान देता पर स्वयं कुछ न बोलता। सबों के चले जाने पर एक दिन उसने नखोदका को अकेला पाकर खिन्नता के साथ पूछा—'सबसे अधिक दोष का भागी कौन है? जार?'

नखोदका—सबसे बड़ा दोष का भागी वही है जिसने सर्व प्रथम कहा था—'यह समस्त मेरा है।' पर हजारों वर्ष हुए, वह

मर गया। इससे उसके प्रति रोष अथवा घृणा का भाव रखना उचित नहीं है।

निकोले—पर पूँजीवाले और उनके हिमायती? क्या वे निर्दोष हैं?

नखोदका ने पहले सिर पर हाथ रखा फिर मोछों पर हाथ फेरते हुए जनसाधारण और जीवन के गहन विषयों को बड़ी ही सरल भाषा में देर तक समझाता रहा। उसकी बातों से यही ध्वनि निकलती थी कि सभी दोष के भागी हैं। पर इससे निकोले को संतोष नहीं हुआ।

वह अपने मोटे होठों को दातों से दबाकर सिर हिलाते हुए कहने लगा—'मैं नहीं मानता कि यह सर्वथा सच है। आप प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को ध्यानपूर्वक अध्ययन कर जाइए तब आपको मालूम होगा कि कुछ लोग ऐसे हैं जो इस दयनीय अवस्था के जिम्मेदार और पूर्ण दोष के भागी हैं।'

माँ ने कहा—'हमलोगों के संबंध में यही बात एक बार इसे ने भी मुझसे कही थी।'

क्षणभर दोनों स्तब्ध रहे!

निकोले—इसे?

नखोदका—हाँ, वह बड़ा ही बुरा आदमी है। वह सब पर संदेह की दृष्टि रखता है। सबका भेद जानना चाहता है। इधर भी वह आने-जाने लगा है और कभी-कभी खिड़की से झाँक भी लेता है।

निकोले—झाँक लेता है ?

माँ सोने चली गई थी। इसलिए वह निकोले का चेहरा नहीं देख सकी। पर उसे प्रतीत हुआ कि उसका कथन असमय में हुआ क्योंकि नखोदका ने बात टालने तथा निकोले को शांत करने के लिये बीच में ही कहा—'उसे झाँकने दो। वह बेकार है। उसने समय काटने का यही तरीका अख्तियार कर लिया है।'

निकोले—यह बात नहीं है। क्या वह दोष का भागी नहीं है ?

नखोदका—किसलिए ? क्या अपनी मूर्खता के लिये ?

पर निकोले तब तक चला गया था।

नखोदका कमरे में टहलने लगा। माँ की नींद में बाधा न हो, इस ख्याल से यद्यपि उसने जूता उतार दिया था फिर भी उसके पैरों की आवाज़ माँ को सुनाई देती थी जिससे उसने अनुमान किया कि उसके पैर जोर से पड़ रहे हैं। माँ जागती थी। निकोले के चले जाने के बाद उसन अपने बिस्तरे पर से ही कहा—'वह आदमी बड़ा ही भयानक है। मैं उससे बहुत डरती हूँ। वह ज्वालामुखी की लपट है। जो उसके सामने पड़ेगा उसे वह निश्चय ही झुलसा देगा।'

नखोदका—आपका कहना सच है। वह उत्तेजित हो जाता है। मैं इसे Isay के बारे में कभी भी उससे बातें नहीं करूँगा। इसे गुप्तचर है, उसे इस काम के लिये तनखाह मिलती है !

माँ—इसमें आश्चर्य की कौन बात है। उसका धर्म-पिता दरोगा है।

नखोद्का—निकोले उसकी मरम्मत अवश्य करेगा। पर इससे क्या? इन अधिकारियों ने जनसाधारण के हृदय को कितना विकृत कर दिया है। जब निकोले के समान लोग भी उनमें दोष देखते हैं और अधीर हो उठते हैं तब क्या नहीं हो सकता? हमें तो प्रत्यक्ष दीखता है कि पृथ्वी और आकाश रक्त-रंजित हो जायँगे।

माँ—यह तो बड़ा ही भयानक है?

नखोद्का—मक्खी निगलकर कोई भी शांत नहीं बैठ सकता। उसे कै करना ही होगा। जनसाधारण की वेदना, सर्द आहें और गर्म-गर्म आँसू के सामने इनके खून की नदियाँ भी कुछ मूल्य नहीं रखतीं। पर इससे संतोष नहीं होता!

एक दिन माँ बाजार में सौदा खरीदने गई थी। लौटकर ज्योंही दरवाजे पर आई कि उसे पावेल का परिचित कंठ सुनाई दिया।

माँ को वापस आई देखकर नखोद्का ने कहा—'माँ भी आ गई!'

पावेल उत्सुकता के साथ माँ को ओर देखने लगा। उसका चेहरा प्रसन्न था। उसकी आकृति प्रतिभापूर्ण थी। माँ को इससे बड़ा संतोष हुआ।

माँ ने पावेल को हृदय से लगाते हुए कहा—'तुम आ गए? हमलोगों को पता भी नहीं दिया?'

मावेल का चेहरा सूख गया था। उसकी आँखों में आँसू भर

आए। मुँह से एक शब्द भी बाहर नहीं हुआ। कुछ काल के लिये माँ-बेटे दोनों मौन रहे।

नखोदका बाहर मैदान में चला गया। शांति को भंग करते हुए पावेल ने कहा--'माँ, मैं आपके साहस की कितनी बड़ाई करूँ ?'

आज माँ की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था। पुत्र के जेल से वापस आने का सुख और अपने महत् कार्य की प्रसंशा से उसका हृदय गद्गद् हो रहा था। उच्छ्वास के वेग को किसी तरह रोकती हुई उसने कहा—'भगवान तुम्हारी सहायता करें। मैं बुड्ढी हुई। तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूँ ? मैंने तो यथारीति तुम्हारा पालन-पोषण तक नहीं किया। भगवान की दया से तुम ने अपने ही प्रयत्न से इतनी उन्नति की।'

पावेल--तुमने इस आंदोलन के लिये जो कुछ किया है वह साधारण नहीं है। मानव-जीवन के इस युग में ऐसा समय कम ही आता है जब माता-पिता के विचार भी पुत्र के विचारों से मिलते हों। यह तो बड़े भाग्य की बात है।

वह चुपचाप पावेल का मुँह देखती रही।

पावेल—आज तक मैं बड़ा दुखी था। मैं सदा देखता था कि हमलोगों के आचरण से तुम्हें पीड़ा पहुँचती है। पर मैं लाचार था। मुझे विश्वास था कि तुम हमलोगों से कभी भी सहमत न होगी और यावज्जीवन मन-ही-मन पीड़ा और यातना भोगती रहोगी।

माँ—नखोदका ने मुझे अनेक बातें समझा दीं जो मेरे दिल में समा गईं।

पावेल ने हँसकर कहा—'मुझे मालूम है।'

माँ—इवानोविच ने भी मेरी बड़ी मदद की। वह मेरे ही गाँव का रहनेवाला है। नखोदका ने तो मुझे लिखना-पढ़ना सीखने का भी परामर्श दिया था।

पावेल—और इससे तुम चिढ़ सी गईं और चुपचाप आप-ही-आप पढ़ने का अभ्यास करने लगीं।

माँ ने घबराहट के साथ कहा—'उसने यह भी देख लिया था! (पावेल से) नखोदका जान-बूझकर बाहर चला गया है ताकि हमलोगों की बातचीत में बाधा न पड़े। उसे बुला लूँ क्या? वह मातृविहीन है।'

पावेल ने बाहर की ओर झाँककर पुकारा—'नखोदका।'

नखोदका—क्या है? जरा लकड़ी चीर रहा हूँ।

पावेल—उसके लिये बहुत समय है। जरा यहाँ आओ।

नखोदका—आया!

लेकिन वह तुरत नहीं आया। थोड़ी देर के बाद वह अंदर पैर रखते हुए घर के मालिक भी भाँति कहने लगा—'निकोले से लकड़ी के लिये कहना होगा। लकड़ी समाप्त हो चली है। (माँ से) पावेल कैसा तगड़ा हो गया है। सरकार का काम भी उल्टा ही होता है। बागियों को सजा क्या देती है उन्हें मोटा होने का साधन संग्रह कर देती है।'

माँ हँस पड़ी। उसका हृदय मारे प्रसन्नता के उछल रहा था। वह उल्लास के नशे में चूर थी पर उसके हृदय का भाव पावेल को पूर्ववत् शांत, धीर और गंभीर देखना चाहता था। जीवन के उल्लास के प्रथम अवसर को वह इसी भाँति जीवित रहने देना चाहती थी। उसका वेग कहीं कम न हो जाय इस ख्याल से वह उल्लास के उस भाव को इस प्रकार छिपाकर रखने का यत्न करने लगी जैसे कोई बहेलिया किसी अलभ्य चिड़िया को छिपाता है। बोली—'कुछ खाने को लाऊँ? तुमने अभी तक कुछ खाया भी न होगा!'

पावेल—कल ही मुझे मालूम हो गया कि आज मैं छोड़ दिया जाऊँगा। तब से अभी तक मैंने कुछ नहीं खाया है। (बात का रुख बदलकर नखोदका से) सबसे पहले सिजोव से भेंट हुई। उसने मुझे रास्ते में ही देखा और पास आकर बधाई दी। मैंने उससे कहा—'मुझपर पुलिस की आँख है मुझसे सावधान रहना।' उसने उत्तर में कहा—कोई परवाह नहीं। इसके बाद उसने पूछा—'मेरा भतीजा फीडिया मेजिन शांति से तो रहता है उसका व्यवहार खराब तो नहीं होता।'

मैंने पूछा—'खराब व्यवहार से आपका क्या अभिप्राय है?' इसपर उसने कहा—'जेल में उसने अपने साथियों के विषय में कोई ऐसी बात तो नहीं कही जो न कहनी चाहिए।' जब मैंने उससे कहा कि फीडिया बहुत ही नेक और ईमानदार आदमी है। तब

उसने सीना तनेन कर कहा 'अभी तक तो मेरे वंश में कोई भी देश-द्रोही और विश्वासघातक नहीं पैदा हुआ है।'

नखोदका—वह बड़ा ही समझदार आदमी है। हमलोगों से बहुधा भेंट हो जाती है। क्या फीडिया को भी जल्दी छोड़ देंगे ?

पावेल—मेरा अनुमान है कि दो-चार दिन के अंदर सबको छोड़ देंगे। 'इसे' के अतिरिक्त उनके पास दूसरा कोई गवाह नहीं है और अकेले 'इसे' की गवाही का मूल्य ही क्या हो सकता है ?

माँ कमरे में टहलती थी और रह-रहकर पावेल की ओर देखती थी। नखोदका दोनों हाथ पीछे की ओर मोड़े खिड़की के पास खड़ा था। पावेल भी टहल रहा था। उसकी दाढ़ी बढ़ गई थी। इससे उसके चेहरे की रुखाई छिप गई थी पर उसकी आँखों में वही दृढ़ता थी।

माँ ने सबको बैठने के लिये कहा।

भोजन के समय नखोदका ने रिबिन का समाचार सुनाया। पावेल ने कहा—'यदि मैं होता तो उसे वैसा कभी न करने देता वह अपने साथ क्या ले गया ? असंतोष और घबराहट !'

नखोदका ने हँसकर कहा--जो मनुष्य चालीस वर्ष की अवस्था तक इसी तरह खूँखार रहा उसे बदलना कठिन है।

पावेल--क्या तुम्हारी निश्चित धारणा है कि प्रकाश में वह शक्ति नहीं कि वह मनुष्य के जन्म भर के अंधकार को एक ही क्षण में दूर कर दे ?

नखोदका—एकबारगी इतना ऊपर उठने की कोशिश न करो।

नहीं तो कहीं टकराकर गिर पड़ोगे और अंग भंग हो जायगा।

इस पर गर्मागर्म बहस छिड़ गई। माँ उनलोगों की सभी बातें समझने में असमर्थ थी। भोजन समाप्त हो गया था पर बहस का सिलसिला उसी प्रकार जारी था। कभी-कभी वेलोग सरल भाषा का भी प्रयोग कर दिया करते थे।

पावेल ने दृढ़ता से कहा—'हमलोगों को अपने निर्धारित मार्ग पर चलना चाहिए। किसी ओर भी मुड़ने की आवश्यकता नहीं है।'

नखोदका—और इस तरह करोड़ों से टक्कर लेना होगा जो हमलोगों को अपना शत्रु समझेंगे।

पावेल—पर यह तो अनिवार्य है ?

नखोदका—तब आपका प्रकाशवाला सिद्धांत कहाँ रहा ?

माँ उनलोगों की बातें गौर से सुनती थी। जो कुछ उसकी समझ में आया उससे उसने निश्चित किया कि पावेल किसानों की परवाह नहीं करता और नखोदका उन्हें शिक्षितकर उन्हें भी साथ लेकर आगे बढ़ना चाहता है। नखोदका की बातों को वह अधिक समझती थी और उसे उसका ही मार्ग उचित जान पड़ा जब कभी नखोदका बोलता माँ निर्निमेष दृष्टि से पावेल की ओर इस अभिप्राय से देखती कि नखोदका की बातें उसे बुरी तो नहीं लग रही हैं। पर उसने देखा कि गर्म-से-गर्म बहस में भी वेलोग एक दूसरे से नाराज नहीं हो रहे हैं।

सोलहवाँ परिच्छेद

वसंतागमन की सूचना मिल चुकी थी। मकानों तथा कारखानों की चिमनियों पर जमी बरफ धीरे-धीरे गलने लग गई थी। सूर्य का प्रकाश भी धीरे-धीरे तेज होने लगा था। नदियों का जल भी गरमी पाकर गल-गलकर बहने लग गया था लोग वसंतागमन की खुशी में प्रमोद के गीत गाने लग गए थे।

इसी समय इनलोगों को मई दिवस का उत्सव मनाने की सूझी। दूसरे ही दिन कारखाने में परचे प्रगट हुए जिनमें मई दिवस के उत्सव का महत्व बतलाया गया था। जिन नवयुवकों का इस आंदोलन में हाथ नहीं था उनलोगों ने भी परचों को पढ़कर कहा—'हमलोगों को यह उत्सव अवश्य मनाना चाहिए।'

निकोले ने कहा—'यही अवसर है कि हमलोगों को दिखलाना चाहिए कि हमलोगों का प्रयास केवल खेल मात्र नहीं है बल्कि इसमें कुछ वास्तविकता है।'

फीडियामेजिन पूर्ण जोश में था। जेल में वह दुबला हो गया था। पर उसकी दशा पिंजड़े में बंद शेर की-सी थी। पर वह सदा मौन और गंभीर रहता था।

समोलो जेल से तगड़ा होकर निकला था। यह तथा इसके अन्य साथी—वेसली गुसेव, ड्रगनोव आदि का विचार था कि हमलोग हर्बे हथियार के साथ इस उत्सव में संमिलित हों। लेकिन पावेल, नखोदका, समोव वगैरह ने इसका घोर विरोध किया।

थींगोर हमेशा थका, पसीने से लथपथ और बेदम होकर आता था पर सदा हँसमुख रहता था। उसने अपने फटे जूते की ओर लक्ष्य करके कहा—'भाइयो,वर्तमान निरीह अवस्था को उलट देना असाधारण कार्य है। इस मार्ग पर द्रुतवेग से आगे बढ़ने के लिये आवश्यक है कि मैं अपने लिए एक जोड़ा जूता खरीद लूँ। मेरा बूट भी एकदम चिथड़ा हो गया है। रात को आते-जाते समय मेरा पैर हमेशा भींग जाता है। इस वसुंधरा को छोड़कर मैं सबसे नजदीकवाले ग्रह (नक्षत्र) के लोक में जाने का भी पक्षपाती नहीं हूँ। इसलिए मैं सशस्त्र संमिलित होने का घोर विरोधी हूँ। अतएव मेरा संशोधन है कि मैं अपने पैरों को जूते और बूट से सुसज्जित कर लूँ क्योंकि इस साम्यवाद आंदोलन की प्रगति में यह बहुत ही अधिक सहायक होगा।'

इसी तरह विनोदपूर्ण और व्यंग-भरे शब्दों में उसने बतलाया कि विदेशों में मजूर किस प्रकार अपने बोझ को हलका करने का उद्योग कर रहे हैं। उसका वर्णन माँ को बहुत ही प्रिय लगा और उसके हृदय पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसके दिल में जम गया कि जनसाधारण के सबसे बड़े शत्रु ये लंबी तोंदवाले बड़ी-बड़ी मोंछवाले, लाल चेहरेवाले निर्दयी हैं जो इन्हें सदा ठगते और धोखा देते रहते हैं। जार के शासन-काल में जब इन अमीरों का जीवन कष्टमय था इन लोगों ने जनसाधारण को उभाड़ा तथा उनके हाथ से शासन की डोर छीन ली गई और जनसाधारण को धोखा देकर इन लोगों ने समस्त अधिकार

अपने हाथ में ले लिए और जनसाधारण को उसी निरीह अवस्था में छोड़ दिया। अब यदि जनसाधारण इसका विरोध करते हैं तो ये हृदयहीन उन्हें हजारों की संख्या में मरवा डालते हैं।

उसने साहस करके ईगर इवानोविच के सामने भावी जीवन का वह चित्र रखा जिसकी कल्पना उसने उसकी बातों के आधार पर की थी और उसकी संमति चाही।

इवानोविच खिलखिलाकर हँस पड़ा। बोला—'माँ, आपने ठीक कल्पना की है। ये ही मोटी तोंदवाले असली पापी हैं। मानव-जीवन को इन्हीं सबोंने विषैला बना रखा है। ये हमलोगों को चबा डालते हैं। पीसकर पी जाते हैं। हमलोगों का रक्त चूस लेते हैं।'

माँ—पूँजीवाले ?

इवा०—हाँ, रुपया होना ही उन सबों के अभाग्य का कारण है। किसी बच्चे को भोजन में आप थोड़ा-थोड़ा ताँबा देती रहें। थोड़े दिन के बाद आप देखेंगी कि उसका विकास रुक गया है और वह बौना हो गया है। इसी तरह यदि लड़कपन से उसे सोना देती जायँ तो उसकी आत्मा का लोप हो जायगा।

ईगर इवानोविच को लक्ष्य करके पावेल ने नखोदका से कहा—'मेरे मत से जिसके हृदय में जितनी अधिक वेदना होती है वह उतना ही हँसमुख बना रहता है।'

नखोदका क्षणभर चुप रहा। बोला—'यह बात सदा ठीक

नहीं उतरती। यदि ऐसा होता तो आज सारे रूस में हँसी का फौव्वारा उठता होता।'

नटाशा भी आने लगी थी। वह भी जेल में थी। पर दूसरे शहर में। लेकिन उसमें किसी तरह का परिवर्तन नहीं हुआ था। माँ ने देखा कि उसके सामने नखोदका असाधारण प्रसन्न रहता है, हरएक से मजाक किया करता है, सदा नटाशा को खुश करता और हँसाता रहता है। पर उसके जाते ही उसमें उदासी आ जाती है वह मनहूसियत के साथ सीटी बजाने तथा गाने लगता है और इधर-उधर टहलने लगता है।

शशेंका भी आती-जाती थी, पर उसे सदा जल्दीबाजी रहती थी। उसका चेहरा सदा उदास रहता था पर साथ ही उसमें अटल गंभीरता विराजती थी। एकबार पावेल उसे पहुँचाने के लिये दरवाजे तक गया। माँ ने सुना कि वह पावेल से पूछ रही है—'क्या आप ही झंडा उठावेंगे?'

पावेल—हाँ।

शशेंका—क्या यह निश्चित हो गया है?

पावेल—हाँ, यह मेरा अधिकार है?

शशेंका—फिर जेल की तैयारी?

पावेल चुप रहा।

शशेंका—'क्या यह संभव नहीं है कि·····'इतना कहते-कहते वह रुक गई।

पावेल—क्या?

शशेंका—किसी दूसरे को यह भार दे दिया जाय ?

पावेल—(जोर से) नहीं, यह नहीं हो सकता।

शशेंका—गंभीरता के साथ इस विषय पर विचार करो। जनसाधारण पर तुम्हारा प्रभाव सबसे अधिक है। तुम्हें सबलोग चाहते हैं, तुम्हारा विश्वास करते हैं। तुम और नखोदका दो ही हमलोगों के यहाँ अगुआ हो। विचार करने की बात है कि इससे आंदोलन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। यह तो निश्चय है कि इस बार अधिकारीवर्ग तुम्हें दीर्घकाल के लिये सुदूर साइबेरिया में भेज देंगें।

माँ ने लक्ष्य किया कि शशेंका की बातों में आत्मीयता और स्नेहजनित भय का आभास था। माँ के हृदय पर वे बर्फ से ठंढे किए हुए पानी के समान पड़े।

पावेल—मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है। कोई भी मुझे डिगा नहीं सकता।

शशेंका—मेरा अनुनय-विनय भी कुछ असर नहीं करेगा ? यदि मैं ·········।

पावेल ने उसे बीच में ही रोककर तेजी से कहा—'अपने मुँह से तुम्हें यह नहीं कहना चाहिए। यह उचित नहीं है।'

शशेंका—(दबी जबान से) मैं भी तो इन्सान हूँ।

पावेल—हाँ ! तुम मुझे अतिशय प्रिय हो। इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि तुम्हें इस प्रकार बातें नहीं करनी चाहिए।

पावेल की जवान लड़खड़ा रही थी और उसके मुँह से बातें स्पष्ट नहीं निकल रही थीं।

इसके बाद वह चली गई।

माँ ने उसके पैर की आवाज सुनी। उसे मालूम हुआ कि शशेंका तीव्र गति से ही नहीं जा रही है बल्कि दौड़ रही है। पावेल भी उसके पीछे गया।

माँ का हृदय भावी भय की शंका से काँप उठा। उसने उनकी बात का मर्म तो नहीं समझा पर इतना उसे स्पष्ट हो गया कि उसके ऊपर किसी भीषण विपत्ति का पहाड़ गिरनेवाला है। वह सोचने लगी—पावेल क्या करना चाहता है? यही विचार उसके मस्तिष्क में काँटों की तरह घुसकर छेदने लगा। वह रसोई-घर में खिड़की से आकाश की ओर झाँकने लगी। उसने देखा कि पावेल नखोदका के साथ बातें करता उधर ही चला आ रहा है।

नखोदका ने कहा—'इसे के साथ क्या करना चाहिए।'

पावेल—उससे कह दिया जाय कि वह अपनी हरकत से बाज आवे।

नखोदका—जो उससे इस तरह की बातें करने जायगा उसे वह गिरफ्तार करा देगा।

इतने में माँ ने पूछा—'पावेल तुम क्या करना चाहते हो?'

पावेल—कब? अभी?

माँ—पहली मई को।

पावेल—(आवाज धीमी करके) तुमने सुन ही लिया ! मैं राष्ट्रीय झंडे का जुलूस निकालना चाहता हूँ। झंडा लेकर मैं जुलूस के आगे-आगे चलूँगा। इसके लिये कदाचित मुझे पुनः जेल जाना पड़े।

माँ के हृदय में आग लग गई। उसकी आँखें जलने लगीं। उसका चेहरा विकृत हो गया। पावेल ने माँ का हाथ अपने हाथ में ले लिया। बोला—'मैं दृढ़ हूँ। मुझे उसी में आनंद है।'

माँ ने अपना सिर उठाया। धीरे से बोली—'मैं तुम्हारे काम में बाधा देने नहीं जा रही हूँ।'

पावेल ने उसका हाथ छोड़ दिया और रुखाई के साथ बोला—'तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए। इस देश में वह शुभ दिन कब आवेगा जब माताएँ हँसती-हँसती अपने प्राण-प्रिय पुत्र को फाँसी के तख्ते पर लटकने के लिये विदा देंगी ?'

नखोदका—सम्हलकर ! इतना ज्यादा न कूदो।

माँ—यह सब बातें क्यों कहते हो ? मैं बाधा तो उपस्थित नहीं कर रही हूँ। यदि मुझे विषाद है तो यह माता के हृदय का अपराध है।

पावेल वहाँ से हट गया। चलते-चलते उसने कहा—'प्रेम ! तू मनुष्य के मार्ग में सदा बाधाएँ ही उपस्थित करता आया है।'

माँ काँपने लगी। उसे डर हुआ कि कहीं पावेल इसी तरह की और जली-कटी न सुना दे। बोली—'ये सब बातें क्यों मुँह से निकालते हो। मैं खूब जानती हूँ कि तुम अन्यथा नहीं कर

सकते। अपने साथियों के हित के लिये तुम ऐसा करोगे ही ?'

पावेल—नहीं, मैं अपने विश्वास के लिये ही ऐसा कर रहा हूँ। यदि उनका ख्याल होता तो बिना झंडा के ही काम चल सकता था। पर मैंने ही यह निश्चय किया है।

नखोदका दरवाजे पर खड़ा था। दरवाजा इतना छोटा था कि बिना एकदम झुके अंदर घुसना उसके समान लंबे आदमी के लिये असंभव था। एक हाथ से चौखट पकड़कर कमर और गर्दन को आगे की ओर झुकाते-झुकाते उसने कहा—'अच्छा हो यदि आप अपने उद्गार के वेग को रोक लें।' इन शब्दों को उसने कुछ गुस्से में कहा। वह आँखें तरेरकर पावेल की ओर देख रहा था।

माँ कातर और अधीर होकर रो देना चाहती थी पर वह पावेल को अपनी आँखों में आँसू नहीं दिखाना चाहती थी। सम्हालकर बोली—'बेटा! मैं भूल गई।' इतना कहकर बरामदे में चली गई और कोने में खड़ी हो सिसक-सिसककर रोने लगी। रोते-रोते वह इतनी कमजोर हो गई मानों आँसू के साथ उसके शरीर का रक्त निकलकर बह गया हो।

इसी समय उसने घर के भीतर पावेल और नखोदका को लड़ते सुना।

नखोदका ने कहा—'क्या इस तरह उसे जलाने में तुम्हें सुख मिलता है ?'

पावेल—तुम्हें इस तरह डाँटने का कोई अधिकार नहीं है।

नखोद्का—तुम्हें इस तरह बेवकूफ बनते देखकर यदि मैं चुप रहूँ तो अपने को अपराधी समझूँगा। यह सच्चे साथी का धर्म नहीं है। तुमने वह सब बातें माँ से क्यों कहीं ?

पावेल–मनुष्य को सदा दृढ़ और स्पष्ट रहना चाहिए। उसका 'हाँ' और 'ना' उसके निश्चित विचारों का सूचक होना चाहिए ?

नखोद्का—और अपनी माँ से भी इसी तरह बातें करनी चाहिए ?

पावेल—सब किसी से। जो प्रेम, जो अनुराग मेरे मार्ग में बाधक हो, मेरे पैर पकड़कर पीछे की ओर खींचे उसे मैं नहीं चाहता।

नखोद्का—बहादुर हो! यही बातें शशेंका से जाकर कहो ?

पावेल—मैंने उससे भी कह दिया है।

नखोद्का—जरूर! क्या उसी तरह जिस तरह तुमने माँ से कहा है? कदापि नहीं। तुमने उससे नरमी से बातें की हैं। सब बातें शांति से समझाई हैं। मैंने तुमलोगों की बातें सुनीं नहीं पर मेरा दृढ़ विश्वास है और तुम माँ के सामने बड़े वीर बनना चाहते हो। क्या तुम समझते हो कि इस तरह की बहादुरी का कुछ भी मूल्य है ?

माँ जल्दी-जल्दी आँसू पोछने लगी। वह डर गई कि पावेल और नखोद्का में भीषण संग्राम न मच जाय। इसलिए उसने दरवाजा खोला और फौरन रसोई-घर में जाकर बोली—'वसंत के दिनों में भी इतनी सर्दी! आश्चर्य है!'

इतना कहकर रसोई के बरतनों को इधर-उधर हटाने-बढ़ाने लगी।

उसकी आवाज के साथ ही पावेल और नखोद्का दोनों मंद पड़ गए। यह देखकर उसने और भी जोर से कहा—'समय बदल गया। मनुष्य की प्रकृति तो दिन-दिन गर्म होती जा रही है पर समय ठंढा होता जा रहा है। यह समय इस तरह की सर्दी का नहीं है। अब तक गरमी पड़ने लगती थी। आकाश निर्मल हो जाता था और सूर्य चमकने लगते थे।'

कमरे में सन्नाटा छा गया। माँ भी चुप हो गई।

नखोद्का ने धीरे से कहा—'कुछ समझ में आया? कितनी दूर की बातें हैं। जरा उसकी बातों से अपनी बातों की तुलना करो।'

माँ ने काँपते स्वर में पूछा—'तुमलोग चाय वगैरह भी पिओगे।'

उसका स्वर कंपित था और अपनी दुर्बलता को छिपाने के लिये वह आप-ही-आप बोल उठी—'मैं तो सर्दी से काँप रही हूँ।'

पावेल माँ के पास आया। अपराधी की भाँति माँ के सामने खड़ा हो गया। मुस्कुराकर बोला—'माँ, मुझे क्षमा करना। अभी मैं नादान हूँ।'

माँ ने पावेल को हृदय से लगा लिया। खिन्न होकर बोली—'तुम मुझे चोट मत पहुँचाया करो। भगवान तुम्हारी सहायता करें तुम्हें अपने जीवन पर पूर्ण अधिकार है पर मेरा जी न दुखाया करो। माँ का हृदय दुखी हुए बिना कैसे रह सकता है। मुझे तुम सब लोगों के लिये वेदना है। तुम सब मुझे समान प्रिय हो।

सभी मेरे जिगर के टुकड़े हो। यदि तुमलोगों के सुख-दुख में मुझे बराबर सुख-दुख नहीं होगा तो और किसे होगा! सभी तुम्हारा अनुकरण करते हैं। सबों ने अपना सब कुछ त्याग दिया है और इसमें आ पड़े हैं। यही उनलोगों का पवित्र तीर्थ है।'

उसके हृदय में विचार-तरंगें उठ रही थीं। उसका हृदय शोक, उच्छ्वास और क्षुब्ध उल्लास के आवेग में झूम रहा था। उसे ऐसे शब्द नहीं मिलते थे जिनसे वह उन भावों को व्यक्त करे। इसलिए वह चुपचाप हाथ हिलाने लगी। उसने पावेल की ओर स्थिर दृष्टि से देखा उसकी आँखों में हर्ष और विषाद के चिह्न स्पष्ट झलक रहे थे।

पावेल ने धीरे से कहा—'माँ, मुझे क्षमा करो। अब मैं सदा सावधान रहूँगा। मैं यह बात कभी भी नहीं भूलूँगा।'

माँ ने पावेल को अपने हृदय से अलग किया। पावेल को लक्ष्यकर उसने हँसकर कहा—'नखोदका, तुम पावेल से बड़े जरूर हो पर उसे इस तरह न डाँटा करो।'

नखोदका माँ की ओर पीठ करके कुछ भुनभुना रहा था। बोला—'इतना ही नहीं। किसी-न-किसी दिन ये मेरे हाथ से पीटे भी जायँगे।'

माँ नखोदका के पास चली गई और उसका पीठ सुहलाने लगी।

नखोदका माँ के सामने सिर झुकाकर खड़ा हो गया और धीरे से रसोई-घर में चला गया। वहाँ से उसने व्यंग से कहा—पावेल, अच्छा होगा कि किसी तरह तुम यहाँ से दूर हो ताकि

मुझे इस तरह झिड़कना न पड़े। (माँ से) मैं हँसी कर रहा हूँ। सच मत समझ लेना! अच्छा, मैं आग जलाने का आयोजन करता हूँ। (कोयले को देखकर) सब-के-सब भींग गए हैं।

इतना कहकर वह चुप होगया। जिस वक्त माँ ने रसोई-घर में प्रवेश किया वह ज़मीन पर बैठा आग जला रहा था। माँ की ओर देखे बिना ही उसने कहना शुरू किया—'माँ, डरने की कोई बात नहीं है। मुझसे उसकी कोई क्षति नहीं हो सकती। तुम जानती हो कि मेरा हृदय कितना कोमल है। इसके अलावे मैं उसे हृदय से चाहता हूँ। लेकिन मैं उसकी वह नई पोशाक पसंद नहीं करता। मैं मानता हूँ कि वह उसे बहुत प्रिय है पर इससे क्या? वह लोगों के पास जाकर क्यों अपनी पोशाक की प्रशंसा करता फिरे? उसके बिना ही हमलोगों पर काफी बोझ लदा हुआ है।'

पावेल ने हँसकर पूछा—'इस तरह कब तक भुनभुनाते रहोगे? जो फटकार तुमने मुझे एकबार दिया क्या वह पर्याप्त नहीं था?'

नखोदका ने अपना पैर चूल्हे की ओर फैलाया। माँ दरवाजे के पास खड़ी विषाद-भरी दृष्टि से नखोदका की झुकी गर्दन और पीठ की ओर देख रही थी। नखोदका दोनों हाथों को पीछे की ओर फैलाकर उनके सहारे तनकर बैठ गया। अब उसकी दृष्टि माँ और बेटे दोनों पर पड़ी। बोला—'तुमलोग बड़े ही सज्जन हो!'

पावेल ने झुककर नखोदका का हाथ पकड़ लिया।

नखोदका—हाथ छोड़ दो नहीं तो मैं गिर पड़ूँगा। मेरे पास से चले जाओ।

माँ—झेंपते क्यों हो ? एक दूसरे को हृदय से लगा लो।

पावेल—(नरमी से) क्यों ? क्या इरादा है ?

नखोदका—(उठकर) अवश्य।

पावेल घुटने टेककर बैठ गया और दोनों ने एक दूसरे को बाहु-पाश में बाँध लिया। दोनों दो शरीर और एक आत्मा थे, मित्रता के अभिन्न पाश में बँधे हुए थे।

माँ की आँखों से हर्षातिरेक के आँसू बहने लगे। आँसुओं को पोंछती हुई वह बोली—'रमणी के आँसू सहज हैं। विषाद में भी वह रो पड़ती है, हर्ष में भी वह रो देती है।'

नखोदका ने पावेल को छोड़ दिया और अपने आँसुओं को पोंछते हुए बोला—'जब बछड़े खेल-कूद चुके तब उन्हें बाड़े में बंद कर देना चाहिए। (आँसुओं को छिपाने के हेतु कोयले को लक्ष्यकर) कितना खराब और भींगा कोयला है। फूँकते-फूँकते दम निकल गया। कणों से आँखें भर गईं पर यह न जला।'

पावेल सिर झुकाकर खिड़की के पास बैठा था। बोला—'इन आँसुओं के लिये शर्माना नहीं चाहिए।'

माँ उसके पास जाकर बैठ गई। उसका हृदय वत्सलता से सराबोर था। वह उदास थी पर हृदय शांत और धीर था।

पावेल के शरीर पर हाथ फेरते हुए उसने अपने मन में सोचा—'वह होकर ही रहेगा। उसका प्रतिकार नहीं हो सकता।

वह तमाम शब्दों को याद करने लगी पर एक भी शब्द ऐसा

उसे न मिला जो उसके हृदय के उस समय के सच्चे भाव को प्रगट करता ।

नखोदका अपनी जगह से उठा और कमरे में जाकर बोला—'माँ, आप आराम करें मैं भोजन का समस्त आयोजन कर देता हूँ।' इसके बाद उसने कहा—'शेरनी को मारना उचित नहीं पर मैं दावे से कह सकता हूँ कि वास्तविक जीवन का हमलोगों को आज ही अनुभव हुआ है। इससे लाभ ही होता है।'

पावेल की दृष्टि माँ की ओर थी। बोला—'ठीक कहते हो।'

माँ—पर अब समय बदल गया। सुख-दुख के कारण भी बदल गए। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है इसलिए मैं कुछ कह भी नहीं सकती।

नखोदका—इसका वही कारण है। सबके हृदय में परिवर्तन हो रहा है। स्वार्थ के संग्राम में सबके हृदय मारे गए हैं। सबमें लोभ मोह और मत्सर घुसा हुआ है। सभी का हृदय एक दूसरे को खा जाने की ताक में लगा हुआ है। इस जीवन से सबलोग तंग आ गए हैं। जीवन रोग-सा हो गया है। सभों के हृदय पर अंधकार का राज्य है। सबको अपनी ही वेदना की चिंता है। ऐसे समय में एक महान्‌-व्यक्ति आता है जो विवेक के प्रकाश से सबके हृदयों को प्रकाशित करने का यत्न करता है। वह उन्हें आदेश देता है और कहता है—अरे! नरक की यंत्रणा में सड़नेवाले जीव! विचारो और समझो कि तुमलोगों का स्वार्थ एक है। सबको जीने और विकसित होने की आवश्यकता है। जिसके हृदय में ये भाव हैं वह

अकेला है और इसीलिए जोर से चिल्लाता है। उसे अपनी नीरवता खटकती है। वह साथी चाहता है। उसके आह्वान पर सभी हृदयवान व्यक्ति सजग होकर उसके सुर में सुर मिलाकर एक स्वर से चिल्लाने का यत्न करते हैं और उसी संमिलित स्वर से यह ध्वनि निकलती है—विश्व के प्राणी ! सबलोग एक कुटुंब के विशाल बंधन में बँध जाओ। प्रेम ही जीवन का जनक है, न कि घृणा ! भाइयो ! संसार के कोने-कोने से यही आवाज आ रही है।

पावेल ने कहा—'मेरा भी यही मत है।'

माँ ने अपने दोनों होंठ जोर से दबाए ताकि वे हिलने न पावें और कसकर आँखें बंदकर लीं ताकि आँसू न निकल पड़ें।

नखोदका कहता गया—'सोते-जागते-बैठते-उठते-चलते-फिरते प्रत्येक क्षण मैं इस ध्वनि को सुनता हूँ। उस समय मेरा हृदय आनंद से गदगद हो उठता है। यह वसुंधरा भी अन्याय के भार से इस तरह दबी हुई है कि उससे भी वही प्रतिध्वनि निकलती है और वह मानव-हृदय के उगते हुए इस सुंदर सूर्य का सहर्ष स्वागत करने की तैयारी कर रही है।'

पावेल उठ खड़ा हुआ। वह अपना हाथ फैलाकर कुछ कहना ही चाहता था कि माँ ने उसका हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा और कान में चुपके से कहा—'उसे रोको मत !'

नखोदका उसी प्रकार बोलता रहा—'पर अभी भी लोगों के दुःखों का अंत नहीं हुआ है। स्वार्थियों और लोभियों का क्रूर

चक्र इन पर और भी चलेगा। इनके शरीर से और भी रक्त चूसा जायगा पर कोई हर्ज नहीं। इस उत्पीड़न से लोगों में जो जागृति उत्पन्न हो रही है उसके सामने यह रक्तशोषण कुछ नहीं है। हमारे रग-रंग से उस जागृति के स्फुलिंग निकलने लग गए हैं। हमारा हृदय उन भावों से भर गया है। उनकी सुनहली किरणें ऊषा की प्रथम ज्योति की भाँति उदीयमान हो रही हैं। हम सभी यातनाएँ सहने के लिये तैयार हैं। सब कुछ संकट झेलने के लिये सन्नद्ध हैं। क्यों ? हमारे हृदय में उस नई शक्ति आभास है और उसी में हमारी ताकत छिपी है।'

इसी तरह की बातें प्रायः आधी रात तक होती रहीं।

सत्रहवाँ परिच्छेद

जब कभी माँ के हृदय में कोई भाव उठता उसकी पुष्टि उसके किसी-न-किसी अनुभव-द्वारा हो ही जाती। आज उसकी दशा ठीक उस दिन की-सी थी जब उसके पिता ने रुखाई के साथ उससे कहा था—'मुँह क्यों बना रही है ? एक उल्लू मिला है जो तेरे साथ शादी करना चाहता है। कर ले उससे विवाह ! स्त्री के भाग्य में यही लिखा है कि विवाह करे, बच्चा जने और अपने जीवन को भार-स्वरूप बना ले।'

इस घटना के बाद ही उसके जीवन का स्रोत अगम्य, अंधकार-मय और दुर्गम मार्ग से होकर बहने लग गया था। यही दशा

उसकी इस समय थीं। संभावित विपत्ति की कल्पना से वह मन-ही-मन रो रही थी।

पर इससे उसके दुःख का वेग घटता गया और उसका हृदय प्रौढ़ होता गया।

सवेरे ही पावेल और नखोदका कहीं बाहर चले गए। उनके जाने के थोड़ी देर बाद ही करसनोवा आया। उसके चेहरे से घबराहट और भय टपकता था। वह बोला—'इसे की हत्या हो गई है। जल्दी आओ।'

माँ काँप उठी। हत्यारे का नाम उसके मस्तिष्क में सहसा बिजली की तरह चमक उठा। चादर ओढ़ते-ओढ़ते उसने पूछा—'किसने यह क्रूर कर्म किया है ?'

करसनोवा—हत्यारा इसे की लाश पर बैठा मातम नहीं मना रहा है! उसका काम तमामकर वह गायब हो गया।

रास्ते में चलते-चलते करसनोवा ने कहा—'एक बार फिर हत्यारे का पता लगाने के लिये धर-पकड़ की बाजार गर्म होगी। सौभाग्य की बात है कि पावेल वगैरह कल रात को घर पर ही थे। मैं ग्यारह बजे रात को इधर से जा रहा था। खिड़की खुली थी। मैंने सबको कमरे में बैठे देखा था। मैं इसकी सफाई दे सकता हूँ।'

माँ—(डर से काँपती हुई) उनलोगों के संबंध में तुम इस तरह की कल्पना क्यों करते हो ?

करसनोवा—तब उसे किसने मारा ? यह तो निर्विवाद है कि

इन्हीं लोगों में-से किसी ने उसे मारा है क्योंकि वह गुप्तचर का काम करता था।

माँ दम लेने के लिये खड़ी हो गई। उसका कलेजा धड़क रहा था।

करसनोवा—तुम क्यों व्यर्थ घबरा रही हो? तुम्हारे डरने की कोई बात नहीं है। जिसने यह पाप किया है उसका फल वह आप भोगेगा। जल्दी चलो, नहीं तो लोग उसकी लाश उठा ले जायँगे।

माँ चुपचाप आगे बढ़ती गई। निकोले के उस दिन के शब्द उसके हृदय में गूँज रहे थे। उसके दिमाग में केवल एक बात चक्कर मार रही थी—'आखिर उसे मार ही डाला।'

कारखाने के नजदीक ही, जहाँ हाल में ही आग लग गई थी, वहाँ पर लोगों की भीड़ इकट्ठी थी और भीषण कोलाहल मच रहा था। बड़े, बूढ़े; जवान, बच्चे, स्त्रियाँ और पुलिस के आदमियों से मैदान खचाखच भरा था।

इसे का शरीर जमीन पर पड़ा था। उसका बायाँ हाथ सिर के नीचे था, दाहिना हाथ पैंट की जेब में था और सिर धूल-धूसरित था।

माँ ने इसे की लाश की ओर गौर से देखा। उसकी एक आँख खुली थी मानों हैट को निहार रही हो। उसका अधखुला मुँह बता रहा था कि वह अपनी इस निरीह और दयनीय दशा पर विस्मित है। माँ ने लंबी साँस ली। जिंदगी भर उसने 'इसे' से घृणा की थी पर आज उसके हृदय में करुणा भर आई।

किसी ने धीरे से कहा—'एक बूँद भी खून नहीं निकला है। मालूम होता है कि एक ही चोट में काम तमाम हो गया।'

इंस्पेक्टर का हाथ हिलाकर एक तगड़ी औरत ने पूछा—'संभव है अभी जान बाकी हो।'

इंस्पेक्टर ने अपना हाथ खींचते हुए कहा—'हटो यहाँ से।'

किसी व्यक्ति ने उस रमणी से कहा—'डाक्टर ने लाश की परीक्षा कर ली है। उन्होंने कह दिया है कि दम निकल गया है।'

किसी ने ताना देते हुए कहा—'जिसने इस पापी का गला घोंटा है उसने अच्छा ही काम किया है।'

इंस्पेक्टर ने औरतों को ढकेलते हुए पूछा—'किसने यह बात कही है ?'

उसे धक्का देते देखकर भीड़ तितर-बितर हो गई। कुछ लोगों ने घर का रास्ता लिया, कुछ लोग अलग खड़े होकर हँसने लगे। माँ घर लौट आई। उसने अपने मन में कहा—'इसके लिये किसी को भी दुःख नहीं है।' उस समय भी निकोले की मूर्ति उसके सामने खड़ी थी। उसकी छोटी आँखें सूखी हुई थीं, आँखों में निर्दयता थी और वह अपना दाहिना हाथ इस प्रकार हिलाता था मानों चोट आ गई हो।

पावेल और नखोदका के वापस आने पर माँ ने पूछा—'इसे की हत्या के लिये पुलिसवालों ने किसी को गिरफ्तार किया है या नहीं ?'

नखोदका—हमलोगों को कुछ नहीं मालूम।

माँ ने देखा कि दोनों खिन्न और उदास थे। वह धीरे से बोली—'निकोले पर तो किसी का संदेह नहीं है ?'

पावेल ने माँ की ओर घूरकर देखा और बोला—'नहीं, किसी को उसका ख्याल तक नहीं है। वह यहाँ है भी नहीं। कल ही वह नाव-द्वारा कहीं बाहर चला गया था और अभी तक नहीं लौटा है। मैंने पता लगा लिया है।

माँ ने साँस लेकर कहा—'बड़ी अच्छी बात है। भगवान रक्षा करें।'

नखोदका ने माँ की ओर देखकर सिर नीचा कर लिया।

माँ ने अपने मन में कहा—'वह वहाँ मरा पड़ा है और इस तरह देखता है मानों अपनी अवस्था पर विस्मित हो। किसी के हृदय में उसके लिये दया नहीं है, कोई उसके साथ सहानुभूति नहीं दिखलाता है मानों विश्व में उसका कोई मूल्य ही न था; मानों वह मिट्टी का खिलौना था जो हाथ से छूटकर गिर गया और जमीन पर गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गया।'

भोजन के वक्त पावेल यकायक बोल उठा—'बस, यही बात मेरे समझ में नहीं आती!'

नखोदका—कौन बात ?

पावेल—अपने स्वार्थ और संतोष के लिये किसी जीव की हत्या करना कितना बुरा है ? हिंसक जानवरों को तो मारना उचित है। कदाचित मैं ही ऐसे व्यक्ति के मारने का प्रयास करूँ जो पशु की भाँति मानव-समाज का अहित कर रहा हो, पर ऐसे

तुच्छ और नाचीज़ पर हाथ उठाने का किसने साहस किया ?

नखोदका—वह कम हिंसक नहीं था।

पावेल—मैं जानता हूँ।

नखोदका—मच्छड़ शरीर से एक ही बूँद रक्त चूसता है पर हम उसे भी मार डालते हैं।

पावेल—मैं उसके विरोध में कुछ नहीं कह रहा हूँ। मेरा अभिप्राय सिर्फ इतना ही है कि काम खराब हुआ है।

नखोदका—क्या किया जाय ?

पावेल चुप हो गया। थोड़ी देर के बाद बोला—'क्या ऐसे आदमी की तुम हत्या कर सकते थे ?'

नखोदका ने एक बार पावेल की ओर और फिर माँ की ओर देखकर कहा—'अपने लिए मैं तुच्छ से तुच्छ जीव को कष्ट नहीं देना चाहता पर अपने आदर्श के लिये और अपने साथियों के लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। और तो और, यदि जरूरत पड़े तो मैं अपने पुत्र तक की हत्या कर सकता हूँ।'

माँ ने घबराकर कहा—'ओह !'

नखोदका ने कहा—'हमलोगों का अध्यवसाय ही ऐसा है। इसमें कोई भी बात असंभव नहीं है।'

पावेल—तुम्हारा कहना सर्वथा सच है।

किसी आंतरिक प्रेरणा से उत्तेजित होकर नखोदका अपनी जगह से उठा और हाथ हिलाते हुए बोला—'मनुष्य करे ही क्या ? कभी-कभी मजबूर होकर उसे किसी के जीवन का इस-

लिए अंत करना पड़ता है कि उसका सुदिन लौटे और वह समस्त मनुष्यों को एक-दूसरे की हँसी-खुशी में भाग लेते देखे। जीवन के विकास-मार्ग में जो बाधक हैं उनका अंत करना ही होगा। अपने सुख अथवा संतोष के लिये जो लोग मनुष्य की स्वतंत्रता को बेंच देना चाहते हैं उनका नाश करना ही श्रेयस्कर है। यदि कोई पापी किसी पुण्यात्मा के मार्ग में बाधक होता है, उसके सर्वनाश के लिये घात लगाए रहता है, तो यदि हम उसका अंत न कर दें तो हम स्वयं उस पाप के भागी हैं। तुम कहते हो कि यह पाप है। पर मैं पूछता हूँ कि अपने आनंद, विलास और रक्षा के लिये अधिकारियों को इस प्रकार जोर-जुल्म, धर-पकड़, जेल-कालापानी, फाँसी और कालकोठरी की व्यवस्था करने का क्या हक है? यदि कभी हमें अवसर मिल जाता है और हम भी उन्हीं अस्त्रों का प्रयोग करने के लिये बाध्य हो जाते हैं तो उस समय हम क्या करें? हम अवश्य उसका उपयोग करेंगे। हम पीछे नहीं हटेंगे, हिचकेंगे नहीं। जहाँ वे लोग हममें-से हजारों और लाखों को मार डालते हैं, वहाँ क्या हमलोग उनमें-से एक को भी न मारें जो संयोगवश हमलोगों के पंजे में आ जाता है और हमलोगों के निकटवर्ती होने के कारण सबसे अधिक हानि हमलोगों को पहुँचाता है। यही न्याय है पर मैं इसके प्रतिकूल कहना चाहता हूँ। क्योंकि मैं भलीभाँति जानता हूँ कि इस रक्तपात से कोई लाभ नहीं है। सत्य का पौधा सत्य के माननेवालों के ही रक्त से सिंचित होकर पनपता है। विकृत रक्त का संसर्ग तो उसकी

वृद्धि को मार देता है, उसे निकम्मा बना देता है। तो भी यदि नितांत आवश्यकता पड़ जाय तो इस तरह के रक्तपात से भी बाज नहीं आना चाहिए। पर इस विषय में मैं अपना ही मत कह रहा हूँ। इसके पाप और पुण्य का मैं ही अधिकारी हूँ। और मेरे ही ऊपर इसकी जिम्मेदारी है।'

इतना कहकर वह कमरे में टहलने लगा। वह अपने हाथों को इस तरह हिला रहा था मानों हवा को चीर रहा हो। माँ ने भयभीत होकर उसकी ओर देखा। उसे प्रतीत हुआ मानों उसके हृदय को किसी चीज की कड़ी ठेंस लगी हो और उससे भयानक वेदना उठी हो। हत्या की भयानकता माँ के दिल से हट गई। उसने अपने मन में कहा—'यदि निकोले ने 'इसे' की हत्या नहीं की है तो पावेल के किसी साथी ने की होगी!' पावेल सिर नीचा किए हुए नखोदका की बातें सुन रहा था और नखोदका तेज के साथ बोलता जा रहा था—'आगे बढ़ते समय कभी-कभी अपने आपसे टकरा जाना पड़ता है। उस समय हमें सब कुछ निछावर कर देने के लिये तैयार रहना चाहिए। यहाँ तक कि यदि आवश्यक हो तो उद्देश्य की सिद्धि के लिये प्राण तक दे दीजिए। इतना ही नहीं, प्राणों से भी प्यारी वस्तु को देने के लिये तैयार रहिए। तब आप देखेंगे कि सत्य का विकास किस प्रकार होता है।'

वह कमरे के बीच में खड़ा हो गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया और आँखें बंद-सी हो गईं। उसने अपने हाथ उठाए और उन्हें हिलाकर वह पुनः पूर्ण विश्वास और दृढ़ता के साथ गंभीर

शब्दों में बोला—'वह समय किसी-न-किसी दिन आवेगा, जब विश्व के समस्त प्राणी एक दूसरे को देखकर प्रसन्न होंगे, एक दूसरे की सहायता करेंगे और एक दूसरे की बातें आमोद के साथ सुनेंगे। वह स्वतंत्रता का युग होगा और सभी लोग स्वतंत्रता के साथ इस मही पर विचरण करेंगे। सबका हृदय शुद्ध होगा, घृणा, द्वेष, मोह और मत्सर के भाव से रहित होगा और सभी विवेक तथा सद्विचार का आश्रय लेंगे। उस समय जीवन का उद्देश्य मानव-समाज की सेवा करना होगा। मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुँच जायगा क्योंकि स्वतत्रता उच्च-से-उच्च उन्नति की जननी है। उस समय लोगों का जीवन सत्य का जीवन होगा और इस सत्य के विकाश में जो जितना ऊँचे पहुँचेगा उसका उतना ही आदर होगा। विश्व-प्रेम में जो जितना ही आगे बढ़ेगा वह उतना ही स्वाधीन रहेगा। उस समय जीवन का मूल्य बढ़ जायगा और जीना एक पुनीत कार्य समझा जाने लगेगा।'

इतना कहकर उसने अपने शरीर को सीधा किया और फिर बोला—'इस तरह के जीवन के लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। यदि आवश्यक होगा तो हम अपने हृदय को अपने ही हाथों से चीरकर निकालेंगे और अपने ही पैरों के तले उसे रौंद डालेंगे।'

मारे उत्तेजना के वह काँपने लगा और उसकी आँखों से आँसू के बूँद मोती की तरह टपकने लगे।

पावेल ने सिर उठाया और वह आँखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखने लगा। उसका भी चेहरा पीला पड़ गया था। माँ सचेत

होकर बैठ गई मानों कोई अद्भुत और भारी घटना होने-वाली हो।

पावेल ने नरमी से पूछा–'नखोद्का, तुम्हारी क्या हालत है?'

नखोद्का ने गर्दन हिलाई, शरीर को तनेन किया और माँ की तरफ देखते हुए बोला—'मैंने ही इसे की हत्या की है।'

माँ काँप उठी। वह अपनी जगह से दौड़कर नखोद्का के पास पहुँची और उसे ज़ोर से पकड़ लिया। नखोद्का अपने को माँ से मुक्त करना चाहता था पर उसे माँ ने और कसकर पकड़ लिया और बोली– 'यह क्या? यह क्या? अपने को सम्हालो! हाय मेरे लाल!'

नखोद्का—पहले मुझे कह लेने दो कि यह कांड किस प्रकार हुआ।

माँ की आँखों में आँसू भर आए। बोली—'चुप रहो। वह बात मुँह पर मत लाओ। तुम वह काम कभी भी नहीं कर सकते। भगवान की यही इच्छा थी।'

पावेल की आँखों में भी आँसू आ गए थे। वह नखोद्का के पास आया। उसका चेहरा झाँवर हो गया था और होठ काँप रहे थे। उसने विचित्र सूखी हँसी हँसकर नरमी के साथ धीरे से कहा—'नखोद्का, हमें अपना हाथ दो। मैं खूब समझता हूँ कि तुम्हारे हृदय की क्या हालत हो रही है।'

उन लोगों की ओर से आँखें हटाकर नखोद्का ने कहा—'ठहरो।' इतना कहकर उसने अपने शरीर को जोर से हिलाया

और दोनों से अलग जा खड़ा हुआ। पर पावेल ने तुरत उसका दाहिना हाथ पकड़ लिया और अपने हाथ में लेकर जोर से दबाने लगा।

माँ ने कहा—'तुम मुझे समझाना चाहते हो कि तुमने 'इसे' की हत्या की है। नहीं, तुमसे वह काम नहीं हो सकता। यदि मेरी आँखों के सामने भी ऐसा हुआ होता तो भी मैं विश्वास न करती।'

पावेल—भाई नखोदका! शांत हो! माँ ठीक कह रही है। यह विषय हमलोगों की कल्पना के बाहर है।

पावेल ने नखोदका का एक हाथ अपने हाथ में ले लिया और दूसरा अपने कंधे पर इस तरह रखा मानों उसके उद्वेग को शांत करना चाहता हो। नखोदका ने अपना सिर उसकी ओर झुका दिया और टूटे स्वर में कहने लगा—'पावेल, मैं यह क्रूर-कर्म कभी भी नहीं करना चाहता था। तुम्हें स्मरण होगा कि उस वक्त तुम आगे बढ़ गए और मैं इवान गुसेव के साथ पीछे रह गया। ठीक उसी समय 'इसे' एक तरफ से आया और हमलोगों की ओर शंकित नेत्रों से देखकर हँसने लगा। इवान घर चला गया और मैं कारखाने की ओर बढ़ा। 'इसे' भी मेरे साथ था।' इतना कहकर उसने लंबी साँस ली और फिर बोला—'किसी ने भी मेरा इस तरह अपमान नहीं किया जिस तरह उस नारकीय कुत्ते ने उस समय किया!'

माँ ने नखोदका को अपनी ओर खींचा और जोर देकर कुर्सी पर बैठाया और आप भी उसके पास बैठ गई? पावेल दोनों

के सामने खड़ा था। नखोद्का का एक हाथ उसके हाथ में था। बोला—'मैं तुम्हारी हालत खूब समझ रहा हूँ।'

नखोद्का—'इसे' ने मुझसे कहा कि वह हमारे दल के सब आदमियों का नाम जानता है। उसने इंस्पेक्टर के पास सबकी रिपोर्ट कर दी है और पहली मई के पहले ही हमसब गिरफ्तार कर लिए जायँगे। उसकी बातों पर मैं हँसता रहा पर मेरा खून खौलने लगा। उसने फिर कहा—'तुम तो समझदार आदमी हो। तुम्हें उस रास्ते से न जाकर......।'

इतना कहकर नखोद्का रुक गया। दाहिने हाथ से उसने अपना माथा पोंछा और सिर हिलाया। उस समय उसकी आँखें चमकने लगीं।

पावेल—मैं समझ गया कि उसने क्या कहा!

नखोद्का—उसने कहा कि तुम्हें सरकार की नौकरी कर लेनी चाहिए।

इतना कहकर नखोद्का ने अपना हाथ फैलाया और मुट्ठी बाँध ली। बोला—'चांडाल ने मेरा घोर अपमान किया। यदि उसने मेरा सिर उतार लिया होता तो मुझे उतना कष्ट न हुआ होता। इस व्यवहार से मैं उतना दुखी न होता लेकिन उसकी उस घृणायुक्त बात को मैं बरदाश्त नहीं कर सका।'

इतना कहकर नखोद्का ने पावेल के हाथ से अपना हाथ छुड़ा लिया और घृणा से विकृत मुँह करके बोला—'मैंने उसकी पीठ पर तानकर एक घूँसा दिया और चलता बना। मैंने उसे गिरते हुए

सुना पर फिरकर देखा तक नहीं। वह गिरा और शांत हो गया। मैंने नहीं समझा कि चोट इतनी भयानक होगी। मैं निश्चिंत होकर कारखाने में चला गया और अपना काम करने लगा। मुझे उसकी उतनी चिंता भी नहीं थी जितनी किसी मेढक के पैरों तले दब जाने से होती है। पर थोड़ी ही देर बाद मैंने चारों ओर से शोर-गुल सुना—'इसे मारा गया! इसे मारा गया!!' मुझे इस पर विश्वास भी नहीं हुआ। पर मेरे हाथ काठ के समान कड़े हो गए और मेरा काम करना कठिन हो गया।'

इतना कहकर वह अपने हाथ की ओर देखकर बोला—'मैं समझता हूँ कि यावज्जीवन मैं इस कलंक को न धो सकूँगा!'

माँ की आँखों से आँसू छलछला आए। बोली—'यदि तुम्हारा हृदय निर्मल है तो यह सब कुछ नहीं है।'

नखोदका—मैं अपने को अपराधी नहीं समझता। पर मुझे घृणा मालूम होती है कि मैंने यह निषिद्ध काम क्यों किया! इसकी आवश्यकता नहीं थी।

नखोदका की ओर सशंक दृष्टि से देखते हुए पावेल ने कहा—'अब क्या करना चाहते हो?'

नखोदका—मैं यह कहने से नहीं डरता कि मैंने ही उसकी हत्या की है। पर यह बात अपने मुँह से निकालते हुए मुझे शर्म मालूम होती है और इतनी तुच्छ बात के लिये जेल जाना तो और भी घृणायुक्त मालूम होता है। यदि इस अपराध में कोई पकड़ा गया तो मैं अपना अपराध कबूल कर लूँगा

नहीं तो जो हुआ सो हुआ। इसके लिये मैं अधिक झंझट में नहीं पड़ना चाहता।

इतने में कारखाने का घंटा बजा। नखोद्का ने कहा—'मैं काम पर नहीं जाऊँगा।'

पावेल—मैं भी नहीं जाऊँगा।

नखोद्का—'मैं स्नान करना चाहता हूँ।' इतना कहकर वह स्नानागार की ओर गया। उसका चेहरा उदास था।

माँ उसके पीछे थी। वह पावेलसे बोली—'तुम चाहे जो कहो पर मैं विश्वास नहीं कर सकती। अगर यह बात सच भी है तो मैं उसे दोषी नहीं समझती। ईश्वर के नाम पर मैं यह स्वीकार करती हूँ कि किसी को मारना पाप है पर मैं नखोद्का को अपराधी नहीं मानती। मुझे 'इसे' के लिये खेद है। वह भी संसार का एक जीव था। वह वहाँ किस निरीह अवस्था में मरा पड़ा था! जिस समय मैंने उसे देखा मुझे स्मरण हो आया कि वह तुम-लोगों को फाँसी दिलवाने की चेष्टा में था। पर उसकी मृत्यु से मुझे न हर्ष हुआ न विषाद! केवल खेद हुआ। पर जब से मुझे मालूम हुआ है कि उसका अंत किसके हाथों से हुआ तब से मुझे खेद भी नहीं रहा।'

माँ एकाएक चुप हो गई। क्षण भर सोचती रही और फिर हँसकर कहने लगी—'दीनानाथ! जो कुछ मैं कह रही हूँ उसके तुम्हीं साक्षी हो।'

पावेल ने उसकी समस्त बातें नहीं सुनी थीं। कमरे में टहलते

हुए उसने वेदना के साथ कहा—'नखोद्का इस घटना को शीघ्र न भूल सकेगा और न उसका मन शांत होगा। माँ, इस घटना से तुम्हें कुछ सीखना चाहिए। तुम इस अवस्था पर विचार करो। इच्छा न रहते हुए भी इस तरह के घृणित और कलंकित कार्य अनिवार्य हो जाते हैं। इस तरह के नाचीज़ आदमी सबसे तुच्छ समझे जाते हैं क्योंकि वे जड़ हैं। पुलिस, इंस्पेक्टर, गुप्तचर, सेना सब हमारे शत्रु हैं, पर वेलोग भी मनुष्य ही हैं। हमलोगों की भाँति उनके भी रक्त चूस लिए जाते हैं। वास्तविक बात यही है पर अधिकारियों ने एक को दूसरे का शत्रु बना दिया है, भय से उन्हें अंधा बना दिया है, उन्हें पूरी तरह जकड़ दिया है, उनके रक्त को चूस लिया है और एक को हत्या के लिये दूसरे को अस्त्र बना लिया है। उन्होंने मनुष्य की अस्त्र, लकड़ी और पत्थर से भी बुरी दशा कर दी है और इसी का नाम सरकार या शासन रखा है।'

वह माँ के निकट जाकर कहने लगा—'यदि यह अपराध है तो हजारों आत्माओं का वध करना सबसे घृणित अपराध है। वे लोग आत्मा की ही हत्या कर डालते हैं। तुमने समझा कि हममें क्या अंतर है? नखोद्का से एक आदमी की हत्या हो गई है और वह अत्यंत खिन्न है। पर वेलोग हजारों आत्माओं की प्रतिदिन हत्या करते हैं और उन्हें एक बार भी परिताप नहीं होता बल्कि वे प्रसन्न होते हैं और उत्साह से वह काम करते हैं और यह सब किसलिए? केवल अपने घर को सुरक्षित रखने के लिये,

जन-समूह को अपने आधीन रखने के लिये। विचारो! इस तरह के दूषित और जघन्य-कर्म वेलोग अपनी रक्षा के लिये नहीं करते बल्कि अपनी संपत्ति की रक्षा के लिये, अपनी विलासिता के साधनों की रक्षा के लिये वे इस तरह हजारों और लाखों आत्माओं की हत्या कर डालते हैं। वे अपनी रक्षा भीतर से नहीं करते बल्कि बाहर से करते हैं।'

इतना कहकर वह माँ की ओर झुका और उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए फिर बोला—'यदि उनके इन कार्यों की जघन्यता को भलीभाँति समझ सको तो तुम्हें हमलोगों के अध्यवसाय की महत्ता और श्रेष्ठता तथा इसकी आवश्यकता और औचित्य का सहज में ज्ञान हो जाय और तब तुम्हें प्रतीत हो कि हमलोगों का अध्यवसाय संगत और न्यायोचित है।'

माँ उठ खड़ी हुई। उसका चेहरा संभ्रांत था। वह अपने हृदय के स्रोत को पावेल के हृदय-स्रोत में मिलाकर बहाना चाहती थी। पावेल के हृदय में जो आग लगी हुई थी उसका पूर्ण अनुभव करती और उसीमें सुर मिलती हुई वह बोली—'बेटा! मैं भी मनुष्य हूँ। मेरे शरीर में भी मानव-रक्त ही बहता है। मैं सब कुछ समझती हूँ।'

इतने में किसी ने दरवाजे पर जोर से धक्का मारा। दोनों खामोश हो गए और एक दूसरे की ओर देखने लगे। पावेल ने धीरे से कहा—'नखोदका को गिरफ्तार करने के लिये पुलिस तो नहीं आ रही है।'

माँ—मैं कुछ नहीं कह सकती। भगवान हमलोगों की रक्षा करें।

अठारहवाँ परिच्छेद

धीरे से मकान का दरवाजा खुला और रिबिन ने कमरे में प्रवेश किया। उसने हँसते हुए कहा—'मैं भी आ पहुँचा।'

वह समूर का ओवरकोट पहने हुए था। उस पर जगह-जगह अलकतरे के धब्बे लगे हुए थे। उसके बेल्ट से एक जोड़ा काला दस्ताना लटक रहा था और उसके सिर पर बालदार टोप थी।

उसने पावेल से पूछा—'आखिर उनलोगों ने तुम्हें मुक्त कर ही दिया। अच्छे तो हो न? (माँ से) कुशल से तो हो न, निलोना?'

माँ—कौन? रिबिन? तुम्हें इतने दिनों के बाद देखकर बड़ी खुशी हुई।

ओवरकोट को उतारते हुए रिबिन ने कहा—'मैं तो फिर कुली हो गया। तुमलोग भले आदमी होते जा रहे हो और मैं कुली बनता जा रहा हूँ।'

इतना कहकर वह कमरे में घूम-घूमकर सब चीजें गौर से देखने लगा और बोला—'तुम्हारी संपत्ति में तो किसी तरह की वृद्धि नहीं हुई है पर पुस्तकों की संख्या अवश्य बढ़ गई है। यही

उचित है। यही तो असली धन है। अच्छा, अब अपना हाल-चाल कहो।'

पावेल—आंदोलन की प्रगति धीरे-धीरे बढ़ती ही जा रही है।

रिबिन—किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

जितनी पाई भूमि धरा में किया जोत तैयार।
बीज डालकर बड़ी आस रख हाँकी डींग हजार॥
हाथ नहीं आया जब काटी फसल गई बेकार।
नहीं पेटभर अन्न मिला हम सब जन हैं लाचार॥

माँ—तुम्हारे लिए चाय लाऊँ क्या ?

रिबिन—सिर्फ चाय ही नहीं, कुछ भोजन भी चाहिए।

पावेल रिबिन के पास बैठ गया और बोला—'कहो, संसार-चक्र किस तरह चल रहा है ?'

रिबिन—खूब मजे में ! मैंने एडिलगेव में घर बना लिया है। यह बड़ा ही सुंदर ग्राम है। करीब दो हजार आदमियों का निवास है। वर्ष में दो मेले लगते हैं। लोग गरीब हैं। किसी के पास अपना खेत नहीं है। शिकमी जोतते हैं। पैदावार भी बहुत ही कम होती है।

पावेल—(उत्साह से) उनलोगों को कुछ उपदेश देते हो ?

रिबिन—मैं मुँह बंद करके तो रहता नहीं। तुम्हारे सभी परचे मेरे पास हैं। चौंतीस परचे तो मैं अपने साथ ही ले गया था। पर मैं अधिकतर बाइबिल की सहायता से काम करता हूँ।

उसमें बहुत-सी उपादेय बातें हैं। किताब भी काफी मोटी है। वह सरकारी किताब समझी जाती है और सरकार की ओर से वह छपाई भी जाती है। इससे उसकी बातों पर लोगों को शीघ्र विश्वास हो जाता है पर उतना ही पर्याप्त नहीं है। मैं इस समय तुम्हारे पास पुस्तकें लेने की गरज से ही आया हूँ। यफीम भी साथ ही आया है। हमलोग अलकतरा लेने आए हैं। मैं उससे अलग होकर तुम्हारे यहाँ आया हूँ और यफीम के आने के पहले ही कुछ किताबें ले लेना चाहता हूँ। उस पर सब बातें प्रगट न होनी चाहिएँ।

पावेल—माँ, कुछ किताबें ला दो। वहाँ कह देना कि देहात के लिये चाहिए और वेलोग ठीक-ठीक चुनकर दे देंगे।

माँ—चाय तैयार हो रही है। पिलाकर मैं ला दूँगी।

रिबिन—(माँ से) तुमने भी इस आंदोलन में पैर रख ही दिया! बहुत अच्छा किया। हमारे गाँव में पुस्तकों के पढ़ने के शौकीन दिन-दिन बढ़ते जा रहे हैं। मैं गाँव के मास्टर लोगों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न करने की खूब कोशिश करता हूँ। यद्यपि वह स्कूल पादरी लोगों का है फिर भी गाँववाले उसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। गाँव से ६, ७ मील पर एक अध्यापिका भी रहती है पर वह वर्जित-साहित्य से सदा दूर रहती है। वह इतनी डरपोक है कि सदा न्याय और शांति की दुहाई दिया करती है। लेकिन मैं तो सिर्फ वर्जित-पुस्तकें चाहता हूँ जो जहरीली हों। मैं उन्हें उनलोगों के दिमाग में घुसाऊँगा, यदि पुलिस के लोग

पकड़ेंगे भी तो मैं साफ बच जाऊँगा क्योंकि उनलोगों को उसी अध्यापक पर संदेह होगा।

अपनी इस चातुरी पर वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

माँ ने अपने मन में कहा—'बातें तो शेर की-सी करता है पर व्यवहार ठीक लोमड़ी का-सा है।'

पावेल अपनी जगह से उठा और कमरे में टहलने लगा। बोला—'किताबें तो तुम्हें मिल जायँगी पर तुम्हारे प्रचार का तरीका संगत नहीं है।'

रिबिन ने विस्मय के साथ पूछा—'क्यों ?'

पावेल—प्रत्येक मनुष्य को अपने शुभाशुभ कर्मों का दायित्व अपने सिर पर लेना चाहिए। यह उचित नहीं है कि तुम्हारे कारण दूसरे विपत्ति में पड़ें।

रिबिन—मैं तुम्हारा अभिप्राय ठीक-ठीक नहीं समझ सका।

पावेल रिबिन के सामने खड़ा हो गया। बोला—'यदि अधिकारियों को संदेह हो गया कि इन वर्जित-पुस्तकों का प्रचार अध्यापक लोग करते हैं तो वे उन्हें तुरंत जेल में ठूँस देंगे।'

रिबिन—अवश्य ! पर इससे क्या ?

पावेल—पर इन पुस्तकों का प्रचार तुम करते हो। तुम्हें दंड मिलना चाहिए। वेलोग सर्वथा निर्दोष हैं।

रिबिन अपने हाथ को अपनी जाँघ पर पटककर हँसते हुए बोला—'तुम भी विचित्र आदमी हो। कौन विश्वास करेगा कि मेरे समान कुली इस तरह की पुस्तकों से संबंध रखता होगा।

पुस्तकों का संबंध अध्यापकों से ही रहता है इसलिए इसका भी उत्तरदायित्व उन्हीं पर रहेगा।'

माँ ने देखा कि पावेल क्रोध से अपनी होंठ चबा रहा है। उसने समझा कि वह रिबिन की चातुरी नहीं समझ सका है इसीसे क्रुद्ध हो गया है। धीरे से बोली—'रिबिन यह चाल इसलिए चल रहा है कि उसके प्रचार का काम जारी रहे, उसमें बाधा न पहुँचे और यदि कोई विपत्ति आवे तो दूसरे उसका फल भोगें।'

रिबिन ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा—'निलोना ने मेरा अभिप्राय ठीक-ठीक समझा।'

पावेल—माँ, मान लो कि मेरी अनुपस्थिति में नखोदका ने कोई ऐसा काम किया जिसके लिये मुझे जेल हो गया तो तुम क्या कहोगी?

पावेल के इस प्रश्न से माँ घबरा-सी गई और सिर हिलाते हुए बोली—'भला, अपने साथी के साथ ऐसा कौन कर सकता है?'

पावेल की बातें सुनकर रिबिन ने गंभीर होकर कहा—'मैं तुम्हारी बातें अच्छी तरह समझता हूँ। पर इन मामलों में तुम बहुत ही उदार हो। गुप्त आंदोलन में मानापमान का प्रश्न नहीं लाना चाहिए। पहले तो अधिकारीवर्ग अध्यापकों को न पकड़कर उनलोगों को पकड़ेंगे जिनके पास ये वर्जित-पुस्तकें मिलेंगी। दूसरे प्रायः जो और निर्दोष पुस्तकें अध्यापक लोग उनलोगों को पढ़ने के लिये देते हैं उनमें भी तो इन्हीं वर्जित-विषयों की चर्चा रहती है; सिर्फ भाषा का भेद है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है

कि अध्यापक लोग भी उन्हीं बातों का प्रचार करते हैं जिनका हम-लोग। केवल तरीका भिन्न है। वेलोग हाथ फिराकर नाक पकड़ना चाहते हैं और हमलोगों का हाथ सीधे नाक पर ही जाता है। इसके अलावे हमें उनसे सहानुभूति ही क्यों होगी ? पैदल चलने-वाले की घोड़सवार से कैसी मैत्री ! मैं कुलियों और मजदूरों के साथ इस तरह का व्यवहार भले ही न करूँ । पर येलोग—एक पादरी है और दूसरा जमींदार का लड़का है—किस उद्देश्य से जनसाधारण में जागृति फैला रहे हैं ? उनलोगों के उद्देश्य मेरी समझ में नहीं आते। हमलोग जो कुछ करते हैं वह तो स्पष्ट है पर उनके अध्यवसाय का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। हजारों वर्षों से वेलोग अधिकार-संपन्न रहते चले आए हैं। प्रत्येक युग में उनका यत्न गरीब मजदूरों का रक्त चूसना और हमें निबिड़ अंधकार में रखना ही रहा है। आज एकाएक उनलोगों के हृदय में यह असीम उदारता कहाँ से समा गई कि वेलोग हम मजदूरों को जगाने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह तो अनोखी बात मालूम होती है जैसे परियों का किस्सा हो और मैं उसमें फँसनेवाला नहीं हूँ। यही कारण है कि मुझे उनलोगों से जरा भी सहानुभूति नहीं है। अधिकारीवर्ग के इस नूतन प्रयास पर मुझे विस्मय है। (माँ से) ये सब बारीक बातें हैं !'

माँ ने पावेल के चेहरे पर दृष्टिपात किया। वह घोर चिंता में निमग्न था।

रिबिन की आँखें चमकने लगीं। अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते

हुए उसने पावेल की ओर देखा। उसकी आकृति में उत्तेजना थी। वह बोला—'मुझे बकवाद करने का समय नहीं है। जीवन की समस्या कठिन है। यह भीषण विषमता का युग है। प्रत्येक व्यक्ति के विचार और तरीके अलग-अलग हैं।'

माँ—मैं तो कुछ जमींदारों को जानती हूँ जो जनसाधारण के लिये हर तरह की यातनाएँ सहते हैं और आजीवन जेल में सड़ने के लिये तैयार रहते हैं।

रिबिन—उनकी प्रकृति और आचरण भिन्न है। गरीब अमीर होकर रईस बन जाता है और अमीर गरीब होकर कुली बन जाता है। गरीब होते ही उसके विचार पलट जाते हैं। उसका हृदय शुद्ध हो जाता है। (पावेल से) तुम्हें स्मरण होगा कि एक दिन तुमने मुझे समझाया था कि रहन-सहन के अनुसार ही मनुष्य के विचार भी होते हैं। यदि मजूर किसी बात का समर्थन करता है तो धनी इसका स्वभावतः विरोध करेगा और यदि मजदूर उसी बात का विरोध करेगा तो धनी उसका समर्थन करेगा। यह उसकी पशु-बुद्धि का फल है। इससे स्पष्ट है कि दोनों की प्रकृति में अंतर है। मजूर की प्रकृति मालिक (धनी) से भिन्न होगी। जिस दिन किसान को भरपेट अन्न मिल जाता है, धनी रात भर बेचैन रहता है। उससे मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि मजूर और किसानवर्ग में बुरे आदमी नहीं हैं। बुरे-भले कहाँ नहीं हैं ?

इतना कहते-कहते रिबिन अकड़कर खड़ा हो गया। उसका चेहरा गंभीर हो गया। उसकी दाढ़ी हिलने लगी मानों वह अपने

दाँतों को पीस रहा हो। उसने फिर कहना आरंभ किया—'पाँच वर्ष तक मैं कारखाने-कारखाने मारा-मारा फिरा और देहात की बातें भूल गया। मैं पुनः देहात गया, वहाँ की अवस्था देखी। मैंने उसी वक्त निश्चय किया कि मुझे इस तरह न रहना चाहिए। तुमने मेरा अभिप्राय समझा ? तुमलोग शहरों में रहते हो तुम भूख की वेदना को नहीं समझ सकते। उसका प्रकोप तुमलोगों के ऊपर नहीं है। देहातों में भूख मनुष्य के पीछे छाया की भाँति फिरती रहती है। अन्न की उन्हें झलक तक नहीं मिलती, मिलने की आशा भी नहीं रहती। भूख उनकी आत्मा का हनन कर डालती है। उनकी आकृति को विकृत कर देती है। उनका जीना जीना नहीं है बल्कि वे अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सड़ते और गलते हैं। इतना ही नहीं, उनकी इस दयनीय दशा को सरकार के कर्मचारी और भी भयानक बना देते हैं। गिद्ध की भाँति वे आँख गड़ाकर देखा करते हैं कि इन निरीह गरीबों के सामने रोटी का एक टुकड़ा भी न पड़ने पावे। यदि एक टुकड़ा उन्हें मिला भी तो वे झपटकर ले भागते हैं और अपनी चोंच से एक चोट भी उन गरीबों के मुँह पर मार देते हैं।'

इतना कहकर रिबिन टेबुल पर हाथ रखकर पावेल की ओर झुका और फिर बोला—'उनलोगों की वह दयनीय दशा देखकर मुझे गश आने लगा, मैं विकल हो गया। मैंने अपने को सम्हाला और अपने मन में कहा इस तरह अधीर होना ठीक नहीं। अब मैं यहीं रहूँगा। मैं तुमलोगों के लिये अन्न का संग्रह तो नहीं कर

सकता पर मैं तुम्हारे हृदयों को एक सूत्र में बाँध दूँगा। मेरा हृदय उन दीनजनों की आहों से और जालिमों के जुल्म से दहक रहा है। उनके ऊपर किए गए अत्याचार मेरे हृदय को आरी की तरह चीर रहे हैं।'

उसका चेहरा पसीने से तर हो गया। उसी दशा में वह पावेल के कंधे पर अपना हाथ रखकर बोला—'बस, मेरी सहायता करो। मुझे ऐसी किताबें दो जिनके पढ़ते ही लोगों के हृदयों में आग लग जाय। उनलोगों के दिमाग में खलबली मच जाय। उन लेखकों से देहातियों के लिये अलग पुस्तकें लिखाओ और उनमें उन देहातियों की दशा का ऐसा सच्चा और अनोखा चित्र खींच दो जिसे पढ़कर वेलोग अधीर हो उठें और मौत से लड़ने के लिये तैयार हो जायँ।'

इतना कहकर उसने अपना हाथ ऊपर उठाया और अपने प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए बोला—'मृत्यु ही मौत का मार्ग रोके! यानी ऐसी मौत हो कि लोगों में नये जीवन का संचार हो जाय। हजारों और लाखों की संख्या में लोग इसलिए मरें कि विश्व के प्राणियों में नये जीवन का संचार हो। मरना आसान है पर जिस मौत से जागृति हो उसी का महत्व है। बस, लोगों में क्रांति का बीज बो दो!

इतने में माँ चाय वगैरह लेकर आई। उसने रिबिन की ओर विस्मय के साथ देखा। उसके कठोर शब्दों की तीव्र ध्वनि से वह घबरा रही थी। रिबिन के शब्दों में उसके पति की प्रतिध्वनि थी।

वह भी इसी प्रकार खिसियाकर हाथ झटकारा करता था, वह भी क्रोध से अधीर हो उठता था। अंतर केवल इतना था कि वह मुँह से कुछ नहीं बोलता था। रिबिन बोलता भी था इसीसे भीषणता की मात्रा उसमें कुछ कम थी।

पावेल ने सिर हिलाते हुए कहा—'हमलोग भी इसकी आवश्यकता का अनुभव करते हैं। देहातों के लिये एक पत्र की नितांत आवश्यकता है। हमें मसाला दो हमलोग छापकर तुम्हारे पास भेजवा दिया करेंगे।'

माँ ने पावेल की ओर देखा, हँसकर अपना सिर हिला दिया और चादर ओढ़कर घर से बाहर हो गई।

रिबिन—हमलोग तुम्हें सब सामग्री देंगे। लेकिन इतनी सरल भाषा में लिखा जाय कि गँवार भी समझ ले।

इतना कहकर वह एकाएक पीछे हटा और सिर हिलाते हुए बोला—'यदि मैं यहूदी होता! यहूदियों का विश्वास सबसे दृढ़ होता है। इनलोगों की बातों से लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लेकिन ईसा के शिष्यों में यह गुण नहीं है। यहूदी-अवतारों को अपनी शक्ति में विश्वास और भरोसा था, गिरजों में नहीं। उनके देवता उन्हीं में निवास करते थे, गिरजों में नहीं; पर ईसा के शिष्यों के देवता गिरजों में निवास करते हैं, उन्होंने गिरजे बनवाए और उन्हीं के हाथ में अधिकार दे दिया। मनुष्य को अपने में विश्वास और भरोसा रखना चाहिए न कि कानून में। प्रत्येक मनुष्य की

आत्मा में ईश्वर का निवास है। मनुष्य न तो पुलिस-कप्तान ही है और न गुलाम ही। प्रत्येक मनुष्य अपना विधाता है।'

इतने में बाहर का दरवाजा खुला और किसी ने अंदर प्रवेश किया।

वह यफीम था। रिबिन ने दोनों का परिचय कराया और संकेत के साथ पावेल से बोला—'तुम मेरी बातों पर विचार करो। तुम्हें विचार करने के लिये पर्याप्त समय है।'

यफीम गठीला जवान था। उसके छोटे-छोटे केश विचित्र शोभा दे रहे थे। कनखियों से देखता हुआ वह पावेल की ओर बढ़ा और हाथ मिलाकर उसने कुशल-मंगल पूछा। आलमारी में सजी किताबों को देखकर पास गया और उन्हें गौर से देखने लगा।

रिबिन—(पावेल की ओर आँख का इशारा करते हुए) सीधे किताबों की ही ओर दौड़े।

यफीम—(पावेल से) आपने बहुत पुस्तकें संग्रह की हैं! पर मैं समझता हूँ कि इन्हें पढ़ने के लिये यहाँ पर्याप्त समय नहीं मिलता होगा। देहातों में लोगों के पास पर्याप्त समय है।

पावेल—पर पढ़ने की अभिलाषा कम!

यफीम ने अपनी ठुड्डी पर हाथ फेरते हुए कहा—'यह बात तो नहीं है। अब तो वह समय आ गया है कि यदि तुम अपनी दशा पर विचार नहीं करते तो तुम्हें चुपचाप मृत्यु की गोद में सो जाना चाहिए। पर लोग मरना नहीं चाहते, इससे दिमाग से

कुछ काम लेने लगे हैं ।—(एक पुस्तक देखकर) यह भू-गर्भ-विद्या है क्या ?

पावेल ने उसका मतलब समझा दिया ! यफीम किताब को उसी तरह आलमारी में रखकर बोला—'यह पुस्तक हमलोगों को नहीं चाहिए ।'

रिबिन ने लंबी साँस ली और बोला—'किसान को इस बात से कोई मतलब नहीं कि जमीन कहाँ से आई और कहाँ गई तथा इन भलेमानस कहलानेवाले धनिकों ने किस प्रकार जमीन इनसे छीन ली । इससे इन्हें कोई मतलब नहीं कि वह चलती है अथवा स्थिर है । चाहे उसे पृथ्वी पर रखिए अथवा आसमान में लटका दीजिए । उन्हें सिर्फ उदर-पोषण का साधन चाहिए ।'

यफीम ने दूसरी किताब उठाई और पढ़कर बोला—'दासता का इतिहास, यह पुस्तक तो हमलोगों से संबंध रखती है ।'

पावेल उसके हाथ में दूसरी पुस्तक रखते हुए बोला—'यह रूस के कृषक दासों का इतिहास है !'

यफीम ने पुस्तक हाथ में ली । उसके पन्ने इधर-उधर उलट-कर देखे और उसे लौटाते हुए बोला—'यह पुरानी है, सामयिक नहीं है ।'

पावेल ने पूछा—'तुम्हारे पास कुछ जमीन है ?'

यफीम—अवश्य है । हमलोग तीन भाई हैं । हमलोगों के पास करीब १२ बीघा जमीन है । पर सब रेती है । बरतन साफ करने के काम में आ सकती है । उपजाने के लिये तो एकदम बेकार

है। हमने उससे अपना पिंड छुड़ा लिया है। रखने से क्या फायदा था? एक दाना भी उसमें नहीं उपजता था और हमारा गला फँसा था। चार वर्षों से हम मजूरी का काम कर रहे हैं। मेरी इच्छा सेना में भर्ती होने की है। लेकिन रिबिन चाचा मना करते हैं। कहते हैं कि सैनिकों का प्रयोग जनसाधारण के ऊपर जुल्म करने के लिये किया जाता है। लेकिन मैं सेना में भर्ती होऊँगा। अनंत काल से सेना रहती चली आ रही है, पर अब उसके अंत करने का समय आ गया है! आपका क्या विचार है?

पावेल ने हँसकर कहा—'तुम्हारा कहना ठीक है पर यह कार्य अत्यंत कठिन है। सैनिकों के साथ बातचीत करने का और उन्हें समझाने का तरीका तुम्हें सीख लेना चाहिए।'

यफीम—हम जानते भी हैं और सीख भी लेंगे।

पावेल—अगर फौजी अफसरों को तुम पर किसी तरह का संदेह होगा तो तुम्हें गोली से उड़ा भी देंगे।

इतना कहकर पावेल यफीम की ओर गौर से देखने लगा।

यफीम ने धीरता के साथ कहा—'उनमें दया का लेश भी नहीं है।' इतना कहकर वह फिर किताबों के देखने में लग गया।

रिबिन—यफीम! चाय पी लो। हमलोगों को चलना भी है।

रिबिन के प्रश्न का उत्तर देते हुए उसने पावेल से पूछा—'क्या क्रांति उत्थान की जननी है?'

इसी समय नखोद्का ने कमरे में प्रवेश किया। उसका शरीर

पसीने से लथपथ था, चेहरा मुरझाया हुआ था। उसने यफीम से हाथ मिलाया और रिबिन के बगल में बैठ गया।

रिबिन—तबियत खराब है क्या? इतने पीले क्यों हो गए हो?

नखोदका—अच्छा तो हूँ।

यफीम ने नखोदका की ओर देखकर पूछा—'आप भी मजूर हैं?'

नखोदका—हाँ, यह प्रश्न आपने क्यों किया?

रिबिन—मजूरों से समागम का इन्हें पहला अवसर मिला है। इनका मत है कि जनसाधारण से वे भिन्न होते हैं।

पावेल—कैसे?

यफीम ने नखोदका की ओर गौर से देखा और बोला—'आप लोगों की हड्डियाँ चिपटी हैं। किसानों की हड्डियाँ गोल होती हैं।

रिबिन ने यफीम की बातों को पुष्ट करते हुए कहा—'इसके अलावा किसान अपनी जगह पर दृढ़ता से खड़ा रहता है। निरवलंब होने पर भी वह आशा नहीं छोड़ता। उसकी न होते हुए भी वह अंगुल-अंगुल जमीन को छाती से चिपकाए रहता है। लेकिन कारखाने का मजूर 'सफरी मैना' के समान है। उसका घर है न द्वार! आज यहाँ है तो कल वहाँ। उसकी गृहस्थी भी उसीके साथ चलती-फिरती रहती है। एक कारखाने से जरा भी तबियत उचटी कि वह बोरिया-बिस्तर बाँधकर वहाँ से चल देता है और दूसरा स्थान तलाशने लगता है। लेकिन किसान इस तरह हिलता डोलता नहीं। एक नियत स्थान पर रहकर अपनी दशा सुधारने का यत्न करता है।

इतने में माँ को आती देख रिबिन उठकर उसके पास चला गया।

यफीम ने पावेल से कहा—'आप मुझे एकाध पुस्तक देंगे ?' उसकी आवाज में घबराहट थी।

पावेल—अवश्य।

यफीम का चेहरा खिल उठा। जल्दी से बोला—'मैं उसे वापस कर दूँगा। हमारे गाँव के लोग अलकतरा खरीदने बहुधा आया करते हैं। उन्हीं के हाथ में भेज दूँगा। हमलोगों को किताबें उतनी ही आवश्यक हो गई हैं जितना रात में चिराग !

रिबिन ने वहीं किताबें कसकर कमर में बाँध लीं और यफीम के पास आकर बोला—'चलो चलें।'

यफीम—हमें पढ़ने के लिये कुछ मिल गया !

इतना कहकर उसने पुस्तक की ओर देखा और हँस दिया !

उनके चले जाने के बाद पावेल ने नखोदका से कहा—'तुमने इन्हें गौर से देखा !'

नखोदका—खूब गौर से। सूर्य के प्रकाश को अंतर्धान करने के लिये ये सब बादल के टुकड़े हैं जो आकाश में इधर-उधर फिरा करते हैं।

माँ—रिबिन तो मजूर की तरह मालूम ही नहीं होता। एकदम किसान बन गया ! पर कितना भयानक हो गया है !

पावेल—अफसोस है कि तुम थोड़ी देर पहले नहीं आए नहीं तो तुम्हें हृदय के उद्गार का बढ़िया नमूना मिल जाता। तुम

हमेशा हृदय की बातें किया करते हो। रिबिन ने उद्गारों की वर्षा कर दी, मुझे तो उसने एकदम दबा लिया। मैं तो उसकी बातों का उत्तर तक नहीं दे सका। वह किसी का विश्वास नहीं करता और मनुष्य-जीवन का कुछ भी मूल्य नहीं समझता। लेकिन उसमें भीषण शक्ति वर्तमान है।

नखोद्का—मैंने भी यह अनुभव किया है। उनलोगों ने जन-साधारण का दिमाग जहरीला बना दिया है। जिस समय किसान उठेंगे वे सब कुछ मटियामेट कर देंगे। उन्हें सिर्फ जमीन चाहिए और जमीन साफ करने के लिये वेलोग सब कुछ उखाड़कर फेंक देंगे।

वह धीरे-धीरे बोल रहा था उसकी आकृति से स्पष्ट था कि उसके मन में किसी दूसरी बात की चिंता है। माँ सावधानी से उसके कंधे पर थपकियाँ देकर कहने लगी—'नखोद्का धैर्य्य धारण करो।'

उसने नरमी से कहा—'ठहरो माँ! वह काम बड़ा बुरा हुआ मेरा इरादा उसे इतनी क्षति पहुँचाने का कभी नहीं था।'

इतना कहकर वह एकाएक अपनी जगह से उठा और टेबुल पर हाथ पटककर बोला—'पावेल, मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि जिस समय किसान उठेंगे जमीन को साफ करके ही चैन लेंगे; सब कुछ जलाकर भस्म कर देंगे और अत्याचारियों के नाम-निशान तक मिटा देंगे।

पावेल—तब वेलोग हमलोगों के मार्ग में बाधक होंगे?

नखोदका—हमलोगों को रक्षा का उपाय कर लेना चाहिए। हमलोगों पर उन्हें विश्वास है। यदि हमलोग चाहें तो वे हमलोगों के अनुयायी हो सकते हैं।

पावेल—रिबिन का प्रस्ताव है कि हमलोग किसानों के लिये एक पत्र निकालें!

नखोदका—जहाँ तक शीघ्र हो सके यह काम होना चाहिए।

पावेल—(हँसकर) मैं तो इतना खिन्न था कि मैंने उससे बातें करना ही उचित नहीं समझा।

नखोदका—उससे बातें करने का अवसर फिर मिलेगा। तुम अपना काम करते रहो जिन्हें इससे प्रेम होगा अवश्य आकर मिल जायँगे। रिबिन ने अवश्य कहा होगा कि हमलोग निराश्रय हैं और यह ठीक भी है। इसलिए हमें सबके आश्रय को हिला देना चाहिए हमलोगों के दो-चार ही सफल झकझोर में वेलोग सजग होकर उठ खड़े होंगे।

माँ ने हँस दिया! बोली—'तुम्हें सब बातें आसान मालूम होती हैं।'

नखोदका—जिस तरह जीवन का कोई मूल्य नहीं है उसी तरह ये बातें भी सहज हैं। मैं जरा टहलने जाता हूँ।

माँ—अभी तुमने स्नान किया है। सर्दी लग जायगी।

पावेल—माँ का कहना ठीक है। अच्छा हो कि तुम सो रहो।

नखोदका—नहीं, मैं जाऊँगा ही।

इतना कहकर उसने अपना शरीर कपड़े से ढक लिया और बाहर चला गया।

माँ ने लंबी साँस ली और बोली—'बड़ी मुसीबत है!

इतना कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू आ गए लेकिन पावेल से छिपाने के लिये वह रसोई-घर में चली गई।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

इस घटना के कई दिन बाद निकोले आया। आज भी उसकी वही बेढंगी हालत थी। उसने पावेल से पूछा—'क्या तुम-लोगों ने नहीं सुना कि 'इसे' की किसने हत्या की?'

पावेल—नहीं।

निकोले—ऐसा कौन आदमी निकला जो अनायास ऐसा काम कर गया और मैं अपनी तैयारी में ही रह गया।

पावेल ने स्नेह के साथ कहा—'निकोले! क्यों बेमतलब बक-बक लगाए हो।

माँ—तुम्हें क्या हो गया है निकोले! तुम्हारा हृदय तो बड़ा ही मुलायम है। फिर तुम क्यों पागल कुत्ते की तरह भूँकते रहते हो। तुम उस रास्ते पर क्यों जाओगे?

इस समय माँ भी निकोले से खुश थी। उसके हृदय में उसके प्रति दया थी।

निकोले—सिवा इसके मैं कर ही क्या सकता हूँ ? मैं सदा यही सोचा करता हूँ कि संसार में मेरा भी कुछ प्रयोजन है पर मुझे कुछ नहीं सूझता। लोगों को समझाने की आवश्यकता है और मुझमें शक्ति नहीं है। मैं सब कुछ समझता हूँ। लोगों के कष्टों को देखता हूँ पर मैं कुछ कर नहीं सकता। मैं उसे व्यक्त नहीं कर सकता मानों मेरी आत्मा गूँगी है।

इतना कहकर वह पावेल के पास चला गया और टेबुल पर हाथ रखकर उसने दीनता के साथ कहा—'भाई, मुझे कोई कठिन काम दो। मेरे लिए यह जीवन असह्य हो रहा है। यह बेकार और निरर्थक है। आपलोग उद्देश्य की सिद्धि में लगे हैं। आंदोलन भी आगे बढ़ता जा रहा है लेकिन मैं उससे एकदम अलग हो रहा हूँ और लकड़ी ढोने का काम कर रहा हूँ। क्या मेरा जीवन केवल इसीलिए है ?

पावेल ने उसे अपने नजदीक खींच लिया और ढाढ़स देते हुए बोला—'अधीर मत हो। मैं तुम्हारा उचित प्रबंध कर दूँगा।'

इसी समय कमरे के भीतर से नखोदका ने पुकारकर कहा—'भाई निकोले ! मैं तुम्हें हरफ बैठाना सिखा दूँगा और तुम हमलोगों के समाचार-पत्र में हरफ बैठाने का काम करना !'

निकोले उसके पास चला गया और बोला—'अगर तुम मुझे वह काम सिखा दो तो मैं अपना छुरा तुम्हें उपहार में दे दूगा।'

नखोदका—जहन्नुम में जाय तुम्हारा छुरा।

निकोले—बड़ा तेज है !

चाकूवाली बात पर पावेल और नखोदका दोनों हँस पड़े।

निकोले—मुझपर क्यों हँस रहे हो ?

नखोदका—(बिस्तरे से कूदकर) अवश्य ! इस हँसी का कारण मैं अभी बता दूँगा। चलो मैदान में चलें। सुंदर चाँदनी छिटक रही है। घूमने में आनंद आवेगा।

पावेल—यह ठीक है।

निकोले—मैं भी तुमलोगों के साथ चलूँगा। तुमलोगों का हँसना मुझे बहुत पसंद है।

नखोदका—और मुझे तुम्हारा उपहार पसंद है।

इतना कहकर नखोदका बैठक में चला गया और कपड़े पहनने लगा। माँ ने कहा—'जरा गर्म कपड़े पहन लो नहीं तो सर्दी लग जायगी।' उनलोगों के चले जाने के बाद उसने आपही आप कहा—'भगवान ! सबों की रक्षा करें।'

इतना कहकर उसने रोशनी बुझा दी और चाँदनी रात में बैठकर एकांत उपासना में लीन हो गई।

× × × ×

समय इतनी तेजी से बीतने लगा कि माँ को पहली मई का कुछ भी ध्यान नहीं रहा। दिन भर के झंझट और परिश्रम के बाद जब वह रात को सोने जाती तो उसकी स्मृति एकाएक जागृत हो उठती और वह इतना ही कहकर सो रहती—'यह भी किसी तरह जल्दी समाप्त हो।'

सबेरे कारखाने के घंटे की आवाज पर जिस समय पावेल

और नखोदका काम पर जाने लगते माँ के जिम्मे अनेक काम लगा जाते और वह बिचारी दिन भर उन्हीं के पीछे दौड़ती रहती। खाना बनाती, लेई पकाती, सूचनाओं को ठीक करके रखती, जो लोग आते उन्हें संवाद देती और उनकी बातें सुनती तथा चिट्ठी-पत्री इकट्ठा करके रखती।

पहली मई का दिन ज्यों-ज्यों करीब आने लगा परचे पर परचे निकलने लगे। सभी में पहली मई का उत्सव मनाने के लिये उत्तेजना थी। ये परचे रातो-रात तमाम शहर में कारखाने की दीवालों पर, यहाँ तक कि पुलिस-स्टेशनों पर चिपका दिए जाते थे और सवेरे कारखानों में फेंके पाए जाते थे। सबेरे पुलिस घूम-घूमकर परचों को नोचती फिरती थी। दोपहर को ये ही परचे सड़कों पर उड़ते नजर आते थे। हर चौराहों और मोड़ों पर गुप्तचर तैनात किए गए कि इन परचों के बाँटनेवालों और आते-जाते मजूरों पर कड़ी दृष्टि रखें। पर कुछ लाभ नहीं था। पुलिस की अकर्मण्यता और असफलता से सब खुश थे। बुड्ढे मजूर भी इस घटना पर मुस्कुरा देते थे।

स्थान-स्थान पर लोग खड़े होकर बहस करते। लोगों में एक प्रकार की उत्तेजना आ गई थी। यह वसंत कुछ-न-कुछ नया बहार अवश्य दिखलावेगा। कुछ लोग तो इसलिए प्रसन्न थे कि आंदोलकों की बुराई करने का उन्हें अच्छा अवसर मिल रहा था। कुछ लोगों के हृदयों में चिंता के साथ-साथ एक विचित्र आशा का उदय हो रहा था और कुछ लोगों को इस बात की

प्रसन्नता थी कि उनके प्रयास से देहातों में उत्तेजना, जोश और जीवन फैल रहा था।

पावेल और नखोद्का को तो सोने तक का समय नहीं मिलता था। दोनों रातभर घूम-घूमकर काम करते और भोर होते-होते घर वापस आते। माँ जानती थी कि ये लोग जंगलों में सभा करते फिरते हैं क्योंकि गाँव में और उसके इर्द-गिर्द घोड़-सवार पुलिस रात भर गश्त लगाती रहती है। कहीं भी चार आदमी को इकट्ठा खड़ा तक नहीं होने देती, खाना-तलाशियाँ लेती है और गिरफ्तारियाँ भी करती रहती है। उसे सदा आशंका रहती कि किसी दिन ये लोग भी गिरफ्तार हो जायँगे। पर ख्याल आते ही अपने मन में कहती—'इससे तो यही अच्छा है। इस परेशानी और रातभर के जागरण से तो मुक्त हो जायँगे।'

'इसे' की हत्या के बाद दो दिन तक तो तलाशियों की धूम रही पर तीसरे ही दिन से पुलिस इस प्रकार उदासीन हो गई मानों कुछ हुआ ही नहीं है।

करसनोवा का पुलिस से मेल-जोल था। एक दिन उसने माँ से कहा कि पुलिस की राय में हत्यारे का पता लगना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है। सवेरे से लेकर उस समय तक सैकड़ों आदमियों से उसकी भेंट हुई होगी। न जाने किसने उसे घूँसा मारा क्योंकि विगत आठ वर्षों में उसने प्रायः सबकी कुछ-न-कुछ बुराई की है।

नखोद्का का चेहरा एकदम बदल गया। उसके गाल पचक

गए, उसकी आँखें धँस गईं। सहज मुस्कुराहट का स्थान हँसी ने ग्रहण किया। साधारण विषयों की उसने चर्चा ही छोड़ दी। उसका हृदय सदा उमंग से भरा रहता और वह बड़े जोश के साथ लोगों से कहता कि वह दिन बहुत दूर नहीं है जब हम-लोग आनंद के साथ विघ्न और बाधारहित होकर स्वतंत्रता के उत्सव मनावेंगे। उसकी बातों में विचित्र जादू भरी थी। उसकी बातों से मस्त होकर उस उज्वल भविष्य की सुखद आशा में लोग मस्त होकर झूमने लगते। उसकी बातें सुनकर माँ को प्रतीत होने लगा कि औरों की अपेक्षा वह उस मार्ग पर कहीं आगे बढ़ गया है और उसकी अनुभूति भी औरों की अपेक्षा कहीं अधिक है। 'इसे'की हत्या के कारण पुलिस में जो हलचल मची थी उसका अंत देखकर उसने वेदना से कहा—'अधिकारीवर्ग केवल जन-समाज को ही तिनके के बराबर नहीं समझते बल्कि उनके साधक यंत्र भी उनकी दृष्टि में तिनके से अधिक मूल्यवान नहीं हैं। वे उसकी लेशमात्र भी परवाह नहीं करते, उन्हें तो केवल शिकार की चिंता रहती है।' इतना कहकर वह क्षण भर चुप रहा। फिर बोला—'मैं इस विषय पर जितना विचार करता हूँ उतना ही मुझे उस व्यक्ति पर दया आती है क्योंकि मैं उसकी हत्या नहीं करना चाहता था।'

पावेल ने डाँटकर कहा—'क्या व्यथ बकवाद करते हो ?'

माँ ने धीरे से कहा—'उकठा पेड़ सामने खड़ा था। तुम्हारे धक्के से यदि वह गिर पड़ा तो इसमें तुम्हारा क्या दोष ?'

नखोदका—तुम्हारा कहना सच है पर इससे मुझे शांति नहीं मिलती।

आखिर पहली मई आ ही पहुँची। प्रतिदिन की भाँति कारखाने का घंटा उसी कर्कश-ध्वनि से गूँज उठा। घंटे के शब्द के साथ ही माँ ने—जिसे रात भर सोना नसीब नहीं हुआ था—अपनी जगह से उठकर चूल्हे में आग जलाई और सदा की भाँति पावेल और नखोदका को जगाने के लिये जाने ही वाली थी कि उसे पहली मई का स्मरण हो आया और वह खिड़की के पास जाकर चुपचाप खड़ी हो गई।

नीले आकाश में सफेद और हलके गुलाबी रंग के बादल के छोटे-छोटे टुकड़े इधर-उधर दौड़ रहे थे। माँ अपने ध्यान में मग्न बादलों की इस नर्तन-क्रीड़ा को देख रही थी। रात के जागरण से उसका सिर भारी था, आँखें नीरस थीं और जल रही थीं। पर उसका हृदय धीर और शांत था। उसने अपने मन में कहा—'रात-दिन काम करते-करते दोनों जर्जर हो गए हैं। जरा और सो लेने दूँ। क्यों जगाऊँ ?

धीरे-धीरे सूर्य का निर्मल प्रकाश कमरे में फैलने लगा। माँ का हृदय भी प्रफुल्लित हो उठा। वह अपने स्थान से उठी। हाथ मुँह धोया और प्रार्थना करने बैठ गई। उसका चेहरा दीप्यमान था और उसकी दाहिनी पलक रह-रहकर फड़क उठती थी।

इतने में कारखाने का दूसरा घंटा बजा। इसकी ध्वनि पहले की अपेक्षा कम कर्कश थी पर माँ को ऐसा प्रतीत हुआ मानों

यह दूसरा घंटा आज अधिक देर तक बजा। ठीक इसी वक्त नखोदका की मधुर आवाज सुनाई दी—'पावेल, सुनते हो! वे लोग पुकार रहे हैं।'

माँ ने कहा—'चाय भी तैयार है।'

पावेल ने हँसी में कहा—'हमलोग भी उठ रहे हैं।'

नखोदका—सूर्य उदय हो चुका है। बादल इधर-उधर दौड़ रहे हैं। आज उन्होंने अपना स्थान छोड़ दिया है।

इतना कहकर रसोई-घर में जाकर उसने माँ को प्रणाम किया। माँ ने उसके कान में कहा—'तुम पावेल के पास ही रहना।'

नखोदका—तुम निश्चिंत रहो। इस जीवन में यथासाध्य हमलोग एक दूसरे के निकट ही रहेंगे।

पावेल—क्या कानाफूसी हो रही है?

नखोदका—माँ कह रही हैं कि आज जरा बन-ठनकर निकलना क्योंकि अनेक युवतियों की निगाहें पड़ेंगी।

पावेल ने बिस्तरे पर बैठे-बैठे ही मधुर सुर में गाया—

परम पूज्य है सबसे प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।
इसके संमुख शत्रु नमित है, इसका तेज-प्रताप अमित है।
दीनजनों का एक सहारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।

ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता गया आकाश बादलों से साफ होता गया। माँ ने चाय तैयार करके दोनों को बुलाया। समय काटने के लिये आज उनलोगों ने चाय पीने में आवश्यकता से अधिक समय लगाया। माँ को उनकी हालत देखकर विस्मय हो रहा

था। दो घंटे के बाद ही उन्हें घोर संकट का सामना करना पड़ेगा पर इस वक्त तक वेलोग हँसी-मजाक कर रहे थे।

चाय में चीनी मिलाते हुए नखोदका ने कहा—'मेरे लड़कपन की बात है। उस समय मैं करीब दस वर्ष का बच्चा था। मैंने शीशे के ग्लास में सूर्य को कैद करना चाहा। मैंने ग्लास उठाया और दीवाल के पास ले जाकर छिपा दिया। ग्लास टकराकर टूट गया। मेरा हाथ भी कट गया और जब मैं बाहर आया तो देखा कि सूर्य कीचड़ में चमक रहा है। मैं कीचड़ को रौंदने लगा। मैं कीचड़ से लथपथ हो गया पर सूर्य उसी तरह चमक रहा था। लाचार होकर मैं सूर्य को गालियाँ देने लगा। गुस्से के मारे वह लाल हो गया पर मेरा कुछ बिगाड़ न सका। इस तरह उसे गालियाँ देकर मैं शांत हुआ।

पावेल—सूर्य तुम्हें लाल क्योंकर दिखलाई दिया ?

नखोदका—मेरे पड़ोस में एक लोहार रहता था। उसके गाल और बाल बड़े ही लाल थे। मुझे सूर्य भी उसी से मिलता-जुलता प्रतीत हुआ।

इनलोगों की बातें सुनते-सुनते माँ अधीर हो गई। बोली—'आज की तैयारी की बातें क्यों नहीं करते ?'

पावेल—सब दुरुस्त है !

नखोदका—उसी विषय की बार बार चर्चा करना ठीक नहीं। इससे गड़बड़ी पैदा हो जाती है। यदि हमलोग गिरफ्तार हो गए तो निकोले और इवानोविच यहाँ आकर तुम्हें सब बातें

समझा जायँगे कि तुम्हें क्या करना चाहिए। वे तुम्हारी हर तरह से मदद करेंगे।

माँ ने ठंढी साँस लेकर कहा—'बहुत अच्छा।'

पावेल—अब चलना भी चाहिए।

नखोद्का—मेरी राय में अभी घर में ही बैठे रहना अच्छा है। पुलिस की आँखों में गड़ना ठीक नहीं। वे तुम्हें अच्छी तरह पहचानते हैं।

इसी समय फीडिया मेजिन दौड़ता हुआ आया। वह उल्लास से भरा था और मारे खुशी के उसका चेहरा लाल हो रहा था। उसने पहुँचते ही कहा—'सब कुछ ठीक है! सब लोग सड़क पर जमा हैं। सबके चेहरे से जोश टपकता है। निकोले, गुसेव और समोलो कारखाने के फाटक पर खड़े होकर लगातार मजूरों को समझाते रहे। प्रायः सभी मजूर घर लौट गए। दस बज रहा है। अब तुमलोगों को भी चलना चाहिए।

पावेल—(दृढ़ता से) हम चल ही रहे हैं।

फीडिया ने जोर देकर कहा—'तुम देखोगे कि दोपहर के बाद कारखाने के सभी मजूर शामिल हो जायँगे।'

इतना कहकर वह तेजी से भाग गया।

माँ कपड़ा बदलने के लिये दूसरे कमरे में चली गई।

पावेल—आप कहाँ की तैयारी कर रही हैं माँ!

माँ—तुम्हारे साथ चलने की।

नखोद्का पावेल की ओर देखकर मोंछ ऐंठने लगा। पावेल

अपनी जगह से उठा, उसने अपने बालों को सम्हाला और माँ के पास जाकर बोला—'माँ, एक प्रार्थना है। इस विषय में न तो मैं किसी तरह की बाधा उपस्थित करूँगा और न तुम किसी तरह की बाधा उपस्थित करना !'

माँ—मैं यही करूँगी ! भगवान तुम्हारी रक्षा करें।

घर से बाहर निकलकर माँ ने देखा कि जगह-जगह पर लोग की भीड़ जमा है, शोर-गुल मच रहा है और लोग पावेल तथा नखोद्का की ओर उत्सुकता से देख रहे हैं। जिधर से वे जाते लोग अभिवादन करते और आपस-में कह उठते—

एक—यही नेता हैं।

दूसरा—हमलोग जानते ही नहीं कि कौन नेता हैं !

पहला—क्यों ? हमने गलत नहीं कहा है।

आगे जाने पर किसी ने चिल्लाकर कहा—'पुलिस इन दोनों को गिरफ्तार कर लेगी और सब समाप्त हो जायगा।'

उसको धिक्कारते हुए दूसरे ने कहा—'उससे होगा ही क्या ?'

और आगे बढ़ने पर फिर एक खिड़की से किसी औरत के चिल्लाने के शब्द सुनाई दिए। वह चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी—'ये दोनों अविवाहित हैं। इन्हें किसी की चिंता नहीं है। क्या तुम सब लोग अविवाहित और निश्चिंत हो !'

इतने में ये लोग जसिमोव के मकान के सामने पहुँच गए। उसका पैर कारखाने में कट गया था इससे वह लँगड़ा हो गया था और पेंशन पाता था। उसने खिड़की से सिर निकालकर

चिल्लाकर कहा—'पाजी पावेल ! शीघ्र ही तुम्हारा सिर उतार लिया जायगा।'

माँ भय से काँप उठी, उसके पैर रुक गए, क्रोध से उसका चेहरा तमतमा उठा, उसने आवेश में उस अपाहिज की ओर देखा। वह गालियाँ देकर हट चुका था। माँ तेजी के साथ आगे बढ़ी। वह सदा पावेल के पास रहना चाहती थी। पावेल और नखोदका इस तरह चले जा रहे थे मानों आसपास की घटना का उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है। वे निश्चिंतता के साथ बातें करते जा रहे थे। रास्ते में मिरोनोव से भेंट हुई। मिरोनोव बुड्ढा आदमी था। सबलोग उसका आदर करते थे।

पावेल ने पूछा—'आप भी आज काम पर नहीं गए ?'

मिरोनोव—घर में बच्चा होनेवाला है और आज ऐसे जोश-खरोश के दिन कौन काम पर जाय। पर हमने सुना है कि तुम-लोग सुपरिंटेंडेंट पर हमला करनेवाले हो ?

पावेल—क्या हमलोग नशे में हैं ?

नखोदका—हमलोग सड़कों पर झंडे का जलूस निकालेंगे और गीत गावेंगे। आप हमलोगों का गीत सुन ही लेंगे। राष्ट्रीय गीत है।

मिरोनोव—मैं सदा तुमलोगों के परचे पढ़ा करता हूँ और तुमलोगों के आंदोलन से भलीभाँति परिचित हूँ। (माँ को देखकर) निलोना ! तुम भी बगावत करने चली।

माँ—यदि मृत्यु के पथ पर भी जाना पड़े तो सत्य के नाम पर मैं पीछे कदम नहीं रखूँगी !

मिरोनोव—आज मुझे निश्चय हो गया कि उनलोगों का अनुमान सच था कि वर्जित-पुस्तक और परचे तुम्हीं कारखाने में पहुँचाया करती थी।

पावेल—कौन कहता था ?

मिरोनोव—लोग। अच्छा, अब मैं जाता हूँ। तुमलोग अपना काम करो।

माँ ने धीरे से हँस दिया। उसे प्रसन्नता थी कि उसके संबंध में लोगों की ऐसी धारणा थी।

पावेल ने मुस्कुराकर कहा—'माँ, वेलोग तुम्हें भी जेल में ठूँस देंगे।'

माँ—कोई परवाह नहीं।

दिन अधिक चढ़ आया। सूर्य की किरणें और तेजी के साथ चमकने लगीं। बादलों की गति मंद पड़ गई। उनकी छाया धुँधली और क्षीण होती गई। सूर्य के प्रकाश में सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगा। सभी कुछ सुंदर प्रतीत होता था। लोगों की आवाज और भी अधिक स्पष्ट सुनाई देती थी।

ज्यों-ज्यों वे दोनों आगे बढ़ते गए माँ के कानों में लोगों के मतमतांतर के शब्द अधिकाधिक पड़ने लगे। उसकी इच्छा हुई कि वह भी उन्हीं शब्दों में लोगों को जवाब देती चले।

सड़क के एक कोने में प्रायः एक सौ आदमियों की भीड़

इकट्ठी थी। निकोले उन्हें समझा रहा था—'हमलोगों का रक्त इस तरह चूसा जाता है मानों हमलोग ईख के पौधे हैं।'

उसके शब्दों का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। बहुत से लोग एक साथ ही चिल्ला उठे—'आपका कहना एकदम सच है।'

नखोदका ने कहा—'निकोले पूरा परिश्रम कर रहा है। मैं उसकी मदद करूँगा।'

इतना कहकर वह भीड़ की ओर बढ़ा। पावेल उसे रोकना ही चाहता था कि वह तीर की तरह भीड़ में धँस गया और आगे सिर निकालकर बोला—'भाइयो, इतिहास के पंडित कहते हैं कि संसार में अनेक जातियाँ हैं, जैसे अँग्रेज, फ्रेंच, जर्मन, यहूदी वगैरह, पर मैं इसे नहीं मानता। मेरा विश्वास है कि संसार में सिर्फ दो ही जातियाँ हैं; अमीर और गरीब। उनके वेष-भूषा, खान-पान तथा रहन-सहन में भले ही अंतर हो पर गरीबों की ओर सभी अमीरों का एक-सा बर्ताव रहता है।'

भीड़ में किसी ने हँस दिया।

नखोदका कहता गया—'दूसरी ओर गरीबों की दशा निहारो। चाहे वे किसी भी देश के निवासी हों सबकी हालत एक-सी है। सबको अधम और निकृष्ट जीवन व्यतीत करना पड़ता है।'

धीरे-धीरे लोगों की भीड़ बढ़ती गई। लोग एक-एक करके आते और चुपचाप खड़े होकर नखोदका की बातें सुनने और सहानुभूति से गर्दन हिलाने लगे।

नखोदका और जोर से बोलने लगा—'अन्य देशों के मजूरों

ने इस साधारण तथ्य को भली-भाँति समझ लिया है। आज पहली मई के दिन सभी मजूर अपने घरों से बाहर निकलकर मैदान में इकट्ठे होते हैं और अपनी संख्या तथा बल का अनुमान करते हैं। आज उनके प्रेम-मिलन का दिन है। आज सभी मजरों के हृदयों में भ्रातृभाव और एकता का निर्मल स्रोत बहता है। आज उन्हें अपनी शक्ति का अंदाजा मिलता है। एकता और भ्रातृ-भाव के दृढ़ बंधन में आज सभी लोग बँध जाते हैं और एक दूसरे के उद्धार के लिये, सबकी स्वतंत्रता के लिये, सत्य की निष्ठा के लिये वेलोग अपना जीवन उत्सर्ग करने का प्रण करते हैं।'

इतने में किसी ने चिल्लाकर कहा—'पुलिस !'

बीसवाँ परिच्छेद

चार घोड़सवार पुलिस घोड़ा दौड़ाते हुए भीड़ के पास पहुँच गए और बोले—'कैसी भीड़ इकट्ठी है ? कौन व्याख्यान दे रहा है ! हटो, भागो।'

लोग दबक गए। कुछ दीवालों पर चढ़ गए। चारों ओर से आवाजें आने लगीं—'ये सब घोड़ों पर सुअर के बच्चे रखकर चलते हैं जिससे चिल्लाने में आसानी हो। हमलोग सबके सब प्रधान हैं; सभी नेता हैं।'

नखोदका अकेला पड़ गया। दो घोड़सवारों ने दो ओर से उसे घेर लिया। वह बगल में जा खड़ा हुआ। इसी समय माँ

ने उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा—'तुमने कहा था कि मैं सदा पावेल के साथ रहूँगा पर यहाँ तुम अकेले सूली पर चढ़ने की तैयारी कर रहे हो !'

नखोदका—मुझसे अपराध हुआ। पता नहीं संसार में कितने पुलिस हैं !

माँ—फिर ऐसा न करना।

इस समय माँ के हृदय में भय और निराशा का एक विचित्र भाव उठा। वह उदास हो गई। यह उच्छ्वास और शिथिलता का विचित्र संगम था। उसने अपने मन में कहा—'तीसरे पहर का घंटा किसी तरह शीघ्र बजे।'

इतने में वेलोग गिरजा के पास पहुँचे। गिरजे के चारों ओर भारी भीड़ इकट्ठी थी। प्रायः ५००, ७०० युवक, स्त्रियाँ और बच्चे वहाँ जमा थे। भीड़ इधर से उधर घूमती फिरती थी। लोग अधीर हो रहे थे और रह-रहकर सिर उठाते और भिन्न-भिन्न दिशाओं की ओर देखते थे।

एक रमणी ने धीरे से कहा—'मिटेंका, अपनी दशा पर एक बार विचार करो।'

मिटेंका—यह विचार करने का समय नहीं है। लोग जो कर रहे हैं उसमें चुपचाप योग देना चाहिए।

सिजोव ने बढ़ावा देते हुए धीरता के साथ कहा—'हमें इन लोगों का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए। इन लोगों की समझ हमलोगों से कहीं अधिक परिष्कृत है। इन लोगों में साहस और

हिम्मत है। इन्हीं लोगों की बदौलत हमलोगों के पैसे दलदल साफ करने के लिये नहीं लिए गए। हमें वह घटना भूल नहीं जानी चाहिए। उसके लिये वे सब जेल गए पर फायदा हमलोगों ने ही उठाया। वे सब इतनी यातनाएँ हम सबके लिये ही सहते हैं।

इतने में घंटा बजा। लोग सजग हो गए। जो लोग बैठे थे वे खड़े हो गए। क्षणभर के लिये अटल शांति छा गई। सभी लोग सतर्क हो गए। कितनों के चेहरे पीले पड़ गए।

सभी पावेल को घेरकर खड़े हो गए मानों चुंबक के आकर्षण से सभी वहीं आकर्षित हो गए हों। पावेल ने दृढ़ता के साथ कहा—'भाइयो, वह समय आ गया है जब हमें यह मोह, मत्सर और घृणा का जीवन-त्याग देना होगा। इस जीवन में मिथ्या और प्रवंचना के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसमें हमलोग पशुओं से भी बुरी हालत में हैं।

लोग शांत और निश्चल थे। माँ एकटक अपने प्रिय पुत्र का दीप्यमान चेहरा देख रही थी। पावेल की आँखों में तेज था, ज्योति थी और उत्साह था! उसने कहा—'भाइयो, आज हमलोग अपनी वास्तविक स्थिति का परिचय करा देना चाहते हैं। लोगों को बतला देना चाहते हैं कि हमलोग क्या हैं। आज हमलोग विवेक, सत्य और स्वतंत्रता का झंडा फहराते हैं।

इतना कहकर उसने झंडा खड़ा कर दिया। भीड़ के ऊपर आकाश में लाल झंडा फहराने लगा। मानों कोई लाल चिड़िया पंख फैलाकर उड़ रही हो।

सैकड़ों आदमियों ने झंडे का डंडा पकड़ लिया। माँ ने भी योग दिया।

पावेल ने चिल्लाकर कहा—'मजूरों की जय !'

हजारों मुँह से वही जय-घोष निकलकर आकाश में गूँजने लगा।

पावेल ने फिर चिल्लाकर कहा—'स्वतंत्र साम्यवादी मजूर-दल की जय हो। हमारे दल की जय हो! हमारी नैतिक जननी की जय हो।

लोग जय-घोष पर जय-घोष कर रहे थे। जिन्होंने झंडे का महत्व समझा उसके पास तक गए। मेजिन, समोलो और गुसेव आदि पावेल के पास ही खड़े थे। निकोले भी भीड़ को चीरता पावेल के पास जा पहुँचा। उसके पीछे अन्य अनेक नवयुवक भी भीड़ को चीरते, माँ को धक्का देते झंडे के पास पहुँचे।

पावेल ने चिल्लाकर कहा—'सभी देश के मजूरों की जय !'

भीड़ ने भी एक स्वर से जय-घोष किया और आसमान तथा धरती को कँपा दिया।

माँ ने जोर से पावेल का हाथ पकड़ा। उसकी आँखों में आनंद के आँसू उमड़ रहे थे पर वह उन्हें प्रगट नहीं होने देना चाहती थी। उसका पैर काँप रहा था। काँपते हुए स्वर में उसने कहा—'आज मैंने तुमलोगों का असली रूप पहचाना! मैं कैसी भाग्यवती हूँ।'

झंडे को फहराता देखकर निकोले का चेहरा खिल उठा।

उसने झंडे की ओर इशारा करके कुछ कहा और दूसरे ही क्षण माँ के पैरों पर गिर पड़ा।

नखोदका ने अपने सहज मधुर स्वर में कहा—'भाइयो, आज हमलोगों ने विवेक, सत्य-निष्ठा और स्वतंत्रता के नाम पर इस झंडे का जुलूस निकाला है। इस झंडे के साथ हमलोगों को ही विकट मार्ग से जाना होगा। हमलोगों का ध्येय बहुत दूर है और मार्ग आदि से अंत तक कंटकाकीर्ण है। जिन लोगों को इस ध्येय में विश्वास नहीं है, जिनके हृदय में सत्य की निष्ठा नहीं है, जो लोग मृत्यु तक इसके साथ खड़े होने के लिये तैयार नहीं हैं, जो यातनाओं और उत्पीड़नों से डरते और घबराते हैं जिन्हें आत्मबल का भरोसा नहीं है वेलोग कृपाकर अलग हो जायँ। हमलोगों के साथ वही लोग चलें जिन्हें हमलोगों की विजय पर विश्वास है। जिन्हें हमलोगों के उद्देश्य में विश्वास नहीं है वे साथ न दें। क्योंकि इस तरह वे अपने को भारी मुसीबत में डालते हैं। भाइयो, एक कतार में खड़े हो जाओ। पहली मई की जय हो! स्वतंत्रता के इस अमर दिन की जय हो!'

भीड़ और भी डटकर खड़ी हो गई। पावेल ने झंडा हिलाया, वह हवा में फहराने लगा, पावेल आगे बढ़ा। सूर्य के प्रकाश में वह अपूर्व तेजवान प्रतीत होता था।

फीडिया मेजिन ने कहा—'आओ! पुरानी बातों को यहीं छोड़ दें।'

हजारों मुँह से यही शब्द निकले!

माँ फीडिया मेजिन के पीछे थी। उसकी सूखी ओठों पर मुस्कुराहट की रेखा दौड़ रही थी और वह रह-रहकर झंडे तथा पावेल की ओर देखती जाती थी। उसके चारों ओर नवयुवकों का उत्साह-भरा उल्लासित चेहरा था। पावेल और नखोदका सबके आगे थे। दोनों सुर में सुर मिलाकर गाते थे—

उठो! उठो! हे दीन दुखितजन, गहो अस्त्र, छेड़ो संग्राम!

चारों ओर से लोगों की भीड़ आ-आकर झंडे के पास जमा होने लगी और जय-घोष करते हुए लोग आगे बढ़ने लगे। पूर्ण उत्साह के साथ लोग क्रांति के गीत गाते हुए जा रहे थे।

माँ ने इस गीत को अनेक बार सुना था। पर आज उसमें एक विचित्र नवीनता और ध्वनि प्रतीत होती थी। मजूरों को इस संग्राम में निमंत्रित करने की उसमें विचित्र शक्ति दिखाई दी। भीड़ ने फिर गाया—

जीवन की इन विषम यातनाओं का मिट जावे अब नाम॥

लोग गीत में मस्त थे। यदि किसी के चेहरे पर भय का चिह्न था तो उसका हृदय आह्लाद और उत्साह से भरा था। किसी रमणी ने कंपित-स्वर में पूछा—'मीटिया तुम कहाँ जा रही हो?

माँ ने उसका मुँह बंद कर दिया। बोली किसी से कुछ मत पूछो। भय को दूर करो। उसे जाने दो। आरंभ में मैं भी इसी तरह डरती थी। पर आज देखो मेरा एकलौता बेटा हाथ में झंडा लिए सबसे आगे चल रहा है।

वह रमणी—हत्यारे ! आखिर तुमलोग जा कहाँ रहे हो, आगे सैनिकों की टोली खड़ी है ।

इतना कहते-कहते वह माँ से चिल्लाकर बोली—'ओह ! किस जोश के साथ वे सब गा रहे हैं। मीटिया भी गा रही है ।'

माँ—परेशान मत हो । चिंता छोड़ दो । यह परम पुनीत काम है । विचार करने की बात है कि यदि ईसा मसीह ने अपना बलिदान न किया होता तो आज उनका कोई नाम भी न लेता और धर्म के रूप में यह सत्य-ज्ञान भी प्रगट न हुआ होता ।

यह भाव माँ के हृदय में एकाएक उठा और दृढ़ हो गया । उसने उस रमणी की ओर घूरकर देखा और हँसकर बोली—'और यदि जनसाधारण ने भी ईसा मसीह के लिये घोर यातनाएँ न झेली होतीं तो उनका आज कहीं पता न होता ।

इतने में सिजोव माँ के पास आया और अभिवादन करते हुए बोला—'माँ, कितना संगठित जुलूस है । सभी निर्भय हैं । आज यदि मेरा भी बेटा जीवित होता ! कारखानेवालों ने उसका रक्त चूस लिया, अस्ति-पंजर तक चबा गए । पर इससे क्या ? हमलोगों को इससे भी अधिक त्याग करना पड़ेगा । इसी समय जन-समूह ने गाया—

कातिल तुम्हें कत्ल करने को, ले हथियार सुसज्जित है !
निर्भय होकर बढ़ो वीरवर, आज परीक्षा का दिन है ॥

माँ का हृदय धड़कने लगा और वह पीछे पड़ गई । उमड़ती हुई भीड़ के धक्के खाकर वह एकदम किनारे जा पड़ी और ज्वार की भाँति भीड़ का वेग आगे बढ़ता गया ।

इस उमड़ती भीड़ के वेग को देखकर मालूम होता था मानों कोई शंख-ध्वनि के गर्जन से लोगों को जगा जगाकर उनके हृदयों में साहस और बल फूँकता जा रहा है। जिससे कुछ लोग तो संग्राम के लिये सन्नद्ध हो रहे हैं; कुछ लोग इस उत्साह को देख-कर किसी नये प्रकाश की आशा से प्रसन्न हैं। कुछ लोग अचंभित भी हैं और कुछ लोगों के हृदयों में दोनों भावों का उद्रेक है। जो हो, अधिकारियों के अत्याचार से लोगों के हृदय पक गए थे और इस गीत-द्वारा लोग उसे बहाकर शीतल कर रहे थे। जन-समूह ने फिर गाया—

हो कठिन कमाई तुम करते पर तुम्हें नहीं कुछ मिलता।
शोणित-शोषक अस्त्र निरंतर है पर तुम पर चलता॥

लोग रह-रहकर लाल झंडे की ओर देखते जाते थे। वह आकाश में फहरा रहा था। सभी लोग जोश के साथ गा रहे थे पर उस जनरव और संमिलित ध्वनि में किसी व्यक्ति विशेष की आवाज का कहीं पता नहीं था। जन-समूह ने फिर गाया—

है दुर्जेय शक्ति तुम सबमें, छिपी न तुम्हें लखाती।
हो हताश निर्जीव देह सम, कैसे तुम्हें दिखाती॥

इस गीत का मर्म ही हृदयग्राही था। निराशा के अंधकारमय पथ-पर चलते हुए किसी हृदय-शून्य व्यक्ति के नीरव-हृदय का करुण गान नहीं था, किसी दीन दुखिया का आर्तनाद नहीं था। किसी भय से पीड़ित हृदय की करुण पुकार नहीं थी। किसी हृदयहीन का नीरव गान नहीं था; वह मदभरी शक्ति का गर्जन

नहीं था, किसी क्रूर कुकर्मी का विवेकहीन गर्वयुक्त निर्देश नहीं था; वह पाशविक शक्ति का आह्वान नहीं था जो अपनी स्वतंत्रता के लिये दूसरों की स्वाधीनता का अपहरण कर लेता है। और न तो उस गीत में बदले की भयँकर और प्रचंड अग्नि की जाज्वल्यमान लहर थी जो सर्वनाश करके ही शांत हो सकती थी। इस गीत में दृढ़ता थी, संकल्प था, प्रत्याख्यान था, भविष्य की आशा का सुंदर और सुखद चित्र था, अपने वास्तविक बल और शक्ति का परिचय था। मार्ग की कठिनाइयों का वर्णन था और जालिमों के जुल्म का निर्देश था। उसकी गंभीरता और ज्वलंत शक्ति में उनके सभी कष्ट, यातनाएँ, अपमान और निरादर जो वेलोग सदियों से भोगते चले आए थे गलगलकर बहती चली जा रही थीं।

किसी ने प्रसन्न होकर कहा—'सभी तो संमिलित हो गए हैं। शाबाश। वीरो !'

वह व्यक्ति अपने हृदय के समस्त भावों को उपयुक्त शब्दों में व्यक्त नहीं कर सका। इसीलिए उसने आह्लादित होकर कहा था।

जनसमूह ने फिर गाया—

उठो उठो हे दीन दुखितजन, किंचित इसे निहारो।
सोते हो ? कब तक सोओगे ? अपनी दशा सम्हारो॥

जनसमूह को देखकर तथा उनके उत्साह और जोश-पूर्ण गीत को सुनकर किसी मलिन-हृदय व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा—'सबके सब पाजी और आवारे हैं। देखो न इन सबों की धृष्टता।

जार के विरुद्ध बगावत करने का उपदेश देते हैं। कौन ऐसा होगा जो राजा के प्रति विद्रोह खड़ा करेगा! कभी नहीं, हरगिज नहीं।'

इतने में जन-समूह ने फिर गाया—

उठ बैठो अब चेतो भाई, गहो अस्त्र निज कर में।
तंद्रा छोड़ो, आलस त्यागो, बढ़कर डटो समर में॥

गीत के इस अंतिम चरण का प्रभाव इतना प्रबल हुआ कि जो नरनारी इधर-उधर बगलें झाँक रहे थे वे भी आकर झंडे के चारों ओर डट गए।

माँ का हृदय उल्लासित हो उठा। वह ऊपर फहराते हुए झंडे को और नीचे जन-समूह की बाढ़ को देख रही थी। पावेल का चट्टान सरीखा सिर भी दिखाई देता था। उसकी आँखों में विश्वास की प्रदीप्त-शिखा जल रही थी, उसके चेहरे पर तेज था।

माँ एकदम पीछे पड़ गई थी। वह उनलोगों के बीच थी जिन्हें कोई विशेष उत्सुकता नहीं थी। जो इस जलूस के अंतिम परिणाम का वहीं से अनुमान कर रहे थे और उदासीन भाव से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।

एक ने कहा—'पैदल सैनिकों की एक टोली स्कूल के पास है और दूसरी टोली कारखाने के पास है।'

दूसरा—गवर्नर भी आए हुए हैं।

पहला—अच्छा!

दूसरा—हमने उन्हें अपनी आँखों से देखा है।

किसी ने उत्तेजित होकर कहा—'इससे स्पष्ट है कि अधिकारी

वर्ग भयभीत हो गए हैं। इसी से सैनिकों की इस प्रकार तैनाती की गई है और स्वयं गवर्नर आए हुए हैं।'

माँ का हृदय उल्लासित हो उठा। उसके मुँह से निकल पड़ा—'वीर लड़को !'

उसके आसपास हृदय-शून्य और उत्साह-हीन लोगों की भीड़ थी। वह उस स्थान से आगे बढ़ जाना चाहती थी। चार ही कदम में वह उनलोगों से अलग हो गई।

इसी वक्त माँ को ऐसा मालूम हुआ कि भीड़ एकाएक किसी वस्तु से टकरा गई और उसका धक्का ऐसा भीषण लगा कि भीड़ को दो कदम पीछे हट जाना पड़ा। गीत की ध्वनि भंग हो गई। पर दूसरे ही क्षण और तेज सुनाई देने लगी। पर फिर भीड़ को धक्का लगा और उसकी प्रगति रुकती-सी प्रतीत होने लगी। गीत की ध्वनि मंद पड़ने लगी। ध्वनि को कायम रखने के लिये लोग और चिल्लाकर गाने लगे—

उठो ! उठो ! ! ऐ दीन दुखित जन, गहो अस्त्र छेड़ो संग्राम।

भीड़ अपार थी। माँ सबसे पीछे थी। आगे क्या हो रहा है उसे कुछ दिखाई नहीं देता था पर उसे भावी विपत्ति की आशंका होने लगी और वह भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ी।

———

इक्कीसवाँ परिच्छेद

पावेल ने दृढ़ता के साथ चिल्लाकर कहा—'भाइयो, सैनिक-गण हमारे ही भाई हैं। वे हम पर हरगिज प्रहार नहीं करेंगे। कोई कारण नहीं है। क्या वे हमलोगों पर इसलिए प्रहार करेंगे कि हमलोग सत्य-ज्ञान का प्रचार कर रहे हैं? इस सत्य-ज्ञान के प्रकाश की उन्हें भी आवश्यकता है आज अभी वेलोग हमलोगों की बातें नहीं समझ रहे हैं। पर समय आ रहा है जब वे इस तथ्य को समझने लगेंगे। उस समय वेलोग भी हमलोगों का साथ देंगे। वेलोग उस समय इस झंडे के नीचे नहीं खड़े होंगे जिन्हें हत्यारे और डकैत, पशु-वृत्ति के जालिम जबर्दस्ती उनसे ढोवाते हैं और उन्हें मिथ्या भ्रम में डालकर बतलाते हैं कि यही हमलोगों का राष्ट्रीय झंडा है। यही हमलोगों का अभिमान है, इसी में राष्ट्र की शान है। बल्कि उस समय वेलोग इस सत्य और स्वाधीन झंडे के नीचे खड़े होंगे। हमलोगों को निडर होकर आगे बढ़ना चाहिए और इस सत्य-ज्ञान को उन्हें समझाना चाहिए।'

पावेल के शब्द दृढ़ और स्पष्ट थे। पर भीड़ में दृढ़ता नहीं थी भीड़ पीछे दबने लगी। लोग दाएँ-बाएँ होकर अपने-अपने घरों का रास्ता लेने लगे अथवा दीवाल के सहारे जा-जाकर खड़े होने लगे। भीड़ का आकार तीर के समान हो गया था और उसका नोक पावेल था। वह अपने हाथ में मजूरों का लाल झंडा फहराता हुआ दृढ़ता के साथ सबसे आगे खड़ा था।

सड़क के अंत में मैदान के फाटक पर सैनिकों की निर्जीव कतार खड़ी थी। उनके कंधों पर बंदूकें धरी हुई थीं। वे स्थिर खड़े थे पर दूर से ही उनकी आँच मजूरों का साहस पिघला रही थी।

माँ भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी। एक लँगड़े आदमी को धक्का लगा तो उसने फिरकर उसकी ओर देखा और पूछा—'तुम कौन हो? क्या चाहती हो?'

माँ—मैं पावेल की माँ हूँ।

माँ के हाथ-पाँव काँप रहे थे।

लँगड़ा आदमी—अच्छी बात है, जाइए।

पावेल ने फिर चिल्लाकर कहा—'भाइयो, जान को हथेली पर रखकर आगे बढ़ो। दूसरा कोई उपाय नहीं है।'

अवस्था गंभीर हो गई। झंडा पूर्ववत् भीड़ के ऊपर फहराता हुआ सैनिकों की ओर बढ़ती हुई भीड़ को उत्साहित कर रहा था। माँ काँपने लगी। उसकी आँखें बंद हो गईं। उसके मुँह से एक चीख निकल पड़ी।

पावेल, नखोदका, समोले और मेजिन आगे बढ़े।

फीडिया मेजिन के गगन-भेदी शब्द सुनाई दिए—

व्यर्थ मोह में पड़े हुए हो, यह जीवन सुख-सपना है।

लोगों ने दबी जबान में फिर उसका साथ दिया। लोग आगे बढ़े। उनके पैरों के शब्द स्पष्ट सुनाई दे रहे थे। इसी समय दूसरी गीत ध्वनित हो उठी—

जिसके हेतु निछावर तुमने, किया सभी कुछ अपना है।
वही पेरता है कोल्हू में, यह व्यामोह, कलपना है॥

इसी समय किसी ने हँसकर कहा—'इस गीत से प्रतीत होता है कि सबके सब मौत के मुँह में जाने की तैयारी कर रहे हैं।'

किसी ने गरजकर कहा—'पीटो उसे।'

माँ छाती पर हाथ रखकर खड़ी हो गई। चारों ओर दृष्टि फेर-कर उसने देखा—भीड़ निश्चेष्ट खड़ी है। कुछ लोग पावेल के साथ झंडे के नीचे आगे बढ़ रहे हैं पर कदम-कदम पर उनलोगों में-से भी लोग इस प्रकार छँटते जा रहे हैं मानों पैर तले की धरती जल रही है और उस पर पैर नहीं दिया जाता।

इतने में फीडिया मेजिन ने फिर गाया—

ऐ जालिम! तू बाज़ न आ, कर ले मनमाना अत्याचार।
उत्पीड़न से तू देखेगा अब, प्रगटेगी शक्ति अपार॥

इतने में किसी ने कहा—'देखो, अफसर सैनिकों को कुछ आज्ञा दे रहा है।' दूसरे ही क्षण लोगों ने अफसर को कहते हुए सुना—'निशाना सीधा करो।'

सभी बंदूकों के मुँह फहराते झंडे की ओर फिर गए। बंदूकें चमकने लगीं।

अफसर—आगे बढ़ो।

लँगड़े आदमी ने कहा—'सैनिक आगे बढ़ने लगे।'

इतना कहकर वह बगल में सरक गया। माँ स्थिर दृष्टि से देख रही थी। सैनिक कवायद के साथ सड़क भर में फैल गए

और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। उनकी बंदूकें उसी तरह चमक रही थीं। थोड़ी दूर चलकर वे रुक गए। माँ पावेल के निकट होने के लिये तेजी से आगे बढ़ी। उसने देखा कि नखोद्का आगे कदम रखता जाता है और अपने शरीर से पावेल को ढँके हुए है।

पावेल ने कहा—'सामना छोड़ दो।'

नखोद्का सिर ऊँचा किए हाथ पीछे की ओर मोड़े हुए गीत गा रहा था। पावेल की बातों पर उसने ध्यान नहीं दिया।

पावेल ने उसे ढकेलते हुए कहा—'बगल से चलो झंडा को आगे रहने दो।'

इसी समय अफसर ने सामने आकर झंडा हिलाते हुए कहा—'छुट जाओ सब लोग भीड़ से।'

इतना कहकर उसने अपने पैर को जोर से जमीन पर पटका।

इस अफसर के पीछे थोड़ी दूर पर एक लंबा और तगड़ा आदमी खड़ा था। उसका चेहरा रोबीला था और उसकी मोछें बुर्राक थीं। वह लाल धारी का भूरा कोट और पीली धारी का पैंट पहने हुए था, उसकी चाल में बड़प्पन था। नखोद्का की भाँति वह भी अपने हाथों को पीछे किए हुए था। उसने पावेल की ओर घूरकर देखा।

माँ की विचित्र दशा थी। उसका हृदय टूक-टूक हो रहा था और वह रो देना चाहती थी। उसका गला भर आया था और दम घुट रहा था पर अनवसर देखकर वह अपने भाव को

छिपा रही थी। वह बिना समझे-बूझे आगे बढ़ती चली जा रही थी उसके पीछे की भीड़ छटती जा रही थी। भय ने भीड़ के हृदय में स्थान कर लिया था और वह पत-झड़ की भाँति उन्हें तितर-बितर कर रहा था।

झंडे के साथ के लोग और भी सटकर खड़े हो गए। थोड़ी दूर पर सैनिकों का रक्त-हीन विकृत चेहरा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। लोगों की छाती को अपना निशाना बनाए हुए सामने ही बंदूकें चमक रही थीं। यद्यपि घोड़े पर हाथ नहीं था पर वे लोग जहाँ-तहाँ लोगों को ढकेलते फिरते थे और भीड़ को भगा रहे थे।

माँ ने भगोड़ों की आवाज सुनी। वे कहते जाते थे—'भागो, भागो! निलोना, भागो! पावेल, हट जाओ!'

इसी समय निकोले ने कहा—'पावेल! झंडा झुका दो। उसे हमें दे दो। हम छिपा देंगे!'

इतना कहकर उसने झंडे को अपनी ओर खींचा। झंडा झुकने लगा।

पावेल ने गरजकर कहा—'खबरदार! उसमें हाथ न लगाओ।'

निकोले ने हाथ खींच लिया। गीत बंद हो गया। कुछ लोग पावेल को घेरकर खड़े हो गए। लेकिन वह सबको ठेलकर आगे जा खड़ा हुआ। एकाएक चारों ओर सन्नाटा छा गया।

झंडे के इर्द-गिर्द सिर्फ बीस आदमी खड़े रह गए। पर वे दृढ़ थे। माँ भयभीत होकर उनके पास गई और कुछ कहना ही

चाहती थी कि इतने में उस लंबे आदमी ने अफसर से कहा—'छीन लो झंडा।'

दूसरे ही क्षण अफसर कूदकर पावेल के पास आया और उसके हाथ से झंडे को छीनते हुए बोला—'इसे गिरा दो।'

झंडा हिलने लगा। वह कभी दाएँ झुकता और कभी बाएँ। अंत में फिर खड़ा हो गया। अफसर पीछे हटकर बैठ गया।

उस लंबे आदमी ने जमीन पर पैर पटककर चिल्लाकर कहा—'पकड़ लो सबों को।'

कई सिपाही आगे बढ़े। एक ने बंदूक का कुंदा ताना। झंडा हिला, गिर पड़ा और सिपाहियों के बीच गायब हो गया।

किसी ने वेदना के साथ कहा—'आह! और माँ ढाढ़ मारकर रो पड़ी। सिपाहियों से घिरे हुए पावेल ने धैर्य के साथ कहा—'माँ! प्रणाम!'

नखोदका ने भी चिल्लाकर कहा—'माँ! प्रणाम!'

वह पंजे के बल खड़ी हो गई और दोनों को देखने का यत्न करने लगी। उसने देखा कि नखोदका उसी प्रकार हँस रहा है और उसे झुककर प्रणाम कर रहा है।

माँ ने आवेश में कहा—'मेरे प्यारे पुत्रो! चिरजीवी हो।' दोनों ने अपने साथियों को अभिवादन किया।

बहुतों ने उसके उत्तर में हाथ हिलाया। कोई छत पर से हाथ हिला रहा था और कोई खिड़की में-से।

माँ ने देखा कि पीछे से कोई उसे पकड़कर खींच रहा

था। उसने घूमकर देखा कि वही अफसर लाल-लाल आँखें किए कह रहा है—'बुड्ढी औरत हट यहाँ से, भीड़ न जमा कर।'

माँ ने नीचे से ऊपर तक उसके शरीर को देखा। उसके पैर के पास टूटा हुआ झंडा पड़ा था। झंडे का लाल कपड़ा अभी भी उसके टूटे हुए डंडे में लगा हुआ था। उसने उसे उठा लिया। अफसर ने झंडा उसके हाथ से छीनकर दूर फेंक दिया और जमीन पर पैर पटककर बोला—'दूर हट यहाँ से!'

इसी समय सैनिकों ने ताने के साथ गाया—

'उठो! उठो! हे दीन दुखितजन'

सब कुछ नष्ट हो चुका था। भय का आतंक छा गया था। अफसर ने क्रुद्ध होकर सैनिकों से कहा—'बंद करो गाना!'

माँ झंडे के उस टुकड़े की ओर लपकी जिसे अफसर ने फेंक दिया था और उठा लाई।

अफसर ने चिल्लाकर कहा—'सबका मुँह बंद कर दो।'

गीत बंद हो गया। किसी ने माँ का कंधा पकड़ा, पीछे की ओर घुमाया और पीठ पर सहारा देकर ले चला।

अफसर ने चिल्लाकर—'रास्ता साफ कर दो। सब लोग यहाँ से चले जाओ।'

दस कदम चलने पर माँ ने फिर भीड़ देखा। ये लोग लौट रहे थे और आपस में तर्क-वितर्क कर रहे थे।

एक नौजवान सिपाही ने चिल्लाकर कहा—'पाजी कुत्तो, भागो यहाँ से।' उसने माँ को एक गली में ढकेल दिया। वह

झंडे के डंडे के सहारे आगे बढ़ी। वह तेजी के साथ आगे बढ़ना चाहती थी पर उसके पैर उसका साथ नहीं दे रहे थे। गिरने से बचने के लिये वह दीवाल के सहारे खड़ी हो जाती थी। उसके आगे के लोग पीछे पड़ते जाते थे और पुलिस चिल्ला-चिल्ला-कर लोगों को खदेड़ रही थी।

सिपाही तेजी के साथ आगे बढ़ गए। वह ठहर गई और निगाह दौड़ाकर चारों ओर देखने लगी। सिपाही आगे बढ़कर मैदान के दूसरे फाटक पर फैलकर खड़े हो गए और भीतर जाने का रास्ता बंद कर दिया। भीड़ के पीछे-पीछे कुछ पकी दाढ़ीवाले बुड्ढे लोग धीरे-धीरे चले आ रहे थे। वह पीछे हो जाना चाहती थी पर अनायास ही आगे बढ़ आई और एक गली के मोड़ पर आकर उसी में घुसी और रुक गई। उसने लंबी साँस ली। आगे कुछ लोग बातें कर रहे थे। उसी डंडे के सहारे वह आगे बढ़ी। वह घबराई हुई-सी थी। वह पसीने से तर थी और उसके ओंठ काँप रहे थे। उसने हाथ हिलाया। ठीक इसी वक्त उसके हृदय में किसी अनोखे भाव का उदय हुआ और वह उनलोगों से बातें करने के लिये अधीर हो उठी।

कुछ दूर जाकर वह गली बाईं ओर मुड़ गई थी। उस मोड़ पर हजारों आदमियों की भीड़ जमा थी और कोई चिल्ला कर कह रहा था—'इन लोगों के साहस में केवल धृष्टता नहीं है। केवल दिखावा के लिये ही कोई तोप और तलवारों का सामना नहीं करेगा।'

दूसरा—उस समय का दृश्य कितना रोमांचकारी था। संगीन ताने हुए सिपाही उनकी ओर बढ़ रहे थे पर उन्हें इसकी रत्तीभर भी परवाह नहीं थी। अचल खड़े थे।

तीसरा—पावेल की धीरता और दृढ़ता और भी विस्मयजनक थी।

चौथा—और नखोदका !

पाँचवा—शांति के साथ खड़ा मुस्कुरा रहा था।

माँ भीड़ में धँस पड़ी। लोग आदर से हट गए और उसे रास्ता दिया। उसने चिल्लाकर कहा—'मेरे प्यारे भाइयो !'

किसी ने हँसकर कहा—'देखो, अभी तक वह झंडा इसके हाथ में ही है।'

दूसरे ने डाँटते हुए कहा—'चुप रहो।'

माँ ने दोनों हाथ फैलाकर कहना शुरू किया—'भाइयो ! प्रभु ईसा के नाम पर मेरी बातों पर ध्यान दो। अपने हृदय-कपाट को खोल दो। डर और भय को दूर भगा दो। हमलोगों के जिगर के टुकड़े सत्य के लिये निछावर हो रहे हैं। सत्य और ईमानदारी के नाम पर उन्होंने जीवन का नया मार्ग ढूँढ़ निकाला है। यह मार्ग सबके लिये खुला है। आप ही लोगों के कल्याण के लिये, भावी संतति के सुख और समृद्धि के लिये उन्होंने अपने जीवन को इस प्रकार उत्सर्ग कर दिया है। वे उस तथ्य की खोज में हैं जिसका प्रकाश कभी भी क्षीण नहीं हो सकता।

वेलोग उस जीवन की खोज में हैं जिसमें सबको सुख है और जिसका अधार सत्य-निष्ठा और विवेक है।

उसका हृदय विदीर्ण हो रहा था, कलेजा धड़क रहा था और मुँह सूख रहा था। प्रत्येक शब्द प्रेम से सराबोर थे। प्रत्येक शब्द के साथ उसकी उत्तेजना बढ़ती जाती थी। उसने देखा कि लोग श्रद्धा और भक्ति से उसकी बातें सुन रहे हैं। सब शांत थे। सब विचार मग्न थे। उसने अपने मन में कहा—'क्या ये लोग भी उसी पथ के पथिक नहीं बन सकते। क्या ये लोग भी पावेल और नखोद्का की भाँति निडर होकर पुलिस की विभीषिका और आतंक का सामना नहीं कर सकते!' उनके निरुत्साह और उत्सुक चेहरे की ओर देखकर उसने नरमी से कहना शुरू किया—'वास्तविक सुख का मार्ग ढूँढ़ निकालने के लिये उन्होंने अपने को इस विपत्ति में डाला है। प्रभु ईसा ने जिस सत्य-ज्ञान का प्रचार किया था उसकी सत्ता स्थापित करने के लिये उन्होंने यह कष्ट उठाया है। हम सबके यातनामय, निरानंद जीवन को देखकर ही उनलोगों का हृदय पसीजा और समस्त मजूरों के उद्धार के लिये उनलोगों ने यह व्रत उठाया। उन्होंने सत्य का मार्ग दिखा दिया है। आपलोगों को भी उसी प्रशस्त मार्ग से चलने का यत्न करना चाहिए। उन्हें छोड़िए नहीं, उनकी ओर से उदासीन न होइए, उन्हें त्यागिए नहीं, उस मार्ग पर उन्हें निराधार और निरवलंब न छोड़ दीजिए। उनकी अवस्था पर विचार कीजिए। उन पर भरोसा कीजिए।

जिस सत्य के लिये उन्होंने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया है वह खोखला नहीं हो सकता, यह निश्चय जानिए।

उसकी आवाज धीमी पड़ गई। वह लड़खड़ाने लगी। भीड़ में-से किसी ने आगे बढ़कर उसे पकड़ लिया।

एक आदमी ने कहा—'इस पर ईश्वर की छाया उतर आई है। इसके प्रत्येक शब्दों में सत्य कूट-कूटकर भरा है।

दूसरे ने सदय होकर कहा—'वह अपने हृदय को नाहक कष्ट दे रही है।'

उसके उत्तर में किसी तीसरे व्यक्ति ने कहा—'वह अपने हृदय को कष्ट नहीं दे रही है बल्कि हमलोगों को शर्मिंदा कर रही है। बातें समझने के लिये भी योग्यता चाहिए।

इतने में भीड़ में-से किसी ने चिल्लाकर कहा—'ऐ ईमानदार आदमियो, क्या तुम बतला सकते हो कि मेरे एकलौते पुत्र मीटिया ने कोई अपराध किया था? उसने अपने साथियों का साथ दिया। यह रमणी सच कह रही है। हमलोगों ने अपने प्यारे बच्चों का साथ क्यों छोड़ दिया? उनलोगों ने क्या अपराध किया था?'

माँ की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली।

उस व्यक्ति (सिजोव) ने सांत्वना देते हुए कहा—'माँ, निलोना चलो घर चलें!'

सिजोव का चेहरा मुर्झाया हुआ था। उसकी दाढ़ी हिल रही थी। उसने भौंह सिकोड़कर चारों ओर देखा। उसकी

आँखों में कठोरता थी। वह दृढ़ता के साथ खड़ा हो गया और कड़ककर बोला—'कारखानेवालों ने मेरे जिगर के टुकड़े को मुझसे छीन लिया। यह चाल आपलोग भलीभाँति जानते हैं। यदि वह आज जीवित होता तो मैं सहर्ष उसे इन वीरों के साथ भेज देता। मैं उसे बिदा देते हुए कहता—'मीटिया इन वीरों का अनुकरण करो। जीवन का यही सच्चा मार्ग है।'

वह एकाएक चुप हो गया। भीड़ में अटल शांति विराज रही थी। इस नये विचार ने सबके ध्यान को अपनी ओर खींच लिया था। सभी उसी में मग्न थे। भय का भाव लोगों के चेहरे से धीरे-धीरे गायब होता जा रहा था। सिजोव ने अपना हाथ उठाया और पुनः कहने लगा—'मैं बुड्ढा हूँ। मेरी तिरपन वर्ष की उम्र हुई। उनतालीस वर्ष कारखाने में काम करते हुआ। तुम सब लोग मुझसे भली-भाँति परिचित हो। पावेल के साथ मेरा भतीजा भी गिरफ्तार कर लिया गया है। वह भी उन्हीं लोगों—अपने साथियों—के साथ झंडे के साथ था।' माँ की ओर इशारा करके उसने फिर कहा—'इस रमणी ने सब बातें सच कही हैं हमारे बच्चे हमलोगों का जीवन सुधारना चाहते हैं; हमारे जीवन को सुखमय बनाना चाहते हैं और हमलोग उन्हें छोड़कर अलग हो जा रहे हैं।'

माँ ने आँखों में आँसू भरकर कहा—'भाइयो, यह विश्व उन्हीं का है और यह जीवन उन्हीं का है।'

सिजोव—माँ, निलोना ! अब घर चलो। (झंडे का डंडा थम्हाते हुए) लो ! इसी के सहारे रास्ता तै करना।

माँ के लिये सबके हृदय में संमान था और सब उसके दुख से दुखी थे। सिजोव ने उसे जाने के लिये रास्ता कर दिया। उसका इशारा पाते ही लोग आपसे आप हट गए।

माँ आगे बढ़ी। भीड़ उसी प्रकार उसके पीछे-पीछे चली। रास्ते में लोग आपस में धीरे-धीरे बातें करते जाते थे। अपने द्वार पर पहुँचकर वह भीड़ की ओर मुड़ी और इसी झंडा के डंडे के सहारे झुककर सबको प्रणाम किया। और बोली—'जनसमूह का आत्म-त्याग ही सबकी कीर्ति को अमर बनाता है। यदि लोगों ने अपनी जान को निछावर न किया होता तो आज संसार में प्रभु ईसा मसीह का नाम कौन लेता ?'

भीड़ श्रद्धा के साथ दत्तचित्त होकर स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देख रही थी।

उसने फिर एक बार झुककर लोगों को प्रणाम किया और मकान के भीतर चली गई। सिजोव भी उसके साथ गया।

थोड़ी देर तक भीड़ वहीं खड़ी उसी बातों की चर्चा करती रही फिर धीरे-धीरे छँटने लगी।

———

माँ का हृदय

(दूसरा भाग)
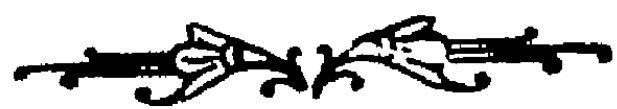
पहला परिच्छेद

माँ की विचित्र हालत थी। उसका मन विह्वल था, हृदय बेकल था और चित्त में अस्तव्यस्तता और अशांति छाई हुई थी। दिन की सारी घटना आदि से अंत तक उसकी आँखों में नाच रही थी। लाल झंडा उसी तरह आकाश में फहरा रहा था, नवयुवकों का उल्लास भरा चेहरा उसी प्रकार चमक रहा था गीत की गगन-भेदी ध्वनि उसी प्रकार सुनाई दे रही थी, वह अफसर उसी प्रकार इधर से उधर दौड़ता दिखाई देता था और पावेल का लोहे के समान दृढ़ शरीर और नखोदका का हँसमुख चेहरा उसी प्रकार जुलूस के आगे चल रहा था।

उसका मन चंचल था। उसे कहीं भी शांति नहीं मिलती थी। कभी वह कमरे में इधर-उधर टहलती, कभी खिड़की पर जाकर बैठ रहती और बाहर सड़क की ओर निहारती। जब वहाँ भी शांति न मिलती तो उठ जाती। कभी-कभी वह चौंक उठती और चारों ओर इस तरह देखने लगती मानों कुछ तलाश रही है।

उसका हृदय क्रोध और आघात से जल रहा था। वह उसे बुझाने के लिये बार-बार जल पीती पर उससे शांति नहीं मिलती थी। दिन की चहल-पहल का अंत हो चुका था। इस समय एकदम सन्नाटा था। सवेरे की धूमधाम का इस विपन्नता के साथ अंत होना उसे बड़ा ही दुखदाई प्रतीत हो रहा था। रह-रहकर उसके मन में यही प्रश्न उठता था—'आगे क्या होगा ?'

मेरिया उसके पास आई। लंबी-चौड़ी बातें करने लगी। दुनियादारी दिखलाने लगी। अधिकारियों को गाली देने लगी, धमकियाँ देने लगी और माँ को आशाप्रद तसल्ली देने लगी। पर इन सब से माँ को लेशमात्र भी शांति न मिली।

उसने कहा—'लोगों में जागृति आ ही गई। समस्त मजदूरों में उत्तेजना फैल गई है। सभी तो उठ खड़े हुए हैं।'

माँ ने धीरे से कहा—'हाँ!' उसका हृदय शून्य था। उसका सुख और शांति सब कुछ पावेल और नखोद्का के साथ चली गई थी। वह रोना चाहती थी पर रो नहीं सकती थी। उसका हृदय शून्य हो गया था, नेत्र सूख गए थे, कंठ और तालू भी सूख गए थे। उसका शरीर काँप रहा था मानों उसे भयानक सर्दी लग गई हो।

शाम को इंस्पेक्टर आया। उसके साथ अफसर भी था। रोब जमाने के लिये वे सब पैर पटकते, डाँट-डपट करते मकान के अंदर घुसे पर माँ लेशमात्र भी विचलित नहीं हुई।

अफसर ने कहा—'हमें तीसरी बार तुम्हें कष्ट देना पड़ा है।'

माँ शांत थी। उसने मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाले। इंस्पेक्टर माँ को ऊँची-नीची बातें समझाता रहा। माँ देख रही थी कि अफसर यह उपदेश देकर मन ही मन प्रसन्न हो रहा है। पर इसका माँ पर किसी तरह का असर नहीं पड़ा मानों वह उन्हें सुन ही नहीं रही हो। पर जब अफसर ने कहा कि यह तुमलोगों का ही दोष है कि आरंभ में लड़कों की देखभाल और रखवाली ठिकाने से नहीं करती हो और लड़के नास्तिक तथा बागी हो जाते हैं तब माँ ने उसकी ओर ताककर कहा—'आपका कहना सही है। हमलोग उन्हें ऐसे रास्ते पर छोड़ देते हैं कि उन्हें स्वयं अपने जीवन का सच्चा मार्ग खोज निकालना पड़ता है और उसके लिये वेलोग हमलोगों को दंड देते हैं।

अफसर—क्या कहा ?

माँ ने वेदना साथ कहा—'लड़के ही हमलोगों के जज हैं।'

इस पर क्रुद्ध होकर अफसर ने कुछ कहा। लेकिन माँ पर उसका कोई असर नहीं पड़ा।

मेरिया ही गवाह बनाई गई। वह माँ के बगल में सिर झुकाए खड़ी थी। अफसर के पूछने पर उसने कहा—'मैं कुछ नहीं जानती। मैं देहाती औरत हूँ। कूट-पीसकर जीवन-निर्वाह करती हूँ। मुझे कुछ नहीं मालूम है।

अफसर ने डाँटकर कहा—'चुप रह। क्या बेकाम बकबक करती है ?'

अफसर ने उससे माँ की खानातलाशी लेने के लिये कहा।

उसने इनकार कर दिया। इसपर अफसर भला-बुरा कहने लगा। मेरिया भय से ठंढी पड़ गई और धीरे से माँ से कहने लगी—'उपाय ही क्या है ? जो यह कहता है उसे मनाना ही पड़ेगा।'

इतना कहकर वह माँ के शरीर की खानातलाशी लेने लगी। क्रोध से माँ का चेहरा लाल हो गया। उसने वेदना भरे शब्दों में कहा—'नारकीय कुत्तो।'

उसकी ओर देखते हुए अफसर ने दाँत पीसकर पूछा—'क्या भुनभुना रही है।'

मेरिया भय से काँप उठी। बोली—'यह औरतों की बातें हैं। इसे आप नहीं समझ सकेंगे।'

अफसर के कहने पर माँ ने तलाशी के वारंट पर नौसिखुआ अक्षरों में दस्तखत कर दिया।

अफसर चला गया। माँ पूर्ववत् अपने स्थान पर खड़ी रही। वह गंभीरता के साथ चारों ओर देख रही थी। उसका हृदय शून्य था। वह निश्चेष्ट थी। दिये का तेल समाप्त हो गया। दीपक बुझ गया। लेकिन तेल डालकर फिर जलाने की उसने चेष्टा नहीं की। न तो उसके हृदय में किसी के प्रति घृणा थी और न अपमान की वेदना थी। विपन्नता और शोक के काले बादल उसके हृदय पर छाए हुए थे और उसकी गति मंद हो गई थी। उसका मस्तिष्क शून्य था। वह देर तक खिड़की पर खड़ी रही। उसके पैर और आँखें थक गईं। उसने बाहर खिड़की के पास फिर मेरिया का

शब्द सुना। वह खड़ी हुई कह रही थी—'निलोना, तुम सो गई क्या ? सो भी जाओ। वे सब तो पाजी हैं। इसी तरह सबका अपमान किया करते हैं।'

इतना कहकर वह चली गई। माँ भी उस स्थान से हटकर बिछौने पर लेट गई और गहरी नींद में सो गई।

रात को उसने स्वप्न देखा कि सड़क के बगलवाले दलदल में एक बड़ा भारी टीला खड़ा है। उसके नीचे पावेल और नखोदका खड़े हैं और सुर में सुर मिलाकर गा रहे हैं—

उठो उठो ऐ दीन दुखितजन, गहो अस्त्र छेड़ो संग्राम।

माँ सड़क पर टीले के सामने से आगे बढ़ गई और पावेल को देखने का यत्न करने लगी। उसने उसे खूब अच्छी तरह पहचान लिया पर उसके पास जाने का उसे साहस नहीं हुआ। उसे इस बात से लज्जा आ रही थी कि वह गर्भवती है और उसकी गोद में भी एक बच्चा है। वह आगे बढ़ती गई। वहाँ लड़के मैदान में गेंद खेल रहे थे। गेंद का रंग लाल था। उसकी गोद का बच्चा उन लड़कों को देखकर कूद पड़ा और चिल्लाकर रोने लगा। उसने उसे उठा लिया और अपना स्तन उसके मुँह में डाल दिया। इस समय तक टीले पर सैनिक पहुँच गए थे। उनलोगों ने अपनी बंदूकों का निशाना इसकी ओर लगाया। उसने देखा कि बीच मैदान में बादलों से बना गिरजे का स्वच्छ और ऊँचा भवन खड़ा है। वह दौड़कर उसी में छिप गई। गिरजा

के हाते में किसी मृत मनुष्य का अंत्येष्टि-संस्कार हो रहा था। कफन काला था और किसी बड़े संदूक में बंद था। पादरी लोग उसके चारों ओर घूम-घूम कर गा रहे थे—

प्रभु ने पुनः लिया अवतार, होगा विकसित यह संसार।

पुरोहित आरती लेकर माँ के पास आया और उसने हँसकर उसे प्रणाम किया। उसके केश लाल और चमकीले थे। उसकी आकृति हँसमुख थी। वह समोलो से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। सूर्य का तेज प्रकाश पृथ्वी पर फैल रहा था। मधुर ध्वनि में लड़के उस गीत को दोहरा रहे थे।

गिरजा के बीच में खड़ा हुआ पादरी एकाएक चिल्ला उठा—'इन सबों को गिरफ्तार कर लो।' माँ ने विस्मय के साथ देखा कि उसी क्षण उसका पादरीवाला पोशाक गायब हो गया और अफसराना लिबास उसके शरीर पर चमकने लगा। सब लोग घबराकर इधर-उधर भागने लगे। पुरोहित ने भी धूपदान अलग फेंक दिया और ठीक नखोदका की भाँति हाथ से सिर पकड़कर दौड़ पड़ा। माँ ने अपनी गोद के बच्चे को लोगों के चरणों पर डाल दिया। लड़के को यों ही छोड़कर लोग भाग खड़े हुए। वह घुटने टेककर बैठ गई और लोगों से प्रार्थना करने लगी—'अबोध बच्चा है। उसे मत छोड़िए। अपने साथ लेते जाइए।'

नखोदका अपने हाथ को पीछे की ओर मोड़कर वही गीत गाने लगा। गाते-गाते उसने झुककर लड़के को उठाया और लकड़ी

से लदी एक गाड़ी पर रख दिया। गाड़ी के पीछे-पीछे निकोले धीरे-धीरे गा रहा था। उसने हँसकर कहा—'मुझसे बड़ा कड़ा काम लेते हैं।'

सड़क में कीचड़ भरा हुआ था। लोग अपने अपने मकानों की खिड़कियों से गर्दन निकालकर देखने लगे, सीटी बजाने लगे, चिल्लाने लगे और हाथ हिलाने लगे। दिन साफ था। सूर्य तेजी से चमक रहा था। बादल का कहीं नाम तक न था।

नखोदका ने कहा—'माँ तुम भी गाओ! कैसा जीवन है।'

इतना कहकर वह गाने लगा। उसके हास्यपूर्ण और गंभीर गीत की ध्वनि में अन्य सबके शब्द विलीन हो गए।

माँ उसके पीछे-पीछे जा रही थी और कह रही थी—'वह मेरी हँसी क्यों उड़ा रहा है?'

एकाएक वह ठोकर खाकर गिरी और एक अंधकारपूर्ण गंभीर गह्वर में जा पड़ी। वहाँ उसे लोगों के चीखने के विकराल शब्द सुनाई देने लगे।

इतने में वह जाग पड़ी। उसका शरीर काँप रहा था और पसीने से तर था। वह अपनी हृदय-शून्यता पर विस्मित थी। कारखाने का घंटा अनवरत ध्वनि कर रहा था। उसकी दीर्घ ध्वनि से उसने अनुमान किया कि यह दूसरा घंटा है। कमरे में सारी वस्तुएँ अस्तव्यस्त पड़ी थीं। पुस्तकें और कपड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे और सारा कमरा धूल से भर गया था।

वह उठ बैठी और हाथ मुँह धोए और प्रार्थना किए बिना

ही सब चीजें सम्हालने लगी। इस समय उसकी निगाह झंडे के डंडे पर पड़ी। लाल ध्वजा उसी प्रकार उसमें बँधी थी। उसने उसे उठा लिया। आवेश में आकर वह उसे फेंक देना चाहती थी पर दूसरे ही क्षण उसने उस लाल कपड़े को डंडे से अलग किया और सावधानी से अपनी जेब में रख लिया। इसके बाद उसने कमरा और खिड़कियों को धोकर साफ किया, स्नान किया, कपड़ा बदला और रसोई बनाने बैठ गई। रसोई-घर में फिर वही प्रश्न उसके दिमाग में चक्कर मारने लगा—'अब मैं क्या करूँ ?'

इसी समय उसे याद आया कि उसने अभी तक प्रार्थना नहीं की है। वह प्रार्थना-भवन में चली गई। मूर्त्ति के सामने क्षण भर खड़ी रही फिर बैठ गई। उसका हृदय शून्य था। दिन पहाड़-सा मालूम होता था। जो घड़ी पवन के वेग के साथ आगे बढ़ती जाती थी आज वही उसे एकदम सुस्त प्रतीत होती थी। मक्खियाँ रह-रहकर भनभना जाती थीं मानों कर्तव्य-शीलता का आदेश दे रही हों।

उसी समय उसे एक दृश्य का स्मरण आया जिसे उसने अपनी जवानी में देखा था। जान सेलो के पार्क के बीचोबीच एक तालाब था जो कुमुदिनी से खचाखच भरा था। पतझड़ के दिनों में एक दिन वह तालाब के किनारे घूम रही थी उसने तालाब के बीच में एक नाव देखी, तालाब का पानी शांत था। उसका रंग काला था। वह नाव उस पानी में चिपकी हुई मालूम होती थी। कुमुदिनी की पीली पत्तियों के बीच बिना मल्लाह और

बिना पतवार-डाँड़ के वह नाव एकदम मनहूस मालूम होती थी। किनारे पर खड़ी हुई माँ बहुत देर तक इसी चिंता में थी कि इस नाव को इस प्रकार मझधार में किसने किस प्रयोजन से ठेल दिया है ? इस समय उसकी अवस्था भी ठीक उसी नाव की भाँति थी। इस अगाध संसार में वह भी बिना किसी सहायक और खेवैया के खड़ी थी। उसी दिन शाम को उसे मालूम हुआ था कि जानस्लेबो के एक क्लर्क की स्त्री उसी तालाब में डूबकर मर गई थी।

उस दृश्य को स्मृतिपट से दूर करने के लिये माँ ने मुँह पर हाथ फेरा। वे भाव उससे धीरे-धीरे बिदा होने लगे। उसी दिन की स्मृति ने उसे इतना सुस्त बना दिया कि वह देर तक निश्चल और निश्चेष्ट बैठी रही। उस समय उसकी इच्छा हुई कि कोई उसके पास आता तो वह बातें करती।

उसके सौभाग्य से ठीक उसी समय निकोले इवानोविच ने प्रवेश किया। उसे देखकर वह इस प्रकार भयभीत हो गई कि उसके प्रणाम का उत्तर तक न दे सकी। धीरे से बोली—'मेरे लायक दोस्त ! तुम यहाँ क्यों आए ? अगर तुम्हें यहाँ गिरफ्तार कर लिया तो पावेल की सारी व्यवस्था का अंत हो जायगा। तुमने बहुत बुरा किया। यदि वेलोग तुम्हें यहाँ देख लेंगे तो अवश्य गिरफ्तार कर लेंगे।'

उसने माँ का हाथ पकड़ा। अपना चश्मा सम्हाला और उसके पास मुँह ले जाकर धीरे से बोला—'पावेल और नखोदका ने मेरे

ऊपर तुम्हारा भार दिया था। उन्होंने कहा था कि यदि हमलोग गिरफ्तार कर लिए जायँ तो तुम माँ का डेरा फौरन यहाँ से शहर ले जाना। क्या यहाँ तलाशी आई थी ?'

माँ ने घृणा के साथ कहा—'हाँ, वे बड़े ही नीच होते हैं। उन सबों की आत्मा ही मरी होती है।'

निकोले—उन्हें शर्म किस बात की है ?

इसके बाद उसने शहर में डेरा ले जाने की आवश्यकता बतलाई।

निकोले की अनुनय भरी बातों से माँ का हृदय पिघल गया। उसकी सहानुभूति का माँ के हृदय पर बड़ा असर पड़ा। वह सूखी हँसी हँसकर उसकी ओर देखने लगी। उस पर माँ का विश्वास जम गया। बोली—'पावेल की इच्छा से मैं सहमत हूँ पर यदि मेरे वहाँ जाने से तुम्हें किसी तरह की असुविधा हो तो...'

निकोले—आप उसकी लेशमात्र भी चिंता न करें। मैं उस मकान में एकदम अकेला रहता हूँ। मेरी बहन कभी-कभी आती-जाती है।

माँ—मैं व्यर्थ अपने नायक को संकट में नहीं डालना चाहती।

निकोले—यदि आप चाहें तो वहाँ कुछ काम भी मिल सकता है।

माँ की दृष्टि में केवल एक ही काम रह गया था। वह था पावेल और नखोदका तथा उसके अन्य साथियों का अभिप्रेत कार्य, जिसके लिये वेलोग जेल गए थे। वह निकोले की ओर

लक्ष्यकर बोली—'तुमने अभी कहा है कि घर में मेरे लिए काम भी है ?'

निकोले—पर घर के काम से मेरा अभिप्राय नहीं था क्योंकि मैं अविवाहित हूँ और घर में कोई विशेष काम-काज का झंझट नहीं है।

माँ—मेरा भी ध्यान उधर नहीं है। मेरा अभिप्राय उस काम से है।

इतना कहकर उसने लंबी साँस ली। उसे इस बात से दुख हुआ कि निकोले उसके अभिप्राय को पूरी तरह नहीं समझ सका। निकोले अपनी जगह से उठा और हँसकर बोला—'यदि आप चाहेंगी तो वह काम भी आपको मिल सकता है।'

उसके मन में तुरत यह भाव उठा—'मैं पावेल की कुछ न कुछ सहायता कर देती थी। संभव है अब भी मैं कुछ सहायता कर सकूँ। सत्य के प्रचार के लिये जितने ही लोग आवेंगे उतना ही उसका प्रचार होगा और लोगों में उतना ही अधिक प्रकाश फैलेगा।'

पर इससे उसे संतोष नहीं हुआ। उसने देखा कि उसके इन शब्दों से उसके हृदय का वास्तविक भाव व्यक्त नहीं हो सका। उसने धीरे से पूछा—'मैं क्या कर सकती हूँ ?'

निकोले क्षण भर चिंतामग्न रहा। फिर धीरे-धीरे वह माँ को क्रांति का उद्देश्य समझाने लगा। अन्य बातों के साथ-साथ उसने कहा—'पावेल से भेंट करने जेल में जाना तो उससे उस

किसान का नाम पूछ लेना जो देहातों के लिये समाचार-पत्र माँग रहा था।'

माँ ने प्रसन्न होकर कहा—'मैं उसका नाम और पूरा पता भी जानती हूँ। अखबारों को मेरे हवाले करो मैं पहुँचा आऊँगी। मैं उन्हें तलाश लूँगी और तुम्हारे कहने के अनुसार सब काम संपन्न कर दूँगी। किसी को संदेह भी नहीं हो सकता कि मेरे पास वर्जित पुस्तकें हैं। मैं ही कारखाने में परचे बाँट आया करती थी। इस काम के करने के सैकड़ों तरीके जानती हूँ।'

वह बैठी-बैठी कल्पना करने लगी कि वह देहातों में पुस्तकें किस प्रकार पहुँचावेगी। कंधे पर कागजों का बोरा लादकर और हाथ में डंडा लेकर वह किस प्रकार देहातों और जंगलों में घूमेगी? वह बोली—'निकोले! जाओ जल्दी करो! सब सामान तैयारकर मेरे पास लाओ ताकि मैं भी आंदोलन में सहायता कर सकूँ। मैं हर जगह जाऊँगी, गर्मी-सर्दी की कुछ परवाह नहीं करूँगी, इस सत्य-ज्ञान के प्रचार के लिये मैं मृत्यु के मुँह में जाने से भी नहीं डरूँगी। मुझ सरीखी जीर्ण-काय और बूढ़ी औरत के लिये इससे उत्तम और क्या हो सकता है? भ्रमणशील जीवन सबसे उत्तम होता है। देश-विदेश घूमने को मिलता है। न तो किसी से दोस्ती और न किसी से दुश्मनी, न किसी का लेना और न किसी का देना। क्योंकि सिवा एक टुकड़ा रोटी के उसे दूसरी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती। बिना द्वेष और मत्सर के वह देश-विदेश घूमा करता है। मैं भी उसी तरह गाँव-गाँव घूमूँगी

और पावेल तथा नखोदका के पास तक पहुँच जाऊँगी।

पर जिस वक्त उसे यह ख्याल आया कि बिना घर-द्वार के वह भगवान के नाम पर द्वार-द्वार भिक्षा माँगती फिरेगी तो उसका जी दुखी हो गया।

निकोले ने स्नेहभरी दृष्टि से माँ की ओर देखा और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोला—'बड़ा ही भयानक काम आप अपने हाथ में लेने जा रही हैं। खूब गौर से विचार कर लीजिए।'

माँ—मुझे कुछ सोचना-विचारना नहीं है। यही तो मेरे जीवन की उपयोगिता है अन्यथा मुझे जीने की क्या आवश्यकता है? पेड़ उगता है। बड़ा होकर अपनी छाया से लोगों को सुख पहुँचाता है। सूखने पर काटा जाता है और उसे जलाकर लोग शीत का निवारण करते हैं। जब मूक वृक्ष लोगों का इतना उपकार कर सकता है तो क्या मेरे समान मनुष्य कुछ नहीं कर सकता? हमलोगों के जिगर के टुकड़े अपनी स्वतंत्रता बेंचकर अपनी जान हथेली पर रखकर निर्मोह होकर अपनी जान गँवाने के लिये सदा प्रस्तुत रहते हैं और माँ का हृदय रखती हुई मैं चुपचाप बैठी रहूँ?

इस समय मजूरों का लाल झंडा हाथ में लिए हुए जुलूस के आगे-आगे चलता हुआ पावेल का चित्र उसकी आँखों के सामने खड़ा हो गया। उसने कहा—'जब मेरा एकमात्र पुत्र सत्य पर अपने प्राण तक निछावर करने के लिये उद्यत है तब मैं चुप और शांत क्यों बैठी रहूँ। अब मुझे स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि

वह सत्य के लिये ही इतनी यातनाएँ भोग रहा है। पाँच वर्ष से मैं अनवरत उनलोगों के अध्यवसाय को देखती चली आ रही हूँ। मेरा हृदय भी उसी सत्य-ज्ञान की ज्योति से प्रकाशमान हो गया है। अब मैं तुमलोगों के कार्य को भलीभाँति समझने लगी हूँ। तुमलोग इस तथ्य के लिये कितना बोझ अपने कंधे पर उठा रहे हो। इमें भी उसमें शामिल कर लो ताकि मैं भी पावेल तथा उसके अन्य साथियों की सहायता कर सकूँ।'

निकोले का चेहरा सुस्त पड़ गया। उसने लंबी साँस ली और माँ की ओर सदय-दृष्टि से देखता हुआ बोला—'आज पहले पहल मुझे इस तरह की बातें सुनने को मिली हैं।'

लाचारी की अवस्था दिखाते हुए माँ ने कहा—'मुझे उपयुक्त शब्द ही नहीं मिल रहे हैं कि मैं अपने हृदय के सच्चे भाव को व्यक्त कर सकूँ।'

इतना कहकर वह अपनी जगह से उठ खड़ी हुई। उसके हृदय में जो शक्ति दोलायमान थी उसने उसे पागल बना दिया था और उसी के प्रभाव से प्रभावान्वित होकर उसने घृणा के साथ कहा—'तब तुम देखते कि माँ के हृदय पर चोट करने का क्या फल होता है। जिस तरह से उनलोगों ने ईसामसीह का अंत किया था उसी तरह हमलोगों के हृदय के टुकड़ों का अंत कर रहे हैं। पर इसका फल मैं उन्हें तत्काल चखा देती, उनके जीवन को यातनामय और अशांत बना देती और कितनों को रुला देती।'

निकोले अपनी जगह से उठा। उसके हाथ काँप रहे थे। अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उसने नरमी के साथ कहा—'किसी दिन उन्हें तुम्हारी शक्ति का परिचय अवश्य मिलेगा।'

इसके बाद वह घड़ी की ओर देखकर बोला—'तब यह तै रहा कि तुम यहाँ से मेरे शहरवाले डेरे पर चली चलोगी।'

माँ ने चुपचाप इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

निकोले—यह काम जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा है। मैं तुम्हारे लिये बहुत ही चिंतित रहूँगा।

उसने निकोले की ओर विस्मय से देखा और अपने मन में सोचने लगी—'यह मेरे लिए चिंतित क्यों होगा? मेरा इससे संबंध ही क्या है?'

काली जाकेट पहने और सिर नीचा किए निकोले उसके सामने खड़ा था। उसने पूछा—'आपके पास खर्च वगैरह के लिये कुछ है कि नहीं?'

माँ—कुछ भी नहीं।

निकोले ने जेब से थैली निकाली, और उसमें-से कुछ रुपये बाहर किए और माँ को देकर बोला—'इन रुपयों को अपने पास रखिए।'

माँ ने मुस्कुराकर कहा—'तुमलोगों की प्रवृत्ति एकदम निराली दिखाई देती है। रुपयों का भी तुमलोगों के समक्ष कोई मूल्य नहीं है। रुपयों के लिये लोग सब कुछ करते देखे जाते हैं। इसके लिये लोग अपनी आत्मा का हनन तक कर डालते हैं।

पर तुमलोगों के समक्ष यह बेकार कागज के टुकड़े अथवा धातु की गोली के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मालूम होता है कि लोगों की सहायता के लिये ही तुमलोग इन्हें अपने पास रखते हो।'

निकोले चुपचाप हँसने लगा। बोला—'रुपया बड़ी भयानक वस्तु है। इसे रखना, लेना और देना तीनों भयानक हैं।'

इतना कहकर उसने माँ का हाथ अपने हाथ में लेकर पूछा-'आप शीघ्र आने का यत्न करेंगी ?'

इसके बाद वह चला गया।

उसके चौथे दिन माँ निकोले के मकान पर जाने की तैयारी करने लगी। गाड़ी पर सामान लादकर जिस समय वह चली उसका हृदय विषाद से भर गया। उसने अपने मन में कहा—'इसी घर में मेरी इतनी उम्र बीती, जवानी के विपत्ति के दिन इसी में काटे, उस निरुत्साहमय जीवन का यहीं अंत हुआ और इस उत्साहमय जीवन का आरंभ भी यहीं हुआ; आज तक मैं यहीं नित्य नये प्रवाह में बहती आ रही थी परंतु आज मैं इसे सदा के लिये छोड़ रही हूँ।'

सामने कारखाने का विशाल भवन अपनी भयानकता और कठोरता स्थापित करते हुए खड़ा था। उसका धुआँ आकाश में इस प्रकार फैल रहा था मानों मकरी जाला बिछा रही हो। उसके बगल में दलदल से सटी हुई मजूरों की झोपड़ियाँ थी। उनकी मनहूस दशा देखकर यही ख्याल आता था मानों एक दूसरे की दयनीय दशा देखकर वे विषण्ण हैं। उनके सामने ही गाँव का

गिरजा था। उसका विशाल भवन भी कारखाने के भवन का मुकाबला करके मानो यह बतला रहा था कि हम तुम दोनों सगे भाई हैं। आज माँ को ऐसा मालूम हुआ कि कारखाने का भवन गिरजा के भवन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर रहा है।

माँ ने ठंढी साँस ली। वह उदास हो गई।

गाड़ी हाँकते-हाँकते गाड़ीवान ने कहा—'माँ, चाहे आप कहीं जायँ पर आवश्यकताएँ आपका पीछा नहीं छोड़ सकतीं। दरिद्रता से बचकर जाने के लिये रास्ता ही नहीं है। सभी रास्ते तो उसी तरफ से होकर जाते हैं।'

माँ चुप रही। गाड़ीवान भी चुप हो गया। गाड़ी गड़गड़ाती हुई अपने रास्ते पर चलने लगी।

दूसरा परिच्छेद

निकोले शहर के एक कोने में एक पुराने दो मंजिले मकान में रहता था। सामने छोटा-सा बाग था। बगल में झाड़ियाँ थीं जिससे कमरों का सौंदर्य बढ़ गया था। स्थान एकांत और सूना था। कमरों में आलमारियों से भरी पुस्तकें थीं और दीवालों पर वीर पुरुषों की तस्वीरें लटक रही थीं।

निकोले ने माँ को एक छोटा कमरा दिखाकर पूछा—'इस कमरे में आप आराम से रह सकेंगी?'

यह कमरा भी किताबों से सजाया हुआ था। और खूब प्रकाशमान था।

माँ—मैं रसोई-घर में ही रहना अधिक पसंद करूँगी। रसोई-घर मेरे लिए पर्याप्त है।

इससे निकोले को दुख हुआ। वह माँ से अनुनय-विनय करने लगा। अंत में माँ ने उस कमरे में रहना स्वीकार कर लिया। इससे उसे बहुत अधिक संतोष हुआ।

वह स्थान बड़ा ही प्रभावोत्पादक था। स्वच्छंदता और स्वाधीनता का पूर्ण राज्य था पर उन सौम्य, धीर और गंभीर चित्तों के समक्ष जोर से बोलने का साहस नहीं होता था क्योंकि भय था कि इससे उनकी शांति भंग हो जायगी।

फर्श और खिड़की पर के गमलों को देखकर माँ ने कहा—'इन्हें सींचने की आवश्यकता है।'

निकोले—मुझे इनसे स्नेह तो बहुत अधिक है पर क्या करूँ समय ही नहीं मिलता कि इनकी देख-भाल कर सकूँ।

माँ ने देखा कि निकोले बड़ी सावधानी के साथ चलता-फिरता है मानों वह इस स्थान के लिये एकदम नया था और यहाँ की वस्तुओं से उसका किसी तरह का लगाव न था। हर वस्तु को वह उठाता, अपना चश्मा सम्हालता, आँखों को सचेष्ट करता और गौर से उसकी परीक्षा करता। मालूम होता था कि वह भी इस मकान में आज ही आया है और माँ की भाँति अजनबी है। इससे माँ को किसी तरह की असुविधा नहीं हुई। वह निकोले के साथ हरएक वस्तु को देखती-फिरती थी और उसके रहन-सहन के बारे में पूछ-ताछ करती थी। पर माँ के प्रत्येक प्रश्न

का उत्तर अधूरा रहता था। वह अपनी दुर्बलता का अनुभव करता था पर वह हर तरह से लाचार था।

गमलों में पानी देने के बाद माँ ने घर की अन्य वस्तुओं को सम्हालकर रखा और तब चूल्हे की ओर गई। उसे देखकर बोली—'यह भी बेमरम्मत पड़ा है।'

निकोले ने चूल्हे की परीक्षा की और माँ की ओर गौर से देखा। उसके इस देखने में ऐसा भाव भरा था कि माँ हँसी न रोक सकी।

रात को बिस्तरे पर पड़ी माँ गए दिन पर विचार करने लगी। वह एकाएक चौंककर उठ बैठी और चारों ओर विस्मय के साथ देखने लगी। उसके जीवन में यह प्रथम अवसर था कि उसे दूसरे के घर में रहना पड़ा था पर वह लेशमात्र भी असुविधा का अनुभव नहीं कर रही थी। उसका हृदय निकोले के लिये दयार्द्र था। अपने यत्न भर वह उसका जीवन सुखमय बना देना चाहती थी। उसकी घबराहट और अज्ञानता का माँ के हृदय पर गहरा असर पड़ा। वह मुस्कुराकर उसासें लेने लगी। इसी समय उसे पावेल और नखोदका का स्मरण हो आया। फीडिया मेजिन का घोर गर्जन उसकी कानों में गूँजने लगा और पहली मई की समस्त घटना उसकी आँखों के सामने नाचने लगी। पर आज उनका रंग रूप एकदम नया था, वे नये भाव लेकर उपस्थित हुए थे। जैसा वह जमाना था उस समय का न्याय भी वैसा ही अनोखा था। उनसे उसका मस्तक नीचा नहीं हुआ बल्कि उसका हृदय-वेदना से

भर गया। और उसकी आँखें खुलने लगीं और साहस बढ़ने लगा।

शहर का कोलाहल खिड़की से होकर कमरे में आ रहा था। उसकी ध्वनि वह स्पष्ट सुन रही थी। उसने अपने मन में कहा—'हमारे नवयुवक निडर होकर आगे बढ़ते जाते हैं।'

प्रातःकाल उठकर उसने सबसे पहले चूल्हा साफ किया। आग जलाकर चाय के लिये उसपर पानी चढ़ा दिया और बैठकर निकोले के उठने की प्रतीक्षा करने लगी। थोड़ी देर के बाद उसने निकोले के खाँसने का शब्द सुना और दूसरे ही क्षण वह रसोई-घर के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। वह एक हाथ में ग्लास लिए था और दूसरा हाथ मुँह पर रखे हुए था। वह माँ को प्रणामकर नित्य-कर्म में लग गया। मुँह-हाथ धोकर जिस समय वह चाय पीने बैठा उस समय उसने माँ से कहा—'मुझे बड़ी बुरी नौकरी मिली है। पर वहाँ मुझे किसानों की बरबादी का असली रूप देखने को मिलता है।'

इतना कहकर वह हँसा और अपराधी की भाँति फिर बोला—'संक्षेप में यों समझ लीजिए कि मैं देखता हूँ कि लोग भूखों मर रहे हैं और मौत की गोद में सोने जा रहे हैं। संतति पीड़ित, दुर्बल और कमजोर होती जा रही है पतझड़ की पत्तियों की भाँति वे पीले, तेजहीन और निःसत्व होते जा रहे हैं और असमय में सूखकर गिर पड़ते हैं। हमलोग यह सब अपनी आँखों से देखते हैं। इस दुर्दशा और हीनता का हम कारण भी

भलीभाँति जानते हैं और इसीलिए हमलोगों को वेतन मिलता है। केवल निरीक्षण करना ही हमलोगों का काम है।

माँ—क्या तुम छात्र हो ?

निकोले इवानोविच—नहीं, मैं स्कूल-मास्टर हूँ। मेरे पिता पटका में किसी मिल के निरीक्षक थे। मैंने स्कूल-मास्टरी कर ली, पर किसानों को पढ़ने के लिये पुस्तकें दिया करता था इसलिए मुझे कैद कर लिया गया। छुटकारा पाने के बाद मैंने किताब की दूकान में नौकरी कर ली पर मेरी पुरानी आदत ज्यों-की-त्यों वर्तमान थी इसलिए मुझे दुबारा जेल जाना पड़ा। इस बार मुझे आर्येगल में निर्वासन का दंड मिला। वहाँ मुझसे गवर्नर से झगड़ा हो गया। इसलिए अधिकारियों ने मुझे क्षीर-सागर के किनारे पर भेज दिया और मैं वहाँ पाँच वर्ष कैद रहा।

वह पूर्ण शांति के साथ बातें कर रहा था। माँ ने इस तरह के अनेकों किस्से सुने थे पर उसकी समझ में यह नहीं आता था कि इतना सताए जाने पर भी वेलोग इस प्रकार शांत क्यों रहते हैं, जालिम का विरोध क्यों नहीं करते और इन यातनाओं को अनिवार्य क्यों समझते रहते हैं ?

इतने में निकोले इवानोविच ने कहा—'आज मेरी बहन भी आनेवाली है।'

माँ—क्या वह विवाहिता हैं ?

निकोले इवानोविच—वह विधवा है। उसके पति साइबेरिया में निर्वासित कर दिए गए थे। वह वहाँ से भाग निकले लेकिन

मार्ग में ही उन्हें भयानक शीतल लग गई और दो वर्ष हुए वे विदेश में मर गए।

माँ—तुम्हारी बहन तुमसे छोटी है?

निकोले इवानोविच—मुझसे ६ वर्ष बड़ी है। मैं उसका बहुत ही ऋणी हूँ। आपसे उसका परिचय हो ही जायगा। यह पियानो और समस्त पुस्तकें उसी की हैं।

माँ—वह रहती कहाँ है?

निकोले इवानोविच ने मुस्कुराकर कहा–'हर जगह। जहाँ कहीं वीर और उच्च आत्मा की आवश्यकता पड़ेगी आप उसे वहाँ मौजूद पावेंगी।'

माँ—इस आंदोलन में भी शामिल है?

निकोले इवानोविच—अवश्य!

इसके बाद निकोले इवानोविच काम पर चला गया और माँ अकेली रह गई। वह इस आंदोलन पर विचार करने लगी जिसके लिये लोग दिन-रात अनवरत परिश्रम और अध्यवसाय कर रहे हैं। जब वह उनलोगों पर विचार करने लगती तो वह अपने को एक दृढ़ पर्वत के सामने पाती जिसका भविष्य एकदम अंधकार में था।

दोपहर को एक लंबी और तगड़ी औरत आई। मकान के अंदर प्रवेश करते ही वह जमीन पर एक बड़ा चमड़े का बेग पटक कर माँ के पास दौड़कर गई और प्रणाम करके पूछा—'आप ही पावेल की माता हैं?'

उस रमणी की तड़क-भड़क देखकर माँ घबरा-सी गईं। बोलीं—'हाँ, मैं ही पावेल की माँ हूँ।'

शीशे के पास खड़े होकर उसने कहा—'आपको देखते ही मैंने अनुमान कर लिया था। पावेल से मेरा बहुत पुराना परिचय है। उन्होंने अनेक बार आपकी चर्चा की थी।'

उसकी आवाज नर्म और धीमी थी पर उसके शरीर में स्फूर्त्ति थी। उसकी विशाल आखों में चमक और तेज था पर उसके गाल बैठ गए थे और सिर के बाल सफेद हो गए थे। उसने माँ से कहा—'मुझे बड़ी भूख लगी है। क्या कुछ खाने को दीजिएगा?'

माँ—मैं अभी चाय और जलपान तैयार कर देती हूँ।

चाय बनाने का बर्तन ठीक करते हुए माँ ने धीरे से पूछा—'क्या पावेल ने आपसे मेरी चर्चा की थी?'

रमणी—अनेक बार।

उसने जेब से सिगरेट निकाला और उसे जलाते हुए बोली—'पावेल की गिरफ्तारी से आप बहुत ही खिन्न होंगी?'

माँ ने केवल मुस्कुरा दिया। उसकी सारी घबराहट दूर हो गई। वह शांति के साथ सोचने लगी—यह मेरे और पावेल के बारे में बातें करती है। बोली—'आपने पूछा है कि मैं दुखी हूँ। अवश्य। पर थोड़े दिन बाद अधिक दुख उठाना पड़ता। इस वक्त तो इस बात का संतोष है कि न तो वही अकेला है और न मैं ही अकेली हूँ। आपका नाम क्या है?'

रमणी—मेरा नाम सोफिया है।

सोफिया ने काम की बात छेड़ दी, बोली—'सबसे जरूरी बात यह है कि उनलोगों को जेल में अधिक दिन तक नहीं रहना चाहिए। जिस तरह हो उनलोगों का विचार शीघ्र होना चाहिए क्योंकि निर्वासन के बाद हमलोग पावेल को साइबेरिया से भगा लावेंगे। वहाँ उनका कोई काम नहीं है पर यहाँ उनके बिना काम नहीं चल सकता।'

सोफिया की बातों पर माँ को विश्वास नहीं हुआ। उसने इधर-उधर ताककर एक ओर सिगरेट फेंक दिया। सिगरेट गमले में जाकर गिर पड़ा।

माँ ने अचानक कहा—'इस तरह जले सिगरेट का टुकड़ा गमलों में फेंकने से फूल खराब हो जायँगे।'

सोफिया—मैं बहुत ही लज्जित हूँ। निकोले इवानोविच भी मुझे बराबर चेतावनी दिया करता है।

उसने जले टुकड़े को गमले में-से उठाकर बाहर फेंक दिया।

माँ शर्मिंदा हो गई। अपराधी की भाँति बोली—'मुझे क्षमा कीजिएगा। यह बात अनायास मेरे मुँह से निकल आई। नहीं तो मैं आपको क्या सिखला सकती हूँ?'

सोफिया ने गर्दन हिलाते हुए कहा—'क्यों? आपको पूरा अधिकार है कि मेरी कमजोरियों को दूर कर दें। कितनी बुरी बात थी कि सब कुछ जानती हुई भी मैं बराबर भूल जाया करती थी। सिगरेट के टुकड़ों को इधर-उधर फेंक देना और इस तरह

समूचे स्थान को गंदा बना देना कितनी बुरी आदत है। एक स्त्री के लिये तो यह और भी बुरा है। मकान को साफ रखने में श्रम लगता है और हर तरह के श्रम का आदर होना चाहिए।

माँ ने चाय लाकर सामने रखा। सोफिया ने धन्यवाद देते हुए पूछा—'एक ही प्याला क्यों? क्या आप न पिएँगी?'

उसने माँ के कंधे पर हाथ रखा और अपनी ओर उसे खींचकर गौर से उसे देखा और विस्मय के साथ बोली—'आप इस तरह घबराई हुई क्यों दिखलाई देती हैं?'

माँ ने हँसकर कहा—'सिगरेट के टुकड़ों को इधर-उधर फेंकने के लिये मैंने आपको टोका था, इसीलिए कदाचित कुछ घबराहट के चिह्न आपको दिखाई देते हों। मैं कल ही इस घर में आई पर मेरा व्यवहार इस तरह का हुआ मानों मैं चिरकाल से यहाँ रहती होऊँ और आपके साथ बहुत दिनों से परिचित होऊँ। न तो मुझे किसी बात का संकोच है और न भय; बल्कि मैं दोषारोपण तक करने लग गई हूँ।'

सोफिया—यही तो चाहिए।

माँ—मैं विचित्र बवंडर में पड़ गई हूँ। मुझे अपनी अवस्था पर विस्मय हो रहा है। कुछ दिन पहले मेरी यह हालत थी कि जब तक किसी के साथ मेरा पूरा परिचय न हो जाय मैं उससे बातें तक नहीं कर सकती थी पर अब मेरे हृदय की वह दशा नहीं रही। अब तो मेरे मुँह से ऐसी-ऐसी बातें निकल आती हैं जिनकी

मैं कल्पना तक नहीं कर सकती और अब मैं बेहिसाब बक भी जाती हूँ।

सोफिया ने दूसरा सिगरेट जलाया और माँ की ओर सदय दृष्टि से देखा!

माँ ने पूछा—'आप अभी पावेल को भगाने की चर्चा कर रही थीं। पर इस तरह भगोड़ बनकर वह रहेगा कहाँ?

सोफिया—यह कोई कठिन बात है! पावेल भी उसी तरह रहेंगे जैसे सैकड़ों अनेक भगोड़ रहते हैं। अभी रास्ते में ही मुझ से एक भगोड़ से मुलाकात हुई थी। मैं उसे पहुँचाकर आ रही हूँ। एक दूसरा भगोड़ दक्षिण में काम करता था। उसे पाँच वर्ष निर्वासन का दंड मिला था पर तीन मास के बाद ही वह वहाँ से भाग आया। यही कारण है कि मैं इस तड़क-भड़क के साथ रहती हूँ। मुझे देखकर आपने अनुमान किया होगा कि मैं सदा इसी पोशाक में रहती हूँ। मैं तो यह कीमती पोशाक बरदास्त तक नहीं कर सकती। मनुष्य प्रकृति से सादगी पसंद करता है और उसका पहनावा भी सादा होना चाहिए।

माँ ने उसकी ओर गौर से देखा, हँसी, और गंभीर हो-कर बोली—'मुझे मालूम होता है कि पहली मई ने मेरी प्रकृति एकदम बदल दी है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं एक साथ ही दो नाव पर सवार हो रही हूँ इससे मैं विपन्न हूँ। अभी मेरे सामने प्रकाश है, दूसरे ही क्षण मेरे हृदय में अंधकार छा जाता है। तुम एक रमणी हो। तुमने इस आंदोलन में भाग लियाँ है।

पावेल से तुम्हारा परिचय है। तुम उसका आदर करती हो। मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ।'

सोफिया—क्या इसके लिये तुम्हारी बड़ाई न की जाय।

माँ—मुझे इसका कोई श्रेय नहीं है। जैसा मैंने अभी कहा है सब बातें मुझे अतीव सहज प्रतीत होती हैं पर इसके साथ ही इसकी सरलता को मैं ही नहीं समझ सकती। मैं शांत हो जाती हूँ। दूसरे ही क्षण मेरी वीरता ही मुझे डरावनी लगने लगती है। मैं अपने जीवन भर डरती आई हूँ पर अब जब मेरे चारों ओर भय और आतंक का राज्य है मुझे भय नहीं लगता है। इन सबका क्या कारण है? मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

इतना कहकर वह इस प्रकार चुप हो गई मानों अपने भावों को प्रकट करने के लिये उसे शब्द न मिलते हों। सोफिया ने गंभीर होकर माँ की ओर देखा और चुप हो रही पर यह देखकर कि शब्दों के अभाव में माँ अपने भाव को व्यक्त न कर सकने के कारण विपन्न है उसने स्वयं कहना शुरू किया—'धीरे-धीरे आप सभी बातें समझने लगेंगी। किसी मनुष्य में आत्म-विश्वास और दृढ़ता तभी आती है जब वह अपना कोई निश्चित ध्येय बना लेता है और अपनी समस्त आशा और विश्वास उसी पर अर्पित कर देता है। संसार में ऐसी वस्तुएँ भी मौजूद हैं और इस तरह के कारण और विश्वास के उदाहरण भी मौजूद हैं। यह तो हुआ पर हमें अब यह सब लिबास उतारकर अलग रख देना चाहिए।'

इतना कहकर उसने सिर हिलाया। सिगरेट को तश्तरी में रखकर उठ खड़ी हुई और मुस्कुराते हुए आगे बढ़ी। उसके सुनहले बाल उसकी पीठ और गर्दन पर बिखरे हुए थे। माँ उसके पीछे-पीछे चली। वह विस्मय के साथ इधर-उधर देखती जाती थी। उसके विचार की प्रगति रुक गई थी और विमूढ़ की भाँति वह चुपचाप तश्तरियाँ हटाने लगी।

चार बजे निकोले आया। सब लोग भोजन करने बैठे। सोफिया ने उस भगोड़ का किस्सा आरंभ किया। उसने हँसते-हँसते सब दास्तान कह डाला कि उससे किस तरह भेंट हुई, कहाँ उसने उसे छिपाया, गुप्तचरों का आतंक किस प्रकार छाया हुआ था और वह भगोड़ किस प्रकार विदूषक की भाँति सबकी आँखें बचाकर निकल गया। उस किस्से को वह इस अभिमान के साथ कह रही थी जैसे एक मजूर कोई काम पूरा कर के शेखी मारता है।

इस वक्त उसने दूसरा कपड़ा पहना था। इस पोशाक में वह अधिक लंबी और सुंदर दिखाई देती थी और उसकी चाल में वह उतावलापन नहीं था।

भोजन के बाद निकोले इवानोविच ने कहा—'सोफिया, एक काम और हाथ में लेना होगा। तुम्हें स्मरण होगा कि देहातों के लिये अखबार निकालने की व्यवस्था हमलोगों ने की थी। पर इन गिरफ्तारियों के कारण देहातियों से हमलोगों के संबंध का सिलसिला ही टूट गया था। माँ निलोना उस आदमी का पता

जानती हैं जो देहातों में अखबारों के प्रचार का भार लेना चाहता था। तुम इनके साथ जाओ; सब काम यथासंभव शीघ्र संपन्न होना चाहिए।'

सोफिया—अच्छी बात है। (माँ से) आप चलने के लिये तैयार हैं?

निलोना—हाँ, मैं तैयार हूँ।

सोफिया—यहाँ से कितनी दूर है?

निलोना—करीब पचास मील।

सोफिया—कोई हर्ज नहीं। मैं जरा पियानो बजाना चाहती हूँ। आपको गाना-बजाना पसंद है?

निलोना—मेरी चिंता न करो। समझ लो कि मैं यहाँ नहीं हूँ।

सोफिया—'खिड़की बंद कर दीजिए।' इतना कहकर वह पियानो के पास चली गई और उसे बजाने लगी। संगीत की मधुर ध्वनि से कमरा गूँज उठा। आरंभ में तो माँ की समझ में कुछ नहीं आया पर धीरे-धीरे उसका असर उसके हृदय पर पड़ने लगा और वह इस प्रकार तन्मय हो गई कि अपनी सुध-बुध तक भूल गई।

पर इस संगीत के साथ उसकी स्मृति में एक अति प्राचीन दुखद घटना जागृत हो उठी। अनेक वर्षों की बात थी, उस दिन उसका पति नशे में चूर बड़ी रात को घर लौटा था। उसने उसका हाथ पकड़कर विस्तरे से खींचकर जमीन पर पटक दिया था और

ठोकर मारकर बोला था—'निकल जा मेरे घर से। मैं तुझसे तंग आ गया। तेरा यहाँ कोई काम नहीं है।'

अपने बचाव के लिये उसने अपने अबोध बालक को उठा लिया था और जमीन पर लेटकर उससे अपना शरीर ढँक लिया था। बच्चा भय से चिल्लाने लगा था।

उसके पति ने उसी तरह गरजकर कहा था—'निलक जा यहाँ से।'

वह अपनी जगह से उठी, रसोई-घर में गई, जाकेट पहना, बच्चे को ओढ़ने में लपेटा और बिना कुछ बोले चुपचाप नंगे पैर घर से बाहर हो गई थी। मई का महीना था। रात मनोहर थी। सड़कों की धूल से उसका पैर भर गया था। बच्चा उसकी गोद में चल्ला-चिल्लाकर रो रहा था। उसने बच्चे के मुँह में अपना स्तन डाल दिया था और उसको चुमकारते हुए आगे बढ़ी थी।

सबेरा होने लगा था। उसे शर्म मालूम हुई कि कहीं कोई घर से बाहर निकलकर उसे उसी अर्धनग्न दशा में देख न ले। वह सीधे दलदल की तरफ चली गई थी और किसी झाड़ी के नीचे जा छिपी थी। वह वहीं बहुत देर तक चुपचाप बैठी रही और रात्रि की निस्तब्धता का पर्यवेक्षण करती रही। वह करुणा भरे शब्दों में मंद स्वर से गीत गाकर बच्चे को सुलाती थी और अपने भग्न हृदय को शांत करती थी।

इसी समय एक चिड़िया उसके सिर पर से उड़कर चली गई। वह चकित होकर वहाँ से उठी और अपने पति के अत्याचारों

को सहन करने के लिये दृढ़ होकर शीत से काँपती घर लौटी थी।

इसी समय सोफिया ने एक सुरीली तान बजाकर पियानों से हाथ हटा लिया और अपने भाई से पूछने लगी—'तुम्हें यह गाना पसंद आया ?'

निकोले इवानोविच ने सिर हिलाकर कहा—'खूब !'

सोफिया ने माँ की ओर देखा पर कुछ कहा नहीं।

आराम-कुर्सी के सहारे लेटते हुए निकोले इवानोविच ने कहा—'लोगों का मत है कि संगीत एकाग्र होकर सुनना चाहिए। पर मैं वैसा नहीं कर सकता।'

दूसरी तान बजाते हुए सोफिया ने कहा—'मेरा भी यही हाल है।'

निकोले—जिस समय मैं संगीत की मधुर ध्वनि सुनने लगता हूँ मुझे मालूम होता है कि लोग प्रकृति से प्रश्न कर रहे हैं। मूक प्रकृति बिना कुछ उत्तर दिए अपना काम करती जा रही है। इससे लोग क्षुब्ध हैं, आवेश में दाँत पीस रहे हैं और चिल्ला रहे हैं पर प्रकृति की मौनता कह रही है कि मैं कुछ नहीं जानती।

माँ चुपचाप उसकी बातें सुनती जाती थी। न तो वह कुछ समझती थी और न समझने का यत्न करती थी। उस अतीत स्मृति की याद से उसका कलेजा धड़कने लगा और वह संगीत के लिये अधिक अधीर हो उठी। साथ-ही-साथ उसके हृदय में यह भाव भी स्पष्ट उठ रहा था—ये दोनों भाई-बहिन किस स्नेह और शांति के साथ रहते हैं। इनके पास पुस्तकें हैं और विनोद

की सामग्री है। न तो ये लोग शराब ही पीते हैं, न आपस में बात-बात पर लड़ते-भिड़ते हैं, न गाली-गुफ्ता बकते हैं और न एक दूसरे को अपमानित करने का ही यत्न करते हैं। औरों के मुकाबले इन लोगों का जीवन कितना शांत और सुखद है।

सोफिया ने फिर सिगरेट जलाया। उसे सिगरेट पीने का बहुत अभ्यास था। सिगरेट के धुएँ को अपने चारों ओर फैलाते हुए उसने कहा—'यह गीत कोस्ते (सोफिया के पति) को बहुत ही अधिक पसंद था। उन्हें संगीत से विशेष प्रेम था। जिस समय मैं बजाने लगती वह आनंद में विभोर हो जाते और मैं गद्‌गद् हो उठती। संगीत का वे ऐसा रूपक बाँधते कि लोग चकित हो जाते। ऐसा सजीव हृदय उन्हें मिला था। हर बात के लिये उनमें तन्मयता थी।'

माँ ने अपने मन में कहा—'एक यह है कि अपने पति की सुखद स्मृति का स्मरण कर रही है।'

बाजे पर धीरे-धीरे अँगुली फेरते हुए सोफिया ने मंद स्वर से कहा—'मुझे उनसे कितना सुख था। जिंदादिली तो उनमें कूट-कूटकर भरी थी। सदा हँसते रहते थे और बालकों की-सी प्रकृति रखते थे।'

माँ ने अपने मन में कहा—'लड़कों की-सी' इतना कहकर उसने अपना सिर इस तरह हिलाया मानों उसकी प्रकृति की किसी से तुलना की हो।

निकोले इवानोविच ने दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा—'उनकी आत्मा से सदा संगीत की मधुर ध्वनि निकलती रहती थी।'

सोफिया ने सिगरेट फेंक दिया और फिर पियानो बजाने लगी।

उस सरल गीत को सुनकर माँ का हृदय और भी उद्विग्न हो उठा। वह उसके अतीत जीवन से बहुत कुछ मिलता-जुलता था जिसकी स्मृति उसके मर्म पर चोट कर रही थी।

सोफिया ने माँ से पूछा—'आपको मेरा बजाना पसंद आया?'

माँ ने चिढ़कर कहा—'मैंने शुरू में ही आपसे कह दिया था कि मेरी चिंता छोड़ दीजिए। मैं यहाँ बैठी गीत सुनती हूँ और अपने अतीत जीवन पर विचार करती हूँ।'

सोफिया—आपको समझना चाहिए। रमणी के शोक-संतप्त हृदय को इससे बढ़कर शांति अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकती।

इतना कहकर सोफिया फिर पियानो बजाने लगी। यह विचित्र राग था। इसमें सभी रसों का समावेश था। वीभत्स से आरंभ होकर वीर और करुणा रस का दृश्य उपस्थित करता हुआ वह अंत में शांत रस में समाप्त होता था।

सोफिया देर तक यह गीत बजाती रही। माँ का हृदय अशांत हो गया। वह अधीर हो उठी। अव्यक्त भावनाएँ और विचार उसके मन में उठने और विलीन होने लगे। कभी विषाद और कभी हर्ष का उदय होता था। माँ के हृदय की विचित्र हालत थी। वह बोली—'सभी भावनाएँ हम रमणियों के हृदय में जम जाती हैं पर उन्हें व्यक्त करना कठिन है। हमलोगों के विचार चारों ओर

दौड़ा करते हैं। हमलोगों की दशा अतिशय दयनीय हो जाती है क्योंकि हमलोग सभी बातों को समझते हैं पर उन्हें व्यक्त नहीं कर सकते। कभी-कभी हमलोगों को अपने ही ऊपर क्रोध भी आने लगता है तथा जो लोग उस भाव को जागृत करते हैं उनके प्रति हमलोगों का हृदय विद्रोही बन जाता है। हमलोग उन भावनाओं को अपने हृदय से दूर करना चाहती हैं क्योंकि जीवन यातनामय हो गया है। हर तरफ से हमलोगों को धक्का खाना पड़ता है। हमलोग शांति चाहते हैं पर भावनाएँ और विचार-तरंगें आ-आकर तंग करने लगती हैं और हमलोगों से कुछ चाहती हैं।' निकोले इवानोविच और सोफिया उत्कंठा के साथ माँ की बातें सुन रहे थे। सोफिया इतनी तन्मय होगई थी कि सिगरेट का पीना तक भूल गई। माँ उसी प्रकार बोलती गई—'अब मैं कुछ कहने योग्य हूँ क्योंकि जीवन को कुछ-कुछ समझने लग गई हूँ। मैं उस समय से कुछ समझने लगी जब मुझे तुलना करने की योग्यता हो गई। इसके पूर्व मुझे तुलना करने के लिये कोई नहीं मिलता था। हमलोगों के समय में सभी एक ही प्रकार का जीवन व्यतीत करते थे। पर अब लोगों के रहन-सहन में भिन्नता देखकर मैं उस अतीत जीवन की ओर लक्ष्य करती हूँ तो उसकी स्मृति बड़ी ही दुखद और दारुण प्रतीत होती है। पर उसका प्रतिकार ही क्या है। धीरे-धीरे मैं बहुत कुछ समझने लग गई हूँ। तुम दोनों को देखकर मुझे तुम लोगों के समस्त साथियों की याद आ जाती है जिन्हें मैंने एकबार

भी देखा है । संभव है मैं सभी बातों को ठीक-ठीक व्यक्त न कर सकती होऊँ पर इससे कोई विशेष क्षति नहीं क्योंकि आपलोग सभी बातें समझते हैं । मैं तो अपनी बात कर रही हूँ । आपलोगों ने मुझे अपने बगल में बैठा लिया । आपलोग मुझसे कुछ चाहते नहीं; आपलोग मेरा उपयोग नहीं कर सकते । आपलोगों को मैं किसी तरह का सुख नहीं दे सकती । पर इससे मेरे हृदय का दिन-दिन विकास होता जा रहा है, वह उदार होता जा रहा है और मैं सबका कल्याण चाहती हूँ । इसके लिए मैं आपलोगों की अतिशय कृतज्ञ हूँ ।'

इतना कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू भर आए और गला रुँध गया । किसी तरह अपने को सम्हालकर उसने कहा—'मैं अपना हृदय खोलकर आपलोगों के सामने रख देना चाहती हूँ । आपलोग देखें कि मेरे हृदय में आपलोगों के कल्याण की कामना का निर्मल स्रोत बह रहा है ।'

निकोले इवानोविच—हमलोग इसका पूर्ण अनुभव कर रहे हैं । आप तो हमलोगों के हर काम को सम्हालकर हमलोगों को छुट्टी दे देने के यत्न में हैं ।

माँ ने हँसकर मंद स्वर से कहा—'क्या आपलोग मेरी कल्पना का अनुमान कर सकते हैं ? मैंने कल्पना की थी कि मुझे अखिल संपत्ति मिल गई और मैं सब पर उसकी वर्षा कर सकती हूँ । संभव है कि यह मेरी मूर्खता हो ।

सोफिया—आपको शर्माने का कोई कारण नहीं है ।

इसके बाद माँ निकोले इवानोविच और सोफिया से अपनी विपत्ति, यातना और दुखमय जीवन का सारा किस्सा कहने लगी कि किस प्रकार उसपर अत्याचार किया जाता था और उसने किस प्रकार सब कुछ बरदाश्त किया। पर वह बीच में ही रुक गई। उसने देखा कि वह अपने मुख्य विषय से दूर होती जा रही है और अपने विषय में न कहकर दूसरे के विषय में कह रही है। वह सरल भाषा में निश्छल होकर अपने अपमान की सारी कहानी कह गई कि किस प्रकार उसका पति जरा-जरा-सी बात पर उसे पीटा करता था और वह प्रतिकार का कोई उपाय नहीं कर सकती थी।

वे दोनों भाई-बहिन एकाग्र चित्त से माँ की कथा सुन रहे थे। उन्हें विस्मय हो रहा था कि किस प्रकार यह पशु से भी बदतर अवस्था में रखी गई थी और उतने दिनों तक उसने बिना किसी आपत्ति के सब कुछ बरदाश्त किया। उन लोगों को मालूम हुआ मानों लाखों आत्माएँ उसके मुँह में बैठकर अपनी करुण कथा कह रही हैं। उसका जीवन बहुत ही तुच्छ और साधारण था पर ऐसे ही तुच्छ और साधारण जीवन बितानेवाले लाखों प्राणी मौजूद थे। उसकी कथा से उनलोगों की दृष्टि में उन तुच्छ जीवों का महत्व प्रगट होने लगा। निकोले इवानोविच टेबुल पर अपनी कुहनियों को रखकर स्थिर दृष्टि से माँ की ओर देख रहा था। सोफिया की विचित्र हालत थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह रह-रहकर काँप उठती थी।

सोफिया ने सिर लटकाकर कहा—'एक बार मुझे भी यह जीवन असह्य प्रतीत हुआ था। उस समय मैं निर्वासन का दंड भोग रही थी। मैं एक देहात में रख दी गई थी। मुझे वहाँ कोई काम नहीं मिला था। अपने शरीर के अतिरिक्त मुझे किसी दूसरी बात की चिंता भी नहीं थी। कोई उत्तम काम न होने के कारण मैंने अपनी सारी विपत्तियों का एक गट्ठर बनाया और उसका अंदाजा करने लगी। मैं अपने प्राणों से भी प्रिय पिता से लड़ पड़ी थी। मैं व्यायाम-गृह से निकाल दी गई थी। मेरा घोर अपमान किया गया था। इसके बाद मैं कैद में डाल दी गई थी, हमीलोगों के एक साथी ने मेरे साथ विश्वासघात किया था। मेरे पति गिरफ्तार कर लिए गए थे, उन्हें निर्वासन का दंड मिला था और अंत में वे मर गए। पर जब मैं तुम्हारे दुखमय जीवन को स्मरण करती हूँ तो मेरे कष्ट के दिन उनकी तुलना में एक दिन के लिये भी नहीं ठहर सकते। वर्षों तक तुम पर घोर अत्याचार किया गया। भगवान ने तुम्हें उन अत्याचारों को बरदाश्त करने की शक्ति न जाने कहाँ से दी!'

माँ ने आह भरकर कहा—'प्रतिदिन अत्याचार सहते-रहने से आदत पड़ जाती है।'

निकोले इवानोविच ने नरमी से कहा—'मेरी धारणा थी कि मुझे इस तरह के जीवन का कुछ अनुभव है पर जब मैंने आपकी जबानी आपका दास्तान सुना तो जो कुछ मैंने इस तरह के अत्या-

चारमय जीवन के संबंध में किताबों में पढ़ा था, वह तुच्छ प्रतीत होने लगा।'

इस विषय की चर्चा देर तक होती रही। कथा का प्रवाह बढ़ता गया और सभी साधारण लोगों के जीवन पर विचार होने लगा। माँ अपने अतीत जीवन की स्मृति में तल्लीन हो गई। उसे सभी अत्याचार धीरे-धीरे स्मरण होने लगे और उसने सबका सविस्तार वर्णन किया कि उसके जवानी के दिन किस प्रकार की यातनाओं में बीते थे। अंत में उसने कहा—'इस बकवाद में मुझे स्मरण ही नहीं रहा कि तुमलोगों के सोने का समय हो गया है। यदि मैं जिंदगी भर बकती रहूँ तो भी उस यातनामय जीवन की कहानी पूरी तरह बयान न कर सकूँगी।'

इसके बाद दोनों ने माँ से बिदा ली। निकोले इवानोविच ने बड़े आदर से माँ को प्रणाम किया। सोफिया माँ के साथ उसके कमरे के द्वार तक गई। बाहर ही रुककर उसने कहा—'अब आप आराम करें। आपके लिये यह बात सुखद हो।'

उसकी वाणी में सहानुभूति और आखों में करुणा थी। माँ ने सोफिया का हाथ अपने हाथ में लेकर कसकर दबाया और बोली—'आपलोग बड़े ही उदार और सहृदय हैं।'

तीसरा परिच्छेद

तीन दिन तक वही चर्चा जारी रही। माँ बराबर उन्हें अपने अतीत जीवन की कथा सुनाती रही जो उसकी सजीव स्मृति में जागृत हो उठे थे और उसे पीड़ा पहुँचा रहे थे। जितनी तत्परता और एकाग्रता के साथ दोनों भाई-बहन माँ की जीवन-गाथा सुन रहे थे उतना माँ का हृदय खुलता जाता था और अतीत जीवन की संकीर्णता लुप्त होती जाती थी।

चौथे दिन सुबह सोफिया और माँ देहाती का वेष बनाकर निकोले इवानोविच के सामने आई। दोनों फटे पुराने कपड़े पहने हुए थीं। कंधे पर बोरा और हाथ में डंडा लिए हुए थीं। इस नए पोशाक में सोफिया छोटी और रूखी प्रतीत होती थी।

निकोले इवानोविच ने बहन को बिदा देते हुए कहा—'तुम्हें देखने से मालूम होता है कि तुमने सारी उम्र मठों और मंदिरों में ही बिताई है। माँ को इनलोगों के इस सादगी के जीवन पर फिर विस्मय हुआ। घनिष्टता के कोई भी व्यवहार इनलोगों ने नहीं दिखलाए पर दोनों के हृदय में प्रेम की सरिता बह रही थी। पर जिस समाज में माँ का जीवन बीता था उसमें दिखावे का प्रेम और घनिष्टता अत्यधिक थी, पर भीतर छल-कपट और विचित्र दाँव-पेंच चलता था और भूखे कुत्ते की भाँति लोग एक दूसरे को काटने की ताक में लगे रहते थे।

निकोले इवानोविच से बिदा होकर दोनों ने देहात का रास्ता

लिया। चलते-चलते माँ ने सोफिया से पूछा—'आप थक तो नहीं गईं?'

सोफिया—आप समझती हैं कि मुझे पैदल नहीं चलना पड़ा है। यह तो मेरे लिए कोई नई बात नहीं है।

इसके बाद सोफिया ने अपने क्रांतिकारी कार्य की चर्चा छेड़ दी। उसने इस तरह कहना शुरू किया मानों वह उसके लड़कपन का खेल रहा हो। उसने कहा—'मुझे सदा बनावटी नाम रखना पड़ा है; जाली चिट्ठियाँ बनानी पड़ी हैं, गुप्तचरों से बचने के लिये बराबर वेष बदलने पड़े हैं, नगरों में वर्जित पुस्तकों का बंडल सिर पर लादकर पहुँचाना पड़ा है। निर्वासित साथियों को भगा-भगाकर विदेश पहुँचाने का यत्न करना पड़ा है। अपने घर में ही मैंने एक छापाखाना खोल रखा था। इंस्पेक्टर को उसका पता लग गया और वह तलाशी के लिये आया। एक मिनिट पहले मुझे इसकी सूचना मिली। मैंने चट-पट नौकरानी का वेष बदला और घर से बाहर हो गई। दरवाजे पर ही पुलिस-वालों से भेंट हो गई। एक हाथ में मिट्टी के तेल का टीन और दूसरे हाथ में डंडा लेकर मैं बाहर निकल गई। मेरे शरीर पर कोई ओढ़ना भी नहीं था। जाड़े का दिन था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। उसी अवस्था में मैं रात भर शहर में घूमती रही। एक बार मैं एक नए शहर में कुछ मित्रों से मिलने गई। उनके पास जाने के लिये सीढ़ी पर चढ़ रही थी कि मुझे मालूम हुआ कि उनके कमरों की तलाशी हो रही है। पीछे लौटना तो

असंभव था। इससे मैंने तुरत एक तल्ले की घंटी बजा दी और उस तल्ले के रहनेवालों के पास सीधी चली गई और सब बातें साफ-साफ कहती हुई बोली—यदि आपलोग चाहें तो मुझे पुलिस के हवाले कर सकते हैं पर मैं आपलोगों से ऐसी आशा नहीं करती। वे लोग इतने भयभीत हो गए कि रात भर उन्हें नींद नहीं आई। रह-रहकर वे लोग चौंक उठते थे मानों बाहर पुलिस खड़ी दरवाजा खटखटा रही है। पर उनलोगों ने मुझे पुलिस के हवाले नहीं किया और सबेरे पुलिसवालों के बुद्धूपन पर खूब हँसी हुई। एक बार पुलिस मेरी तलाश में थी। गुप्तचर मुझे पकड़ने के लिये छोड़े गए थे। मैंने पादरिन का लिबास पहना और उसी गुप्तचर के साथ उसके बगल में ही बैठकर गाड़ी में बहुत दूर तक सफर किया। गुप्तचर ने अपनी चातुरी की बड़ी डींग हाँकी। बात-ही-बात में उसने यह भी कहा कि मैं जिसका पीछा कर रहा हूँ वह इसी गाड़ी में दूसरे दर्जे में यात्रा कर रही है। हर स्टेशन पर उतरकर वह सब डब्बों में झाँक आता और हताश होकर मुझसे कहता—कहीं दिखाई नहीं दे रही है। मालूम होता है सो गई। वे भी परेशान हो जाते हैं। उनका जीवन हमलोगों से कहीं अधिक यातनामय है।'

माँ सोफिया की कहानी सुन-सुनकर परम प्रसन्न हो रही थी। उसके हृदय में सोफिया की प्रतिष्ठा बढ़ती जाती थी। सोफिया निश्चिंतता के साथ आगे कदम बढ़ाती जाती थी। उसके मुँह से निकलते हुए प्रत्येक शब्द की ध्वनि में शक्ति, साहस और स्वाधी-

नता का पूरा परिचय मिलता था। उसकी आँखों में जवानी का जोश भरा था। वह रह-रहकर किसी वस्तु की ओर देखती और आनंद से खिल उठती थी।

सामने खड़े साल के पेड़ों की कतार की ओर इशारा करके उसने माँ से कहा—'कैसे सुंदर पेड़ हैं!'

माँ खड़ी हो गई और पेड़ों की ओर गौर से देखने लगी। उन पेड़ों में उसे कोई विशेषता नहीं दिखाई दी। उसने हँसकर कहा—'अच्छे पेड़ हैं।'

सोफिया ने नीले आकाश की ओर सिर उठाकर देखा और माँ से कहा—'कहीं लावा चिड़िया गा रही है। क्या आप भी उसका मधुर गीत सुन रही हैं?'

वह इस प्रकार आकाश की ओर देखने लगी मानों वह सशरीर उठकर उस स्थान पर चली जाना चाहती है जहाँ यह मधुर संगीत हो रहा है। कभी-कभी वह जमीन पर झुक जाती और किसी फूल को तोड़कर अपनी कोमल और चंचल अंगुलियों से उनके दल को हिलाती और धीरे-धीरे गुनगुनाती।

उनके सिर पर नीले आकाश का वितान तना था और उसमें सूर्य अपनी प्रखर किरणों के साथ चमक रहा था। सड़क के दोनों ओर साल के वृक्षों का जंगल दूर तक फैला था। खेतों में हरियाली छाई हुई थी, चिड़ियाँ चहचहा रही थीं और मंद-मंद हवा बह रही थी।

प्रकृति की इस कमनीय कांति को निरखकर माँ का हृदय

उल्लसित हो उठा। सोफिया के बगल में ही चलते रहने के विचार से वह उससे इस प्रकार सट गई मानों वह उससे उत्साह और शक्ति ग्रहण करना चाहती हो। वह ठंढी साँस लेकर बोली—'तुम्हारी अवस्था कितनी कम है!'

सोफिया—क्यों? मैं बत्तीस वर्ष की हो चुकी।

माँ—देखने में तुम अधिक उम्र की मालूम होती हो। तुम्हारी वाणी का माधुर्य, आखों का तेज और तुम्हारे हृदय की चंचलता देखने से यही मालूम होता है कि तुम अभी मुग्धा हो। तुम्हें इतनी कठोर यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं फिर भी तुम्हारा हृदय सरल और मधुर है।

सोफिया—कितनी सरल भाषा में आपने अपने हृदय के भाव को व्यक्त किया है। आपने मेरे जीवन को कष्टमय बतलाया है पर मैं ऐसा नहीं समझती। उससे उत्तम और सार्थक जीवन हो ही क्या सकता है?

माँ—सबसे विचित्र बात तुमलोगों में यह है कि तुम मानव-हृदय में प्रवेश करना जानते हो। जो लोग तुमलोगों के संपर्क में आते हैं वे निर्भय होकर अपना हृदय तुमलोगों के सामने खोल देते हैं। मालूम होता है कि तुमलोगों को अपने भीतर स्थान देने के लिये हृदय के कपट आपसे आप खुल जाते हैं। तुमलोग संसार की समस्त बुराइयों पर पूर्ण विजय पा जाते हो।

सोफिया ने विश्वास के साथ कहा—'हमलोगों की विजय निश्चित है क्योंकि हमलोग मजूरों के साथ हैं। जनसाधारण

ही हमलोगों की शक्ति हैं; वही हमलोगों की आशा और विश्वास के आधार हैं। सत्य की विजय उन्हीं लोगों पर निर्भर है। शरीर और आत्मा दोनों की अनंत शक्ति के वे आधार हैं। जनसाधारण जिसके साथ हों वह सब कुछ कर सकता है। सिर्फ उन्हें जगाने की आवश्यकता है। उनकी मृतप्राय आत्मा को उठाने की आवश्यकता है।'

सोफिया की बातों से माँ के हृदय में अनेक तरह के भाव उठने लगे। उसके हृदय में सोफिया के लिये वेदना थी। वह उसे देख-देखकर विस्मित हो रही थी कि अपने सिर पर विपत्ति का बोझ लादे हुए वह इस प्रकार उसके साथ चली जा रही थी। बोली—'तुम्हारे इस श्रम का कौन पुरस्कार देगा ?'

सोफिया ने अभिमान के साथ कहा—'जो कुछ हमलोग करते हैं उसका पुरस्कार हमें तत्काल मिल जाता है। हमलोगों ने अपने जीवन के लिये जो मार्ग बना लिया है उसमें हमें संतोष है। हमलोगों को अपनी आत्मा की शक्ति का सदा परिचय मिलता रहता है। इससे अधिक और क्या चाहिए ?'

इस तरह बातें करती दोनों आराम के साथ आगे बढ़ती चली जा रही थीं। माँ समझती थी कि तीर्थाटन के लिये निकली है। उसे उस समय का जीवन याद आ गया जब छुट्टियों के दिन गाँव से बाहर गिरजे में जाने के लिये वह पूर्ण उत्साह के साथ सबेरे से ही तैयारी करने लग जाती थी।

कभी-कभी सोफिया गाने लग जाती और पहाड़ों, नदियों

और जंगलों के वर्णन के गीत गाती। माँ चुपचाप उसका गीत सुनती और लय की ध्वनि में गर्दन हिलाती जाती थी। उसका हृदय उल्लसित था।

तीन दिन के बाद वेलोग गाँव में पहुँचे। माँ ने एक किसान से अलकतरे के गोदाम का पता पूछा। उसके बताए हुए पते के अनुसार वेलोग गोदाम के पास पहुँचे। दूर से ही माँ ने देखा कि रिबिन और यफीम दो अन्य साथी के साथ बैठकर खाना खा रहे हैं। सबसे पहले रिबिन की निगाह दोनों औरतों पर पड़ी। वह चुपचाप उनलोगों की ओर गौर से देखने लगा।

चार आँखें होते ही माँ ने पूछा–'भैया रिबिन, अच्छे हो न ?'

रिबिन अपनी जगह से उठा और धीरे-धीरे टहलता हुआ वह उनलोगों के पास गया। माँ को पहचानकर वह खड़ा हो गया और हँसते हुए अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा।

माँ ने उसके पास जाकर कहा—'हमलोग तीर्थयात्रा के लिये निकली हैं। इसलिए विचार हुआ कि यहाँ ठहरकर तुमसे भेंट कर लें। (सोफिया की ओर इशारा करके) आप मेरी बहन अन्ना हैं।'

अपनी वाक्य-चातुरी से प्रसन्न होकर उसने कनखियों से सोफिया की ओर देखा।

रिबिन ने हँसकर पूछा—'तुमलोग कैसे हो ?'

सोफिया को अभिवादनकर उसने कहा—'झूठ मत बोलो।

यह शहर नहीं है। सबलोग अपने ही आदमी हैं । झूठ बोलने की जरूरत नहीं है।'

यफीम ने अपनी जगह पर से ही यात्रियों की ओर घूरकर देखा और अपने साथियों के कान में कुछ कहने लगा। दोनों रमणियों के पास जाने पर उसने खड़े होकर प्रणाम किया। उसके साथी अपनी जगह पर ज्यों-के-त्यों बैठे रहे। उन्होंने मेहमानों की कुछ परवाह नहीं की।

माँ के कंधे पर हाथ रखते हुए रिबिन ने कहा—'हमलोगों को यहाँ संन्यासियों की भाँति रहना पड़ता है। हमलोगों के यहाँ कोई आने-जानेवाला भी नहीं है। हमलोगों का मालिक यहाँ नहीं रहता और मालकिन अस्पताल में हैं। मैं ही यहाँ मालिक हूँ। (दोनों को बैठने के लिये स्थान देते हुए) बैठिए, आपलोग भूखी होंगी, (यफीम से) इनलोगों के लिये थोड़ा दूध लाओ।'

यफीम गोदाम के भीतर गया। औरतें सिर से गट्ठर उतारकर जमीन पर रखने लगीं। एक साथी अपनी जगह से उठा और उनलोगों की सहायता करने लगा। दूसरा साथी टेबुल पर केहुनी के सहारे बैठकर गुनगुनाने लगा।

रिबिन ने दोनों साथियों का परिचय कराया। बोला—'यह लंबा आदमी याकोब है और वह बैठा हुआ इगनाटी है। पावेल का क्या हाल है?'

माँ—(उसासें भरकर) वह तो जेल में है।

रिबिन—फिर जेल में! मालूम होता है जेल से उसे प्रेम है।

इगनाटी ने गुनगुनाना बंद कर दिया। याकोब ने माँ के हाथ से डंडा लेते हुए कहा—'आप बैठें।'

रिबिन ने सोफिया से कहा—'आप बैठती क्यों नहीं ?'

सोफिया बैठ गई और रिबिन की ओर अन्वेषक दृष्टि से देखने लगी।

रिबिन भी माँ के सामने बैठ गया। उसने पूछा—'पावेल कब गिरफ्तार हुआ ? तुम बड़ी अभागिन हो।'

माँ—अवश्य।

रिबिन—पर तुम्हें सहन करने की आदत पड़ती जा रही है।

माँ—यदि मुझे सहन न भी पड़े तो चारा ही क्या है ?

रिबिन—तुम्हारा कहना ठीक है। गिरफ्तारी किस प्रकार हुई ?

इतने में यफीम दूध लेकर आया। उसने टेबुल से प्याला उठाकर उसे पानी से धोया और उसमें दूध ढालकर उसे सोफिया को देकर चुपचाप माँ की बातें सुनने लगा। माँ की जबानी पावेल की गिरफ्तारी का कुल दास्तान सुनकर सब-के-सब क्षण भर चुप रहे और एक दूसरे का मुँह देखने लगे। इगनाटी ने बैठे-बैठे एक खाका खींच दिया। यफीम रिबिन के पीछे खड़ा हो गया। याकोब भी पास के पेड़ के सहारे झुक गया। सोफिया सबकी ओर कनखियों से देखने लगी।

रिबिन—तब उनलोगों ने खुल्लम-खुल्ला जुलूस निकालने का निश्चय कर लिया।

यफीम ने गँवारू हँसी हँसकर कहा—'अगर वेलोग इस तरह

का जुलूस यहाँ देहातों में निकालें तो किसान प्राण देने के लिये तैयार हो जायँगे।'

इगनाटी ने सिर हिलाकर कहा–'यह तो निश्चय है पर मैं तो कारखाने ही को अधिक पसंद करता हूँ।'

रिबिन—पावेल पर मुकदमा चलाया जायगा ?

माँ—हाँ यह निश्चित है।

रिबिन–तुमने कुछ सुना है कि उसे क्या दंड देना चाहते हैं ?

माँ–सपरिश्रम कारावास अथवा साइबेरिया में निर्वासन !

तीनों युवक माँ की ओर देखने लगे।

रिबिन ने सिर नीचा करके पूछा—'इसके बाद उसके भाग्य में क्या लिखा है ?'

माँ—मैं कुछ नहीं जानती। पर मुझे विश्वास है कि वह जानता है।

सोफिया ने जोर से कहा—'अवश्य ही वह जानते हैं।'

सभी मौन थे मानों एक ही भीषण विचार ने सभों को सद कर दिया था।

रिबिन ने गंभीर होकर कहा—'मेरा भी यही ख्याल है कि वह जानता है। कुए में कूदने के पहले लोग उसकी गहराई का थाह ले लेते हैं। वह जानता था कि या तो मैं गोली से उड़ा दिया जाऊँगा या जेल भेज दिया जाऊँगा अथवा निर्वासित कर दिया जाऊँगा; लेकिन उसने कदम आगे बढ़ाया। उसने यह परम आवश्यक समझा। यदि उसकी माँ ने उसके मार्ग में बाधा पँहुँचाने

का यत्न किया होता तो वह इसे भी लाँघकर आगे बढ़ता। (माँ से) मैं सच कह रहा हूँ ?'

माँ ने ठंढी साँस ली। वह चारों ओर देखकर बोली–'निश्चय ही वह मेरी जरा भी परवाह न करता।'

लोगों की ओर देखकर रिबिन ने धीरे से कहा—'तुमलोगों के लिये वह एक आदमी है।'

फिर सन्नाटा छा गया। सूर्य की मंद किरणें हवा के झोंकों के साथ हिल रही थीं। कहीं पास ही बैठा कौआ काँव-काँव कर उठा। पहली मई की घटना माँ के हृदय में ताजी हो गई। पावेल और नखोदका के लिये उसका हृदय व्यथित हो उठा।

याकोब अपनी जगह से उठकर आगे बढ़ा। पर रुककर रुखाई से कहने लगा—'जब हमलोग यफीम के साथ सेना में भर्ती हो जायँगे तो हमलोगों का प्रयोग भी पावेल सरीखे निर्दोषों के विरुद्ध किया जायगा।'

रिबिन ने रुखाई से कहा—'तब तुमने क्या सोचा था ? हमारे ही आदमियों से वेलोग हमारा गला घोंटवाते हैं। यही तो उन-लोगों की जादूगरी है।'

यफीम ने जिद्द दिखलाते हुए कहा–'मैं तो सेना में जाऊँगा ही ?'

इगनाटी—तुम्हें मना कौन कर रहा है ?

इतना कहकर उसने यफीम की ओर घूरकर देखा और हँसकर कहने लगा—'यदि तुम मुझे गोली मारना चाहते हो तो

सिर में निशाना लगाकर मुझे मार डालो! मुझें घायल करके मत छोड़ो।'

यफीम ने तेजी से कहा–'मैं तुम्हारा अभिप्राय समझता हूँ।'

लोगों की ओर गौर से देखकर रिबिन ने कहा—'आपलोग निलोना को देखते हैं। इसके लड़के का संप्रति सर्वनाश कर दिया गया है।'

माँ ने वेदना-भरे स्वर में कहा–'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं ?'

रिबिन ने कहा—'यह आवश्यक है। तुम्हारे हृदय की पीड़ा व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। भाइयो, इसने अपने पुत्र को खो दिया, पर इससे क्या ? क्या इससे यह मर गई ? (माँ से) आप पुस्तकें लेती आई हैं ?'

माँ—हाँ!

अपने हाथ को टेबुल पर पटकत हुए रिबिन ने कहा—'तुम्हें देखते ही मैं समझ गया था कि तुम किताबें लेकर ही आई हो अन्यथा तुम आती ही क्यों ?' उसने फिर उन नवयुवकों को लक्ष्य-कर कहा—'आपलोग देखते हैं कि अधिकारियों ने जब पुत्र को कैद कर लिया तो माँ ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया।'

इतना कहकर उसने एकाएक दोनों हाथ टेबुल पर जोर से पटका और आवेश में कहने लगा—'वेलोग नहीं समझते कि कैसा काँटा अपने मार्ग में बो रहे हैं। उनकी आँखें उस वक्त खुलेंगी जब हमलोगों की शक्ति प्रबल हो जायगी और हमलोग उनके सिर पर सवार होने लगेंगे।'

माँ डर गई। उसने रिबिन के चेहरे की ओर देखा, उसमें भयानक परिवर्तन हो गया था। वह दुबला हो गया था। उसकी दाढ़ी उदास हो गई थी और गाल की हड्डियाँ निकल आई थीं। आँखें लाल हो गई थीं मानों कई दिन उसे सोने को नहीं मिला है। उसका सारा शरीर करुणाजनक था। उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं। सोफिया का चेहरा पीला पड़ गया था। वह चुपचाप स्थिर दृष्टि से रिबिन को देख रही थी। इगनाटी चुपचाप सिर हिला रहा था और आँखें मींज रहा था। याकोब दीवाल के सहारे खड़ा मारे क्रोध के दीवाल खोद रहा था। यफीम माँ के पीछे धीरे-धीरे घूम रहा था।

रिबिन ने कहा—'अभी उस दिन की बात है। एक सरकारी अफसर ने मुझे बुलाकर कहा—पाजी, तुमने पुरोहित से क्या कहा था ? मैंने उससे पूछा—मैं पाजी क्यों हूँ ? मैं अपने परिश्रम की कमाई खाता हूँ। किसी को कष्ट नहीं देता, किसी का उपकार नहीं करता। इतना सुनते ही वह मुझ पर झपट पड़ा और मुझे एक थप्पड़ मारा और तीन दिन तक मुझे हाजत में बंद रखा।' रिबिन क्रोध से अधीर हो उठा। बोला—'इसी तरह वे सब भले आदमियों के साथ पेश आते हैं। इसके लिये उन चांडालों को क्षमा नहीं मिल सकती। इन अत्याचारों का बदला उनसे अवश्य लिया जायगा। यदि मैं न ले सका तो मेरा कोई भाई लेगा। यदि उनसे न लिया जा सका तो उनके बाल-बच्चों से लिया जायगा। उनलोगों के अधम स्वार्थ ने जनसाधारण को विकृत कर दिया

है। पाप का बीज बोकर वेलोग मीठा फल पाने की आशा नहीं कर सकते।'

उसका क्रोध बढ़ता गया। वह काँपने लगा। उसके मुँह से स्पष्ट शब्द भी नहीं निकलते थे। रिबिन की यह हालत देखकर माँ काँप उठी।

रिबिन ने धीमी आवाज करके कहा—'आपलोग जानते हैं कि मैंने पुरोहित से क्या कहा था? उपासना के बाद वह किसानों के साथ सड़क में खड़ा हो गया और कहने लगा—जन-समाज भेंड़ की तरह हैं उनकी रखवारी के लिये एक गड़ेरिया की जरूरत पड़ती है। इस पर मैंने मजाक में कहा—यदि वेलोग लोमड़ी को जंगल का राजा बना दें तो पर बहुत मिलेगा पर चिड़िया एक भी देखने में नहीं आवेगी। उसने मेरी ओर कनखियों से देखा और लोगों से कहने लगा कि आपलोगों को धैर्य धारण करना चाहिए और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह आपलोगों को सहन की शक्ति दे। इस पर मैंने कहा कि लोग प्रार्थना तो अवश्य करते हैं पर मालूम होता है कि ईश्वर को फुरसत नहीं है कि उनकी प्रार्थना पर ध्यान दे। इस पर पुरोहित ने मुझसे झूठा झगड़ा छेड़ दिया और पूछा—तुम क्या प्रार्थना करते हो? मैंने उत्तर दिया—सबकी तरह मैं भी यही प्रार्थना करता हूँ कि ऐ भगवान, धनिकों को ऐसी बुद्धि दो कि वे ईंट ढोवें, पत्थर खायँ और काठ थूकें। उसने मुझे पूरी बात कहने भी नहीं दिया।

इतना कहकर रिबिन चुप हो गया और उसने सोफिया से पूछा—'क्या आप कुलीन-वर्ग की रमणी हैं ?'

रिबिन के इस आकस्मिक प्रश्न से विस्मित होकर सोफिया बोली—'आप किस तरह समझते हैं कि मैं कुलीन-वर्ग की रमणी हूँ ?'

रिबिन—आपकी आकृति कहती है। इस तरह सिर में रुमाल बाँधकर आप हमलोगों की आँखों को धोखा नहीं दे सकतीं। यदि किसी गिरजे का पुरोहित बोरा पहनकर भी आवे तो हमलोग उसे तुरत पहचान लेंगे। आपके उठने-बैठने का तरीका और मुखाकृति ही आपकी कुलीनता का पूर्ण परिचय देती है। इसके अलावा आपकी पीठ सीधी है। मजूरों की स्त्रियों की पीठ सीधी नहीं रहती।

माँ डर गई कि कहीं यह किसी तरह सोफिया का अपमान न कर दे, शीघ्रता से बोली—'रिबिन, यह मेरी दोस्त हैं। बड़ी अच्छी औरत हैं। इसी आंदोलन में इन्होंने अपने बाल पकाए हैं। तुम इतने................।'

रिबिन शांत होगया। बोला—'क्या मेरा प्रश्न अनुचित था ?'

सोफिया ने उदासीनता के साथ उसकी ओर देखा और बोली—'आप मुझसे कुछ पूछना चाहते थे ?'

रिबिन—अभी हाल में ही हमलोगों के बीच एक आदमी आया है। वह याकोब का चचेरा भाई होता है। उसे क्षयी रोग हो गया है पर वह अनुभवी है। क्या मैं उसे यहाँ बुलाऊँ ?

सोफिया—अवश्य बुलाइए।

रिबिन—(यफीम से) शाम को यहाँ आने के लिये उनसे कह आओ।

यफीम ने अपनी टोपी उठाई और बिना किसी से कुछ कहे ही जंगल की ओर चला गया। उसे लक्ष्य करके रिबिन ने कहा—'उसके हृदय में भीषण वेदना उठ रही है। वह बड़ा ही जिद्दी है। वह और याकोब सेना में भर्ती होना चाहते हैं। याकोब कहता है कि मैं वहाँ कुछ नहीं कर सकूँगा। वह भी कुछ नहीं कर सकता। लेकिन उसे इच्छा है, उसकी धारणा है कि वह सैनिकों को भड़कावेगा। मेरा मत है कि तुम सिर से दीवाल नहीं तोड़ सकते। वे बंदूक लेकर आँखें बंद करके आगे बढ़ते हैं। उन्हें यह होश नहीं रहता कि वे अपने ही हाथों अपना सर्वनाश कर रहे हैं। पर यफीम व्यग्र है और इगनाटी उसे और भी तंग किया करता है।'

इगनाटी ने भौंहें सिकोड़कर कहा—'मैं तो कुछ नहीं कहता पर मेरा दृढ़ विश्वास है कि अफसर लोग इसके हृदय को भी मृतवत् बना देंगे और वह उन्हीं सिपाहियों की तरह हो जायगा।'

रिबिन ने गंभीर होकर कहा—'यह कठिन है। लेकिन सेना से भाग निकलना अच्छा है। रूस बड़ा भारी देश है। फिर उसे कौन कहाँ पाता है। वह किसी तरह पास-पोर्ट हासिल कर लेगा और गाँव-गाँव घूमेगा।'

याकोब—मैं भी यही करने जा रहा हूँ। जब तुमने सरकार का विरोध करना निश्चय कर लिया है तब उसे खुल्लम-खुल्ला करो।

उस चर्चा का अंत करते हुए रिबिन ने कहा—'हमलोगों को काम भी करना है। आपलोग आराम करना चाहती हैं ? गोदाम में तख्ते हैं। याकोब, बिछाने के लिये कुछ सूखे पत्ते ला दो। (माँ से) लाइए, पुस्तकें कहाँ हैं ?'

माँ और सोफिया अपना-अपना बोरा खोलने लगीं। रिबिन झुककर देखने लगा। बोला—'आपलोग तो बहुत अधिक लेकर आई हैं ! (सोफिया से) आप इस आंदोलन में बहुत दिनों से हैं क्या ? आपका नाम क्या है ?'

सोफिया—मेरा नाम अन्ना इवानोना है। मैं प्रायः बारह वर्षों से इसमें भाग लेती आ रही हूँ। आपने यह प्रश्न क्यों किया ?

रिबिन—यों ही ! आप कभी जेल भी हो आई हैं ?

सोफिया—हाँ।

एक किताब को उठाकर देखते हुए उसने कहा—'मेरी बातों से नाखुश न होइएगा। मजूर और धनिकों में पानी और अलकतरे का-सा संबंध है। दोनों में कभी भी मेल नहीं हो सकता। दोनों सदा एक दूसरे से अलग रहते हैं।'

सोफिया ने हँसकर कहा—'मैं कुलीन-वर्ग की नहीं हूँ। मैं साधारण घर की हूँ।'

रिबिन—हो सकता है ! पर मैं विश्वास नहीं कर सकता। लोग कहते हैं तो संभव है कि एक बार एक कुत्ता भेड़िया हो गया था। अब मैं इन किताबों को छिपा दूँ।

इगनाटी और याकोब उसके पास आए और हाथ फैलाकर बोले—'हमलोगों को भी एकाध पुस्तकें दो।'

रिबिन—क्या सभी एक ही विषय की हैं ?

सोफिया—नहीं, भिन्न-भिन्न विषय की हैं और समाचार-पत्र भी हैं।

रिबिन—बड़ी अच्छी बात है।

तीनों किसान फुर्ती से गोदाम में घुस गए।

रिबिन के पीछे दृष्टिपात करते हुए माँ बोली—'किसानों में खूब जागृति फैल गई है। उनके हृदयों में आग लग गई है।'

सोफिया—इस तरह की सजीव मूर्त्ति मैंने कभी नहीं देखी। त्याग की ज्वलंत मूर्त्ति है। चलो हमलोग भी भीतर चलें। मैं उन-लोगों को देखती रहना चाहती हूँ।

गोदाम के भीतर जाकर सोफिया ने देखा कि सब-के-सब समाचार पढ़ने में तल्लीन हैं। इगनाटी तख्ते पर बैठा है, अख-बार उसके सामने फैला हुआ है। अँगुलियों से सिर खुजलाते हुए वह पढ़ता जा रहा है। दोनों को सामने देखकर उसने एकबार सिर उठाया और फिर अखबार पढ़ने लगा। रिबिन खड़े-खड़े अखबार के पन्ने उलट रहा है। ज्यों-ज्यों वह पढ़ता है उसके होंठ हिल रहे हैं।

सोफिया ने उनलोगों की उत्सुकता देखी। वह पुलकित हो उठी। वह चुपचाप एक कोने में जाकर बैठ गई और गौर से उनलोगों की ओर देखने लगी। उसका हाथ माँ के कंधे पर था।

अखबार पढ़ते-पढ़ते याकोब ने कहा–'रिबिन चाचा, समाचार-पत्रों में हमलोगों पर बुरी तरह आक्रमण किया गया है।'

रिबिन ने अपने चारों ओर देखा और हँसकर बोला—'प्रेम के कारण! जो प्रेम करता है वह अपमान के ख्याल से कुछ नहीं कहता।'

इगनाटी ने सिर उठाया, गहरी साँस ली, विकट हँसी हँसा और आँखें बंदकर बोला—'इसमें लिखा है कि किसानों में मनुष्यता का लेश भी नहीं रह गया है। बात सच है। लेकिन उन्हें एक दिन के लिये भी इस दशा में आने दो, तब हमलोग देखेंगे कि उनकी क्या हालत होती है।'

माँ ने कहा—'मैं सोना चाहती हूँ। मैं थक गई हूँ और मेरा सिर चक्कर खा रहा है। (सोफिया से) और आप?'

सोफिया–मैं अभी नहीं सोऊँगी।

माँ तख्ते पर लेटते ही सो गई। सोफिया चुपचाप बैठी उनलोगों का अखबार पढ़ना देखने लगी। रिबिन उसके पास आकर बोला—'निलोना सो गई क्या?'

सोफिया—हाँ।

वह क्षण भर चुप रहा। गौर से माँ की ओर देखकर कहने लगा—'मेरी समझ में यह पहली माता है जिसने अपने पुत्र का अनुकरण किया है।'

सोफिया—उसकी नींद में बाधा न डालनी चाहिए। चलो यहाँ से चलें।

रिबिन—मैं आपसे बातें करना चाहता हूँ। पर इस समय हमलोगों को काम पर जाना है। शाम को निश्चित होकर बातें करेंगे।

इतना कहकर वह सबों को लेकर काम पर चला गया।

चौथा परिच्छेद

सोफिया अकेले गोदाम में रह गई। दूर से कुदारों की आवाज आ रही थी। अर्धनिद्रित अवस्था में जंगली झाड़ियों की खुशबू से मस्त बैठी हुई वह कुछ गुनगुना रही थी और शाम होने की प्रतीक्षा कर रही थी। धीरे-धीरे सूर्य की प्रखर किरणें मंद पड़ने लगीं, चिड़ियों का चहचहाना कम होने लगा, चारों ओर अंधकार का राज्य छा गया। जंगल के पेड़ एक दूसरे से सट-से गए, सुदूर पर कहीं गाएँ राँभने लगीं। इसी वक्त काम समाप्त-कर चारों आदमी लौट आए। उनके चेहरे पर संतोष के लक्षण वर्तमान थे।

माँ भी सोकर उठ गई थी। वह जम्हाई लेती बाहर आई। इस वक्त रिबिन उतना उत्तेजित और उदास नहीं था। परिश्रम ने उसे शिथिल कर दिया था। उसने इगनाटी से कहा—'चाय वगैरह का प्रबंध करो। (सोफिया से) हमलोग बारी-बारी से अपना सब काम-काज कर लेते हैं। आज इगनाटी की पारी है।'

इगनाटी लकड़ी बटोर रहा था। बोला—'आज अपनी पारी का काम करने में मुझे और भी आनंद है।'

यफीम सोफिया के बगल में बैठा था। बोला—'मेहमानों के लिये हम सबको उत्साह है।'

याक़ोब ने नरमी से कहा—'मैं तुम्हारी मदद कर दूँगा।' इतना कहकर वह भीतर से पावरोटी लाया और उसे काट-काटकर सबके सामने रखने लगा।

इसी समय दूर पर किसी के खाँसने का शब्द सुनाई दिया। यफीम ने सबका ध्यान उसी ओर आकृष्ट किया।

रिबिन—(सोफिया से) वह आ रहा है। मैं उसे नगर-नगर घुमाना चाहता हूँ। मैदानों में उसका व्याख्यान कराना चाहता हूँ। लोग उसकी बातें सुनें और समझें। वह सदा एक ही बात कहता है पर मैं चाहता हूँ कि उसकी बातें सबके कान में पड़ जायँ।

अँधेरा और भी घना हो गया। संध्या एकदम से गायब हो गई। कोलाहल शांत हो गया। माँ और सोफिया अपनी जगह पर बैठी हुई इन किसानों की गति-विधि का पर्यवेक्षण करने लगीं। वे बड़ी सावधानी के साथ चलते-फिरते थे। बड़े ही सतर्क होकर बातचीत करते थे और रह-रहकर उन औरतों की ओर गौर से देखते थे।

एक लंबा आदमी जंगल से बाहर निकलकर उनलोगों के सामने आया। उसकी कमर झुक गई थी। छड़ी के सहारे वह

धीरे-धीरे चलता था। उसकी साँस में घुरघुराहट थी जो दूर से ही सुनाई देती थी।

याकोब ने उठकर कहा – 'सवेली आ गए।'

सवेली खड़ा होकर जोर से खाँसने लगा और बोला—'हाँ भाई, मैं आ गया।'

ऊपर से नीचे तक उसका शरीर एक लंबे कोट से ढँका था। हैट के नीचे उसके सूखे घुँघुरूदार बाल कंधों पर लटक रहे थे। उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया था। हड्डियाँ निकल आई थीं और आँखें खोड़रों में धँस गई थीं।

रिबिन ने सोफिया से उसका परिचय कराया। उसने सोफिया से पूछा—'मैंने सुना है कि आप पढ़ने के लिये लोगों को पुस्तकें बाँटती फिरती हैं।'

सोफिया—जी हाँ।

सवेली—जनसाधारण की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। उन पुस्तकों को पूरी तरह समझने की अभी इनमें सामर्थ्य नहीं है तो भला वे धन्यवाद का मर्म क्या जानें। परंतु मैं जो उन बातों को कुछ समझता हूँ इसलिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

उसका दम फूलने लगा। मुँह से शब्द निकलने में कठिनाई होने लगी। कोट का बटन बंद करने के लिये उसने हाथ बढ़ाया।

सोफिया—यह स्थान बड़ा ही सर्दीला और ठंढा है। इतनी रात में आपको इस तरह जंगल में नहीं आना चाहिए।

उसने दम लेते हुए कहा—'अब सिवा मृत्यु के मेरे लिए कोई वस्तु उत्तम नहीं है।'

उसे देखकर हृदय व्यथित होता था। जनसाधारण की निरीह दशा का वह प्रत्यक्ष प्रमाण था। उसे देखकर कोई भी क्षुब्ध और विचलित हुए बिना नहीं रह सकता था।

उसने कहा—'जालिमों के जुल्म का मैं शिकार हूँ। मुझे देखकर लोगों को सचेत हो जाना चाहिए। मेरी अवस्था केवल अठाइस वर्ष की है पर मैं मृत्यु की गोद में पड़ा हूँ। दस वर्ष पहले मैं ५-६ मन का बोझ बड़ी आसानी से उठाकर ले जाता था। अपनी शक्ति पर मुझे विश्वास था। मैं समझता था कि सत्तर वर्ष तक तो अवश्य ही जीवित रहूँगा, पर केवल दस ही वर्ष बीते हैं कि मैं एकदम बेकार हो गया हूँ। दस कदम भी आराम से नहीं चल सकता। इन रुपयेवालों ने मुझे लूट लिया, मेरे जीवन के चालीस वर्ष मुझसे छीन लिए।'

रिबिन ने वेदना के साथ कहा—'यही इसकी आत्म-कहानी है।'

सवेली—यह मेरी ही आत्म-कहानी नहीं है। लाखों की यही दशा है। पर वे चुपचाप सब कुछ भोग लेते हैं। अपनी दुर्दशा किसी से कहते नहीं क्योंकि इसका उन्हें ज्ञान ही नहीं है कि इससे दूसरों को कुछ शिक्षा मिल सकती है, जनसाधारण का कुछ उपकार हो सकता है। हजारों आदमी कारखानों में बेकार हो जाते हैं, उनके अंग-भंग हो जाते हैं, उन्हें कोई पूछनेवाला नहीं रहता और वे अन्न के बिना मर जाते हैं। आवश्यकता है कि कारखानों

की इस दुर्दशा का वर्णन हमलोग चिल्ला-चिल्लाकर सबके सामने करें।

इतना कहकर वह जोर से खाँसने लगा और खाँसते-खाँसते बेदम हो गया।

यफीम बोल उठा—'हमींलोग अपनी विपन्नता के कारण हैं। जरा सुखों की ओर भी ध्यान दीजिए।'

रिबिन—(डाँटकर) उसे बाधा मत दो।

यफीम ने मुँह बनाकर कहा—'आपने ही उस दिन कहा था कि मनुष्य को अपनी मुसीबतों की अधिक चर्चा नहीं करनी चाहिए।'

रिबिन—मेरा वह अभिप्राय नहीं था। सवेली की मुसीबत व्यक्तिगत नहीं है। इसका असर सभी मजूरों के जीवन पर पड़ता है। कारखानों ने इसका सर्वनाश कर डाला है। इसे देखकर लोग सचेत हों और उधर से मुँह मोड़ें।

याकोब दूध का ग्लास हाथ में लिए हुए बाहर आया और सवेली के हाथ में देकर उससे पीने के लिये कहा।

उसने इन्कार किया पर याकोब उसको जबर्दस्ती दूध पिलाने के लिये वहाँ से उठा ले गया।

सोफिया का हृदय वेदना से भर गया था। उसने रिबिन को डाँटते हुए कहा—'आपने इन्हें यहाँ क्यों बुलाया ? अभी हालत कैसी नाजुक है। किसी क्षण इनका अंत हो सकता है !'

रिबिन—यह तो मैं भी जानता हूँ। पर एकांत में मरने की अपेक्षा तो लोगों के बीच में मर जाना कहीं अच्छा है। जब तक

वह जीवित है उसे इसी तरह अपनी कहानी लोगों को सुनाने दीजिए। इसका अमूल्य जीवन बिना किसी प्रयोजन के नष्ट हो गया। जो बचा है उसका उपयोग तो जनसाधारण के कल्याण के लिये होना चाहिए।

सोफिया—मालूम होता है कि इसमें आपको बड़ा आनंद मिलता है।

रिबिन–धनिकों को ही इस तरह की दुर्दशा में आनंद मिलता है क्योंकि वेलोग उस वक्त भी विनोद में रत थे जिस समय प्रभु ईसू को सूली पर चढ़ाया जा रहा था। मैं तो सिर्फ उससे कुछ सीखना चाहता हूँ और आप तथा दूसरों को कुछ शिक्षा दिलाना चाहता हूँ।

सवेली फिर अपनी जगह पर बैठा-बैठा कहने लगा–'काम करा-कर वेलोग प्राण ले लेते हैं। किसलिए? केवल अपनी विलासिता के लिये, अपने आमोद के लिये। मैं नफीडो सूत-कल में काम करता था। मेरे मालिक ने अपनी प्रेयसी के लिये सभी बर्तन सोने के बनवाए थे। उन्हीं बर्तनों के लिये मेरी जान इस प्रकार ली गई। सोने के उन बर्तनों में मेरा खून सना है। एक प्रेयसी को सुख देने के लिये हजारों निरीह जनों के प्राण लिए जाते हैं।

यफीम ने विकट हँसी हँसकर कहा–'धर्मशास्त्रों में लिखा है कि मनुष्य ईश्वर का प्रतिबिंब है और उस प्रतिबिंब का इस प्रकार उपयोग किया जाता है!'

रिबिन ने टेबुल पर हाथ पटककर कहा—'तब इसी वक्त से शांति मत ग्रहण करो।'

याकोब—उन अत्याचारों को चुपचाप बरदाश्त मत करो।

इगनाटी हँस पड़ा। माँ ने देखा वे तीनों युवक बोलते बहुत कम हैं पर बातें बड़े ध्यान से सुनते हैं। उनकी आकृति से ऐसा मालूम होता है कि बातों से उन्हें कभी भी संतोष नहीं होता। रिबिन जब कभी बोलता वह उसकी ओर गौर से देखने लगते। सवेली की बातों से सभी प्रसन्न हो उठते, उसकी दयनीय दशा पर किसी के हृदय में करुणा नहीं थी।

माँ ने सोफिया से धीरे से पूछा—'क्या जो कुछ यह कह रहा है, सच है?'.

सोफिया—(जोर से) एकदम सच है। मास्को में इस तरह की घटना हुई थी, हमलोगों ने समाचार-पत्रों में पढ़ा था।

रिबिन—और उस चांडाल को फाँसी नहीं दी गई? फाँसी ही क्यों? सबलोगों के सामने उसकी बोटी-बोटी कटवाकर कुत्तों के सामने फेंकवा देनी चाहिए थी। लोगों में थोड़ी जागृति तो आने दीजिए। देखिए फिर इन अत्याचारों का वे किस प्रकार बदला लेते हैं। यह खून उन्हीं लोगों का है। यह उन्हीं के शरीर से निकाला गया है। वे ही इसके मालिक हैं।

सवेली ने कहा—'बड़ी सर्दी मालूम हो रही है।'

याकोब उसे सहारा देकर आग के पास ले गया। सवेली हाथ फैलाकर तापने लगा। रिबिन ने धीरे से सोफिया से कहा—

'इसका असर किताब से कहीं तीखा होता है। इसका अधिक प्रचार होना चाहिए। जब कभी किसी मजूर का हाथ-पैर मशीन में कट जाता है तब लोग मजूर को ही दोषी समझते हैं। पर यह तो स्पष्ट है। जब वेलोग इस तरह मजूरों का रक्त चूस लेते हैं और उसे निर्जीव बना देते हैं तब तो किसी तरह के शक-शुबहे की गुंजाइश नहीं रह जाती। हत्या का तो कुछ अर्थ भी है पर केवल विनोद के लिये लोगों को इस प्रकार निरीह और निकम्मा बना देने का तात्पर्य मेरी समझ में नहीं आता। आखिर वेलोग इस तरह हमलोगों को क्यों सताते हैं, हमलोगों पर इतना जुल्म और अत्याचार क्यों करते हैं? केवल विनोद के लिये। केवल इसलिए कि वेलोग विलासिता से दिन काटें, अपने उपभोग के सभी साधन जनसाधारण के रक्त से खरीदें। हमलोग दिन-रात मरकर काम करें और वेलोग हमारी कठिन कमाई से भोग-विलास करें!'

माँ चुपचाप बैठी हुई उनलोगों की बातें सुन रही थी। उस निबिड़ अंधकार में उसने उस तेजमय मार्ग का दीप्त प्रकाश देखा जिसका अनुसरण पावेल और उसके साथियों ने किया था।

भोजन समाप्तकर वेलोग आग के पास जा बैठे। सवेली जोरों से खाँस रहा था और सर्दी से काँप रहा था। उसे ऐसा मालूम होता था कि उसकी आत्मा इस नीरस शरीर को छोड़कर भाग जाने के लिये अधीर हो रही है।

याकोब ने झुककर सवेली से कहा—'अच्छा हो कि आप छाया में चलकर बैठें।'

सवेली—क्यों? मैं यहीं रहूँगा। अब मुझे लोगों के बीच अधिक समय तक नहीं रहना है। जब तक तुमलोगों के साथ रहता हूँ, सुखी रहता हूँ। तुमलोगों को देखकर संतोष होता है कि एक-न-एक दिन तुमलोग इन अत्याचारों का बदला अवश्य लोगे।

सब लोग चुप थे। सवेली को झपकी लग गई। उसका सिर उसकी छाती पर झुक गया। उसकी ओर देखकर रिबिन ने धीरे से कहा—'वह प्रतिदिन यहाँ आता है और यही बातें कहता है। दूसरी बात उसे सूझती ही नहीं।'

माँ ने गंभीर होकर कहा—'दूसरी आशा ही उससे क्या कर सकते हो? रुपयेवाले जब यही चाहते हैं कि मजूर लोग उनके प्रयोग का साधन संग्रह करने में प्रतिदिन हजारों की संख्या में अपने प्राणों को गँवावें तो मजूरों के मुँह पर दूसरा दास्तान ही क्या रह सकता है?'

इगनाटी—उसकी बात सुनते-सुनते तबीयत थक जाती है। इस तरह के वृत्तांत हृदय पर अंकित हो जाते हैं। उनकी छाप अमिट हो जाती है। यह सदा वही राग अलापता रहता है।

रिबिन—इसी एक बात में उसके जीवन का सारा रहस्य छिपा है।

सवेली चैतन्य हो उठा; आँखें खोलीं और वहीं जमीन पर लेट गया। याकोब गोदाम में गया और दो लंबे कोट लाकर

उसे ओढ़ा दिया और सोफिया के पास जाकर बैठ गया।

सोफिया ने मजूर-आंदोलन की चर्चा छेड़ दी। वह विस्तार के साथ फ्रांस, जर्मनी, और आयर्लैंड के मजूरों के स्वातंत्र्य-संग्राम और उनकी विशद विपत्तियों का वर्णन करने लगी।

उस निर्जन स्थान में, उस अँधेरी रात में, पेड़ों की उस सूनसान झुरमुट में आग के सामने बैठी सोफिया उन घटनाओं का वर्णन करने लगी जिन्होंने विश्व की काया पलट दी। एक के बाद दूसरे राष्ट्र के मजूरों के विलपव का उसने वर्णन करना आरंभ किया। किस तरह उनलोगों ने अपना रक्त बहाया और किन-किन वीरों ने सत्य के नाम पर अपने प्राण गँवाए।

सोफिया के इस वर्णन में आशा थी, विश्वास था और वेलोग ध्यान देकर अपने उन भाइयों की वीरता भरी लड़ाई का वर्णन सुन रहे थे। वेलोग रह-रहकर उसके चेहरे की ओर देखते थे। उसका चेहरा पीला पड़ गया था पर उसकी आँखों में तेज था। इसे देखकर वे प्रसन्न थे। उसके वर्णन से उन्हें विविध राष्ट्रों के मजूरों के स्वातंत्र्य-संग्राम का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त हो गया और उनके हृदय में अमित श्रद्धा उत्पन्न हो गई। उन्होंने देखा कि उनके आंदोलन का भी भविष्य उन्हीं अज्ञात लोगों के बीच में रक्तरंजित परदे से ढँका पड़ा है। इससे उनलोगों के मन और हृदय में विश्व के समस्त मजूरों के लिये मित्रता का भाव उदय हुआ और उनके साथ वेलोग अटूट बंधन में बँध गए। अतीत काल में भी उन्होंने देखा कि उनके इन मित्रों के बंधु-बांधवों ने अपने

अधिकार प्राप्त करने के लिये अनंत काल तक यातनाएँ भोगी थीं और अपने रक्त की नदियाँ बहाई थीं। उन्हीं के रक्त से पुनीत होकर मानव-जीवन नए स्रोत में होकर बहा जो बहुत ही सुंदर, सुखद और उज्वल था। उनलोगों के हृदयों में एक भाव उठा जिसने उसकी आत्मा को एक सूत्र में बाँध दिया और इस बंधन से विश्व में एक आत्मा का उदय हुआ जो विश्व के समस्त प्राणियों को एकता के दृढ़ बंधन में बाँधने के लिये आतुर था।

सोफिया ने दृढ़ता के साथ कहा—'वे दिन दूर नहीं हैं जब प्रत्येक देश के मजूर एक स्वर से चिल्ला उठेंगे–बस, हो चुका। अब यह जीवन हमलोगों को एक दिन भी सह्य नहीं है। उसी दिन इन लोभियों की सारी शक्ति चूर हो जायगी, धरती उनके पैर तले से सरक जायगी और वे निःसहाय हो जायँगे।'

रिबिन ने सिर झुकाकर कहा—'यह तो होकर ही रहेगा। अपनी दशा पर खिन्न मत हो तब तुम सब कुछ जीत लोगे।'

सब लोग चुपचाप सुन रहे थे। अपने किसी भी प्रयास से वे बाधा डालना नहीं चाहते थे क्योंकि उन्हें भय था कि कहीं इससे वह विश्व-बंधन का निर्मल सूत्र टूट न जाय। कोई कभी-कभी आग में लकड़ी का एक कुंदा डाल देता था और जब लपट औरतों की ओर बढ़ती थी तो वे हाथ की हवा देकर उसे लौटा देती थीं।

एकबार याकोब अपनी जगह से उठा, गोदाम में जाकर कंबल लाया और औरतों को ओढ़ा दिया।

सोफिया फिर बोलने लगी। उसके प्रत्येक शब्द आशा और विश्वास से भरे थे। वे लोगों के हृदय में छिपी हुई शक्ति को जागृत करते थे और बतलाते थे कि जो लोग इस तरह धनिकों की विलासिता के लिये अत्याचारों के शिकार बनाए जाते हैं वे हमारे ही भाई हैं।

इसी तरह बातचीत करते-करते सबेरा हो गया। सोफिया चुप हो गई और प्रसन्न-मुख से चारों ओर देखने लगी।

माँ ने कहा—'हमलोगों के जाने का समय हो गया है।'

सोफिया—हाँ!

रिबिन ने असाधारण नरमी दिखाकर कहा—'हमलोगों को खेद है कि आप चली जा रही हैं। आप समझाना खूब जानती हैं। यह आंदोलन लोगों को अवश्य ही एकता के सूत्र में बाँध देगा। जब हमें यह ज्ञान हो जाता है कि हमारे कार्य का अनुमोदन करनेवाले हजारों हैं तो हमारा हृदय प्रफुल्लित होकर उत्साह से भर जाता है और उत्साह में ही शक्ति है।'

यफीम—(खड़े होकर) तुम भलाई करने चलते हो और अपनी जान को जोखिम में डाल देते हो।'.................'इनलोगों को इसी वक्त जाना चाहिए ताकि इन्हें कोई देख न ले। हमलोग देहातों में पुस्तकें बाँट देंगे। अधिकारी-वर्ग चकित होंगे कि ये पुस्तकें कहाँ से आईं। उस वक्त उनलोगों को यात्रियों की याद आवेगी।

यफीम को बीच में ही रोककर रिबिन ने कहा—'आपलोगों

ने बहुत कष्ट उठाया। इसके लिये हमलोग आपके अतिशय कृतज्ञ हैं। आपको देखते ही मुझे पावेल का स्मरण हो आता है। आपने बड़ा ही उत्तम मार्ग पकड़ा है।'

वह मुस्कुराते हुए माँ के सामने खड़ा हो गया। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी पर वह एक साधारण कुर्ता ही पहने हुए था।

माँ ने उसे देखकर कहा—'भयानक सर्दी पड़ रही है। गरम कपड़ा पहन लीजिए।'

रिबिन—हृदय के भीतर ज्वालामुखी धधक रही है।

तीनों युवक आग के पास खड़े होकर धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। उनके पैरों के पास सवेली मृतवत् पड़ा था। अँधेरा दूर होने लगा था और सूर्य के प्रकाश का स्वागत करने के लिये पत्ते हिलने लगे थे।

सोफिया से हाथ मिलाते हुए रिबिन ने पूछा—'शहर में आप कहाँ रहती हैं?'

माँ—मेरे यहाँ।

तीनों युवकों ने शर्माते हुए सोफिया से हाथ मिलाया, सबों का हृदय स्नेह और सौहार्द से भरा था।

याकोब ने कहा-'प्रस्थान के पहले थोड़ा दूध पी लीजिएगा?'

यफीम—क्या दूध है?

याकोब—थोड़ा है।

इगनाटी—वह तो मुझसे गिर पड़ा।

तीनों हँस पड़े। वेलोग दूध की चर्चा कर रहे थे पर माँ

और सोफिया दूसरी चिंता में निमग्न थीं और मन ही मन उन-लोगों का कल्याण मना रही थीं उनकी बातों का असर सोफिया पर भी पड़ा। वह शर्मा गई और अधिक कुछ न कहकर बोली— 'भाइयो, धन्यवाद !'

वेलोग एक दूसरे की ओर देखने लगे मानों 'भाइयो' शब्द से उन्हें हलकी चोट लगी हो। सवेली के खाँसने का शब्द बराबर सुनाई देता था। आग बुझ चुकी थी।

किसानों ने दबी जबान से कहा—'नमस्कार' ! इस शब्द की ध्वनि दोनों रमणियों के कान में देर तक गूंजती रही।'

वेलोग धीरे-धीरे जंगल की तरफ चले। माँ सोफिया के पीछे-पीछे जा रही थी। बोली—'बड़े ही हर्ष का विषय है कि लोग अपनी वास्तविक दशा जानने के लिये आतुर हो रहे हैं। मुझे ऐसा मालूम होता है मानों छुट्टी का सवेरा हो। सब लोग गिरजा में एकत्र हुए हैं, पूर्ण प्रकाश नहीं फैला है, पादरी अभी तक नहीं आया है, लोग जमा हो गए हैं। एकाएक दीपक जल उठा अँधेरा गायब हो गया और सारे मंदिर में प्रकाश फैल गया।

सोफिया—भेद केवल इतना ही है कि यहाँ यह विश्व ही मंदिर है।

माँ ने गंभीर होकर कहा—'सारा विश्व ! यह इतना सुंदर है कि सहसा विश्वास करना कठिन है।'

रास्ते में वेलोग रिबिन, सवेली तथा तीनों युवकों की चर्चा करती रहीं कि कितना दत्तचित्त होकर वेलोग उसकी

बातें सुनते थे और किस सौजन्य के साथ व्यवहार करते थे। अब वेलोग खुले मैदान में आ गईं सूर्य का प्रकाश पूरी तरह फैल गया। घास पर पड़ी हुई ओस चमकने लगी। पेड़ों पर चिड़िया चहचहाने लगीं।

माँ ने कहा—'कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई आदमी अपनी बातें कहता जाता है पर सुननेवालों की समझ में कुछ नहीं आता। अंत में वह एक ऐसी बात कह देता है कि उसकी सभी बातें समझ में आ जाती हैं। उदाहरण के लिये सवेली को ही ले लीजिए। लड़कपन से ही मैंने मजूरों के दलित जीवन की कथा सुनी और देखी है। मैं स्वतः जानती हूँ कि कारखानों में मजूरों के रक्त चूस लिए जाते हैं। लड़कपन से उसका अनुभव करते रहने से हमलोगों को सहन पड़ जाती है और हमलोगों पर इसका अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। पर इसकी बातों से हृदय टूक-टूक हो जाता है। भगवान! क्या यह भी संभव है कि कारखानों के मालिक अपनी विलासिता के लिये मजूरों का रक्त तक चूस लेते हैं! यह कहाँ का न्याय है!'

सवेली के दास्तान ने माँ का सारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। इसके संसर्ग में उसे इसी तरह की अन्य घटनाओं का भी स्मरण हो आया जिसे वह समय की प्रगति में भूल गई थी। बोली—'यह तो प्रत्यक्ष है कि उन्हें हर तरह के दुराचार में संतोष मिलता है। मुझे एक सरकारी अफसर की बात याद है। वह जिस गाँव से होकर गुजरता था उस गाँव के किसानों को उसके

घोड़े को सलाम करना पड़ता था और जो सलाम नहीं करता था उसे वह गिरफ्तार कर लेता था। उसे इसमें क्या आनंद मिलता था? उसकी आवश्यकता ही क्या थी? असल बात यह है कि गरीब को दरिद्रता ने उल्लू बना दिया है और धनी को लोभ ने उल्लू बना दिया है।'

सोफिया प्रभाती का सुर भरने लगी।

पाँचवाँ परिच्छेद

निलोना (माँ) के जीवन में विचित्र शांति आ गई। अपनी इस गतिविधि पर उसे स्वयं विस्मय होता था। उसका एकमात्र पुत्र पावेल हवालात में बंद था। वह यह भी जानती थी कि इस बार उसे कड़ी-से-कड़ी सजा दी जायगी। पर जिस वक्त उसे उसका ध्यान आता उसकी स्मृति नखोदका, फीडिया मेजिन तथा उन अन्य नवयुवकों की ओर दौड़ पड़ती जिन्हें उसने देखा तक न था—केवल उनके त्याग की कथा सुनी थी। उसे स्पष्ट दिखाई देता था कि इन नवयुवकों का भाग्य पावेल के भाग्य के साथ एक सूत्र में बँधा है। उसकी अंतरात्मा केवल पावेल पर आकृष्ट न रह-कर उन अन्य युवकों की ओर आप-से-आप दौड़ पड़ती थी और सूर्य की किरणों की भाँति सब पर प्रकाशित होना चाहती थी, सबको अपनी शीतल छाया देना चाहती थी, सबको एक

रूप से देखना चाहती थी । उसकी अंतरात्मा एक वस्तु विशेष (पावेल) पर जमकर नहीं रहना चाहती थी ।

वहाँ से वापस आकर सोफिया दूसरे ही दिन कहीं अन्यत्र चली गई और पाँच दिन बाद लौटी । वह उसी तरह प्रसन्न और हँसमुख थी । कुछ ही घंटे रहकर वह फिर चली गई और दो सप्ताह तक गायब रही । उसकी दिन-चर्या देखने से यही प्रतीत होता था कि उसका दायरा बहुत ही विस्तृत है ।

निकोले इवानोविच सदा काम में लगा रहता था । पर उसका जीवन मशीन की भाँति सदा एक ही ढर्रे पर चलता था । आठ बजे सबेरे वह मुँह धोकर चाय पीता, अखबार पढ़ता और एक-एक करके सब समाचार माँ को सुनाता । ड्यूमा (रूस की पार्लामेंट) में धनिकों के जो भाषण होते उन्हें बिना किसी वेदना के ज्यों का त्यों सुनाता और शहर के जीवन का विस्तारपूर्वक वर्णनकर माँ को सुनाता और नौ बजे काम पर चला जाता ।

उसके वर्णनों से माँ को धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगा कि शहर के लोग किस बेरहमी के साथ रुपए की चक्की में जनसाधारण को पीसते हैं ।

निकोले के चले जाने के बाद वह कमरों को साफ करती, नहाती-धोती, कपड़ा बदलती और भोजन बनाती । इस काम से फुरसत पाकर वह कमरे में बैठ जाती और पुस्तकों और तस्वीरों को देखने लगती । उसने पढ़ना तो सीख लिया था पर पढ़ने का

परिश्रम नहीं बरदास्त कर सकती थी। साथ ही वह प्रत्येक शब्द का अर्थ भी नहीं समझ सकती थी। इससे वह अधिक समय चित्रों के देखने में बिताती। उन्हें देखने से उसे नित्य नई बातों का ज्ञान होता। उसने चित्रों में बड़े-बड़े नगर, सुरम्य भवन, बड़ी-बड़ी मशीनें, विशाल जहाजें, वृहत्-काय मूर्तियाँ, और असंख्य धनराशि देखे जो मनुष्य की कारीगरी के नमूने थे। प्रकृति के वैभव के साथ-साथ इस कृत्रिम वैभव के दर्शन से उसका ज्ञान-भंडार इतना अधिक बढ़ गया कि उसे विस्मय होने लगा। नित्य कुछ-न-कुछ नई बातें उसे देखने को मिलतीं और उसके ज्ञान-भंडार का कुछ-न-कुछ विकास अवश्य होता। उसकी भूखी आत्मा जागृत हो उठी और विश्व के अखिल वैभव तथा अनंत सौंदर्य का आनंद लेने के लिये अधीर हो उठी। वह प्राकृतिक चित्रों और भूगर्भ-विद्या तथा खनिज पदार्थों से संबंध रखनेवाले नकशों को अधिक चाव से देखती। यद्यपि उन पुस्तकों की भाषा विदेशी थी तो भी उसके अवलोकन मात्र से ही उसे विश्व के अनंत सौंदर्य, अखिल संपत्ति और विस्तार का ज्ञान हो जाता था।

भोजन के वक्त उसने निकोले इवानोविच से कहा—'यह विश्व बड़ा ही व्यापक है ?'

निकोले इवानोविच—इतने पर भी लोग एक दूसरे से सटे रहते हैं मानों उनके लिये कहीं धरती ही नहीं है।

जानवरों—विशेषकर तितली—का चित्र देखकर वह बहुत ही प्रसन्न होती थी। उसने निकोले इवानोविच से कहा—'इन नन्हें

नन्हें जानवरों में कितना सौंदर्य है। ये हमलोगों के चारों ओर उड़ते फिरते हैं फिर भी हम इनका आनंद नहीं ले सकते मनुष्य इधर-उधर भटकता फिरता है। उसे किसी बात का ज्ञान नहीं है वह किसी वस्तु का वास्तविक आनंद नहीं ले सकता क्योंकि उस ओर उसकी प्रवृत्ति ही नहीं है। यदि लोगों को यह मालूम हो जाता कि इस विश्व में सौंदर्य का अखिल भंडार भरा है, यह संपत्ति का आगार है, यह चित्र-विचित्र वस्तुओं का खजाना है तो लोग कितने खुश होते।

उसके उद्गार सुन-सुनकर निकोले मन-ही-मन प्रसन्न होता, हँस देता और नई-नई सचित्र पुस्तकें उसे ला देता।

शाम को अकसर मिलने-जुलनेवाले भी आ जाते। उनमें अलक्से वासिलोविच, रोमन पेट्रोविच, इवान डानिलोविच, इगोर इवानोविच प्रधान आनेवालों में थे। इनके अलावा कभी-कभी दूर-दूर के लोग भी आते थे। इनलोगों की बातचीत का प्रधान विषय संसार के मजूरों की अवस्था रहती थी। सब लोग गोल बाँधकर बैठते, मजूरों की दशा का वर्णन करते, बहस करते और उत्तेजित होकर हाथ-पैर फटकारते। निकोले इवानोविच चुपचाप बैठा कुछ लिखता रहता शोरगुल समाप्त होने पर लोगों को सुना देता और लोग तुरत उसकी नकल करते। माँ खराब और फटी प्रतियों को सावधानी से बटोरकर इकट्ठा करती और जला देती थी।

जिस समय वेलोग पूर्ण उत्साह और जोश के साथ मजूरों

के जीवन को चित्रित करते उनमें सत्य-ज्ञान के प्रचार की चर्चा करते, उन्हें जागृत करने का उपाय सोचते, माँ विस्मय के साथ उनकी बातें सुनती। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में केवल उसी बात की चिंता थी, उसी के लिये सबका हृदय व्यग्र था। बहुधा उन-लोगों में उग्र मतभेद हो जाता, एक दूसरे पर दोषारोपण करते, नाराज भी हो जाते और फिर बहस आरंभ करते।

इनकी बातों से माँ को विदित होता कि मजूरों के जीवन के बारे में वह इनलोगों से कहीं अधिक ज्ञान रखती है और जो काम येलोग अपने हाथ में लेने की चर्चा करते हैं उसके गुरुत्व को वह इनलोगों से अधिक समझती है। इनलोगों की हालत वह ठीक उन अबोध बालकों की तरह देखती जो खेल में दुल्हा दुलहिन का स्वांग रचकर व्याह रचाते हैं पर दाम्पत्य-जीवन का महत्त्व नहीं जानते।

शशेंका भी कभी-कभी आती थी। पर वह अधिक समय तक नहीं रहती थी। जितनी देर तक वह रहती गंभीर होकर केवल काम की बातें करती। चलते वक्त वह सदा माँ से पावेल का कुशल-मंगल पूछती।

माँ कहती—भगवान की दया से उसमें वैसा ही उत्साह है।

शशेंका—'भेंट होने पर मेरा अभिवादन कह दीजिएगा।' इतना कहकर वह चली जाती।

कभी-कभी माँ शशेंका के सामने दुख प्रगट करती और कहती कि न जाने क्यों सरकार अभी तक उनका विचार नहीं

कर रही है और व्यर्थ देर कर रही है। उस समय शशेंका का चेहरा उदास हो जाता। वह आँखें बंद कर लेती और अपना सिर झुका लेती। उस वक्त माँ की इच्छा होती कि उससे कह दे—'प्यारी बेटी, मैं तुम्हारे हृदय की बात जानती हूँ। तुम पावेल को हृदय से चाहती हो। पर शशेंका की उदासीन वृत्ति, उसका गंभीर स्वभाव, रूखी बातें माँ का मुँह बंद कर देतीं और वह अपने हृदय के उद्गारों को न निकाल सकती, प्रेम के साथ शशेंका से हाथ मिलाती और मन-ही-मन कहती—'अभागी लड़की!'

एक दिन नटाशा भी आई। वह बड़ी ही प्रसन्न थी। बड़े प्रेम से माँ से मिली और बड़े हर्ष के साथ उससे कहने लगी—'मेरी माँ का देहांत हो गया। अच्छा ही हुआ। उसे बड़ा ही कष्ट था।' इतना कहते-कहते उसने दाहिने हाथ से आँसुओं को पोंछा और धीरज धरकर बोली—'मुझे अतिशय दुख है। उसकी आयु पचास वर्ष भी नहीं हुई थी। अभी उसे बहुत दिन जीना था पर जब उसके जीवन पर दृष्टिपात किया जाता है तो यही कहना पड़ता है कि ऐसे जीवन से मृत्यु हजार गुनी अच्छी है। पिताजी उसे सदा फटकारा करते थे, उसके साथ घर में किसी की सहानुभूति नहीं थी। उसके पास बैठकर दो बातें करनेवाला भी कोई न था। मानों संसार में उसकी कोई आवश्यकता ही नहीं थी। यह भी कोई जीवन है? सभी लोग सुख की आशा से जीना चाहते हैं पर उसके भाग्य में अपमान के अतिरिक्त दूसरा कुछ नहीं बदा था।

माँ—तुम्हारा कहना बहुत ही ठीक है। सुख की आशा से

ही लोग जीते हैं। पर यदि जीवन में किसी तरह का सुख नहीं है तो वह जीवन निरर्थक है। (नटाशा की पीठ पर हाथ फेरकर) अब तो तुम अकेली हो गई।

नटाशा ने धीरे से कहा—'एकदम अकेली।'

माँ क्षणभर चुप रही। हँसकर बोली—'कोई परवाह नहीं। सज्जन पुरुष कभी भी अकेला नहीं रहता। लोग आप-से-आप उसके चारों ओर जमा हो जाते हैं!'

नटाशा एक छोटे कस्बे में मास्टरी का काम करती थी। उस कस्बे में कपड़े का एक कारखाना था। माँ छिपाकर सदा वर्जित पुस्तकें, परचे और अखबार उसके पास पहुँचाया करती थी। साहित्य का प्रचार ही माँ का प्रधान कार्य हो गया था। तरह-तरह के वेष बदलकर वह घोड़े पर सवार होकर अथवा सिर पर गट्ठर लादे नगर-नगर और गाँव-गाँव घूमती थी। जहाँ कहीं लोगों से भेंट हो जाती वह निर्भय होकर उनसे बातें करती। उसकी बातें सरल और अकपट होती थीं। उनमें अभिमान का लेश भी नहीं रहता था और सुननेवाला इस प्रकार मुग्ध हो जाता था मानों अनुभवों का निचोड़ उसके सामने रख दिया गया हो।

वह लोगों से बातें करने के लिये सदा उत्सुक रहती थी। वह लोगों की बातें ध्यान से सुनती थी। लोगों की बातों से जब कभी उसे यह ध्वनि निकलती कि लोग वर्तमान जीवन से उकता गए हैं और उसके प्रतिकार के लिये कोई समुचित और सरल उपाय जानने के लिये व्यग्र हैं तो वह मन ही मन प्रसन्न होती। मानव-

जीवन की वास्तविक दशा का उसे अधिकाधिक अनुभव होने लगा। वह प्रत्यक्ष देखती थी कि इस पापी पेट के लिये मनुष्य का सर्वस्व लुटा चला जा रहा है। उसका जीवन नीरस हो रहा है, उसे धोखा दिया जा रहा है, उसके जीवन का रस चूसा जा रहा है और जहाँ तक संभव है उसे निःसत्व बनाने का यत्न किया जा रहा है। वह देखती थी कि इस वसुंधरा में सब कुछ भरा पड़ा है, यह अखिल संपत्ति का भांडार है, लोग इस तरह के अतुल वैभव से घिरे रहने पर भी आधा पेट खाकर गुजर करते हैं। उनकी आवश्यकताएँ कभी भी पूरी नहीं हो पातीं। गिरजों में सोने और चाँदी के भंडार भरे पड़े हैं। देवता को उसकी कोई आवश्यकता नहीं है पर उसी गिरजे के दरवाजे पर भूखा भिखारी एक-एक पैसे के लिये मारा-मारा फिरता है और भीख माँगता है पर उसे देनेवाला कोई नहीं है। वह बचपन से ही गिरजों का यह वैभव देखती चली आ रही थी। पर उस समय इसमें उसे किसी तरह की विषमता नहीं दिखाई देती थी। पर आज जब वह गरीबों के जीवन पर गंभीर होकर विचार करती तो उसे यह सब विडंबना प्रतीत होती क्योंकि उसने प्रत्यक्ष देख लिया था कि इन गिरजों की आवश्यकता अमीरों से गरीबों को अधिक थी।

पुस्तकों की कथा और चित्रों से उसे यह भी मालूम हो गया था कि ईसा साधारण लिबास में रहते थे और गरीबों के दोस्त थे। पर गिरजों में वह क्या देखती! दरिद्रों का वह मित्र सोना-

चाँदी और रत्नों से सुसज्जित उन गरीबों पर हँस रहा है, साधारण लिबास पहननेवाला वह दीनानाथ जरी के कपड़ों से सजाया हुआ है। उस समय उसे रिबिन के वे शब्द याद आते—'इनलोगों ने हमलोगों के भगवान को भी पंगु बना दिया है। जहाँ तक उनका वश चला है सभी बातें हमलोगों के प्रतिकूल कर दी हैं। गिरजों में हमलोगों के लिये भय की साक्षात् मूर्ति बैठी है। बनावटी आभूषणों और कपड़ों से सज-धजकर उनका स्वाँग बना दिया है और हमलोगों की आत्मा को नष्ट करने के लिये उनका अंग भंग कर दिया है।

इसका फल यह हुआ कि उसकी प्रार्थना की प्रगति शिथिल पड़ने लगी पर उसका हृदय भगवान ईसा और उसके उन अनुयायियों की ओर—जो उसका नाम लिए बिना ही उसके आदेश का पूर्णतया पालन करते थे और उसकी तरह इस धरती को गरीबों की संपत्ति समझते थे और इसके निखिल भंडार को गरीबों में बराबर बाँट देना चाहते थे—अधिक आकृष्ट होने लगा। यह धारणा उसके हृदय में दृढ़ होती जाती थी और जो कुछ वह देखती अथवा सुनती थी उसका रंग उसके मानस-पट पर और गहरा होता जाता था और उसकी छाप अमिट होती जाती थी। वे ही भाव प्रार्थना का रूप धारण करते जाते थे और समस्त अंधकार को प्रकाशितकर समस्त जीवन और प्रत्येक मनुष्य पर समान प्रकाश फैला रहे थे।

भगवान ईसा के प्रति उसके हृदय में जो श्रद्धा थी उसमें

भय का भाव मिश्रित था, पर आज उसे ऐसा प्रतीत होता था कि वह महात्मा स्वयं उसके निकट चले आ रहे हैं और पहले से भिन्न हैं। वह आज कहीं ऊँचे आसन पर विराजमान हैं और उनकी मूर्ति कहीं निर्मल है। उनका दर्शन आज कहीं आनंद-दायक और सुखद है। उनकी आँखों में आशा और विश्वास का तेज था, उनमें अमोघ आंतरिक शक्ति का उदय हो रहा था मानों उनके नाम पर जनसमूह के जो रक्त बहाए गए हैं उससे सिक्त होकर वह कब्र से उठ खड़े हुए हैं और मानव-जाति के उद्धार के लिये चले आ रहे हैं। तो भी वेलोग—जिन्होंने चुपचाप अपने रक्त दे दिए हैं—इस दीनबंधु का नाम नहीं लेते हैं।

माँ अपना काम समाप्तकर घर वापस आती उसका हृदय आनंद से भरा रहता। उसे अपने काम से पूरा संतोष था और वह अपनी यात्रा का विशद वर्णन निकोले से करती थी। यात्रा में वह जो कुछ देखती अथवा लोगों से सुनती थी सब कुछ उससे कह देती थी।

एक दिन शाम को उसने निकोले इवानोविच से कहा—'मेरी यात्रा बड़ी ही उपयोगी हो रही है, मुझे बड़ा अनुभव हो रहा है। लोगों की रहन-सहन हमें प्रत्यक्ष देखने को मिलती है। मैं अपनी आँखों से देखती हूँ कि अमीर लोगों ने गरीबों को किस तरह ढकेलकर किनारे कर दिया है। गरीब लोग चोट खाकर घायल होकर इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं और सदा यही सोचते रहते हैं—इस तरह हमलोग क्यों मारकर भगाए जाते हैं? जब

विश्व अखिल धनराशि से पूर्ण है तो हमलोग भूखों क्यों मरते हैं? विश्व ज्ञान का भंडार है तो भी हमलोग मूर्ख क्यों रहें और इस तरह अंधकार में क्यों पड़े रहें? वह दयालु भगवान कहाँ हैं जिसके निकट अमीर और गरीब का भेद-भाव नहीं है बल्कि सभी उसके प्रिय हैं। लोग इस विषमता से व्याकुल होकर विद्रोह करने के लिये व्यग्र हैं। उनके हृदय में यह भाव उदय हो रहा है। कि यदि वेलोग अपनी अवस्था को नहीं सम्हालते तो असत्य के इस राज्य में उनका अंत हो जायगा।

अवकाश के वक्त वह पुस्तकों को लेकर बैठ जाती, चित्रों को उलट-पलटकर देखती। हर बार उसे कुछ-न-कुछ नया अनुभव प्राप्त होता। प्रकृति के विस्तृत साम्राज्य का नया ज्ञान मिलता, मानव-जीवन की योग्यता का पता लगता। वह सदा उन चित्रों के देखने में तल्लीन रहती, उसके इस अध्यवसाय पर निकोले इवानोविच हँसता और नई-नई बातें बतलाकर उसे और भी चकित कर देता। मनुष्य के साहस और वीरता की बातें सुनकर वह विस्मय के साथ पूछ उठती!—'क्या यह सच है?'

निकोले अपने दृढ़ विश्वास के अनुसार जनसाधारण के भविष्य जीवन का चित्र खींचता था और उसी धारणा के अनुसार ही वह माँ से मजूरों के भाव की चर्चा किया करता था। वह कहा करता था—मनुष्य की आकांक्षाएँ अपरिमित हैं। उसकी शक्ति अथक है। फिर भी विश्व में आत्मिक बल का उदय बहुत ही धीरे-धीरे होता है। इसका प्रधान कारण यह है कि इस युग में

आत्मिक विकास की ओर लोगों का ध्यान कम है। भौतिक विकास के पीछे लोग बुरी तरह पड़े हुए हैं। जब लोगों के हृदय से लोभ दूर होगा और मजूरों के गुलाम बनाने के अधम काम से वे मुक्त होंगे उस वक्त ....।

वह दत्त-चित्त होकर उसकी बातें सुनती थी। यद्यपि उसकी बातें उसकी समझ में पूरी तरह नहीं आती थीं पर जिस आत्म-विश्वास के साथ वे बातें कही जाती थीं उनका उसके हृदय पर अधिक प्रभाव पड़ता था।

उसने कहा—'सबसे अभाग्य की बात तो यह है कि इस वसुंधरा में स्वतंत्र प्राणी बहुत कम हैं।'

माँ ने इसका अभिप्राय अच्छी तरह समझ लिया। वह उन्हें जानती थी कि जिन्होंने अपने को मोह,मत्सर और लोभ से मुक्त कर लिया था। इससे उसने समझा कि इस तरह के लोगों की संख्या जितनी अधिक बढ़ती जायगी लोगों का जीवन उतना ही अधिक सादा वासनाविहीन, उदार और प्रकाशमान होता जायगा।

निकोले इवानोविच—'मनुष्य को इच्छा न रहते हुए भी हिंसा करनी पड़ती है।'

माँ को नखोदका की उस दिन की बातें याद आ गईं। उसने अपना सिर हिलाकर उसके कथन की पुष्टि की।

———

छठाँ परिच्छेद

निकोले प्रतिदिन ठीक समय पर आफिस से लौट आता था। एक दिन वह बहुत देर से आया और माँ से कहने लगा—'आज जेल से एक कैदी भाग गया है पर अभी तक हमलोगों को उसका नाम नहीं मालूम हो सका है।'

माँ का शरीर काँप उठा। उसने उत्सुकता से कहा—'कहीं पावेल न हो ?'

निकोले इवानोविच—'संभव है। पर प्रश्न यह उठता है कि उसका पता कहाँ लगाया जाय और उसे छिपाकर कहाँ रखा जाय ? मैं इस वक्त तक उसी की खोज में सड़कों पर भटक रहा था। मैं जानता हूँ कि इस तरह उसका पता नहीं लग सकता पर हृदय नहीं मानता। मैं फिर बाहर जा रहा हूँ।'

माँ उठ खड़ी हुई और बोली—'मैं भी चलूँगी !'

निकोले इवानोविच—'आप ईगर इवानोविच के पास जाकर पता लें कि उसे यह समाचार मिल गया है कि नहीं।

इतना कहकर वह घर से बाहर हो गया। उसके पीछे ही माँ भी घर से बाहर निकली। सिर को गमछे से ढँककर आशापूर्ण हृदय के साथ वह तेजी से आगे बढ़ी। उसका कलेजा धड़क रहा था, उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा रहा था, उसके सिर में चक्कर आ रहा था और उसे अपने आस-पास कुछ दिखाई नहीं देता था। ईगर के घर तक पहुँचते-पहुँचते उसकी साँस फूलने

लगी। दम लेने के लिये वह सीढ़ियों पर बैठ गई। उस समय उसने दरवाजे पर जो कुछ देखा उससे उसकी आँखें बंद हो गईं और उसके मुँह से एक हलकी चीख निकल पड़ी। उसने देखा कि ईगर के दरवाजे पर निकोले वेसोचिको पैंट की जेब में हाथ डाले खड़ा हँस रहा है और माँ को प्रणाम कर रहा है। पर जब उसने आँखें खोलीं तो कहीं कुछ नहीं दिखाई दिया।

उसने अपने मन में कहा—'मैंने उसे देखा है।' इसके बाद वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ तै करने लगी और रह-रहकर नीचे की ओर देखने लगी। उसे नीचे किसी के पैर की आहट मिली। उसने सिर झुकाकर नीचे की ओर देखा। निकोले वेसोचिको खड़ा मुस्कुरा रहा था।

माँ उसका नाम लेती हुई नीचे दौड़ पड़ी और उसके पास जाकर खड़ी हो गई। निराशा से उसका हृदय पीड़ित हो उठा।

उसने धीरे से कहा—'आप चलें।'

माँ दौड़ती हुई ऊपर गई। ईगर कमरे में चारपाई पर लेटा था। माँ ने धीरे से कहा—'निकोले जेल से निकल भागा है।'

ईगर उठ बैठा। उसने पूछा—'कौन निकोले?'

माँ—निकोले वेसोचिको। वह यहीं आ रहा है।

ईगर—अच्छी बात है। पर मैं अगवानी के लिये उठ नहीं सकता।

इतने में निकोले वेसोचिको कमरे में पहुच गया। उसने दरवाजा बंद कर दिया और हैट उतारकर अपने सिर के बालों पर

हाथ फेरता हुआ धीरे-धीरे हँसने लगा। ईगर केहुनी के सहारे उठ बैठा। सिर हिलाकर बोला—'भाई, आप इसे अपना ही घर समझें।'

निकोले बिना कुछ कहे हुए माँ के पास गया और उसका हाथ पकड़कर बोला—'यदि भाग्यवश आप न दिखाई दी होतीं तो मैं जेल वापस चला जाता क्योंकि शहर में मेरी किसी से जान पहचान नहीं है। यदि मैं देहात की तरफ जाता तो तुरंत पकड़ा जाता। इसलिए मैं इधर-उधर घूमता रहा और बराबर यही सोचता था कि मैंने भागकर बड़ी बेवकूफी की है अकस्मात् मेरी दृष्टि आप पर पड़ी। देखा आप दौड़ती हुई इसी तरफ आ रही हैं। मैं भी आपके पीछे हो लिया।

माँ—तुम कैसे निकल भागे ?

निकोले पलँग के एक किनारे बैठ गया और ईगर से हाथ मिलाते हुए बोला—'मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं टहल रहा था। मैंने देखा कि कैदी लोग जेल के ओवरसियर को पीट रहे हैं। जेल में एक ओवरसियर हैं जो चोरी के अपराध में इंसपेक्टरी से निकाल दिया गया था। वह गुप्तचर है, संवाददाता है और सबके जीवन को कष्टमय बनाए रहता है कैदियों ने खूब घूँसेबाजी की। ओवरसियर ने घबराकर सीटी बजा दी। उसी समय जेल का फाटक खुला, मैं टहलता हुआ उसी तरफ चला गया। सामने रमणीक पार्क था। उसके सौंदर्य ने मुझे अपनी ओर आकृष्ट किया। मैं और आगे बढ़ा। थोड़ी दूर जाकर मैं सोचने

लगा—मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैंने पीछे फिरकर देखा जेल का दरवाजा बंद हो गया था। मैं विचित्र परिस्थिति में पड़ गया। मैं अन्य साथियों के लिये अधीर हो उठा। यह मेरी मूर्खता थी क्योंकि मैंने भागने का एकदम इरादा नहीं किया था।

ईगर—यदि तुम्हें पछतावा था तो तुम वापस जाकर दरवाजा खटखटाते और पुनः प्रवेश के लिये चिल्लाते। जेलर के पूछने पर कहते कि मेरी भागने की नियत तो थी पर मेरे ईमान ने साथ नहीं दिया।

निकोले ने हँसकर कहा—'आपका कहना यथार्थ है। पर वह भी मूर्खता ही होती। जो हो मैंने जो कुछ किया अच्छा नहीं किया क्योंकि अपने साथियों से बिना कुछ कहे-सुने ही चला आया। अस्तु मैं आगे बढ़ता गया और ऐसी जगह पर पहुँचा जहाँ एक मरा बच्चा गाड़ा जा रहा था। मैं चुपचाप वहाँ बैठ गया। मैंने सिर उठाकर किसी की ओर देखा तक नहीं। वहाँ बैठकर मैं ठंढी और ताजी हवा का आनंद लेने लगा। उस समय मेरे दिमाग में केवल एक ही बात उठी।

ईगर—केवल एक ही। मेरी समझ में यहाँ उसकी एकता नष्ट न हो जायगी।

निकोले हँसने लगा। बोला—'मेरा मस्तिष्क अब उतना शून्य नहीं है जितना पहले था। लेकिन हम देखते हैं कि तुम अभी तक बीमार ही हो।'

ईगर—सब अपने सामर्थ्य के अनुसार काम करते हैं। कोई

किसी को बाधा नहीं दे सकता। तुम अपनी कथा कहते चलो।'

निकोले—'उसके बाद मैं एक अजायब-घर में पहुँचा और इधर-उधर घूमने लगा। मैं बराबर यही सोचता था कि कहाँ जाऊँ। रह-रहकर मुझे अपने ही ऊपर क्रोध आने लगा क्योंकि इस समय तक मुझे भूख भी बहुत ज्यादा लग गई थी। मैं सड़क पर चला आया और आगे बढ़ने लगा। मैं हताश हो गया। मैंने देखा कि पुलिस का अफसर हरएक आदमी को गौर से देख रहा है। मैंने अपने मन में कहा कि मुझे अपनी करनी का फल तुरंत मिलना चाहता है। इसी समय मैंने माँ को वेग से आते देखा। मैं उसके पीछे हो लिया और यहाँ आ पहुँचा।

माँ ने अपराधी की भाँति कहा—'और मैंने तुम्हें देखा तक नहीं।'

निकोले—जेल के सभी साथी परेशान होंगे। उन्हें इस बात की अवश्य ही चिंता होगी कि मैं कहाँ गायब हो गया।

ईगर—क्या तुम्हें अधिकारियों की चिंता नहीं है? वे भी तो तुम्हारे लिए परेशान होंगे!

बड़ी मुश्किल से करवट लेते हुए ईगर ने फिर कहा—'हँसी की बात छोड़ो। इस वक्त तुम्हें छिपाकर रखने का प्रश्न है। यह न तो उतना आसान है और न सुखद। यदि मैं उठने-बैठने लायक होता तो ·····।'

उसका दम फूलने लगा। उसने दोनों हाथ से सीना दबाया और-धीरे धीरे उस पर हाथ फेरने लगा।

निकोले ने वेदना-भरे शब्दों में कहा—'ईगर ! तुम्हारी हालत बड़ी खराब है !'

माँ ने ठंढी साँस ली और चिंता के साथ कमरे में चारों ओर देखने लगी।

ईगर—यह सब मेरे संबंध की बातें हैं। माँ, आप पावेल का कुशल-मंगल पूछें। उदासीनता दिखलाने की आवश्यकता नहीं है।

निकोले हँसने लगा। बोला—'पावेल अच्छी तरह है। खूब हृष्ट-पुष्ट है। हमलोगों का तो नेता ही है अफसरों से वही बातें करता है। उसकी बड़ी इज्जत है। सब लोग उसकी आज्ञा में रहते हैं और इसका पर्याप्त कारण भी है।

माँ चुपचाप निकोले की बात सुन रही थी और ईगर के चेहरे की ओर कनखियों से देखती जाती थी। उसका चेहरा एकदम सूज गया था, भावहीन हो रहा था, केवल आँखों में प्रकाश और तेज था।

निकोले—मुझे बड़ी भूख लगी है। कुछ खाने को मिलेगा क्या ?

ईगर—(माँ से) टाँड़ पर रोटी है। इसे दे दीजिए। इसके बाद बरामदे में जाकर बगलवाला दरवाजा खटखटाइए। एक औरत बाहर निकलेगी। उससे कहिएगा कि भोजन की जो कुछ सामग्री हो उसे लेकर आवे।

निकोले—सब कुछ क्यों ?

ईगर—होगा ही क्या ?

माँ ने बरामदे में जाकर दरवाजा खटखटाया और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। उसे ईगर की चिंता थी क्योंकि उसकी मृत्यु अनिवार्य प्रतीत होती थी। इतने में भीतर से किसी ने पूछा कौन है?

माँ—आपको ईगर इवानोविच ने बुलाया है!

भीतर से उसी प्रकार उत्तर मिला—'मैं अभी आ रही हूँ।' माँ थोड़ी देर तक खड़ी रही। फिर दरवाजा खटखटाया, इस बार दरवाजा खुला और चश्मा लगाए एक लंबी रमणी सामने खड़ी हुई दिखाई पड़ी। उसने रुखाई से पूछा—'आप क्या चाहती हैं?'

माँ—मुझे ईगर इवानोविच ने भेजा है?

रमणी नरम पड़ गई। बोली—'आइए, मैं आपको जानती हूँ। आप अच्छी तरह से हैं?'

माँ ने भी उस रमणी को पहचान लिया। कभी-कभी वह भी निकोले इवानोविच के घर जाया करती थी। उसने अपने मन में कहा! जहाँ जाइए वहीं साथी मिल जाते हैं।

माँ को आगे करके उस रमणी ने पूछा—'क्या उन्हें अधिक कष्ट है।'

माँ—वह तो पड़े हैं। उन्होंने भोजन के लिये कुछ माँगा है?

रमणी—उन्हें तो खाने के लिये कुछ नहीं मिलेगा।

जिस समय वे दोनों कमरे में प्रवेश कर रही थीं उन्होंने ईगर को कहते हुए सुना—'मैं तो अब अपने पुरुषों के पास जाने की तैयाँरी कर रहा हूँ। बहिन! (उस रमणी को लक्ष्यकर) लुडा-

मिला वेसिलोना ! अधिकारियों की आज्ञा बिना ही यह आदमी (निकोले) जेल से भाग आया है। इसे खिला-पिलाकर कहीं छिपा दो।

उस रमणी ने सिर हिलाया और ईगर के चेहरे की ओर गौर से देखा। डपटकर बोली—'तुम्हें बोलना मना है। इससे तुम्हारी बीमारी बढ़ जायगी। जिस समय येलोग आए उसी वक्त तुम्हें हमें बुला लेना चाहिए था। तुमने अभी तक दवा भी नहीं खाई है। इस लापरवाही से क्या मतलब है ? दवा खाने के बाद तुम्हें साँस लेने में आराम मालूम होता है। (मेहमानों से) भाइयो, आपलोग मेरे कमरे में चलें। अस्पताल से लोग इन्हें लेने के लिये आते ही होंगे !

ईगर ने कहा—'मुझे अस्पताल में जाना ही पड़ेगा !'

रमणी—मैं भी वहाँ तुम्हारे साथ रहूँगी।

ईगर—वहाँ (स्वर्ग में) भी।

रमणी—हुश ! क्या बेमतलब की बातें कहते हो।

इतना कहकर वह ईगर को कंबल ओढ़ाने लगी उसकी एक आँख निकोले पर थी और दूसरी से शीशी में रखी दवा का अंदाजा लगा रही थी।

उसने माँ से कहा—'मैं इन अतिथि को लेकर जा रही हूँ। शीघ्र ही वापस आऊँगी। आप एक खुराक दवा इन्हें पिला दीजिएगा।

माँ—बहुत अच्छा।

रमणी—इन्हें बोलने मत दीजिएगा।

इतना कहकर वह निकोले के साथ कमरे से बाहर हो गई ?

ईगर ने ठंढी साँस लेकर कहा—'बड़ी उदात्त औरत है। माँ, तुम्हें उसकी सहायता करनी चाहिए। हमलोगों की छपाई का समस्त काम इसे अकेले करना पड़ता है। वह थक जाती है।

माँ ने नरमी से कहा—'एक खुराक दवा खाकर चुपचाप पड़े रहो। बोलो मत !

उसने दवा खा ली और एक आँख दबाकर बोला—'यदि मैं मुँह बंद कर लूँ तो भी नहीं बचूँगा।'

उसने दूसरी आँख से माँ की ओर देखा। उसके ओठों पर मुस्कुराहट की रेखा दौड़ आई। माँ का हृदय करुणा से भर गया। उसकी आँखों में आँसू छलछला आए। उसने सिर नीचा कर लिया।

ईगर—माँ, इसके लिये चिंता करना व्यर्थ है। यह तो अवश्यं-भावी है। जीवन की सुखद आशा के साथ-ही-साथ मृत्यु की भयानक यंत्रणा झेलनी ही पड़ती है।

माँ ने अपने हाथ से उसका मुँह बंद करते हुए कहा—'तुम बातचीत न करो।'

उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। मानों अपने फेफड़े की आवाज सुनने के लिये एकाग्र हो गया हो। बोला-'माँ, चुप रहना बेकार है। इससे मुझे कुछ लाभ नहीं हो सकता। क्षण भर की शारीरिक यातना से बचने के लिये मैं तुम्हारे सामान सज्जन

व्यक्ति से बातें करने के सुख से क्यों वंचित रहूँ। मेरा विश्वास है कि परलोक में तुम सरीखे लोगों से भेट नहीं हो सकती।'

माँ ने उसे रोककर कहा—'तुम मेरी बातें मानते नहीं हो और वह रमणी आकर मुझे डाँटने लगेगी?'

ईगर—वह रमणी नहीं है। वह भी क्रांतिकारियों के दल में है। देहाती स्कूल-मास्टर की कन्या है। वह तो तुम्हें डांटेगी ही। वह सबको डाँटा करती है। इसके बाद उसने धीरे-धीरे अपनी पड़ोसिन स्त्री की पूरी जीवनी कह डाली। उसकी आँखों में मधुर मुस्कान थी। माँ ने देखा कि वह सकारण इस तरह हँस रहा है। उसका मुरझाया और पीला चेहरा देखकर उसने स्पष्ट समझ लिया कि उसकी मृत्यु निकट है।

वह रमणी वापस आई। सावधानी से दरवाजा बंद करके उसने माँ से कहा—'तुम्हारे साथी को कपड़े बदलकर जहाँ तक हो शीघ्र यहाँ से हट जाना चाहिए। इसलिए आप जाकर आवश्यक कपड़े यहाँ शीघ्र लावें। खेद है कि सोफिया यहाँ नहीं है। लोगों को छिपाकर रखने में वह बहुत ही चतुर है।

माँ चादर ओढ़कर खड़ी हो गई। बोली—'सोफिया कल ही आ जायगी। जब कभी उसे कोई काम मिलता है वह उसे पूरा करने के लिये अधीर हो उठती है। जब तक वह उस काम को पूरा नहीं कर लेती उसे चैन नहीं पड़ता। निकोले के लिये किस तरह का कपड़ा चाहिए?

लुडमिला—रात का वक्त है। किसी भी कपड़े से काम चल जायगा।

माँ—रात के वक्त तो समस्या और भी जटिल हो जाती है।' सड़क पर लोगों की भीड़ कम हो जाती है गुप्तचर लोगों का और भी अधिक पीछा करने लगते हैं। उसके अलावा उसकी बनावट बेढंगी है।

ईगर खिलखिलाकर हँस पड़ा। बोला—'माँ, अभी आपकी बुद्धि अल्हड़ है।'

माँ—क्या मैं अस्पताल में आ सकती हूँ ?

उसने खाँसते हुए सिर हिलाया। लुडमिला ने गौर के साथ माँ की ओर देखकर कहा—'इनकी शुश्रुषा में आप मेरी सहायता करना चाहती हैं ? अवश्य आइए। पर इस वक्त आप शीघ्र जाइए।

इतना कहकर उसने माँ से हाथ मिलाया और उसे बाहर तक पहुँचा आई ?

बिदा करते समय उसने माँ से कहा—'इस तरह एकाएक मैंने आपको बिदा कर दिया है इससे खिन्न न होइएगा। मेरे लिए यह उचित नहीं है पर मैं लाचार हूँ। इन्हें बोलना मना है और मुझे आशा है कि हिफाजत करने से वे बच सकते हैं।'

लुडमिला की इस कैफियत से माँ को वेदना हुई। उसने कहा—'आप यह क्यों कहती हैं। किसे क्षोभ हुआ ? ऐसी बात तो ध्यान में आनी ही नहीं चाहिए। अच्छा, अब मैं जाती हूँ।'

लुडमिला ने धीरे से कहा—'गुप्तचरों से सावधान रहना।'

माँ मैं उन्हें खूब पहचानती हूँ।

माँ घर से बाहर हुई। सड़क पर आकर कपड़ा सम्हालने के बहाने उसने एक बार चारों ओर देखा। वह गुप्तचरों को खूब पहचानती थी। उनकी मस्तानी चाल, उनका बनावटीपन, उनके चेहरे की परेशानी, उनकी अपराधी आँखें उनका स्पष्ट पता बता देती थीं।

सड़क पर उसे कोई भी परिचित व्यक्ति नहीं दिखाई दिया। इसलिए वह इतमिनान के साथ आगे बढ़ी। उसने किराए की एक गाड़ी कर ली और बाजार की ओर चल पड़ी। दुकानदार के साथ वह कपड़ों का मोलभाव करती जाती थी और अपने शराबी पति की लापरवाही पर कुढ़ती जाती थी कि वह नशे में इतना कपड़ा नष्ट करता है कि हर महीने उसे नए कपड़े खरीदने पड़ते हैं। दूकानदार को इन सब बातों से कोई मतलब नहीं था पर वह अपनी चातुरी पर मन-ही-मन मुग्ध हो रही थी। रास्ते भर उसने यही अनुभव किया था कि पुलिस को इस बात की आशंका होगी कि निकोले के लिये कपड़ा खरीदने बाजार अवश्य कोई आवेगा। इसलिए पुलिसवाले बाजार में गुप्तचर अवश्य भेजेंगे। इसलिए उसने कपड़ा खरीदने का काम बड़ी सावधानी से किया और उससे भी अधिक सावधानी के साथ वह वापस लौटी। यहाँ से उसे निकोले को शहर के बाहर ले जाना था। कपड़ा बदलवाकर वह निकोले के साथ घर से बाहर निकली। दोनों सड़क के दो किनारे से चले। निकोले सिर झुकाए धीरे-धीरे कदम

बढ़ाता था। उसके पैर कभी-कभी उसके लंबे कोट में फँस जाते थे। उसकी हैट नाक तक आ गई थी। उसका विचित्र पहनावा और उससे भी विचित्र चाल देखकर माँ मन-ही-मन हँस रही थी। शहर के सुनसान भाग में शशेंका से भेंट हो गई। उसे शशेंका के हवालेकर माँ ने निकोले से बिदा ली और घर की ओर वापस हुई।

उसने अपने मन में कहा—'और पावेल नखोद्का के साथ अभी जेल में ही सड़ रहा है।'

घर पर निकोले इवानोविच ने घबराहट के साथ उससे कहा—'ईगर इवानोविच की हालत अत्यंत चिंताजनक है। वह अस्पताल में है। लुडमिला भी वहीं है। उसने आपको बुलाया है।

माँ—अस्पताल में ?

नि० इवा०—हाँ, इसके बाद उसने माँ के हाथ में एक बंडल दिया और कहा कि इसे भी साथ लेते जाइए। निकोले वेसोचिको को तो आपने ठीक तरह से पहुँचा दिया ?

माँ—हाँ।

नि० इवा०—आप चलें मैं भी शीघ्र वहाँ आऊँगा।

थकावट से माँ के सिर में चक्कर आ रहा था। निकोले इवानोविच की उद्विग्न आकृति देखकर उसने भावी विपत्ति की भी कल्पना कर ली थी। उसके मन में रह-रहकर यही मनहूस विचार उठने लगा कि बिचारा ईगर इवानोविच अब इस संसार से बिदा हो रहा है।

इसी तरह विषादपूर्ण चिंता करती हुई वह अस्पताल में पहुँची। उसने देखा कि ईगर तकिया के सहारे बैठा आनंद से हँस रहा है। उसका हृदय खिल उठा, मन हलका हो गया। वह दरवाजे ही पर रुक गई और डाक्टर के साथ ईगर की बातें सुनने लगी।

ईगर ने कहा—'रोग-मुक्त होना एक प्रकार का सुधार है।'

डाक्टर—(चिढ़कर) क्या बेहूदा बातें बकते हो।

ईगर—मैं क्रांतिकारी हूँ। इसलिए सुधार से मुझे घृणा है।

डाक्टर गौर से ईगर की आकृति की परीक्षा कर रहा था। माँ भी उन्हें पहचानती थी। उनका नाम डानिलोविच था। वह निकोले इवानोविच के घनिष्ठ मित्र थे। इसलिए माँ बेधड़क ईगर के पास चली गई। ईगर ने माँ का स्वागत करने के लिये मुँह खोला। डाक्टर ने पीछे की ओर घूमकर देखा तो माँ को खड़े हुए पाया। बोला—'कौन ? निलोना ! आओ !! बहुत दिन पर भेंट हुई। कहो, अच्छी हो न ? यह हाथ में क्या है ?'

ईगर—किताबें होंगी।

डाक्टर—इन्हें पढ़ना-लिखना एकदम मना है।

ईगर—डाक्टर साहब, हमें मूढ़ बनाकर रखना चाहते हैं ?

डाक्टर—'चुप रहो।' इसके बाद वह कुछ नोट करने लगे।

ईगर का दम फूल रहा था, प्रत्येक साँस के साथ उसका गला इस तरह घरघरा रहा था मानों साँस उसके कलेजे को चीरकर निकल रहे हों और श्रम के विंदु उसके ललाट और मुँह पर जमा हो जाते थे जिन्हें वह अपने हाथों से पोंछता

जाता था। उसका चेहरा स्याह हो गया था, उसमें सूजन आ गई थी उसकी आकृति एकदम नष्ट हो गई थी। सिर्फ गढ़ुले के भीतर धँसी आँखें उसी प्रकार तेजमय और चमकती थीं।

ईगर—(डाक्टर से) इस तरह बैठे-बैठे मैं थक गया। क्या लेट जाऊँ ?'

डाक्टर—नहीं।

ईगर—आपके जाने के बाद तो मैं अवश्य लेट जाऊँगा।

डाक्टर—(माँ से) इन्हें लेटने कदापि न देना। इससे इनकी बीमारी बढ़ जायगी।

माँ ने सिर हिलाकर अनुमति प्रगट की। डाक्टर चले गए। ईगर का सिर लटक गया, आँखें बंद हो गईं और उसे मूर्च्छा-सी आने लगी। ओठों के सिवा उसका सारा शरीर निश्चल हो गया।

उसी दशा में पड़े-पड़े उसने कहा—'मेरी मृत्यु धीरे-धीरे मेरे पास आ रही है। मुझे ले जाते हुए उसे भी खेद हो रहा है मानों वह जानती है कि मैं बड़ा ही मिलनसार आदमी हूँ।'

माँ ने उसे तसल्ली देते हुए कहा—'भैया जरा चुप रहो।'

ईगर—माँ, अब तो मैं सदा के लिये चुप हो रहा हूँ।

उसकी साँस क्षीण होती जाती थी। उसके मुँह से शब्द कठिनाई से निकलते थे। रह-रहकर उसे मूर्च्छा आ जाती थी पर उसने बातें करना बंद नहीं किया। बोला—'मैं बड़ा ही भाग्यवान हूँ कि इस अंतिम समय तुम मेरे पास हो। तुम्हें देखकर मुझे बड़ा सुख मिल रहा है। इस जीवन का किस तरह अंत होगा !

यह सोचकर पीड़ा होती है कि औरों की भाँति तुम्हें भी जेल की यातनाएँ और निर्वासन का भीषण कष्ट भोगना पड़ेगा। क्या तुम जेल से डरती हो ?

माँ—नहीं, कदापि नहीं।

ईगर—पर जेल बड़ा ही बुरा स्थान है। जेल ने ही मेरी यह अवस्था कर डाली। मैं मरना नहीं चाहता था।

माँ कहना ही चाहती थी कि तुम नहीं भी मर सकते हो पर उसका मुर्झाया चेहरा देखकर ये शब्द उसकी जीभ में ही सटे रह गए।

ईगर—यदि मैं बीमार न पड़ा होता तो मैं आज तक उसी उत्साह के साथ काम करता रहता। पर यदि इस शरीर से काम नहीं हो सकता तो जीना बेकार है। बल्कि मूर्खता है।

माँ—तुम्हारा कहना ठीक है। पर इससे संतोष नहीं होता।

इसी वक्त नखोदका की उस दिन की बात उसे याद पड़ गई, उसने ठंढी साँस ली।

दिन भर के कड़े परिश्रम से वह थक गई थी और भूखी भी थी। मरीज की सायँ-सायँ बातें कमरे में गूँज रही थीं खिड़की के बाहर नीबू के पेड़ के पत्ते खड़खड़ा रहे थे। इधर ऊषा का प्रकाश फैल रहा था पर ईगर का चेहरा स्याह पड़ता जा रहा था।

ईगर ने कहा—'मुझे बड़ी पीड़ा हो रही है।'

इतना कहकर उसने आँखें बंद कर लीं और चुप हो गया। माँ क्षणभर उसके साँस की परीक्षा करती रही। उसके बाद चारों

ओर देखकर वह उदासी की हालत में चुपचाप बैठ गई। उसे झपकी आ गई।

दरवाजे की खड़खड़ाहट से उसकी नींद खुल गई। उसने देखा कि ईगर ताक रहा है। उसने धीरे से कहा—'मुझे झपकी लग गई थी, क्षमा करना।'

ईगर ने भी उसी तरह मंदस्वर से कहा—'माँ मुझे भी क्षमा करना।'

दरवाजे पर लुडमिला के शब्द सुनाई पड़े। वह कह रही थी—'दोनों व्यक्ति अँधेरे में बैठे फुसफुसा रहे हैं। लालटेन कहाँ है?'

उसकी कर्कश ध्वनि से कमरा हिल गया। दूसरे ही क्षण तेज प्रकाश से सारा कमरा उज्वल हो उठा। कमरे के बीच में लुडमिला खड़ी थी। उसका चेहरा गंभीर था। ईगर उसकी ओर देखने लगा और उसने करवट बदलने का प्रयत्न करते हुए कठिनाई के साथ अपने हाथों को छाती पर लाकर रखा।

लुडमिला उसके पास दौड़ पड़ी। पूछा—'कैसी तबियत है?'

ईगर स्थिर दृष्टि से माँ की ओर देख रहा था। उसकी आँखें इस वक्त और भी चमक रही थीं। उसने कहा—'ठहरो!' उसने अपना मुँह खोला, सिर उठाया और हाथ आगे बढ़ाया। माँ ने सावधानी से उसके हाथ को अपने हाथ में ले लिया और दम रोककर उसकी ओर देखने लगी। उसने बड़ी जोर से गर्दन हिलाई और सिर पीछे की ओर झुकाकर जोर से चिल्ला उठा—'वायु'।

उसका सारा शरीर काँप उठा। सिर गर्दन पर लटक गया और आँखें खुल गईं। चिराग के मंद प्रकाश का प्रतिबिंब उनमें स्पष्ट दिखाई देने लगा। उसके हाथ-पैर ठंढे हो गए।

माँ ने कहा—'मेरे प्यारे पुत्र !'

लुडमिला वहाँ से हटकर खिड़की के पास चली आई और बाहर की ओर देखने लगी। उसने चीखकर कहा—'हाय! उसका अंत हो गया।' उसकी गर्दन झुक गई। दोनों केहुनियों के सहारे खिड़की पर झुककर वह वेदना भरे शब्दों में बारबार कहने लगी–'उसका अंत हो गया। उसने पूर्ण शांति से मृत्यु का स्वागत किया, वीरों की भाँति उसने प्राण दिए, एक बार भी विषाद अथवा वेदना नहीं प्रगट की।'

इतना कहते-कहते वह जमीन पर गिर पड़ी और दोनों हाथों से मुँह ढँककर रोने लगी।

सातवाँ परिच्छेद

माँ ने ईगर इवानोविच के दोनों हाथ उसकी छाती पर रख दिए, उसके सिर को तकिए के सहारे ठीक कर दिया, अपनी आँखों से आँसू पोंछे और लुडमिला के पास जाकर उसका सिर सुहराने लगी। लुडमिला ने सिर उठाया, आँखें खोलीं, उठ खड़ी हुई और माँ से कहने लगी—'मेरा बहुत दिनों से उनका साथ था। निर्वासन में हमलोग साथ ही रहते थे। यहाँ से हम

दोनों साथ ही पैदल गए, साथ ही जेल में रहे। जेल का जीवन असह्य था, तबियत उकता जाती थी। कितने निराश हो जाते थे। उसका गला रुँध गया, बड़ी कठिनाई से अपने को सम्हाल-कर उसने कहा—'उस भीषण अवस्था में भी वह सदा प्रसन्न रहने को सबसे हँसी-मजाक किया करते थे, हँसते रहते थे, वीरों की भाँति अपनी वेदना को छिपाकर रखते थे और दुर्बल हृदयवालों को सांत्वना देते थे। साइबेरिया की बेकारी लोगों को निराश कर देती है। कभी-कभी लोग घबराकर अपनी जीवन-लीला का अंत करने की अशुभ कल्पना करने लगते हैं। उसने सब पर विजय प्राप्त कर ली थी। वह कैसा वीर था! जो उसे जानता था वही उसका मूल्य समझ सकता है। उसका जीवन विषादमय और यंत्रणाओं से भरा था पर एकबार भी उसके मुँह से आह नहीं निकली। मेरे साथ उनकी सबसे अधिक घनिष्ठता बढ़ी, मैं अनंत काल तक उनकी ऋणी रहूँगी। उन्होंने मुझे अपना सर्वस्व दे दिया पर इन बुरे दिनों में भी उन्होंने मुझसे उन उपकारों का बदला नहीं चाहा।

इतना कहकर वह ईगर के विस्तरे के पास गई। उसे चूमा और भर्राई हुई आवाज में बोली—'मेरे प्यारे बंधु! मैं आजन्म तुम्हारी ऋणी रहूँगी। तुम चले गए पर मैं जीवन भर तुम्हारे आदेश का पालन करूँगी। निडर और अटल होकर तुम्हारे बताए मार्ग पर चलूँगी।'

उसकी हिचकियाँ बँध गईं और उसने अपना सिर ईगर के

पैरों पर रख दिया। माँ मन-ही-मन रो रही थी। आँसुओं की धारा उसके गालों पर से होकर बह रही थी। वह उन्हें रोकना चाहती थी। वह लुडमिला को सांत्वना देना और ईगर के लिये हार्दिक प्रेम और वेदना प्रकट करना चाहती थी। उसने ईगर के फूले हुए चेहरे की ओर देखा। कमरे में पूर्ण शांति विराज रही थी।

डाक्टर इवान डेनलोविच सदा की भाँति तेजी के साथ आए पर कमरे के भीतर की हालत देखकर बीच कमरे में ही ठिठक गए और पूछा—'क्या इनकी जीवन-लीला को समाप्त हुए देर हुई ?'

उसके प्रश्न का किसी ने उत्तर नहीं दिया। वह ईगर के विस्तरे के पास गया। उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोला—'यह साधारणं नहीं है। ऐसे रोगों में यही होता ही है। यह घटना छः मास पहले भी हो सकती थी।'

उसकी आवाज कड़ी थी जो उस शोक के समय के लिये उचित नहीं प्रतीत होती थी। पर दूसरे ही क्षण वह भी रो पड़ा। वह दीवाल के सहारे खड़ा होकर ईगर के शव की ओर देखकर बोला—'जालिमों के जुल्म का एक और शिकार हुआ !'

लुडमिला अपने स्थान से उठकर खिड़की के पास गई। माँ ने सिर उठाया और वेदना के साथ चारों ओर देखा। दूसरे ही क्षण वे तीनों खिड़की के पास सटकर खड़े हो गए। और पत-झड़ की रात का दृश्य देखने लगे। पेड़ों के ऊपर अंधकार का पूर्ण राज्य था। उसके बीच में तारे चमक रहे थे।

लुडमिला ने माँ का हाथ अपने हाथ में लेकर उसके सहारे कंधे पर सिर रख दिया। डाक्टर वेदना और बेकसी से अपने ओंठ काट रहे थे और रुमाल से चश्मा पर गिरे आँसुओं को पोंछते जाते थे। कमरे से बाहर उस निविड़ अंधकार में शहर का कोलाहल सुनाई दे रहा था। तेज हवा चल रही थी। लुडमिला काँप उठी। माँ ने देखा उसके दोनों कपोल आँसुओं से तर हैं। मैदानों के पेड़ स्थिर खड़े थे मानों अंधकार की ओर स्थिर दृष्टि से देख रहे हों।

माँ ने देखा कि यहाँ अब मेरी कोई आवश्यकता नहीं है। वह ईगर के शव के पास गई, भक्ति से उसे प्रणाम किया और दरवाजे की ओर बढ़ी।

माँ को जाते देख डाक्टर ने पूछा—'आप जा रही हैं ?'

माँ०—हाँ !

रास्ते भर वह लुडमिला की दयनीय दशा पर करुणा के साथ विचार करती रही कि वह खुलकर रो भी नहीं सकती थी। उसके ध्यान में लुडमिला डाक्टर और ईगर तीनों आने लगे। तीनों के लिये करुणा उत्पन्न हो गई। उसने ठंढी साँस ली और उसी उत्पीड़ित अवस्था में आगे बढ़ी।

उसके हृदय में एक नई कल्पना का तूफान उठ रहा था। उसने अपने मन में कहा—'मुझे शीघ्रता करनी चाहिए।'

दूसरे दिन सुबह से शाम तक माँ ईगर के अंतिम संस्कार के लिये तैयारियाँ करती रही। शाम को जिस वक्त वह सोफिया

तथा निकोले इवानोविच के साथ चाय पी रही थी शशेंका ने प्रवेश किया। उसका चेहरा प्रसन्न था और हृदय में विचित्र जोश भरा था। मालूम होता था किसी सुखद आशा की कल्पना से उसका हृदय उच्छ्वसित हो उठा है। जहाँ लोग शोक-संतप्त थे वहाँ वह प्रसन्न थी। यह विचित्र विरोधाभास था। उसकी दशा पर सब को विस्मय हुआ। निकोले इवानोविच ने गंभीर होकर अपना हाथ टेबुल पर पटका और पूछा—'तुम आज असाधारण दिख-लाई देती हो?'

उसने हँसकर कहा—'हो सकता है।'

उसका यह व्यवहार माँ और सोफिया दोनों को बुरा लगा। दोनों ने उसकी ओर घूरकर देखा।

सोफिया ने डाँटकर कहा—'हमलोग ईगर इवानोविच की चर्चा कर रहे थे।'

शशेंका—ईगर इवानोविच अनोखे व्यक्ति हैं। शर्मीले, कड़े दिल और हँसमुख हैं। शक्ति और संताप को तो वह अपने निकट आने नहीं देते। अदम्य उत्साह उनमें भरा रहता है। काम से वे कभी घबराते ही नहीं। हँसी के तो वे पेटारा हैं। क्रांति की कला में वे प्रवीण हैं। क्रांतिकारी भावों और विचारों को फैलाना वे खूब जानते हैं। अधिकारियों की बेइमानी, अत्याचार और दगा-बाजी का कैसा सुंदर वर्णन वे कर सकते हैं। भयँकर-से-भयँकर विपत्तियों को वे अपनी मधुर मुसकान से इस प्रकार नरम कर देते हैं कि वे लोगों को उनके भार मालूम ही नहीं होतीं। मैं तो

जन्मभर उनकी ऋणी रहूँगी। उनकी प्रतिभापूर्ण और तेज आँखों को मैं आजीवन नहीं भूल सकूँगी। उनकी अमिट छाप मेरे हृदय पर पड़ी है। जीवन के कर्तव्य-पथ में वे सदा मेरे आदर्श रहेंगे और उनकी पवित्र स्मृति से मैं सदा बल ग्रहण करूँगी। मेरा उनपर अमित अनुराग है।

वह बहुत ही सम्हलकर बोलती थी। उसकी मुस्कुराहट में वेदना थी पर उसके हृदय का उच्छ्वास कम नहीं हुआ था उस आनंद का आभास सबको मिल रहा था।

संसार में भिन्न-भिन्न प्रकृति के लोग होते हैं। सबको अपने हृदय के भाव प्रिय होते हैं। कभी-कभी वे उन्हीं भावों पर मुग्ध रहते हैं जिनसे उन्हें क्षति उठानी पड़ती है। कभी-कभी उन्हें वेदना में भी सुख मिलता है।

ईगर की मृत्यु का शोक शशेंका की मधुर बातों से दूर नहीं हो सका। अपने हृदय की वेदना का कारण उन्होंने उस युवती पर प्रगट कर देना चाहा। इसलिए सोफिया ने कहा—'पर वे तो अब इस संसार में नहीं रहे।' इतना कहकर उसने उसपर कड़ी दृष्टि डाली।

शशेंका ने अन्वेषक-दृष्टि से चारों ओर देखा। उसकी भौंहें सिकुड़ गईं और सिर झुक गया। क्षणभर वह मौन रही। बोली—'सचमुच अब वे इस संसार में नहीं रहे! मुझे विश्वास नहीं होता!'

इतना कहकर उसने पुनः सबों पर अन्वेषक-दृष्टि डाली।

निकोले इवानोविच ने मुस्कुराकर कहा—'लेकिन यह ध्रुव सत्य है।'

शशेंका उठ खड़ी हुई। कमरे में टहलने लगी। एकाएक खड़ी होकर विचित्र भाव से बोली—'मृत्यु किस वस्तु का नाश करती है? किसका नाश हुआ? क्या ईगर के लिये हमलोगों के हृदय में जो आदर का भाव था क्या उसका नाश हो गया? क्या मित्रता के प्रेम का नाश हुआ? उसके वृहत् कार्य की स्मृति का नाश हुआ? क्या उसके कठिन परिश्रम के फल का नाश हुआ? क्या उसकी वीरता और अतुल शक्ति की छाप का नाश हुआ? क्या इनमें-से एक का भी नाश हुआ? इन सब गुणों की स्मृति का कभी भी अंत नहीं हो सकता। मैं समझती हूँ कि उसके संबंध में इस तरह की बातें कहने में हमलोगों ने बड़ी जल्दीबाजी की है। यही कारण है कि हमलोग यह बात सदा भूल जाते हैं कि जिस मनुष्य ने सत्य की विजय के लिये जिंदगी भर अनवरत परिश्रम किया है, उसका कभी भी अंत नहीं हो सकता यदि हमलोग उसकी स्मृति को नहीं भूल जाना चाहते। हमलोग यह भूल जाते हैं कि जीना और मरना स्मृति पर निर्भर है। उसके शव के साथ उसकी पवित्र स्मृति को, उसके महान कार्य को भी कब्र में गाड़ने की भूल न होनी चाहिए। गिर्जे ढह जाते हैं पर ईश्वर अमर है।

भावावेश में उसका चेहरा विकृत हो गया। वह बैठ गई और दोनों ठेहुनियों को टेबुल पर रखकर उसके सहारे झुक गई। उसकी आवाज धीमी पड़ गई थी। उसकी आँखों की ज्योति क्षीण हो

गई थी। उसने मुस्कुराकर अपने साथियों की ओर देखा और फिर बोली—'मेरी बातें अनुपयुक्त हो सकती हैं। पर जीवन की विचित्रता और घटनाओं की अपरिमेयता—जो कभी-कभी जादू के समान प्रतीत होती हैं—देखकर मैं पागल हो जाती हूँ। मेरी समझ में हमलोग अपने विचारों के प्रयोग में बड़ी ही किफायत-सारी दिखाते हैं। हमलोग कल्पना के संसार में बहुत अधिक विचरण करते हैं। हमलोग केवल अंदाजा लगाते हैं पर उस पर कभी विचार नहीं करते।'

सोफिया ने हँसकर पूछा—'क्या तुम्हें कोई विशेष लाभ हुआ है?'

शशेंका ने सिर हिलाकर कहा—'बहुत विशेष! रातभर मैं निकोले वेसोचिको से बातें कर रही थी। उसके प्रति मेरा भाव अच्छा नहीं था। मुझे वह बहुत ही असभ्य और सुस्त प्रतीत होता था। वास्तव में था भी वह वैसा ही। वह सबसे चिढ़ जाता था। वह निर्जीव पहाड़ की भाँति सबके मार्ग में आकर खड़ा हो जाता था और अपना प्रभुत्व स्थापित करने लगता था। उसमें अहम-न्यता का भाव भरा था। पर अब उसमें विचित्र परिवर्तन हो गया है। वह बड़ी नरमी से बातें करता है वह बड़ा ही सरल और सहृदय हो गया है। उसमें काम करने की उत्कंठा है। उसे अपनी शक्ति का परिचय मिल गया है। वह अपनी कमजोरियों और अभावों को अच्छी तरह समझ गया है। सबसे बड़ी बात यह है कि उसके हृदय में सभी क्रांतिकारियों के प्रति सच्चे भातृ-भाव का उदय हो गया है।

माँ शशेंका की बातें गौर से सुन रही थी। माँ ने उसे सदा कड़ा और रूखा पाया था। आज उसे कोमल, प्रसन्न और सुखी देखकर वह गद्गद् हो उठी। पर उसके हृदय के अंतस्तल में ईर्ष्यालु प्रश्न उठे—'और पावेल ?'

शशेंका ने कहना शुरू किया—'उसका समस्त विचार अपने साथियों की चिंता में लगा है। वह कहता है कि मैं सबको भगाऊँगा। इस काम को वह बड़ा ही सहज बतलाता है।'

सोफिया ने पूछा—'तुम क्या समझती हो ? क्या यह साध्य है ?'

माँ काँप उठी। शशेंका ने भौंह सिकोड़ा। क्षणभर चुप रह-कर उसने गंभीर होकर कहा—'उसे पूरा विश्वास है। यदि उसकी सभी बातें सच हैं तो हमलोगों को अवश्य यत्न करना चाहिए। हमलोगों का यह कर्तव्य है।'

अंतिम वाक्य के कहते ही उसके गालों पर लाली दौड़ गई। वह कुर्सी पर बैठ गई और मौन हो गई।

सोफिया हँस पड़ी, निकोले इवानोविच भी उसकी ओर देख-कर हँस पड़ा। माँ ने अपने मन में कहा—'बिचारी !'

शशेंका ने सिर उठाया। सबकी ओर कड़ी नजर से देखा। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसकी आँखें शर्मीली हो गई थीं, उसके ओंठ सूख गए थे। उसकी वाणी में भी परिवर्तन हो गया था। इन सबका कारण वह समझती थी। बोली—'आप-

लोग हँस रहे हैं। मैं आपलोगों का अभिप्राय समझती हूँ। आपलोगों का ख्याल है कि इसमें मेरा व्यक्तिगत स्वार्थ है।'

सोफिया अपनी जगह से उठी और उसके पास जाकर बोली–'क्या यह सच नहीं है।'

शशेंका ने घबराकर कहा—'पर मैं इसे अस्वीकार करती हूँ। यदि आपलोगों के मन में ऐसा ख्याल हो तो मैं इस प्रश्न के निर्णय में कोई भाग नहीं लूँगी।'

निकोले इवानोविच ने शांत होकर कहा—'शशेंका! अधीर मत हो!'

माँ शशेंका की अवस्था भलीभाँति समझती थी वह पास जाकर स्नेह से उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगी। शशेंका ने माँ का हाथ पकड़ लिया, उसपर अपना सिर रख दिया और स्थिर दृष्टि से माँ की ओर देखने लगी। माँ उसका सिर सुहराने लगी। उसका हृदय खिन्न था। सोफिया शशेंका के बगल में बैठ गई। उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया, हँसकर उसकी ओर देखते हुए बोली—'तुम भी विचित्र हो!'

शशेंका—'मैं समझती हूँ कि मैं मूर्ख हो गई हूँ। पर मैं छाया के पीछे नहीं दौड़ना चाहती।'

निकोले इवानोविच ने गंभीर होकर कहा—'इससे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।' पर तुरत ही उसने बात का रुख बदलकर कहा—'यदि वेसोचिको की बातों में सार है तो इस पर मतभेद नहीं हो सकता पर कुछ करने से पहले यह बात जान

लेना आवश्यक है कि वेलोग भागना स्वीकार करेंगे कि नहीं।'

शशेंका ने सिर झुका लिया। सोफिया ने अपने भाई की ओर गौर से देखा।

माँ ने ठंढी साँस लेकर पूछा—'वेलोग क्यों नहीं स्वीकार करेंगे?'

सोफिया ने अस्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया और मुस्कुराकर खिड़की की तरफ चली गई। माँ की समझ में नहीं आया कि वेलोग क्यों अस्वीकार करेंगे। वह घबराहट के साथ उसकी ओर देखने लगी। वह उनलोगों के भगाए जाने के संबंध में हर पहलू के विचार सुन लेना चाहती थी।

निकोले इवानोविच—सबसे पहले मैं निकोले वेसोचिको से मिलना चाहती हूँ।

शशेंका—मैं कल मिलने का प्रबंध कर दूँगी।

सोफिया—पर उसने क्या करना निश्चय किया है?

शशेंका—नए छापाखाने में वह कंपोजीटर का काम करेगा। तब तक वह जंगल में रहेगा।

शशेंका की तनी भौंहें सिकुड़ गई। उसका चेहरा फिर रूखा और गंभीर हो गया। उसकी आवाज कड़ी हो गई। निकोले इवानोविच माँ के पास जाकर कहने लगा—'आप परसों पावेल से भेंट करने जायँगी। मैं एक खत दूँगा। आप सावधानी से उन्हें दे देंगी, हमलोगों को उनका मत मालूम हो जाना चाहिए।'

माँ ने जल्दी से कहा—'मैं बड़ी सावधानी से यह काम कर दूँगी। मैं इन कामों में पूर्ण निपुण हूँ।'

शशेंका ने सबसे बिदा ली और घर से बाहर हो गई। उसका चेहरा उदास था, आँखें सूखी थीं और पैर भारी थे।

सोफिया ने नरमी से कहा—'बिचारी लड़की।'

निकोले इवानोविच—उसपर बड़ी दया आती है।

सोफिया ने माँ से पूछा—'यदि आपकी पुत्री ऐसी होती तो क्या आप उसे प्यार करतीं?'

माँ—यदि मैं दोनों को क्षणभर के लिये भी एक साथ देख लेती तो अपना जन्म सफल मानती।

सोफिया—प्रत्येक व्यक्ति को सुख का लेश चाहिए।

निकोले इवानोविच—कोई भी व्यक्ति सुख का लेश ही नहीं चाहता। पर जब सुख की अधिकता हो जाती है तो लोग उसका मूल्य भूल जाते हैं।

सोफिया करुणस्वर में पियानो बजाने लगी।

आठवाँ परिच्छेद

आज ईगर इवानोविच के शव का जुलूस निकलनेवाला था। प्रातःकाल से ही पुरुष और स्त्रियाँ अस्पताल के दरवाजे पर आ-आकर जमा होने लगीं। गुप्तचर भी अपनी ड्यूटी से असावधान नहीं थे वे चारों ओर गश्त लगा रहे थे। हरएक शब्द को सावधानी से सुनते थे, हर चेहरे को गौर से देखते और लोगों की गतिविधि का अंदाजा लगाते थे। सड़क के दूसरी ओर

सशस्त्र पुलिस का रिसाला हाथों में पिस्तौल लिए खड़ा था। गुप्तचरों की धृष्टता, पुलिस की धींगा-धींगी और बदमिजाजी जन-समुदाय को उत्तेजित करने के लिये पर्याप्त थी। कुछ लोग उत्तेजना को छिपाने के लिये हँस रहे थे, कुछ उधर से ध्यान हटाकर अन्यत्र देख रहे थे और कुछ जिन्हें पुलिस का यह आचरण बर-दाश्त नहीं हो सकता था सरकार का खोखलापन दिखाते थे और कहते थे कि जो सरकार हर तरह की शक्ति रखते हुए भी हम निहत्थों से डरती है वह हमारी क्या रक्षा कर सकेगी? एक ओर तो यह हलचल थी और दूसरी ओर पतझड़ अपना पूर्ण प्रभुत्व प्रगट कर रहा था। पीले-पीले पत्तों से सड़कें भर गई थीं, पेड़ उदास हो गए थे और आकाश का रंग फीका पड़ गया था।

माँ भीड़ में खड़ी परिचित व्यक्तियों का पता लगा रही थी। उसने अपने मन में कहा—'हमलोगों के दल के तो बहुत ही कम लोग यहाँ दिखाई देते हैं।'

अस्पताल का दरवाजा खुला। फूलों तथा लाल झंडों से सजाई हुई अर्थी को लेकर लोग बाहर निकले। उपस्थित जनसमूह ने उसके प्रति आदर दिखाया। पुलिस का एक अफसर कुछ सिपाहियों को लेकर भीड़ को चीरता अर्थी के पास पहुँचकर बोला—'लाल झंडे को हटा दीजिए।'

उसके चारों ओर भीड़ उमड़ पड़ी। जोरों का धक्कमधुक्का होने लगा। लोग बेहद उत्तेजित दिखाई देने लगे। अफसर

पर गालियों की बौछारें पड़ने लगीं। किसी युवक ने चिल्लाकर कहा—'इन जालिमों का नाश हो।'

पर उस जनरव में उसकी बात किसी ने सुनी नहीं।

पुलिस की इस ज्यादती पर माँ को अत्यधिक क्षोभ हुआ। वह अपने पास खड़ी स्त्री से बोली—'कैसा अंधेर है! अब लोग अपने साथी का अपने इच्छानुसार अंतिम संस्कार भी नहीं कर सकते।'

शोरगुल बढ़ता गया। संघर्ष तेज होने लगा। लोगों के बीच से होकर अर्थी आगे बढ़ी। लाल झंडा अर्थी के चारों ओर फहरा रहा था और अपनी तुमुल-ध्वनि से लोगों को सचेत करता जाता था।

पुलिस के साथ मुठभेड़ की संभावना बढ़ती देखकर माँ ने काँपते हुए स्वर में अपने पड़ोस की स्त्री से कहा—'यदि उनलोगों की यही मर्जी है तो अपने दलवालों को दब जाना चाहिए। उतार लें लाल झंडा। दूसरा उपाय ही क्या है?'

इतने में एक व्यक्ति ने कड़ककर कहा—'अधिकारियों की हिंसा-प्रवृत्ति ने हमारे जिस भाई का इस प्रकार सर्वनाश कर डाला है उसकी अंतिम-क्रिया हमलोग इसी प्रकार करना चाहते हैं। हमलोग किसी तरह की बाधा नहीं बरदाश्त कर सकते।'

इसी समय किसी रमणी ने करुण स्वर से गाया—

वीरों की गति इन्हें प्राप्त है, अमर किया है अपना नाम!
हुए शिकार जुल्म के, तो भी पूरा करते अपना काम!

अफसर ने एक सिपाही को आदेश देते हुए कहा—'अर्थी पर से लाल झंडी को तोड़कर फेंक दो।'

इतना कहकर उसने म्यान से तलवार निकाली। माँ ने भय से आँखें बंद कर लीं। उसे कोलाहल बढ़ने की आशंका थी पर कोलाहल घट गया।

लोग क्रोध से अधीर हो रहे थे पर अपनी दुर्बलता को समझकर सिर नीचा किए हुए चुपचाप आगे बढ़े। उनके पैरों की ध्वनि स्पष्ट सुनाई दे रही थी। उनके आगे-आगे अर्थी आ रही थी जिसके माला वगैरह टूट-फूट गए थे और दोनों तरफ घोड़सवार पुलिस मस्तानी चाल से जा रही थी।

माँ पटरी से चल रही थी अर्थी के चारों ओर इतनी अधिक भीड़ जमा हो गई थी कि माँ को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। भीड़ के पीछे भी घोड़सवार सैनिक थे। भीड़ के अगल-बगल पैदल पुलिस हाथ में डंडा लिए चल रही थी। भीड़ में गुप्तचरों का दल अपना काम अलग कर रहा था।

दो व्यक्तियों ने करुणा भरे स्वर से गाया—

बिदा बिदा हे ! बिदा मित्रवर, अंतिम भेंट करो स्वीकार !

एक आदमी ने चिल्लाकर कहा—'यह गीत मत गाइए, हम-लोगों को इस वक्त शांत रहना चाहिए।'

उसकी वाणी में दृढ़ता और जोर था। उसके बोलते ही सब की आवाज धीमी पड़ गई। गाना बंद हो गया। शोरगुल कम हो गया। केवल लोगों की पद-ध्वनि के शब्द सुनाई देते थे। लोगों

का शोक-संतप्त हृदय क्रांति की आग से जल रहा था। लोग मन में विचार करने लगे—'क्या स्वतंत्रता का संग्राम शांतिमय हो सकता है ? यह केवल मोह है।' जिनलोगों के हृदय में मोह का माया-जाल उस समय तक अपना वितान तानकर खड़ा था उसे उनलोगों ने स्वतंत्रता की चाह और अत्याचार के प्रति उदीयमान घृणा की अग्नि में जलाकर भस्मकर दिया। उनके पैर गंभीर हो गए, सिर ऊँचा हो गया, आँखें दृढ़ और स्थिर हो गईं, विचार-तत्परता और संलग्नता आ गई। इसी समय तूफान का एक झोंका उठा और सड़क की गर्दगुबार का ढेर लाकर लोगों के ऊपर फेंकने लगा। उससे लोगों का चेहरा धूल से भर गया। आँखें बंद हो गईं।

अर्थी के साथ न तो पुरोहित ही था और न कोई हृदय-विदारक गीत ही गाया जा रहा था। बल्कि सबके चेहरे गंभीर थे। भौंहें सिकुड़ी हुई थीं और पैर भारी थे। इससे माँ को बड़ी वेदना हुई। उसने अपने मन में कहा—'सत्य की निष्ठा के लिये अपने सर्वस्व को निछावर करनेवालों की संख्या यद्यपि परिमित है तथापि अधिकारियों को इनसे डर लगता है।'

सिर नीचा करके वह आगे बढ़ी। उसे ऐसा प्रतीत होता था मानों वेलोग ईगर इवानोविच को दफनाने नहीं जा रहे हैं बल्कि किसी ऐसी वस्तु को गाड़ने जा रहे हैं जिसकी वह कल्पना नहीं कर सकती।

जब अर्थी कब्रिस्तान में पहुँची तो लोग पूर्ण शांति के साथ कब्र

के चारों ओर जमा हो गए। लोगों की इस मूक शांति में माँ को जिस विचित्र भाव का परिचय मिला उससे वह काँप उठी।

पुलिस सतर्क होकर चारों ओर फैल गई और उस अफसर की ओर देखने लगी जो नंगे सिर कब्र के पास खड़ा था। वह कुछ कहना ही चाहता था कि इतने में एक आदमी ने आगे बढ़कर कहा—'भाइयो......।'

पुलिस-अफसर ने उसे बाधा देते हुए कहा—'सरकारी आज्ञा है कि यहाँ किसी तरह का भाषण नहीं दिया जा सकता।'

पहला आ०—मैं सिर्फ दो शब्द कहूँगा। (लोगों की ओर लक्ष्यकर) भाइयो, अपने गुरु और अगुआ के कब्र पर आज हम-लोगों को प्रणवद्ध होना चाहिए कि उनकी अभिलाषा को हमलोग कभी नहीं भूलेंगे। हमलोगों में-से प्रत्येक का धर्म है कि वह अत्याचारियों के अत्याचार तथा उन अत्याचारों के नियंताओं के लिये सतत कब्र तैयार करने का यत्न करता रहे।

पुलिस अफ०—(चिल्लाकर) उसे गिरफ्तार कर लो।

इसी समय जन-समूह चिल्ला उठा—'निरंकुश शासन का अंत हो।'

अफसर की आज्ञा पाकर पुलिस व्याख्यानदाता की ओर झपटी। वह हाथ हिला-हिलाकर चिल्ला रहा था और कहता जाता था—'स्वाधीनता चिरजीवी हो, हमलोग उसके लिये जीवेंगे और उसी के लिये मरेंगे।

भय से माँ की आँखें क्षणभर के लिये बंद हो गईं। जन-

समूह के भीषण कोलाहल ने उसे बहरा बना दिया। उसके पैर तले की धरती काँप रही थी और उसका हृदय धड़क रहा था। पुलिस की सीटी की आवाज हवा में गूँज रही थी। पुलिस अफसर की उद्दंड बातें सबके कानों में पड़ रही थीं। स्त्रियाँ चीख उठीं। लकड़ी की चहारदीवारी कड़कड़ा उठी। लोगों के पैर पटकने के गंभीर शब्द आने लगे। इतने में वह युवक घोर गर्जन के साथ विनीत भाव से बोला—'भाइयो, शांत होइए! अपने पक्ष की प्रतिष्ठा और मर्यादा के लिये धैर्य धारण कीजिए। मैं विनीत होकर निवेदन करता हूँ। मुझे गिरफ्तार कर लेने दीजिए।'

माँ ने सामने की ओर देखा। उसके मुँह से हलकी चीख निकल पड़ी। किसी अज्ञात शक्ति की प्रेरणा से वह हाथ फैलाकर आगे बढ़ी। वहाँ से थोड़ी दूर पर झाड़ियों के बीच कब्र के पास ही पुलिसवाले उस नवयुवक को घेरकर खड़े थे और उमड़ती हुई भीड़ को मार-मारकर भगा रहे थे। उनके चमकीले हथियार तेजी के साथ उठते और गिरते थे चहारदीवारी की टूटी लकड़ियों को लोग हिला रहे थे। चारों ओर भयानक चिल्लाहट मची हुई थी।

उसी समय उस तुमुल-ध्वनि को चीरती हुई उस युवक की शांत, धीर और गंभीर आवाज सुनाई दी—'भाइयो, आपलोग अपनी शक्ति को क्यों बरबाद कर रहे हैं, आपलोगों का काम अपने मस्तिष्क को पुष्ट करना है।'

उसकी बात का असर तुरत दिखाई दिया। लोगों ने हाथ की लाठियाँ फेंक दीं और सिर नीचा किए हुए एक-एक करके भीड़ से छँटने लगे। माँ आगे बढ़ी। उसने देखा कि निकोलेइवानोविच उत्तेजित जन-समूह को पीछे हटा रहा है और लोगों को डाँटते हुए कह रहा है–'क्या आपलोग पागल हो गए हैं, शांत होइए।'

उसने देखा कि उसका एक हाथ लाल है। उसके पास जाकर उसने चिल्लाकर कहा—'निकोले इवानोविच! तुम यहाँ से चले जाओ।'

निकोले इवानोविच—आप कहाँ आगे बढ़ रही हैं। वे सब आपको मार देंगे।

माँ वहीं रुक गई। सोफिया उसके बगल में खड़ी थी। एक हाथ से उसने एक युवक का हाथ पकड़ रखा था। उसकी हैट गायब हो गई थी और जाकेट फट गई थी। एक हाथ से वह युवक मुँह दबाए हुए था जो छिल गया था। वह रह-रहकर कह रहा था—'मुझे जाने दीजिए। यह कुछ नहीं है।'

सोफिया ने जल्दी में माँ से कहा—'इसे होशियारी और सावधानी से डेरे पर ले चलिए। यह रुमाल लीजिए और इसी से उसका घाव बाँध दीजिए।'

इतना कहकर उसने लड़के का हाथ माँ के हाथ में दे दिया और एक तरफ दौड़ गई। चलते-चलते उसने माँ से कहा—'यहाँ से शीघ्र चली जाओ नहीं तो पुलिस तुम्हें पकड़ लेगी।'

भीड़ कब्रिस्तान में चारों ओर फैल गई। उसके पीछे-पीछे

पुलिसवाले भी कब्रों के बीच में चलते-फिरते दिखाई देते थे। उनके हथियार हवा में चमक रहे थे।

रुमाल से लड़के का मुँह पोंछते हुए माँ ने कहा—'जल्दी भागो। तुम्हारा नाम क्या है?'

लड़का—इवान!

उसके मुँह से खून निकल पड़ा।

लड़के ने कहा—'आप घबड़ाइए नहीं। मुझे अधिक चोट नहीं आई है। उसने मेरे सिर पर डंडा मारा। मैंने भी उसे कसकर ऐसी लाठी जमाई कि वह चिल्ला उठा। थोड़ा और दिन बीतने दो। मजूरों में पूर्णरूप से जागृति आ जाने दो। उस वक्त हम-लोग तुमलोगों को बिना युद्ध के मार डालेंगे!'

माँ ने लड़के को फाटक की ओर खींचते हुए कहा!—'जल्दी करो।'

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि पुलिस चहारदीवारी के पीछे घात लगाकर बैठी है और ज्योंही येलोग वहाँ पहुँचेंगे वह इन पर टूट पड़ेगी और खूब पीटेगी। इसी घबराहट के साथ वह फाटक पर पहुँची और बड़ी सावधानी से द्वार खोला। वहाँ की निर्जनता और नीरवता देखकर उसे तसल्ली हुई। बोली—'आओ तुम्हारा घाव बाँध दूँ।'

लड़का—कोई चिंता नहीं। मुझे इस चोट की शर्म या परि-ताप नहीं है। उसने मुझे मारा, मैंने उसे मारा। इसमें मेरी कोई हीनता नहीं है।

माँ ने उसका घाव बाँध दिया। उसके मुँह से रक्त बहता देख-कर माँ का हृदय भर आया। गर्म-गर्म लोहू उसके हाथ में लगते ही वह काँप उठी। उसी तरह उसका हाथ पकड़े हुए वह आगे बढ़ी।

पट्टी को मुँह पर से हटाकर उसने पूछा—'आप मुझे कहाँ ले चल रही हैं? मैं अपने आप चल सकता हूँ।'

पर माँ ने देखा कि वह बेहोश होना चाहता है। उसके पैर लड़खड़ा रहे हैं और उसके हाथ ऐंठ रहे हैं। उसकी आवाज कमजोर पड़ती जा रही है। उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही उसने कहना शुरु किया—'मैं लोहार हूँ। आप कौन हैं? ईगर इवा-नोविच के जमाने में हमलोग बारह आदमी थे। सब लोग उन्हें दिल से चाहते थे। भगवान उनकी आत्मा को शांति दें, यद्यपि मुझे ईश्वर में विश्वास नहीं है। इन्हीं कुत्तों ने ईश्वर की ओर से हमलोगों में गलतफहमी फैला दी है कि हमलोग इनकी आज्ञा को मानें और बिना चूँ किए ही इनके अत्याचार बरदाश्त करें।'

थोड़ी दूर आगे जाकर माँ ने एक गाड़ी किराए पर कर ली और इवान को उसमें बैठा दिया और धीरे से बोली–'अब चुपचाप चले चलो।' इतना कहकर उसने उसका मुँह फिर रुमाल से बाँध दिया। उसने फिर अपना हाथ उठाया पर इस बार पट्टी को नहीं खोल सका। उसके दुर्बल हाथ जंघों पर गिर पड़े। तो भी वह पट्टी के भीतर से ही बोलता रहा—'मैं इस चोट को कभी भी नहीं भूल सकता। मैं तुमलोगों से इसका बदला अवश्य लूँगा। ईगर

के साथ टिटोविच नाम के एक व्यक्ति रहते थे। वह हमलोगों को अर्थशास्त्र पढ़ाया करते थे। वह बड़े ही कड़े आदमी थे। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।'

माँ ने लड़के को अपनी ओर खींचकर उसका सिर अपनी गोद में रख लिया ताकि वह अपना मुँह बंद कर दे पर उसकी आवश्यकता न पड़ी क्योंकि उसी क्षण वह लड़का चुप हो गया। माँ घबराकर कनखियों से चारों ओर देखने लगी। उसे भय लगा कि कहीं पुलिसवाले इसके सिर की पट्टी देखकर इसे पकड़ न लें।

इसी समय गाड़ीवान ने हँसकर पूछा—'शराब पी है क्या ?'

माँ—पेट भर।

गाड़ीवान—आपका लड़का है ?

माँ—हाँ, यह जूता बनाता है और मैं रसोईदारिन का काम करती हूँ।

घोड़े की पीठ पर चाबुक लगाकर गाड़ीवान ने फिर माँ की ओर मुँह फेरा और कहा—'हमने सुना है कि कब्रिस्तान में दंगा हो गया है ? सरकार के विरोधी दलवाले अपने एक साथी को दफना रहे थे। येलोग तो सरकार के साथ झगड़ा करने का अवसर ढूँढा करते हैं। उसको दफनानेवाले भी उसीके दल के, उसीके समान विचार रखनेवाले सरकार के विरोधी ही रहे होंगे। वेलोग चिल्लाने लगे—'निरंकुश शासन का अंत हो।' अधिकारियों का नाश हो। वेलोग जनसाधारण का सर्वनाश

कर रहे हैं। इस पर पुलिस उन्हें पीटने लगी। सुनने में आया है कि कितने घायल हुए हैं और अनेकों मारे गए हैं। पुलिस को भी चोट आई है।'

इतना कहकर वह चुप हो गया और इस तरह अपना सिर हिलाने लगा मानों किसी बात से उसे कष्ट हुआ हो। बोला—'अधिकारी लोग मरने के बाद भी लोगों को शांति नहीं लेने देते। कब्र में भी वे लोगों को तंग करते हैं।'

गाड़ी का पहिया पत्थर की गिट्टी से टकरा गया। लड़के का सिर माँ की गोद में हिलने लगा। टेढ़ा बैठा हुआ गाड़ीवान गंभीर होकर कहने लगा—'लोग भी तंग आ गए हैं। रोज कोई-न-कोई खुराफात खड़ा हो ही जाता है। कल रात को पुलिस इंस्पेक्टर हमारे पड़ोस में आया। रात भर हंगामा मचाता रहा और सवेरे एक लोहार को पकड़कर ले गया। लोग कहते हैं कि रात को उसे नदी के किनारे ले जाकर मार डालेंगे और नदी में बहा देंगे। वह लोहार समझदार आदमी था। यही उसका अपराध था। अधिकारियों की दृष्टि में समझदार होना भी अपराध है। वह हमलोगों के पास आकर समझाता था कि हमलोगों का जीवन उत्तम रीति से नहीं बीत रहा है। हमलोग भी उसकी बात को स्वीकार कर कहते थे कि हमलोगों का जीवन कुत्तों से भी अधम है।'

माँ ने गाड़ी रोकने का आदेश दिया।

एकाएक गाड़ी रुकी। धक्का लगने से इवान जग गया और भनभनाने लगा।

गाड़ीवान ने कहा—'क्या धक्के से उसका शरीर हिल गया! और वह जाग पड़ा! हायरी सत्यानाशी शराब!'

इवान के पैर बड़ी कठिनाई से आगे बढ़ते थे। उसका सारा शरीर शिथिल हो गया था। घर के अंदर प्रवेश करते-करते उसने कहा भाइयो, कोई चिंता नहीं है। मैं मजे में आगे बढ़ सकता हूँ।'

नवाँ परिच्छेद

सोफिया माँ से पहले ही घर पहुँच चुकी थी। वह कुर्सी पर बैठी सिगरेट पी रही थी। उसे भी कुछ हलकी चोट आ गई थी पर उसमें साहस और उत्साह ज्यों-का-त्यों वर्तमान था। उस आहत व्यक्ति को पलँग पर लेटाकर उसने उसके सिर से रुमाल खोल दिया और बोली—'इवान डानिलोविच! वह जख्मी लड़का आ गया। (माँ से) आप थक गई हैं। भयभीत भी आप कम नहीं हुई हैं। आप आराम करें। (निकोले इवानोविच से) तुम माँ को शराब मिलाकर थोड़ी चाय दो।

आज की घटना का असर माँ के दिल पर इतना अधिक पड़ा था कि उसका कलेजा धड़क रहा था और आराम से वह साँस नहीं ले सकती थी। बोली—'मेरी चिंता न कीजिए।'

पर उसकी हालत ऐसी करुणाजनक थी कि उसे देखकर किसी को भी चिंता उत्पन्न हो सकती थी।

दूसरे कमरे से निकोले इवानोविच डाक्टर के साथ निकले। उनके एक हाथ में पट्टी बँधी थी। डाक्टर का सिर खुला था और केश बिखरे हुए थे। वह शीघ्र जख्मी इवान के पास आए, झुककर उसकी हालत देखी और सोफिया से बोले—'पानी, साफ फलालैन और रूई लेकर जल्दी आइए।'

माँ यह सब सामान लेने के लिये चली। निकोले इवानोविच ने उसे रोककर कहा—'डाक्टर ने आपसे नहीं कहा है। उन्होंने सोफिया से कहा है। आज आपको असाधारण कष्ट हुआ है। थोड़ा आराम कीजिए।'

माँ ने निकोले की ओर देखा। उसकी आँखों में करुणा भरी थी। माँ का हृदय भर आया। वह अपने को किसी भी तरह नहीं सम्हाल सकी। बोली—'बड़ा ही भयानक दृश्य था। उन अत्याचारियों ने हमलोगों के साथियों को पूर्ण बेरहमी के साथ पीटा, तनिक भी दया नहीं दिखाई।'

शराब का ग्लास उसकी ओर बढ़ाते हुए निकोले ने कहा—'हमने सब कुछ देखा। दोनों ओर उत्तेजना बढ़ गई। पर चिंता की कोई बात नहीं है। पुलिसवालों ने तलवार की पीठ से काम लिया था। इससे सिर्फ एक आदमी सख्त जख्मी हुआ है। मैं ही उसे भीड़ से बाहर लेकर आया।'

कमरे की शांति तथा निकोले की शांत और धीर बातों से

माँ को बड़ी तसल्ली मिली। कृतज्ञता-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखकर उसने पूछा—'तुम पर भी उनलोगों ने प्रहार किया ?'

निकोले—मुझे ऐसा मालूम होता है कि असावधानी से मेरा हाथ किसी चीज से टकरा गया और हाथ छिल गया। थोड़ा चाय पिओ। सर्दी तेज है और तुम हलका कपड़ा पहने हो।

उसने ग्लास लेने के लिये हाथ बढ़ाया। उसने देखा कि उसके हाथ में काले लहू का धब्बा लगा हुआ है। उसने उसी क्षण अपने हाथ को जंघे पर रख दिया। उसका लहँगा भी भींगा हुआ था। डाक्टर ने उसी वक्त कमरे में प्रवेश किया। उनकी कमीज की बाँह मुड़ी हुई थी। उन्होंने निकोले से कहा—'मुँह पर की चोट हलकी है लेकिन खोपड़ी फट गई है। पर चोट सख्त नहीं है। यह मजबूत और हृष्ट-पुष्ट है। पर रक्त इसके शरीर से बहुत निकला है। इसे अस्पताल ले जायँगे।'

निकोले—अगर यह यहीं रहे तो क्या हर्ज है ?

डाक्टर—एक दो दिन यहाँ रखा जा सकता है। पर अधिक नहीं। अस्पताल में बड़ी सुविधाएँ रहती हैं। मैं बराबर यहाँ नहीं आ सकता। कब्रिस्तान की घटना का समाचार तो परचे में छापोगे ही ?

निकोले—अवश्य !

माँ चुपचाप अपनी जगह से उठी और रसोई-घर की ओर चली। निकोले ने उसे रोककर पूछा—'माँ, आप कहाँ जा रही हैं ? सोफिया सब काम अकेले कर लेगी।'

माँ—मेरा समूचा कपड़ा खून से तर है !

कपड़ा बदलते समय वह एक बार पुनः इनकी धीरता और तत्परता पर विचार करने लगी। उसने देखा कि सत्य के प्रचार के लिये वेलोग हरएक आवश्यकता की पूर्ति के लिये सदा तैयार रहते हैं। धारणा के साथ ही उसका सारा भय भाग गया।

कपड़ा बदलकर जब वह जख्मी के कमरे में पहुँची, उसने देखा कि सोफिया रोगी की ओर झुककर कह रही है—'भाई, यह ठीक नहीं है !'

उसने बेहोशी की हालत में कहा—'मैं··।'

सोफिया—आप चुप रहें। यही आपके लिये अच्छा है।

माँ सोफिया के पीछे खड़ी थी। उसके कंधे के सहारे झुककर उसने रोगी को देखा और बोली—'गाड़ी में वह बहुत अंड-बंड बातें बक रहे थे। वे होश में एकदम नहीं थे। मैं तो डर गई।'

इवान माँ की बातें सुन रहा था। उसकी आँखें मुर्झा गईं। वह अपने ओंठ चाटने लगा और रह-रहकर बेहोशी की हालत में कहने लगा—'मैंने कैसी मूर्खता की !'

सोफिया—(रोगी को कंबल ओढ़ाते हुए) हमलोग तुम्हारे पास से चले जाते हैं। चुपचाप आराम करो।

माँ और सोफिया दोनों भोजनालय में गईं और वहीं सब लोग बैठकर उस दिन की घटना की धीरे-धीरे आलोचना करने लगे। कहा—'जो होना था हो गया। उसकी चिंता छोड़कर अब भविष्य के कार्य-क्रम पर विचार करना चाहिए और कुछ

निश्चय कर लेना चाहिए।' यद्यपि उनके चेहरे से थकावट प्रतीत होती थी पर उनका हृदय साहस और उत्साह से भरा था।

उनलोगों ने अपनी कमजोरियों की भी चर्चा की। इसपर डाक्टर ने सिर हिलाकर कहा—'सबसे अधिक आवश्यकता प्रचार की है। प्रचार का काम बहुत ही शिथिल पड़ गया है। युवक मजूरों के विचार ठीक हैं। हमलोगों को आंदोलन का दायरा बढ़ाना चाहिए।'

निकोले इवानोविच—हर जगह परचों और अखबारों की माँग बढ़ती जा रही है और हमलोगों के पास पर्याप्त साधन नहीं है कि एक विशाल छापाखाने का आजोजन कर सकें। लुडमिला काम के भार से परेशान है। यदि उसे सहायक न दिया गया तो वह निश्चय ही बीमार पड़ जायगी।

सोफिया—और निकोले वेसोचिको ?

निकोले इवानोविच—उसे शहर में रखना समीचीन नहीं। जब तक नया छापाखाना तैयार न हो जाय उनसे काम नहीं लिया जा सकता। उसके लिये भी एक आदमी की जरूरत पड़ेगी ही।

माँ ने धीरे से पूछा—'क्या मैं वह काम नहीं कर सकती ?'

तीनों विस्मय के साथ उसका मुँह देखने लगे। निकोले इवानोविच बोला—'तुम उतना कड़ा परिश्रम नहीं बरदाश्त कर सकोगी। दूसरे तुम्हें शहर के बाहर रहना पड़ेगा और पावेल से भेंट नहीं कर सकोगी और इसके अलावा..........।'

माँ—(ठंढी साँस लेकर) पावेल इससे दुखी नहीं होगा और मुझे भी उससे भेंट करने में व्यथा ही होती है। उसे देख-कर मेरा हृदय फटने लगता है। मैं उसके साथ आजादी से बातें नहीं कर सकती। अपने ही लड़के के सामने मुझे गूँगी बनकर रहना पड़ता है और अधिकारी मेरे मुँह की ओर ताकते रहते हैं कि कहीं मैं कोई वर्जित बात तो नहीं कह रही हूँ।

सोफिया ने माँ का हाथ अपने हाथ में लेकर दबाया और निकोले माँ के चेहरे की ओर देखकर कहने लगा—'नए छापा-खाने में तुम्हें काम करनेवालों की हिफाजत का भार लेना पड़ेगा।'

माँ—मैं खूब समझती हूँ कि मुझे क्या करना होगा। मैं उनलोगों के लिये भोजन बनाऊँगी तथा अन्य आवश्यक कार्य भी कर सकूँगी।

सोफिया—आप बड़ी उत्सुक देख पड़ती हैं।

इन दिनों की घटनाओं से माँ नागरिक-जीवन से उकता गई थी। वहाँ का शोरगुल उसे पसंद नहीं था। ग्राम्य-जीवन की आशामात्र से वह उत्सुक हो गई और उसके लिये जोर देने लगी।

बातचीत का सिलसिला बदलते हुए निकोले ने डाक्टर से पूछा—'इवान की अवस्था कैसी है ?'

डाक्टर ने अपना सिर उठाया और बोला—'इस वक्त मैं यह सोच रहा हूँ कि हमलोगों की संख्या परिमित है हमलोगों को पूर्ण तत्परता से काम करना चाहिए। पावेल और नखोदका को

हमलोग मजबूर करें कि वेलोग जेल से निकल भागें। हम-लोगों के लिये वेलोग अनिवार्य हैं।'

निकोले ने इस तरह सिर हिलाया मानों उसे इस बात की जरा भी आशा नहीं है। वह चुपचाप माँ का मुँह देखने लगा।

माँ ने देखा कि उसके समक्ष उसके लड़के के बारे में खुल-कर बातें करने में वेलोग संकोच करेंगे। इससे वह वहाँ से उठ-कर अपने कमरे में चली गई।

वहाँ पड़े-पड़े वह उनलोगों की बातचीत सुनने लगी। उसके मन में अनेक तरह की चिंताएँ उत्पन्न होने लगीं। वह पावेल को स्वतंत्र देखना चाहती थी पर उसे मुक्त करने का ख्याल आते ही वह डर जाती थी। उसने देखा कि इस संग्राम की प्रगति दिनोंदिन बढ़ती जा रही है और भीषण संग्राम की संभावना निकट चली आ रही है। लोग अधीर होते जा रहे हैं और उनके हृदयों में किसी नई आशा का उदय हो रहा है। लोगों में प्रत्यक्ष उत्तेजना दिखाई पड़ती है। लोग खुले आम अधि-कारियों को गालियाँ दे रहे हैं। हर दिशा में नित्य नई उत्तेजना के लक्षण दिखाई देते हैं। हर घोषणा पर गर्मागर्म बहसें होने लगती हैं। बाजार, दुकान, नौकर और मजूर कोई भी उसकी असर से खाली नहीं रहता। प्रत्येक गिरफ्तारी पर लोग अपनी सहानुभूति दिखलाने लगते हैं और जब न्याय का खोखलापन दिखलाया जाता है तब लोगों की सहानुभूति और भी बढ़ जाती है। जिन दंगा, साम्यवाद, राजनीति आदि शब्दों से वह पहले बहुत

अधिक डरती थी उनके प्रयोग उसने साधारण लोगों में भी होते देखा यद्यपि उसका प्रयोग व्यंग से अधिक होता था। अब लोग हर बात को समझने के लिये आतुर दिखाई देते थे। धनिकों के प्रति घृणा और विद्वेष के भाव उनमें प्रत्यक्ष दीखते थे यद्यपि आशा के साथ-साथ भय का भी समावेश था।

आंदोलन ने लोगों के अंधकारमय जीवन को आलोड़ित कर दिया। प्रखर विचार लोगों के हृदयों में उठने लगे। विवशता और लाचारी के कारण लोगों के जीवन में जो शिथिलता और बेकसी आ गई थी उसे त्यागकर लोग प्रतिदिन की होनेवाली घटनाओं पर विचार करने लगे। इसका जितना अधिक अनुभव माँ को हो रहा था उतना दूसरों को नहीं क्योंकि लोगों के विषादमय और निराशापूर्ण जीवन का उसे सबसे अधिक अनुभव था। वह स्वयं उसमें रह चुकी थी। इस समय उसने उनलोगों के चेहरों पर हलचल के चिह्न प्रत्यक्ष देखे कि लोग परिवर्तन की राह बड़ी उत्सुकता के साथ देख रहे हैं। इस परिवर्तन से वह आनंदित थी पर दुखी भी थी। उसे आनंद इस बात से था कि इस समस्त जागृति और हलचल का कारण उसका पुत्र था। उसे दुख इस बात से था कि मुक्त होकर आने पर वह फिर इस आंदोलन का अगुआ बनेगा और इस बार उसका सर्वनाश हो जायगा।

उसके हृदय में अनेक तरह के उपयोगी विचार आंदोलन मचा रहे थे पर उसके पास उपयुक्त शब्द नहीं थे कि वह उन्हें

व्यक्त करती। इससे वह बहुत ही दुखी और उदास रहती थी। कभी-कभी पावेल की मूर्ति उसके सामने आकर खड़ी हो जाती पर देखते-देखते वह परियों की कहानी के दैत्य का रूप धारण कर लेती। सभी सुंदर विचारों को जिसे उसने लोगों से सुना था, उन सभी लोगों को जिन पर उसका अनुराग था और सभी वीरतापूर्ण कामों को जिनका उसे ज्ञान था, वह अपने हृदय के भीतर एक सूत्र में बाँधती और मन-ही-मन आनंदित होती। उसका हृदय किसी अव्यक्त आशा से भर जाता और वह कह उठती—'सब ठीक हो जायगा।' इसी समय माता का सहज प्रेम जागृत हो उठता। उसका हृदय पीड़ित हो जाता। उस प्रेम की ज्वाला में मानव-समाज के प्रति उठते हुए सभी उदार विचार जलकर भस्म हो जाते। उनकी प्रगति रुक जाती और उन विशाल और उन्नत विचारों के स्थान पर एक बहुत ही संकुचित विचार आसन जमाने लगता और उसकी वेदना से अभिभूत होकर वह भय से चिल्ला उठती—'उसका सर्वनाश अवश्यंभावी है। वह नहीं बच सकता।'

इसी तरह की कल्पनाएँ वह रात को देर तक करती रही। पिछली रात उसे नींद आ गई। जिस समय वह तड़के उठी उसका शरीर जकड़ा हुआ था और उसके सिर में दर्द था। दोपहर को वह पावेल से मिलने जेल में गई। वह उसके सामने चुपचाप बैठी हुई इस अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी कि कब वह उसे निकोले का पुरज़ा दे।

पावेल—यहाँ सबलोग अच्छे हैं। वहाँ लोग कैसे हैं ?

माँ ने शोक से कहा—'सबलोग अच्छे हैं। ईगर इवानोविच का देहांत हो गया !'

पावेल ने विस्मय के साथ माँ की ओर देखा और सिर नीचा कर लिया।

माँ ने उसी सादगी के साथ कहा—'अंत्येष्टि-संस्कार के वक्त पुलिस ने दंगा कर दिया और एक आदमी को गिरफ्तार कर लिया।'

जेल का अफसर अपनी कुर्सी से उछलकर बोला—'इस तरह की बातें यहाँ न करो। ये सब वर्जित हैं। राजनैतिक विषयों की चर्चा यहाँ नहीं हो सकती।'

माँ अपनी जगह से उठी और अपराधी की भाँति बोली—'मैं राजनीति की चर्चा नहीं कर रही थी। मैं तो दंगे की चर्चा कर रही थी। पुलिस ने जरूर दंगा किया और एक आदमी का सिर तोड़ दिया।'

अफसर—अपनी गृहस्थी के अतिरिक्त अन्य किसी तरह की चर्चा यहाँ नहीं की जा सकती चाहे वह राजनीतिक हो या न हो। तुमलोग जो कुछ कहते सुनते हो सबकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है।' इतना कहकर वह अपनी जगह पर बैठ गया और पूर्ववत कागज सम्हालने लगा।

माँ ने अवसर पाकर चिट्ठी पावेल को दे दी। निश्चिंत होकर बोली—'मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या कहूँ।'

पावेल ने मुस्कुराकर कहा—'मुझे भी कुछ नहीं सूझता है।'

उनकी बातें सुनकर अफसर ने क्रोध से कहा—'तब आती ही क्यों हो ? कुछ कहना सुनना नहीं है पर आ-आकर हमें तंग अवश्य करोगी।'

माँ ने पूछा—'तुमलोगों का विचार जल्दी होगा ?'

पावेल—सरकारी वकील कल यहाँ आए थे उन्होंने कहा था कि विचार जल्द आरंभ होगा।

माँ—छः मास से अधिक हवालात में ही बीत गए।

इसी तरह बेमतलब की बातें वे दोनों करते रहे। माँ ने देखा कि पावेल की आँखों में स्नेह और अनुराग भरा है। वह पूर्ववत् शांत और धीर था। उसके शरीर में भी किसी तरह का परिवर्तन नहीं हुआ था सिर्फ उसकी कलाई सफेद पड़ गई थी और दाढ़ी के बाल बढ़ गए थे जिससे उसकी उमर ज्यादा मालूम होती थी। माँ ने कुछ ऐसी बातें कहनी चाहीं जिससे पावेल को खुशी हो। इसलिए उसने बात का सिलसिला उसी प्रकार जारी रखा और उसी भाषा में बोली—'मैं तुम्हारे पोष्य पुत्र को देखने गई थी। वह अच्छी तरह है। उसे शीघ्र ही काम मिलनेवाला है। तुम्हें स्मरण होगा कि वह कड़े परिश्रम के लिये कितना उत्सुक रहता था।'

इतना कहकर उसने चेहरे में चेचक के दाग का इशारा करके बतलाया कि उसका अभिप्राय निकोले वेसोचिको से है।

पावेल माँ का अभिप्राय समझ गया। हँसकर बोला—'मुझे खूब याद है।'

माँ को अपनी सफलता पर बड़ी प्रसन्नता हुई।

बिदाई के समय पावेल ने माँ का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा—'माँ, मुझे अतिशय प्रसन्नता है। आपकी बड़ाई मैं कहाँ तक करूँ।' उल्लास और हर्षातिरेक के नशे में वह मस्त होकर झूमने लगा। माँ का हृदय भी गद्गद था। उसके मुँह से भी शब्द नहीं निकले।

घर पहुँचकर माँ ने देखा कि शशेंका आई हुई है। जिस दिन माँ जेल में पावेल से मुलाकात करने जाती उस दिन शशेंका घर पर अवश्य आती थी।

निकोले ने पूछा—'पावेल कैसे हैं ?'

माँ—अच्छी तरह।

निकोले इवानोविच—आपने चिट्ठी दे दी ?

माँ—हाँ। बड़ी होशियारी से मैंने उसके हाथ में रख दी।

निकोले इवानोविच—उन्होंने उसे पढ़ा ?

माँ—उस जगह कैसे पढ़ सकता था ?

निकोले इवानोविच—मैं यह भूल ही गया। हमलोगों को दूसरे सप्ताह तक उत्तर की प्रतीक्षा करनी होगी। क्या आप समझती हैं कि वे राजी हो जायँगे ?

माँ—मैं कुछ निश्चय नहीं कह सकती। पर मुझे आशा

है कि वह मान जायगा। यदि निरापद हो तो उसे आपत्ति ही क्या हो सकती है?

शशेंका ने सिर हिलाकर पूछा—'रोगी खाना माँगता है। उसे क्या देना होगा?'

माँ—कोई भी चीज दी जा सकती है मैं अभी उनके लिये खाना लाती हूँ।

इतना कहकर वह रसोई-घर की ओर चली। शशेंका उसके पीछे गई। बोली—'क्या मैं आपकी सहायता करूँ?'

माँ—कोई आवश्यकता नहीं है।

इतना कहकर वह बर्तन उठाने के लिये झुकी। शशेंका ने मंद स्वर से कहा—'मैं जानती हूँ कि वे राजी नहीं होंगे। उन्हें बाध्य कीजिए। यहाँ उनकी बड़ी आवश्यकता है। उनसे कहिए कि उनके बिना यहाँ काम नहीं चल सकता। वहाँ वे बीमार पड़ जायँगे। विचार का दिन भी अभी तक नहीं नियत किया गया है और इसी तरह छः महीने बीत गए।'

उसका चेहरा पीला पड़ गया था। आँखों में मुर्दनी छा गई थी। ओठ काँप रहे थे। कठिनाई से मुँह से शब्द निकल रहे थे। वह मुँह फेरकर सीधी खड़ी थी। उसकी आवाज भर्राई हुई थी। उसकी पलकें झप रही थीं। वह अपने ओठ को काट रही थी।

उसके उद्गार से माँ को चोट-सी लगी। वह शशेंका के हृदय को पहचानती थी। वह उदास हो गई। उसने शशेंका को हृदय से लगा लिया और बोली—'मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि वह

किसी की बातें नहीं मानेगा। अपनी अंतरात्मा की प्रेरणा के अतिरक्त वह किसी की नहीं सुनेगा।'

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहीं। माँ के हाथ को अपनी गर्दन से हटाते हुए शशेंका ने कहा—'आपका कहना ठीक है। यह हम-लोगों की मूर्खता के उद्गार हैं। इनसे मनुष्य घबरा जाता है। अच्छा, चलिए रोगी को कुछ पथ्य दें।'

दूसरे ही क्षण वह रोगी के पास जाकर बैठ गई और उसकी हालत पूछने लगी—'क्या सिर में अधिक दर्द है?'

इवान ने वेदना के साथ कहा—'अधिक नहीं। मुझे घबराहट और कमजोरी मालूम हो रही है।'

इतना कहकर उसने कंबल अपने सिर की ओर खींचा और आँखें इस तरह मींजने लगा मानों चमक रही हों। शशेंका ने देखा कि उसकी उपस्थिति से रोगी घबरा गया है और पथ्य खाना नहीं चाहता है। वह वहाँ से उठकर चली गई। उसके चले जाने के बाद इवान उठकर विस्तरे पर बैठ गया और जिस मार्ग से वह गई थी उसी ओर देखता हुआ बोला—'क्या ही सुंदर है?'

इवान की आँखें तेज थीं, उनमें प्रसन्नता और उत्साह था। उसके दाँत सुंदर और घने थे। उसकी आवाज सुरीली थी।

माँ ने गंभीर होकर पूछा—'तुम्हारी उम्र क्या है?'

इवान—सत्तरह वर्ष!

माँ—तुम्हारे माँ-बाप कहाँ रहते हैं?

इवान—गाँव में। मैं यहाँ दस वर्ष की अवस्था से ही रहता

हूँ। मैं पढ़ने के सिलसिले में यहाँ आया। आपका क्या नाम है, भाई?

भाई शब्द का प्रयोग जब कभी माँ के लिये किया जाता वह हँस पड़ती। वह शब्द उसे बड़ा ही हृदयग्राही प्रतीत होता। उसने पूछा—'मेरा नाम क्यों पूछते हो?'

इवान क्षुब्ध हो गया। बोला—'हमलोगों के एक सहपाठी ने पावेल की माँ की और पहली मई के उत्सव की चर्चा की थी।'

वह ध्यान से उसकी बातें सुनने लगी।

इवान ने अभिमान के साथ कहा—'वही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हमलोगों के दल का झंडा सड़क पर फहराया था।'

माँ का हृदय अभिमान से फूल उठा।

इवान—मैं उस जुलूस में उपस्थित नहीं था। हमलोग भी यहाँ झंडे का जुलूस निकालने की कोशिश में थे। पर सफल नहीं हो सके। उस साल तक हमलोगों की संख्या यहाँ शहर में परिमित थी। पर इस साल हमलोग अवश्य निकालेंगे!

भविष्य की भावना से वह उत्तेजित हो उठा उसने हाथ हिलाकर कहना शुरू किया—'उसके बाद उनकी माँ उनके दल में शामिल हो गई। लोग कहते हैं कि उस बूढ़ी में विचित्र उत्साह है।'

माँ हँस पड़ी। उस युवक की बातें उसे बड़ी प्यारी लगीं। वह अपने को सम्हाल भी रही थी जिससे उसे यह न मालूम हो कि यह वही रमणी है जिसकी चर्चा इवान कर रहा है। उसने

अपने मन में कहा—'यह मेरी इतनी प्रशंसा कर रहा है और मैं निरी मूर्खा हूँ।'

उसकी ओर झुककर माँ ने कहा—'तुम अधिक खाया करो जिससे शीघ्र आरोग्य लाभ करो और काम करने लायक हो जाओ। क्योंकि इस आंदोलन की सफलता तुम्हारे ही सदृश हृष्ट-पुष्ट, स्वच्छ, निर्मल हृदय और दृढ़ विचार के युवकों पर निर्भर है। ऐसे ही लोगों की शक्ति और सहारा पाकर यह आंदोलन बढ़ता है और ऐसे लोगों को वह सदा गंदे विचारों और निंदनीय कार्यों से अलग रखता है।

इसी समय कमरे का दरवाजा खुला। ठंढी हवा के झोंके के साथ ही सोफिया ने कमरे में प्रवेश किया। सर्दी से उसका चेहरा लाल हो रहा था। उसने हँसकर कहा—'गुप्तचर मेरे पीछे इस तरह पड़े हुए हैं जैसे किसी धनी दुलहिन के पीछे दुलहा पड़ जाता है। मुझे यहाँ से शीघ्र ही हट जाना पड़ेगा। (रोगी से) तुम्हारी तबियत कैसी है? (माँ से) पावेल का क्या हाल-चाल है? अरे! यहाँ शशेंका भी मौजूद है!'

उसने सिगरेट जलाया और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही सवाल पर सवाल करने लगी। अपनी सदय और करुणाभरी आँखों से बराबर इवान और माँ को देखती जाती थी। माँ भी उसकी ओर ताक रही थी और मन-ही-मन आनंदित होकर कहती थी—'मैं भी कैसे सज्जन लोगों के साथ हूँ।'

माँ फिर इवान की ओर झुकी और कहने लगी—'तुम जल्दी आरोग्य लाभ करो। तुम्हें थोड़ी शराब दूँ।'

इतना कहकर वह भोजनालय में चली गई। वहाँ सोफिया शशेंका से कह रही थी—'उसने तीन सौ प्रतियाँ छापकर तैयार कर ली हैं। इतना कड़ा परिश्रम करके वह अपना नाश कर डालेगी। यही सच्ची वीरता है। उसे प्रशंसा और पुरस्कार दोनों मिलता जाता है। ऐसे लोगों के साथ रहना, उनके साथ काम करना और उनका साथी बनना बड़े सौभाग्य की बात है।'

शशेंका ने नरमी से कहा—'आपका कहना सच है।'

शाम को चाय पीते वक्त सोफिया ने माँ से कहा—'तुम्हें फिर देहात जाना पड़ेगा।'

माँ—कोई हर्ज नहीं। कब ?

सोफिया—यदि आप कल ही चली जायँ तो बहुत अच्छा हो।

माँ—अच्छी बात है।

निकोले इवान०—इस बार घोड़े पर जाना। अड्डे से किराए का घोड़ा ले लेना। जिस राह से पहले गई थी उस राह से मत जाना। रास्ता बदल देना।

निकोले के कथन से भय टपकता था।

माँ—दूसरा रास्ता घूमकर गया है। उधर से होकर जाने में बहुत दूर पड़ेगा और घोड़े का किराया भी बहुत अधिक लग जायगा।

निकोले इवान०—मैं इस यात्रा के सर्वथा प्रतिकूल हूँ। वहाँ भी अशांति मची हुई है। कुछ गिरफ़ारियाँ हुई हैं। एक अध्यापक गिरफ़ार किया गया है। रिबिन भाग गया है। पर हमलोगों को पूर्ण सावधान होने की आवश्यकता है। हमलोगों को कुछ दिन और ठहर जाना चाहिए।

माँ—यह सब नहीं रुक सकता, अनिवार्य है।

अपनी अँगुलियों को टेबुल पर फेरते हुए सोफिया ने कहा—'पर्चों का प्रचार अनवरत होना चाहिए। (माँ से) आप जाने से तो नहीं डरती हैं ?'

इस बात से माँ को चोट लगी। बोली—'मैंने भय के चिह्न कब दिखलाए ? पहली बार भी मैं निडर थी और आज आवश्यक·········।'

इतना कहकर उसने अपना सिर नीचा कर लिया। जब कभी कोई काम उसके सुपुर्द करना होता तो सदा उससे पूछा जाता आप डर तो नहीं जायँगी, आपको किसी तरह की असुविधा तो नहीं होगी, आप इसे कर सकेंगी कि नहीं ? इन सब प्रश्नों से उसे ऐसा मालूम होता कि येलोग मुझे अपने दल में नहीं समझते और दलवालों के समान व्यवहार नहीं करते। ज्यों-ज्यों आंदोलन की प्रगति बढ़ती गई उसका दिल कड़ा होता गया। पहले का-सा भय उसमें नहीं रहा। वह पूर्ण उत्साह के साथ सब कामों में समान भाग लेने लगी थी। यही कारण था कि सोफिया का प्रश्न उसे बुरा लगा। वह उत्तेजित होकर बोली—'आपको

इस तरह के प्रश्न करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे किसी बात का भय नहीं है। जिन्हें संसार में किसी बात की आशा रहती है वे ही डरते हैं। मेरे पास क्या है? एक लड़का था। जब तक वह मेरे पास था मैं डरा करती थी। उसके ऊपर रुलानेवाले अत्याचारों की आशंका से काँप उठती थी। अब वह भी पास नहीं रहा। अत्याचार का भय भी नहीं रहा।'

सोफिया—क्या मेरे प्रश्न से आप नाराज़ हो गईं?

माँ—नहीं। लेकिन आपलोग आपस में इस तरह के प्रश्न कभी नहीं करतीं।

निकोले ने अपना चश्मा सम्हाला और स्थिर दृष्टि से सोफिया की ओर देखने लगा। सबके सब चुप थे। कमरे में पूर्ण निस्तब्धता छा रही थी। यह माँ को बहुत अधिक अखरा। अपराधी की भाँति वह अपने स्थान से उठी और कुछ कहना ही चाहती थी कि सोफिया ने उसका हाथ पकड़कर नरमी से कहा—'माँ, मुझे क्षमा करना। मैं फिर कभी भी इस तरह के प्रश्न नहीं करूँगी।'

माँ हँस पड़ी। दूसरे ही क्षण तीनों व्यक्ति फिर उसी प्रकार बातचीत करने में लग गए और यात्रा की व्यवस्था करने लगे।

——— ———

दसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन प्रातःकाल माँ किराए की गाड़ी पर सवार होकर रवाना हुई। रात को पानी बरस गया था। ठंढी हवा बह रही थी। सड़क पर कीचड़ भरा था। गाड़ीवान माँ की ओर मुँह फेरकर कहने लगा—'मैंने अपने भाई से कहा, आओ, हमलोग आधा-आधा बाँट लें। हमलोग बँटवारा करने लगे।'

इतना कहकर वह बाएँ घोड़े को चाबुक मारकर बोला— 'करो बदमाशी, मैं जानता हूँ कि तुम कैसे पाजी के औलाद हो।'

उजड़े खेत में कौवे उड़ रहे थे। सर्द हवा बह रही थी। चिड़ियाँ अपनी पीठ के पर नोच रही थीं। वे परों को उठा-उठाकर फेंक रही थीं और उसी के जोर पर इधर-उधर उड़ रही थीं।

गाड़ीवान—लेकिन उसने मुझे ठग लिया। मुझे कुछ नहीं मिला।'

माँ का ध्यान उस ओर नहीं था। उसके हृदय में दूसरे ही विचार उठ रहे थे। अतीत वर्षों की घटनाओं की याद सिलसिला बाँधकर उसकी आँखों के सामने आने लगीं। उसने देखा कि इन घटनाओं में उसने भी पर्याप्त भाग लिया है। पहले उसके जीवन का कोई नियत और निश्चित उद्देश्य नहीं था। पर अब उसका जीवन एक नियत मार्ग से जा रहा है। फिर भी उसे अपने ऊपर पूरा भरोसा नहीं है।

उसे आसपास का प्रत्येक दृश्य चलता-फिरता दिखाई देता

था। भूरे बादल के टुकड़े आकाश में दौड़ रहे थे मानों एक दूसरे का पीछा कर रहे हों। भींगे पेड़ सड़क के दोनों ओर चमक रहे थे। छोटी-छोटी पहाड़ियाँ सामने आती थीं और गायब हो जाती थीं। दिन इस वेग के साथ दौड़ा जा रहा था मानों सूर्य से मिलने के लिये अधीर हो रहा हो।

गाड़ीवान की चीख, घंटी की टनटनाहट और हवा की सनसनाहट तीनों एक साथ मिलकर विचित्र ध्वनि उत्पन्न कर रही थीं।

गाड़ीवान—स्वर्ग में भी इन धनिकों को किसी बात की कमी नहीं रहती। सरकार भी उनके अत्याचारों का हर तरह से समर्थन करती है।

इतने में गाड़ी पड़ाव पर पहुँची। घोड़ों को खोलते हुए गाड़ीवान ने निराशा भरे शब्दों में कहा—'यदि आप मुझे शराब भर के लिये मजूरी दे दें...।'

माँ ने उसे एक सिक्का दिया। हाथ में उसे ठनठनाते हुए गाड़ीवान ने कहा—'मैं तीन आने की शराब पीऊँगा और दो आने का भोजन लूँगा।'

तीसरे पहर माँ निकोस्क पहुँची। उसने एक सराय में डेरा दिया। बेंच के नीचे अपना बेग रखकर वह खिड़की पर खड़ी हो गई और बाहर का दृश्य देखने लगी। सामने लंबा-चौड़ा मैदान था। उसके एक किनारे पर टाउनहाल का विशाल भवन था। मैदान में हंस टहल रहे थे और टाउनहाल की सीढ़ी पर एक

किसान बैठा हुक्का पी रहा था। काले-काले बादलों के टुकड़े आकाश में दौड़ रहे थे। समय बहुत ही खराब था।

एकाएक गाँव का इंस्पेक्टर मैदान की ओर आया। टाउनहाल के पास अपना घोड़ा रोककर चाबुक हिलाने लगा और उसने किसान से चिल्लाकर कुछ पूछा;उसकी आवाज गूँज उठी। किसान ने अपनी जगह से उठकर अँगुली के इशारे से इंस्पेक्टर को कुछ बतलाया। इंस्पेक्टर घोड़े पर से कूद पड़ा। रास किसान को थम्हा दी और सीढ़ियों से होकर टाउनहाल के भीतर जाकर गायब हो गया।

चारों ओर शांति विराजने लगी। सिर्फ घोड़े के खुर के शब्द सुनाई दे रहे थे।

इसी वक्त कमरे में एक लड़की ने प्रवेश किया। उसकी आँखें सदय थीं और चेहरा गोल तथा सुंदर था। दोनों हाथों से वह रिकाबियों से भरा तश्त पकड़े हुए थी जिसके भार से दबी जा रही थी। उसने माँ को प्रणाम किया।

माँ—प्यारी लड़की! तुम कैसी हो?

लड़की—आप कैसी हैं?

तश्तरियों को टेबुल पर सजाते-सजाते उसने खुशी के साथ कहा—'अभी एक चोर पकड़ा गया है। पुलिस उसे यहीं ला रही है।'

माँ—सचमुच! कैसा चोर है?

लड़की—मैं नहीं जानती?

माँ—उसने क्या किया है ?

लड़की—मैं नहीं जानती। मैंने इतना ही सुना है कि उन-लोगों ने चोर पकड़ा है। टाउनहाल का चपरासी पुलिस-कमिश्नर को बुलाने गया है। वह चिल्लाता था कि पुलिस ने चोर पकड़ा है और उसे यहीं ला रहे हैं।

माँ ने खिड़की से झाँककर देखा। मैदान में किसान जमा हो रहे थे। कुछ दौड़ रहे थे और कुछ धीरे-धीरे जा रहे थे। टाउनहाल की सीढ़ी के पास जाकर सभी रुक गए और बाईं ओर देखने लगे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। वह लड़की भी खिड़की तक गई। सड़क की ओर झाँका और तुरत कमरे से निकलकर भागी। माँ काँप उठी। अपने बेग को बेंच के नीचे ढकेलकर वह भी चादर ओढ़कर दौड़कर जाने के लिये दरवाजे की ओर बढ़ी पर दूसरे ही क्षण उसने अपने को सम्हाला।

जिस समय वह टाउनहाल की सीढ़ी के पास पहुँची उसके होश-हवाश जाते रहे। उसका दम फूलने लगा और पैर जकड़ गए। मैदान के बीच में रिबिन खड़ा था। उसकी मुश्कें बँधी थीं और उसपर पुलिस का पहरा था। चारों ओर लोगों की भीड़ चुपचाप खड़ी थी।

माँ अपनी स्थिति को भूल गई। वह रिबिन की ओर गौर से देखने लगी। रिबिन ने कुछ कहा। उसे उसकी बोली सुनाई दी पर उसका तात्पर्य वह नहीं समझ सकी।

उसने अपना होश सम्हाला और लंबी साँस ली। पास ही

एक किसान खड़ा था और माँ की ओर गौर से देख रहा था। उसने खाँसते और अपने हाथ को मलते हुए उससे पूछा—'क्या मामला है ?'

'देखो न ?' इतना कहकर वह किसान हट गया।

एक स्त्री ने चिल्लाकर कहा—'यह चोर कितना भयानक है ?'

भीड़ को बढ़ते हुए देखकर पुलिस के सिपाही सामने आकर खड़े हो गए। रिबिन ने चिल्लाकर कहा—'किसान भाइयो, मैं चोर नहीं हूँ। मैंने कभी भी चोरी नहीं की है। मैंने कभी आग नहीं लगाई है। मैं सिर्फ बेइमानी और दगाबाजी के विरुद्ध लड़ता रहा हूँ। यही मेरा अपराध है और इसीलिए मुझे गिरफ्तार किया गया है। क्या आपलोगों ने उन पुस्तकों का नाम सुना है जिनमें हम किसानों के जीवन की असली बातें लिखी हैं ? उन्हीं पुस्तकों के प्रचार के कारण मेरी यह दुर्दशा हो रही है। मैं ही उन पुस्तकों को लोगों में बाँटा करता था।'

भीड़ रिबिन के निकट होती गई। रिबिन के शब्द को सुनकर माँ दृढ़ होकर खड़ी हो गई।

एक किसान ने अपने पड़ोसी से पूछा—'क्या आपने इसकी बातें सुनीं ?'

उस किसान ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप माँ के चेहरे को गौर से देखने लगा। दूसरा किसान भी उसकी ओर देखने लगा। इसके बाद दोनों वहाँ से दूसरी ओर चले गए।

माँ ने देखा कि वेलोग डर गए थे। उसकी दृष्टि और भी

स्थिर और तेज हुई। उसने अपने स्थान से रिबिन का चेहरा स्पष्ट देखा। वह चाहती थी कि रिबिन भी उसे देख ले। इसलिए वह पंजों के बल खड़ी हो गई।

लोग रिबिन की ओर अविश्वास और घृणा के साथ चुपचाप देख रहे थे भीड़ के पीछे के लोग धीरे-धीरे कुछ बातें भी करते जाते थे।

रिबिन ने फिर चिल्लाकर कहा—'इन परचों पर पूरा विश्वास कीजिए। संभव है इनके लिये मुझे मौत की सजा मिले। अधिकारियों ने मुझे मारा-पीटा, मुझे हर तरह से तंग किया कि मैं इन परचों का उद्गम-स्थान बता दूँ। येलोग मुझे और भी तंग करने जा रहे हैं। इन परचों की सभी बातें सच हैं। सत्य-ज्ञान हमलोगों को प्राणों से भी प्रिय होना चाहिए। यही मेरी प्रार्थना है!

एक किसान ने पूछा—'वह यह सब क्यों कर रहा है?'

दूसरे ने उत्तर दिया—'अब इसकी कोई चिंता नहीं! उसे मौत की सजा मिलेगी ही। एक आदमी दो बार तो मर नहीं सकता।'

इसी समय नशे में चूर सार्जेंट सीढ़ियों के पास आया और चिल्लाकर बोला—'यह भीड़ किसलिए इकट्ठी है और वह कौन व्याख्यान दे रहा है?'

वह अपनी जगह से उछला और रिबिन के पास जाकर उसका केश पकड़कर नोचने लगा और गालियाँ देते हुए बोला—'पाजी कुत्ता, तू क्या व्याख्यान दे रहा है?'

भीड़ थोड़ी दूर हटकर फिर चुपचाप खड़ी हो गई। वेदना से माँ का सिर झुक गया। एक किसान ने ठंढी साँस ली। रिबिन फिर बोला—'तुमलोग यह दृश्य अपनी आँखों से देख लो, मेरे किसान भाइयो !'

उसी तरह की निस्तब्धता छाई रही। सार्जेंट ने रिबिन को थप्पड़ मारा। रिबिन चिल्ला उठा—'येलोग किसी आदमी का हाथ-पैर बाँधकर विवश कर देते हैं और तब उसपर इसी तरह अत्याचार करने लगते हैं।'

रिबिन को इसी तरह पीटते हुए सार्जेंट ने पुलिस को आज्ञा दी—'भीड़ को हटाओ और इसे यहाँ से ले जाओ।'

किसी ने पीछे से कहा—'उसे इस तरह क्यों पीटते हो ?'

उसके शब्दों को दोहराते हुए दूसरे ने कहा—'किसी को इस तरह पीटना न्याय नहीं है।'

सार्जेंट ने रिबिन को पुनः गालियाँ दीं।

पहले किसान ने सिर हिलाकर अपने साथी से चलने का इशारा किया। दोनों टाउन-हाल की ओर गए। माँ सदय दृष्टि से उनकी ओर देखती रही। उसने ठंढी साँस ली। इसी वक्त सार्जेंट दौड़कर सीढ़ियों पर आया और चिल्लाकर पुलिस से बोला—'उसे यहाँ लाओ।'

उस पहले किसान ने चिल्लाकर कहा—'भाइयो, उसे यहाँ मत लाने दो। यहाँ लाकर वेलोग उसे पीटेंगे और इसी तरह उसका अंत कर देंगे और हमलोगों पर इसका दोष मढ़ेंगे।'

रिबिन ने फिर चिल्लाकर कहा—'क्या आपलोग अपनी दुर्दशा नहीं देख रहे हैं ? क्या आपलोग नहीं देख रहे हैं कि वे-लोग किस तरह आपको ठग रहे हैं, आपको धोखा दे रहे हैं और आपका रक्त चूस रहे हैं। येलोग आपके ही बल पर कूद रहे हैं। आपके ही बल पर विश्व का काम चलता है पर आपको क्या मिलता है ? केवल भूखों मरना ही आपको नसीब है। यही आपके भाग्य में बदा है।'

एक किसान ने कहा—'इसकी बातें अक्षरशः सच हैं।'

किसी ने चिल्लाकर कहा—'पुलिस-कमिश्नर को बुलाओ। वे कहाँ हैं ?'

दूसरे ने कहा—'सार्जेंट उन्हीं को बुलाने गए हैं ?'

तीसरा—अधिकारियों को बुलाना हमारा काम नहीं है।

शोरगुल बढ़ता गया।

एक ने कहा—'हमलोग इसे इस तरह पीटने नहीं देंगे।'

दूसरा—अधिकारी वर्ग ! इसका हाथ-पाँव खोल दो।

रिबिन—नहीं भाई, यह आवश्यक नहीं है।

चौथा—इसका बटन अवश्य खोल दिया जाना चाहिए।

पाँचवाँ—देखो, ऐसा कोई काम नहीं होना चाहिए कि जिसके लिये पीछे पछताना पड़े।

रिबिन ने दृढ़ता से कहा—'मैं अपने हाथों के लिये खिन्न हूँ। किसानो, मैं भाग नहीं जाऊँगा ! मैं इस सच्ची बात से नहीं हट सकता। यह मेरे रग-रग में व्याप्त है।

अब लोग दल बाँध-बाँधकर इधर-उधर खड़े होने और बहस करने लगे। भीड़ बढ़ने लगी। सभी उत्तेजित थे। वह उमड़ता जन-समूह समुद्र-फेन के समान दिखाई देता था और उसके बीच में खड़ा रिबिन चट्टान के समान था। वह लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करते हुए बोला—'भाइयो, मैं आपलोगों का अतिशय कृतज्ञ हूँ। मैं आपलोगों के लिये ही इस आपत्ति में कूदा हूँ। सत्य-ज्ञान के प्रचार के लिये ही मेरा रक्त बहाया जा रहा है।

इतना कहकर वह अपना मुँह पोछने लगा। माँ एक सीढ़ी नीचे उतरी पर तुरत ही चढ़ आई क्योंकि नीचे से वह रिबिन का चेहरा नहीं देख सकती थी। रिबिन फिर बोला—'भाइयो, उन परचों को ध्यान से पढ़ो। पादरी और पुरोहित आपको समझावेंगे कि इन परचों को बाटनेवाले नास्तिक और विद्रोही हैं उनकी बातों पर कान मत दो। आपलोग अधिकारियों की बातों का विश्वास मत कीजिएगा। सत्य-ज्ञान का प्रचार गुप्त रीति से ही होता है और इसी तरह वह जन-समाज में अपना विस्तार फैलाता है। अधिकारी-वर्ग इसे तप्त लोहा समझते हैं। वे इसके पास नहीं जा सकते। क्योंकि इसकी आँच में वे भस्म हो जायँगे। सत्य-ज्ञान आपका परम दोस्त और अधिकारियों का परम शत्रु है।

पहले किसान ने कहा—'इसकी बातें सच हैं। यह बड़े तत्व की बातें कह रहा है। किसी ने कहा—'अब तुम्हारा अंत निकट है!'

दूसरा—तुम्हें किसने बहकाया ?

पुलिस—(ताने से) पादरी ने !

दो किसान पुलिस को गालियाँ देने लगे।

किसी ने सबको सतर्क करते हुए कहा—'वह देखो !'

इसी समय पुलिस-कमिश्नर भीड़ के सामने आकर खड़ा हो गया। उसे देखकर भीड़ दब गई और सबका चेहरा उतर गया, शोरगुल बंद हो गया। सब लोग घबड़ाए हुए और परेशान दिखाई देते थे।

रिबिन के सामने खड़े होकर उसे गौर से देखते हुए पुलिस-कमिश्नर ने पूछा—'क्या मामला है ! इसके हाथ क्यों नहीं बाँधे हुए हैं ? इन्हें फौरन बाँधो।'

एक पुलिस—इसके हाथ बाँधे हुए थे पर लोगों ने खोल दिया।

पुलिस-कमिश्नर—कौन लोग ? इतना कहकर उसने भीड़ की ओर देखा और उसी तरह फिर पूछा—'वेलोग कौन हैं जिन्होंने इसके बंधन खोलवाए।

इसके बाद उसने पहले किसान की ओर मुड़कर पूछा—'क्या तुमने इसके बंधन खोलवाए हैं ? दूसरे किसान की ओर देखकर —और तुम भी मिशिन इसमें शामिल थे ! उसने किसी की दाढ़ी पकड़कर खींचा और चिल्लाकर कहा—'पाजी भागो ! यहाँ से !'

न तो उसके चेहरे पर घबराहट थी और न परेशानी। वह पूर्ण शांति के साथ सब काम करता जा रहा था और धक्का दे-देकर लोगों को पीछे हटाता जा रहा था। लोग पीछे हटने लगे।

गालियाँ देते हुए उसने पुलिस से कहा—'तुमलोग क्या देख रहे हो ? इसके हाथ क्यों नहीं बाँधते ? (रिबिन से) अपने हाथ पीछे करो।'

रिबिन—न तो मैं भागना ही चाहता हूँ और न किसी तरह का उपद्रव ही करना चाहता हूँ। तब मेरे हाथ क्यों बाँधे जायँगे। मैं हाथ नहीं बँाधने दूँगा।

पुलिस-कमिश्नर ने डपटकर कहा—'क्या कहता है ?'

रिबिन ने चिल्लाकर कहा—'अरे पशु ! जितना जुल्म कर सकता है, कर ले। लाल क्रांति के दिन शीघ्र ही आनेवाले हैं। उस दिन तुम्हारी भी यही दुर्दशा होगी।'

पुलिस-कमिश्नर रिबिन के सामने खड़ा था। एक कदम पीछे हटा और बोला—'क्या बकता है रे पाजी कुत्ता ! तू कहता है कि·······।'

इतना कहकर उसने रिबिन को एक घूँसा तानकर मारा।

रिबिन उसकी ओर झपटा। बोला—'तुम्हें मुझे मारने का कोई अधिकार नहीं है और तुम इस तरह सत्य को नहीं दबा सकते !

उसने फिर घूँसा ताना। रिबिन पीछे हट गया। वार खाली गया। पुलिस-कमिश्नर गिरते-गिरते बचा। भीड़ में कोई खिल-खिलाकर हँस पड़ा। रिबिन ने क्रुद्ध होकर कहा—'मुझे मारने की धृष्टता मत करो। मैं तुमसे कमजोर नहीं हूँ। पाजी शैतान कहीं का।'

पुलिस-कमिश्नर चारों ओर देखने लगा। लोग और सटकर खड़े हो गए। पुलिस-कमिश्नर ने एक किसान का नाम लेकर पुकारा—'निकिता ?'

भीड़ को चीरकर एक तगड़ा किसान बाहर निकल आया।

पुलिस-कमिश्नर—इस पाजी की कनपटी पर दो थप्पड़ कस कर जमाओ।

निकिता रिबिन के पास गया और थप्पड़ तानने लगा। उसकी ओर घूरकर देखते हुए रिबिन ने कहा—देखो, यह नीच किस तरह तुम्हारे ही हाथों से तुम्हारा गला घोंटवाता है। यह किसान मुझे मारने क्यों आया है ? मैंने उसका क्या बिगाड़ा है ?'

निकिता ने रिबिन को धीरे से एक थप्पड़ मारा।

भीड़ से लोग चिल्ला उठे—'निकिता ईश्वर के नाम पर इस तरह का जुल्म मत करो।'

पुलिस-कमिश्नर निकिता को गर्दनिया देकर आगे ठेलते हुए बोला—'और जोर से मारो। मेरा हुक्म मानना होगा।'

निकिता दो कदम पीछे हट गया और झुँझलाकर बोला—'मैं नहीं मारूँगा।'

पुलिस-कमिश्नर क्रोध से अधीर हो उठा। उसके ओंठ काँपने लगे। उसने जोर से अपना पैर जमीन पर पटका और रिबिन पर झपटा। दो घूँसा तानकर दिया। रिबिन जमीन पर गिर गया। वह उसे ठोंकरे मारने लगा।

भीड़ उत्तेजित हो उठी। वह पुलिस-कमिश्कर पर झपटी।

यह दशा देखकर वह उछलकर दूर जाकर खड़ा हो गया। और म्यान से तलवार निकालकर बोला—'क्या तुमलोग दंगा करना चाहते हो ?'

वह काँप रहा था। उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी। शाम हो रही थी। उसका चेहरा भी पीला पड़ गया था। वह सम्हलकर खड़ा हो गया और जमीन पर पैर जमाकर बोला—'अच्छी बात है। मैं यहाँ से जा रहा हूँ। तुमलोग इसे ले जाओ। पर पाजी कुत्ता ! याद रखना यह राजनैतिक अभियुक्त है। यह जार के विरुद्ध विद्रोह फैलाता है, लोगों को भड़काता है। तुमलोग इसकी रक्षा करना चाहते हो। तुमलोग सबके सब बागी हो।

माँ अपनी जगह पर खड़ी टकटक ताक रही थी। उसकी चेतना लुप्त हो गई थी भय और करुणा से अभिभूत वह इस तरह निश्चेष्ट थी मानों नींद में हो। लोगों की चिल्लाहट और उत्तेजना की ध्वनि उसके दिमाग को खफ्त कर रही थी।

एक आदमी—यदि वह अपराधी है तो उसपर मोकदमा चलाइए। मारिए मत !

दूसरा—इसे क्षमा कर दें।

तीसरा—यह सब क्या है ? सब कुछ नाजायज है !

चौथा—यदि सब किसी को येलोग इसी तरह पीटने लगेंगे तो क्या होगा ?

पाँचवाँ—शैतान हैं ! इसी तरह का अत्याचार करते हैं।

भीड़ दो दलों में विभक्त हो गई। एक दल पुलिस-कमिश्नर

को घेरकर खड़ा हो गया और उससे अनुनय-विनय करने लगा। दूसरा दल--जिसकी संख्या कम थी—रिबिन के पास खड़ा बड़-बड़ा रहा था। कुछ लोगों ने उसे जमीन पर से उठाकर खड़ा किया। पुलिस उसे बाँधने के लिये आगे बढ़ी। लोग डाँटकर बोले—'खबरदार ! पाजी कहीं के।'

रिबिन ने अपने चेहरे और दाढ़ी पर का रक्त पोछकर चुपचाप चारों ओर देखा। उसकी निगाह माँ पर पड़ी। वह चौंक पड़ी। अपना हाथ उसकी ओर फैलाया और अनजान में उसे हिलाने लगी। रिबिन ने आँखें फेर लीं। पर दूसरे ही क्षण वह फिर माँ की ओर ताकने लगा। माँ को मालूम हुआ कि उसे देखने के लिये रिबिन तनकर खड़ा हो गया है। खून से लथपथ उसका शरीर काँप रहा था।

माँ ने अपने मन में कहा—'क्या उसने मुझे पहचान लिया? मालूम तो होता है!

रिबिन की ओर देखकर उसने अपना सिर हिलाया और हर्ष तथा विषाद के साथ उसकी ओर बढ़ी पर उसने देखा कि वह पहला किसान भी ध्यान से उसे देख रहा है। उसे अपनी भयावह स्थिति का ज्ञान हो गया। उसने अपने मन में कहा—'मैं क्या करने जा रही हूँ। वेलोग मुझे भी पकड़ लेंगे।'

उस किसान ने रिबिन के कान में कुछ कहा। उत्तर में रिबिन ने अपना सिर हिला दिया। उसके ओठ काँप रहे थे पर प्रत्येक शब्द स्पष्ट निकल रहे थे। बोला—'कोई चिंता नहीं। मैं अकेला

नहीं हूँ। वेलोग सबको नहीं गिरफ्तार कर सकते। सत्य की हत्या नहीं कर सकते। मेरे स्थान में मेरी स्मृति काम करेगी। यदि वे घोषला नष्ट कर डालेंगे तो उसे बनानेवाले बहुत हो गए हैं।

माँ ने अपने मन में कहा—'निश्चय ही वह मुझे लक्ष्य करके कह रहा है! रिबिन कहता गया—'लोग दूसरा घोषला बना लेंगे और एक दिन आवेगा जब बाज इनका साथ छोड़कर स्वतंत्रता के घोषले में उड़ जायगा। उस दिन लोग अपने को मुक्त कर लेंगे।'

एक औरत लोटे में पानी लेकर आई और रिबिन का मुँह धोने लगी। वह बिलख-बिलखकर रो रही थी। रिबिन की आवाज उसके रोने में डूब गई। माँ आगे कुछ नहीं सुन या समझ सकी। इसी समय लोगों का एक दल उधर आया पुलिस-कमिश्नर उनके आगे था। एक ने चिल्लाकर कहा—'मैं गिरफ्तार करने जा रहा हूँ। अब किसका नंबर है ?'

इस पर पुलिस-कमिश्नर ने अपना मुँह खोला। उसकी आवाज नरम पड़ गई थी। उससे साफ मालूम होता था कि वह डर गया था। बोला—'मैं तुम्हें मार सकता हूँ पर तुम मुझे नहीं मार सकते। क्या तुम ऐसा साहस कर सकते हो ?'

रिबिन—ऐसी बात है! आप कौन हैं ? ईश्वर !

लोग चिल्ला उठे। किसी ने कहा—'चाचा रिबिन! जब आप सरकार के विरोधी हैं तो इनसे बहस क्यों करते हैं।' (पुलिस-कमिश्नर से) आपको क्रुद्ध नहीं होना चाहिए। यह अपने आपे में नहीं है।'

रिबिन—चुप रहो भले आदमी !

दूसरा—येलोग तुम्हें गिरफ्तार कर शहर ले जायँगे। वहाँ यहाँ से अच्छा न्याय होगा !

लोगों की वाणी में दीनता थी। पुलिस के सिपाही रिबिन को पकड़कर टाउनहाल के मकान के अंदर ले गए। लोग इधर-उधर भागने लगे। माँ ने उस पहले किसान को जाते देखा। वह कनखियों से माँ की ओर ताक रहा था। माँ के पैर काँपने लगे। अपनी लाचारी और दीनता का वह प्रत्यक्ष अनुभव करने लगी। उसने अपने मन में कहा—'मुझे यहाँ से अभी नहीं जाना चाहिए वह रेलिंग पकड़कर खड़ी रही।

पुलिस-कमिश्नर सीढ़ी तक गया और गाली देकर कहने लगा। उसकी बोली में फिर वही उद्दंडता आ गई बोला—'ये सब पाजी बिना समझे-बूझे दखल देने लगते हैं। यह नहीं समझते कि यह सरकारी मामला है। मैंने सिधाई से काम लिया नहीं तो सबको बँधवा देता।'

पंद्रह-सोलह किसान चुपचाप खड़े उसकी बातें सुन रहे थे। अँधेरा होने लग गया था। बादल घिर आए थे। वह किसान सीढ़ियों तक आया और दीनता के साथ बोला—'हमलोगों की यही हालत है।'

माँ ने उदास मन से कहा—'हाँ।'

उसने गौर से माँ की ओर देखा। पूछा—'आप क्या काम करती हैं?'

माँ–मैं गोटा और ऊन का काम करती हूँ। औरतों में घूम-घूमकर खरीदती हूँ।

उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा। टाउनहाल की ओर देखा और खिन्न होकर बोला—'वह सब चीजें यहाँ नहीं मिल सकतीं।'

माँ ने उसकी ओर देखा और सराय से बिदा होने के लिये उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगी। उस किसान की आकृति चिंतायुक्त और आँखें उदास थीं।

माँ ने उससे पूछा—'क्या आपके घर पर रात भर ठहरने के लिये मुझे जगह मिल सकती है ?'

प्रश्न तो वह कर गई। पर वह काँप उठी। उसका शरीर जकड़ गया। उसने साँस रोककर स्थिर दृष्टि से उस किसान की ओर देखा। उसके हृदय में यह मनहूस विचार उठने लगा—'मैं सबका सर्वनाश कर डालूँगी—निकोले इवानोविच, सनुस्का—और पावेल से मेरी भेंट नहीं हो सकेगी। वेलोग उसे मार डालेंगे।'

पृथ्वी की ओर देखते हुए उस किसान ने कहा--'क्यों नहीं जगह मिल सकती ? पर मेरा घर बहुत ही मामूली है।'

माँ ने कहाँ--कोई हर्ज नहीं। मैं विलासिता से नहीं रहती।

माँ की ओर अन्वेषक दृष्टि से देखकर उस किसान ने कहा—'तब आप खुशी से मेरे यहाँ ठहर सकती हैं।'

अँधेरा हो गया था। संध्या के अंधकार में उसकी आँखें मंद और चेहरा पीला दिखाई पड़ा। माँ ने चारों ओर वेदना के साथ

देखा और धीरे से बोली—'मैं तुरत चलने के लिये तैयार हूँ। आप मेरा बैग लेते चलें।'

किसान—अच्छी बात है।

इसी समय उसकी दृष्टि किसी वस्तु पर पड़ी। उसने कहा—'वह वैगन जा रहा है।'

भीड़ छँट जाने के बाद रिबिन फिर वहीं लाया गया। उसके हाथ बँधे हुए थे? उसका चेहरा भूरे कपड़े से ढँका हुआ था। सिपाहियों ने उसे लाकर एक खाली वैगन में ढकेल दिया।

उसने चिल्लाकर कहा—'भाइयो, बिदा। सत्य की खोज में सदा लगे रहना, उसकी हर तरह से रक्षा करना। जो व्यक्ति तुम्हारे पास सत्य का संदेश लेकर आवे उसपर पूरा भरोसा करना। उसका आदर करना। सत्य के प्रचार से मुँह मत मोड़ना।'

पुलिस कामि०—चुप रह। पाजी कुत्ता! (पुलिस से) पाजी, सब घोड़ों को क्यों नहीं हाँकता?

गाड़ी चल पड़ी। रिबिन बीच में बैठा था। उसके दोनों तरफ दो पुलिसमैन बैठे थे। उसने फिर चिल्लाकर कहा—'आपलोग किसके लिये इस तरह भूखों मरकर अपने प्राण गँवा रहे हैं? स्वतंत्रता के लिये यत्न कीजिए। वही आपका पेट भरेगा। आपको सत्य का ज्ञान देगा। नमस्कार।

गाड़ी की गड़गड़ाहट, घोड़ों के टापों की तड़तड़ाहट और पुलिस की चिल्लाहट से वह स्थान गूँज उठा।

उस किसान ने सिर हिलाकर कहा—'सारा किस्सा समाप्त हो

गया। आप पड़ाव पर थोड़ी देर के लिये ठहरें। मैं अभी आता हूँ।

इतना कहकर वह चला गया।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

माँ सराय में लौट आई, अपनी कोठरी में गई। आग के सामने जा बैठी। तश्तरी में-से रोटी उठाई। उसे देखा और फिर ज्यों की त्यों रख दी। उसे भूख नहीं थी। उसके हृदय में फिर भावों की तरंगे उठ-उठकर उसे भयभीत करने लगीं। वह सुस्त और उदास हो गई। मानों कोई उसका रक्त चूस रहा हो। उसकी आँखों में उसी किसान की मूर्त्ति नाच रही थी। नीली आँखों में कोई भाव नहीं था पर उसे देखकर विश्वास उपजता था। माँ के मन में यह बात नहीं समाती थी कि वह इन्हें धोखा देगा। यद्यपि उसका हृदय शंकित था।

उसने अपने मन में कहा—'उसे मेरी ओर से संदेह हो गया है, उसने भाँफ लिया है। इससे अधिक वह कुछ नहीं सोच सकी। वह निराशा के भयानक कूप में जा पड़ी। बाहर की निश्चल शांति—जो उस शोरगुल के बाद उत्पन्न हुई थी—किसी विशेष घटना की संभावना बतला रही थी जिससे भय का संचार होता था। माँ अपनी निरीह अवस्था और लाचारी का विचारकर काँप उठी और उसका हृदय विषाद से भर गया।

सरायवाली लड़की अंदर आरही थी पर दरवाजे पर ही रुक-कर उसने पूछा—'क्या मैं आपके लिये कुछ और भोजन लाऊँ ?'

माँ—नहीं मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं डर-सी गई हूँ।

लड़की माँ के पास चली गई और इस तेजी से बातें करने लगी मानों भय से काँप रही हो। उसने कहा—'पुलिस-कमिश्नर ने उसे बड़ी निर्दयता से पीटा। मैं पास ही खड़ी सब कुछ देख रही थी। उसके सब दाँत टूटकर बाहर गिर गए। मुँह से खून बहने लगा। उसकी आँखें सूज गई थीं। वह अलकतरा बेचता है। सार्जेंट सराय में ही पड़ा है। नशे में चूर है पर पीता जाता है। वह कहता था कि इसके साथ और भी लोग थे पर यही सबका नेता था। तीन तो पकड़ लिए गए और एक भाग गया। इनके साथ एक अध्यापक रहता था वह भी पकड़ा गया है। वे सब ईश्वर में विश्वास नहीं करते और लोगों को सिखाते फिरते हैं कि गिरजों को लूट लो। यही इनका व्यवसाय था और यहाँ के किसान कुछ तो इनकी तरफदारी करते थे और कुछ कहते थे कि हमलोगों को इसका काम तमाम कर डालना चाहिए था। यहाँ ऐसे ही नीच किसान हैं।'

उस बालिका की बातों का कोई सिलसिला नहीं था। जो कुछ उसे सूझता था तेजी के साथ कहती जाती थी। पर माँ अपना सारा ध्यान उसकी बातों पर देकर अपनी परेशानी और विषाद को भूल जाना चाहती थी। उस बालिका का उत्साह बढ़ता जाता था। उसने इतनी तेजी से कहना शुरू किया कि उसके शब्द स्पष्ट

नहीं निकलते थे। उसने कहा—'बाबूजी कहते थे कि यह सब खराब फसल का परिणाम है। दो वर्ष से फसल खराब हो रही है। लोग तंग आ गए हैं। यही कारण है कि इस तरह के किसान पैदा हो रहे हैं। कैसे शर्म की बात है। गाँव में पंचायतों में वेलोग इस तरह लड़ते-झगड़ते हैं कि देखकर विस्मय होता है। अभी उस दिन की बात है वासिकोव का खेत बाकी मालगुजारी में नीलाम हो रहा था। उसने कुर्क अमीन के मुँह पर एक थप्पड़ मारकर कहा—'यह तुम पर मेरा बकिऔता था।'

इसी वक्त दरवाजे पर किसी के पैर की गंभीर ध्वनि सुनाई दी। माँ उठ खड़ी हुई। वही किसान भीतर आकर बोला—'आपका असबाब कहाँ है?'

इतना कहकर उसने सामने रखा हुआ बेग उठा लिया और उसे हिलाकर बोला—'यह तो खाली है?'

उस बालिका को लक्ष्यकर उसने कहा—'मेरिया, मेहमान को मेरे घर का रास्ता बता दो' और आप बिना इधर-उधर देखे चलता बना।'

बालिका—क्या आप रात भर यहीं रहेंगी?

माँ—हाँ, मैं गोटा खरीदती हूँ।

बालिका—पर यहाँ तो लोग गोटा बनाते नहीं। टिको और डरीना में लोग बनाते हैं।

माँ—मैं थक गई हूँ। इसलिए कल वहाँ जाऊँगी।

इतना कहकर माँ ने चाय का मूल्य दिया। तीन केपक पाकर

बालिका बहुत ही खुश हुई। चलते-चलते उसने कहा—'अगर आप चाहें तो मैं वहाँ के गोटा बनानेवालों को बुला ला सकती हूँ। आप वहाँ जाने की परेशानी से बच जायँगी। यहाँ से सिर्फ आठ मील है।'

माँ—कोई जरूरी नहीं है।

रास्ते की ठंढी हवा ने माँ की थकान दूर कर दी। उसके मन में एक विचार उठने लगा। विचार अस्पष्ट था पर उसमें सुखद आशा की झलक थी। वह अपने विचार को दृढ़ कर लेना चाहती थी। उसने बार-बार अपने मन से पूछा—'मैं क्या करूँ ? मैं सब बातें साफ-साफ कह दूँ क्या ?'

अँधेरा हो गया था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। किसानों के झोपड़ों में चिराग टिमटिमा रहे थे। उनका मंद प्रकाश दूर से दिखाई देता था। चौपाल में पशु अपनी बोली से शांति को भंग कर रहे थे और खेतों में दादुर झंकार मचा रहे थे। अंधकार और उदासी समूचे गाँव पर छाई हुई थी।

एक झोपड़ी के पास पहुँचकर बालिका ने कहा—'यही मकान है। यह किसान बहुत ही गरीब है। आपने बड़े ही खराब घर में निवास लिया है।' मकान के भीतर झाँककर उसने पुकारा—'काकी टटियाना, एक मेहमान आईहुई हैं। दरवाजे पर खड़ी हैं।'

इतना कहकर वह भाग गई।

माँ दरवाजे पर रुक गई और आँख पर हाथ रखकर चारों ओर गौर से देखने लगी। झोपड़ी साधारण थी पर उसकी सफाई

और स्वच्छता आकर्षक थी। एक कोने में चिराग जल रहा था। मकान-मालिक सामने बैठा था। एक युवती ने चूल्हे के पीछे से निकलकर माँ को प्रणाम किया। उस किसान ने माँ की ओर गौर से देखकर कहा—'अंदर आइए। (स्त्री से) टटियाना, जल्दी पिओटर को बुलाओ।'

वह स्त्री तुरत बाहर चली गई। माँ किसान के पास बैठ गई और चारों ओर देखने लगी। उसका बेग पास में नहीं था। झोपड़े में उदासी छाई हुई थी। किसान का चेहरा चिंतायुक्त और विषादपूर्ण था। माँ ने अपने मन में कहा—'यह बातचीत क्यों नहीं करता है?' उसने तीखे शब्दों में पूछा—'मेरा बेग कहाँ है?'

इस प्रश्न से माँ को खुद विस्मय हुआ!

किसान ने अपनी गर्दन हिलाई और बोला—'वह सुरक्षित है। लड़की के सामने मैंने किसी मतलब से कहा था कि वह खाली है। वास्तव में वह खाली नहीं है बल्कि भार से भरा है।'

माँ—पर इससे क्या?

किसान अपनी जगह से उठकर माँ के पास गया और उसके कान के पास झुककर उसने पूछा—'आप उस अभियुक्त को जानती हैं?'

माँ चौंक उठी पर दृढ़ता से बोली—'हाँ!' अपनी इस दृढ़ता से वह प्रसन्न हो उठी। इसका प्रकाश उसके हृदय में चारों ओर फैल गया। उसने निश्चिंतता की साँस ली। वह बेंच पर तनकर बैठ गई। किसान हँस पड़ा और बोला—'जिस समय आपलोगों में इशारेबाजी हुई उसी वक्त मैं समझ गया।

मैंने तुरत उससे पूछा कि 'क्या आप वहाँ खड़ी हुई उस स्त्री को पहचानते हैं ?'

माँ—उसने क्या उत्तर दिया ?

किसान—उसने कहा कि हम अकेले ही नहीं हैं। हमारे दल में अनेक लोग हैं।

किसान ने अन्वेषक दृष्टि से माँ की ओर देखा और हँसकर बोला—'वह बड़ा ही शक्तिशाली मनुष्य है। वह वीर है। वह दृढ़ता और स्पष्टता से बोलता है। पुलिसवाले उसे पीटते जाते थे पर वह अपनी बातें कहता जाता था।'

किसान की बातों से माँ के हृदय में विश्वास उपजता गया भय और निराशा के स्थान पर उसके हृदय में रिबिन के लिये दया और करुणा भर आई। वह अपने को सम्हाल न सकी। घृणा-भरे शब्दों में बोली—'पापी, चांडाल, डाकू।'

इतना कहते-कहते वह रो पड़ी।

किसान का जी दुख से भर गया। वह वहाँ से उठकर चलने लगा। बोला—'अधिकारियों ने इस पापाचार को संपन्न करने के लिये कितने ही सहायक नियुक्त कर लिए हैं।' वह एकाएक माँ की ओर लौट पड़ा और नरमी से बोला—'मेरा अनुमान था कि इस बेग में परचे, अखबार और पुस्तकें हैं। क्या मेरा अनुमान सच है ?'

आँसू पोछते हुए माँ ने कहा—'हाँ। मैं इन कागजों और पुस्तकों को उसी के पास ले जा रही थी।'

उसने आँखें नीची कर लीं। दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा और

थोड़ी देर तक चुप रहकर बोला—'हमलोगों के पास भी परचे और पुस्तकें पहुँची थीं। उनमें सच-सच बातें लिखी हैं। हमलोगों को उनकी बड़ी आवश्यकता है। मैं तो अधिक पढ़ना-लिखना नहीं जानता। मेरा दोस्त जानता है। मेरी स्त्री भी पढ़कर मुझे सुना देती है।'

किसान कुछ सोचने लगा उसने फिर पूछा—'आप इन्हें कहाँ ले जायँगी?'

माँ ने उसकी ओर देखकर कहा—'आपके पास छोड़ दूँगी।'

उसे विस्मय नहीं हुआ। उसने विरोध नहीं किया। सिर्फ इतना ही कहा—'मेरे पास! अच्छी बात है।'

वह बैठ गया। उसने दाढ़ी पर से हाथ हटा लिया और उसे अँगुलियों से खुजलाने लगा।

रिबिन पर किए गए अत्याचारों का चित्र माँ की आँखों के सामने निश्चल होकर खड़ा हो गया और सब ख्याल उसके मन से हट गए। उसके लिये हृदय में जो वेदना उठी उसने सब भावों को दबा दिया। परचों और पुस्तकों तक की सुधि उसे नहीं रही। उसका सारा विचार रिबिन की चिंता में मग्न था। उसकी आँखों से अनवरत आँसू बह रहे थे। उसका चेहरा उदास हो गया। पर उसकी आवाज नहीं लड़खड़ाई। उसने कहा—'ये जालिम मनुष्य का सर्वस्व लूट लेते हैं, उसका गला घोंट देते हैं और उसे कुचल डालते हैं। यदि वह उनके इन अत्याचारों का विरोध करता है तो उसे मारते-पीटते हैं और हर तरह से तंग करते हैं।'

किसान – यह सब शक्ति की प्रभुता है।

माँ उत्तेजित हो उठी। बोली—'उन्हें यह शक्ति कहाँ से प्राप्त है? हमलोगों से ही उन्हें यह शक्ति प्राप्त है। हमलोग ही उसके कारण हैं!'

किसान—आपका कहना सच है। यह चक्र इसी तरह चलता है। (द्वार की ओर कान लगाकर) वेलोग आ रहे हैं!

माँ—कौन?

किसान—हमारे साथी।

इसी समय किसान की स्त्री ने घर में प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे एक बूढ़ा किसान था। एक कोने में हैट फेंककर वह मेहमान के पास दौड़ा गया और उसने पूछा—'आप अच्छी हैं?'

माँ ने सिर हिलाकर संमति जनाई।

किसान की स्त्री—(पति से) मेहमान के लिये भोजन?

माँ—मुझे कुछ नहीं चाहिए।

किसान माँ के निकट चला गया और बोला—'यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपना परिचय दूँ। मेरा नाम पीटर येगोरोव रिबिनिन है। मुझे लोग शिलो—उल्लू—कहते हैं। आपलोगों के अध्यवसाय को मैं कुछ समझता हूँ। मैं पढ़-लिख सकता हूँ। मैं उल्लू या बेवकूफ नहीं हूँ।'

इतना कहकर उसने माँ से हाथ मिलाया और मकान-मालिक से बोला—'स्टीपन, वरवरा निकोलियाना अच्छी औरत है, लेकिन इस आंदोलन में उसे विश्वास नहीं है। वह कहती है कि यह

सब स्वप्न है। येलोग वाहियात बातों से जनसाधारण का दिमाग गंदा कर देते हैं। इसी फेर में पड़कर आपलोगों की आँखों के सामने ही वह शांत और स्थिर किसान पकड़ा गया है। आप ही हैं। बड़ी बूढ़ी हैं। इनके रक्त में विकार नहीं आया है। (माँ से) आप बुरा न मानें—आप क्या काम करती हैं ?'

इतनी बातें वह तेजी के साथ एक साँस में कह गया। उसकी छोटी दाढ़ी हिलती जाती थी और उसकी काली आँखें माँ के चेहरे पर जमी हुई थीं। उसके बाल बिखरे हुए थे। मालूम होता था कि वह संग्राम में विजय लाभकर तुरंत लौटा है और विजय के हर्ष से पुलकित है। उसकी सरल बातों से माँ को बड़ी प्रसन्नता हुई। विशेषकर इसलिए कि उसने सीधे प्रधान विषय की चर्चा छेड़ दी थी। माँ ने सदय होकर उसकी ओर देखा और उसके प्रश्नों का उत्तर दिया। उसने फिर माँ से हाथ मिलाया और हँसने लगा। उसने मकान-मालिक से फिर कहा—'स्टीपन, यह काम बहुत उत्तम है। मैंने पहले भी तुमसे कहा था। यही उसका तरीका है। अब लोग भी सब बातें समझने और उन्हें अपने हाथों में लेने लगे हैं और यह रमणी, आपसे सच बातें नहीं कह सकतीं क्योंकि इनके लिये, यह हानिकर है। इनके लिये मेरे हृदय में संमान है। यह बड़ी अच्छी औरत हैं और यदि इन्हें किसी तरह की हानि न हो तो ये हमलोगों का उपकार कर सकती हैं। लेकिन लोग अब सीधे लक्ष्य पर आना चाहते हैं। उन्हें हानि-लाभ की कोई परवाह नहीं। हर तरफ उन्हें संकट

और विपत्ति ही दिखाई देती है। उन्हें हिलने-डोलने की गुंजाइश नहीं है। चारों ओर उन्हें निराशा-ही-निराशा दिखाई देती है।

स्टीपन—आपका कहना सच है। (माँ की ओर देखकर) आप अपने असबाब के लिये परेशान हैं ?

पीटर ने माँ की ओर आशय भरी दृष्टि से देखा और उन्हें आश्वासन देते हुए कहा—'आप परेशान न हों आपकी हर वस्तु सुरक्षित रहेगी। आपका असबाब मेरे घर में है। जिस समय उसने मुझसे आपके बारे में कहा कि आप भी क्रांतिकारी दल में शामिल हैं और आप उस आदमी को जानती हैं उसी वक्त मैंने उससे कहा—स्टीपन, सावधान रहना। ऐसे मामले साधारण नहीं हैं। इस बारे में कहीं भी मुँह मत खोलना। (माँ से) आपने भी हमलोगों को समझ लिया होगा। चेहरा देखने से ही भले आदमी पहचान लिए जाते हैं। उनकी संख्या इतनी कम है कि उन्हें पहचानना कठिन नहीं है। आपका बेग मेरे घर में है।'

वह माँ के पास बैठ गया और विनय के साथ बोला—'यदि आप अपने बेग को खाली करना चाहती हैं तो मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ। हमलोग उन पुस्तकों को पढ़ना चाहते हैं।'

स्टीपन—वह सब कुछ दे जाना चाहती हैं।

पीटर—'यह सबसे उत्तम बात है। हमलोग सब कुछ छिपा कर रखेंगे।' वह माँ के पैरों पर गिर पड़ा। हँस पड़ा और उठकर

कमरे में टहलने लगा और संतोष के साथ बोला—'यह तो बड़ी सीधी बात है। कहीं वह छलांगें मारता है और कहीं वह बेबस होकर पड़ रहता है। कोई हर्ज नहीं। परचे और अखबार बड़े ही उपयोगी हैं। बड़ा काम कर रहे हैं। जनसाधारण की आँखें खुलती जा रही हैं। मालिकों को ये नहीं सुहाते। मैं एक कुलीन रमणी के यहाँ बढ़ई का काम करता हूँ। वह यहाँ से पाँच मील पर रहती है। बड़ी ही सुशीला रमणी है। वह मुझे हर तरह की पुस्तकें दिया करती है। मैं उन किताबों को पढ़ते-पढ़ते सो जाया करता था। हमलोग उसके बड़े ही कृतज्ञ थे। एक दिन हम-लोगों ने उसे एक किताब और कुछ परचे दिखलाए। वह गुस्सा हो गई। बोली—'पीटर, जला दो इन परचों को। दूर रहो इनसे। यह कच्ची उमर के नासमझ छोकरों का काम है। इससे तुम-लोगों की विपत्ति बढ़ती ही जायगी। इनकी बदौलत तुम्हें जेल जाना पड़ेगा, निर्वासन का दंड भोगना पड़ेगा।'

वह एकाएक रुक गया। क्षण भर सोचता रहा। बोला—'क्या वह आदमी आपका संबंधी था?'

माँ—परदेशी।

पीटर संतुष्ट हो गया। वह पीछे मुँह फेरकर हँसने लगा। पर माँ को 'परदेशी' शब्द का प्रयोग उचित और उपयुक्त नहीं जान पड़ा। उसे दुख हुआ। बोली—'वह मेरा संबंधी नहीं है लेकिन मैं उसे बहुत दिनों से जानती हूँ और अपने बड़े भाई के समान मानती हूँ।'

उसे इस बात से खेद था कि अपने भाव को व्यक्त करने के लिये उसे उपयुक्त शब्द नहीं मिले और न वह अपना मनोभाव ठीक-ठीक व्यक्त कर सकी। झोपड़ी में सन्नाटा छाया हुआ था। पीटर अपनी गर्दन को कंधे पर इस तरह झुकाकर रखे हुए था कि उसकी नोकीली दाढ़ी हिल-हिलकर अजब बहार दे रही थी। उसकी परछाई दीवाल पर पड़ रही थी। उसे देखने से मालूम होता था कि मानों कोई दीवाल से सटकर खड़ा है और दाँत पीस रहा है। स्टीपन टेबुल पर केहुनी अड़ाकर उसी के सहारे बैठा था और बोर्ड पर ठोकर मार रहा था। उसकी स्त्री चूल्हे के पास निश्चल खड़ी थी और रह-रहकर माँ की ओर देखती थी।

पीटर ने कहा—टटियाना, वह हमलोगों का हितेच्छु है उसमें चरित्र-बल है। वह अपनी क्षमता को समझता है। उसने अपने ऊपर बड़ी भारी जिम्मेदारी ली है। वही सच्चा वीर है।

टटियाना ने ओठ चबाते हुए पूछा—'उसका विवाह हुआ है?'

माँ—वह विधुर है। उसकी स्त्री मर गई है।

टटियाना ने जीभ दबाकर कहा—'यही कारण है कि उसमें इस तरह का साहस है। विवाहित पुरुष अवश्य डर जायगा। उसे इतना साहस नहीं हो सकता।'

पीटर—मैं भी तो विवाहित हूँ। पर मैं ········।

टटियाना ने अपना ओठ चबाते हुए बिना उसकी ओर देखे हुए ही कहा—'चुप रहो। तुम क्या करते हो? दिन भर इधर-

उधर बहकते रहते हो और कभी-कभी एकाध किताबें पढ़ लेते हो। तुम और स्टीपन दिन-रात न जाने क्या फुसफुसाया करते हो। इससे जनसाधारण का कोई उपकार नहीं हो सकता।'

उस स्त्री की बातों से पीटर को दुख हुआ। उसने धीरे से कहा—'क्यों बहन ! ऐसा क्यों कहती हो ? क्या मैं लोगों से कुछ नहीं कहता-सुनता ? क्या यहाँ मैं सीप का काम नहीं कर रहा हूँ ?

स्टीपन ने अपनी स्त्री की ओर चुपचाप देखा और फिर सिर नीचा कर लिया।

टटियाना—किसी किसान को विवाह करने की क्या आवश्यकता है ? लोग कहते हैं कि उसे एक काम करनेवाले की आवश्यकता है ? क्या काम ? किस तरह का काम ?

स्टीपन ने धीरे से कहा—'मालूम होता है कि तुम्हें पूरा काम नहीं है ? तुम्हें और काम चाहिए ?'

टटियाना—'जो काम हमलोगों को करना पड़ता है उसका क्या महत्व है ? हमेशा हमलोगों को एक शाम भूखे रहना पड़ता है। हमलोग चौबीसो घंटे काम में पशु की भाँति जुते रहते हैं। बाल-बच्चों की भी देख-रेख नहीं कर सकते। फिर भी पेटभर अन्न नहीं मिलता।

इतना कहकर वह माँ के पास चली गई और उसके बगल में बैठकर कहने लगी। उसकी भाषा में न तो विषाद था और न दैन्यता थी। उसने कहा—'हमें दो लड़के हुए। एक दो वर्ष का होकर उबलते पानी में गिरकर मर गया और दूसरा मरा ही

पैदा हुआ। यही हमलोगों के जीवन का सुख है !! मेरा तो दृढ़ विचार है कि किसान को कभी भी शादी नहीं करनी चाहिए। शादी करके वह अपने गले में फाँसी लगा लेता है। यदि वह स्वाधीन रहेगा तो वह जनसाधारण के उपकार के लिये अवश्य कुछ-न-कुछ करेगा। वह निर्भय होकर सच का प्रचार करेगा। (माँ से) मैं उचित कह रही हूँ ?'

माँ--आपका कहना ठीक है। यदि ऐसा नहीं होगा तो हम-लोगों की हालत सुधर ही नहीं सकती।

टटियाना—आपके पति हैं ?

माँ—वह मर गए। मेरे एक लड़का है।

टटि०--क्या वह आपके साथ ही रहते हैं ?

माँ—'वह जेल में है।' इन हृदय-विहारक शब्दों को भी माँ ने इस समय बड़े अभिमान के साथ कहा। 'यह दूसरी बार है। उसका अपराध केवल मात्र यही है कि वह जीवन की वास्तविक अवस्था को समझने लग गया है। वह एकदम युवक है सुंदर और बुद्धिमान है, उसने एक समाचार-पत्र निकालने का आयोजन किया और मिखेल इवानोविच को उसका रास्ता बतलाया यद्यपि उसकी उम्र अभी मिखेल की आधी ही है। इन्हीं सब अपराधों के कारण उस पर मुकदमा चलनेवाला है। उसे निर्वासन का दंड दिया जायगा। वह वहाँ से भागेगा और फिर वही काम आरंभ करेगा।

ज्यों-ज्यों वह पावेल की बातें कहती गई माँ का अभिमान

बढ़ता गया। उसने एक वीर की मूर्ति खड़ी कर दी। दिन की भीषण और निर्दयतापूर्ण घटना के स्थान पर वह कुछ उज्वल दृश्य खड़ा कर देना चाहती थी। इसके लिये उसने उन सुंदर और प्रकाशमय घटनाओं का स्मरण किया जो उसने अपने जीवन में देखे थे। उनके तेज को दिखलाते हुए बोली—'बहुत से ऐसे लोग पैदा हो गए हैं और बहुत से पैदा होते जा रहे हैं जो लोगों की दशा सुधारने के लिये, लोगों में सत्य-ज्ञान का प्रचार करने के लिये अपना जीवन बलिदान कर देंगे।'

वह इस प्रकार तन्मय हो गई कि अपने को एकदम भूल-सी गई। सतर्कता और सावधानी को भूलकर उसने गुप्त दल का सारा भेद खोल दिया। यद्यपि उसने किसी का नाम नहीं बतलाया पर जनसाधारण की दशा सुधारने के लिये, उन्हें लोलुप धनिकों के पंजे से छुड़ाने के लिये जो-जो यत्न हो रहे थे उनका विस्तृत इतिहास कह सुनाया। उस वर्णन में उसने अपनी सारी शक्ति लगा दी, शब्द-ज्ञान के समूचे भंडार को खर्च कर दिया और वास्तविक स्थिति के ज्ञान से लोगों के प्रति उसके हृदय में जो स्नेह उदय हुआ था उसका पूर्ण रीति से प्रदर्शन किया और वह स्वयं मुग्ध और गद्गद हो उठी। बोली—'यह आंदोलन विश्व-व्यापी है। सभी देशों में इसका उदय हुआ है। इसकी शक्ति का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इसका अनवरत विकास हो रहा है और जबतक सत्य की निष्ठा स्थापित होकर जनसाधारण का उद्धार नहीं हो जायगा यह उसी प्रकार बढ़ता जायगा।

वह कहीं रुकी नहीं। उपयुक्त शब्द उसे आपसे आप मिलते गए और उस दिन की खूँखार तथा भयानक घटना को हृदय से दूर करने की उत्कट अभिलाषा से वह उन शब्दों को इस प्रकार जोड़ती गई जैसे कोई मणि-माणिक को एक धागे में पिरोता हो। वे तीनों व्यक्ति मूर्ति की भाँति निश्चल बैठे उसकी बातें सुन रहे थे और अनिमेष दृष्टि से उसकी ओर देख रहे थे। इससे उसका उत्साह बढ़ता गया और विश्वास दृढ़ तथा अटल होता गया। उसने कहा—'लोगों के जीवन को इस प्रकार किसने कुचल डाला है? धनिकों ने और उनके नौकरों ने! इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है कि वह उनलोगों का अनुकरण करे जो लोग उनके लिये हर तरह की यातनाएँ सह रहे हें और जेलों तथा काल-कोठरियों में सड़ रहे हैं। बिना किसी निजी स्वार्थ के वेलोग इस तरह यातनाएँ सहकर लोगों को सुख का मार्ग दिखला रहे हैं। वेलोग साफ-साफ कह देते हैं कि रास्ता विकट है और किसी को उस पर चलने के लिये बाध्य नहीं करते। पर जो लोग एक बार भी उस मार्ग पर जा पड़ेंगे, उनके साथ थोड़ी दूर भी चल लेंगे वे उनका साथ कभी भी नहीं छोड़ेंगे। क्योंकि वही सच्चा रास्ता है। उन्हीं लोगों के साथ चलने में कल्याण भी है क्योंकि वेलोग मामूली लाभ से संतुष्ट होनेवाले नहीं हैं। जबतक वेलोग इस दयनीय अवस्था का अंत न कर देंगे, लोभ, कपट, जाल और पापाचार का अंत न कर देंगे तबतक विश्राम न लेंगे। जबतक सभी लोगों के आत्मा में एक ही भाव का उदय न होगा, जब

तक सबलोग एक स्वर से नहीं कह उठेंगे कि यह देश हमारा है, हमी सब इसके राजा हैं और हमलोग मिलकर सबके कल्याण के लिये कायदे और कानून बनावेंगे तबतक वेलोग न तो मुँह मोड़ेंगे और न हाथ बटोरेंगे।'

वह थककर चुप हो गई और चारों ओर देखने लगी। उसे निश्चय था कि उसका श्रम व्यर्थ नहीं जा रहा है। वे तीनों किसान इस आशा से चुप थे कि वह कुछ और कहेगी। पीटर बीच झोपड़ी में खड़ा था उसके हाथ पीछे की ओर मुड़े थे। उसकी भौंहें तनी थीं और उसकी ओठों पर चंचल मुस्कान वर्तमान थी। स्टीपन एक हाथ टेबुल पर रखकर उसी के सहारे आगे की ओर झुका दत्तचित होकर सुन रहा था। स्टीपन की स्त्री केहुनी को अपनी जाँघ पर रखकर उसी पर झुकी हुई माँ के पैरों को देख रही थी।

पीटर ने अपना सिर हिलाया। बेंच पर सावधानी से बैठ गया। बोला—'यही उपयुक्त मार्ग है।'

स्टीपन ने अंगड़ाई ली, अपनी स्त्री की ओर देखा। अपने हाथों को ऊपर उठाया मानों कोई वस्तु पकड़ रहा हो। बोला—'जो इस काम में पड़ेगा उसे अपना सर्वस्व अर्पण कर देना होगा।'

पीटर—उसे पीछे कदम नहीं रखना होगा।

स्टीपन—आंदोलन खूब बढ़ रहा है।

पीटर—सभी देशों में फैल गया है।

वेलोग इस तरह बातें कर रहे थे मानों कोई अँधेरे में मार्ग

टटोल रहा हो। माँ दीवाल के सहारे झुक गई और उनकी बातें गौर से सुनने लगी। टटियाना अपने स्थान से उठी, चारों ओर देखा और फिर आकर बैठ गई। जिस समय उसने उन किसानों की ओर घृणा और असंतोष के साथ देखा उसकी आँखें उदास हो गईं।

उसने माँ से पूछा—'मालूम होता है कि आपने बड़े संकट झेले हैं।'

माँ—आपका अनुमान ठीक है।

टटियाना—आपकी बातें बड़ी ही आकर्षक होती हैं। हृदय को अपनी ओर खींच लेती हैं। आपकी बातों से मेरे मन में लालसा उठी है कि यदि मैं एक बार भी ऐसे लोगों का दर्शन पा सकती। जनसाधारण का जीवन क्या है? पशु से भी खराब जीवन उन्हें व्यतीत करना पड़ता है। मुझे ही लीजिए। मैं पढ़-लिख सकती हूँ। मैं पुस्तकें पढ़ती हूँ और उनपर विचार करती हूँ। कभी-कभी रात-रात भर मुझे नींद नहीं आती। पर इससे मुझे क्या लाभ होता है? यदि मैं अपनी दशा पर विचार नहीं करती तो जीवन निरर्थक है और यदि विचार भी करती हूँ तो भी निरर्थक है। सब कुछ निरर्थक प्रतीत होता है। किसानों को ही ले लीजिए। दिनरात जी तोड़कर परिश्रम करते हैं पर उनके पास कुछ नहीं है। इस निरीह दशा से उन्हें क्षोभ होता है। वे शराब पीते हैं, आपस में लड़ते-झगड़ते हैं और फिर उसी काम में लगते हैं। इसी प्रकार उनका जीवन व्यतीत होता है पर उनके हाथ कुछ भी नहीं लगता।

उसके शब्दों में घृणा थी, उसकी आँखों में घृणा थी। कभी-कभी उसके ये भाव और भी तेज हो जाते थे। तीनों किसान मौन थे। हवा बह रही थी, बूंदें पड़ रही थीं। बाहर कुत्ते भूँक रहे थे। चिराग का प्रकाश एकाएक मंद पड़ गया पर दूसरे ही क्षण फिर तेज हो गया। टटियाना ने फिर कहा—'आपकी बातों से मुझे मालूम हुआ कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है। अब मैं देखती हूँ कि मैं यह सब पहले से ही जानती थी पर आज से पहले मैंने न तो इस तरह की बातें सुनी थीं और न कभी मेरे हृदय में इस तरह के विचार ही उठे थे।'

स्टीपन—मेरी समझ में हमलोगों को कुछ भोजन का आयोजन करना चाहिए और चिराग बुझा देनी चाहिए। इतनी रात तक यहाँ चिराग जलते देखकर लोगों को आशंका होगी। इससे हमलोगों की तो हानि नहीं होगी पर अतिथि पर विपत्ति आ सकती है।

टटियाना अपनी जगह से उठी और चूल्हे के पास चली गई।

पीटर—(हँसकर नरमी के साथ) भाई, अब खूब सावधान होकर रहना। जब लोगों में परचे बाँटे जायँ ·····।

स्टीपन—मैं अपने बारे में नहीं कह रहा हूँ। यदि वे मुझे गिरफ्तार भी कर लें तो कोई चिंता नहीं।

इतने में उसकी स्त्री आई और स्टीपन से हटने के लिये कहा। स्टीपन अपनी जगह से हट गया। उसकी स्त्री आसन बिछाने

लगी। स्टीपन बोला—'हमलोगों के जीवन का मूल्य ही क्या है। तुच्छ! अति तुच्छ!'

माँ के हृदय में करुणा उत्पन्न हो आई। बोली—'आपका कहना सर्वथा ठीक नहीं है। अन्य लोगों के विचार के अनुसार हमें अपने जीवन का मूल्य निर्धारित नहीं करना चाहिए। वेलोग तो केवल खून के प्यासे होते हैं। हमें अपने जीवन का मूल्य अपनी अंतरात्मा की प्रेरणा के अनुसार लगाना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि हम इस जीवन से अपने मित्रों का क्या हित कर सकते हैं न कि हमारे दुश्मन इससे क्या लाभ उठा सकते हैं।'

स्टीपन—हमलोगों के दोस्त कहाँ ?

माँ—पर मैं कहती हूँ कि सबके दोस्त हैं।

स्टीपन—आपका कहना सच है। पर हमलोगों के नहीं हैं।

माँ—यहाँ भी दोस्त बनाओ।

स्टीपन चिंता में पड़ गया। क्षणभर सोचकर बोला—'हम-लोग यत्न करेंगे।'

टटियाना—चलिए भोजन कीजिए।

पीटर माँ की बातों से अभिभूत हो गया था। इतनी देर तक गुम था। बोला—'माँ आपको यहाँ से फौरन चले जाना चाहिए। यहाँ से आप शहर की ओर न जायँ बल्कि दूसरे पड़ाव पर जायँ। घोड़ा किराए पर कर लें।'

स्टीपन—क्यों ? मैं इन्हें पहुँचाने जाऊँगा ?

पीटर—ऐसा कभी मत करना। क्योंकि अगर यहाँ कुछ

गोलमाल हुआ तो वेलोग तुम्हें फौरन पकड़ेंगे और माँ के बारे में पूछताछ करना शुरू कर देंगे और जहाँ उन्हें यह मालूम हुआ कि तुमने उसे टिकाया था और पहुँचाने भी गए थे तो वे तुम्हें फौरन कैद कर लेंगे। इस तरह जेल जाने के लिये जल्दी नहीं करनी चाहिए। यों तो एक दिन सबको जेल जाना पड़ेगा। किसी-न-किसी दिन सबकी पारी आवेगी। कहावत मशहूर है कि एक-न-एक दिन बादशाह भी मरेगा। पर उसका दूसरा रास्ता है। यदि किसी तरह की पूछ-ताछ हो तो हमलोगों को स्पष्ट कह देना चाहिए कि उन्होंने किराए पर कमरा लिया। रातभर रहीं और सबेरे अपना रास्ता लिया। इसमें कोई हर्ज नहीं है क्योंकि कोई भी मुसाफिर किसी के भी दरवाजे पर रात काट सकता है। यह आपत्तिजनक या अपराध नहीं है।'

टटियाना—तुम इस तरह भयभीत होना क्यों सीख रहे हो?

पीटर—मनुष्य को सब बातें जाननी चाहिए। उसे डरना भी चाहिए, वीरता भी दिखानी चाहिए। तुम्हें याद भी होगा कि उस पुलिस ने केवल अखबार रखने के लिये वगानोव को किस प्रकार कोड़ों से मारा था। अब क्या कभी भी वह किताब छू सकता है? (माँ से) आप विश्वास रखें। मैं हर काम में चुस्त और चालाक हूँ। आप जितना चाहें और जिस प्रकार चाहें मैं इन पुस्तकों और परचों को लोगों में बाँट सकता हूँ। कठिनाई इतनी ही है कि एक तो लोग यहाँ पढ़े-लिखे कम हैं और दूसरे डरा दिए गए हैं। लेकिन जहाँ मनुष्य चक्की में पीस गया कि उसकी

आँखें खुलीं। वह इसका कारण जानना चाहता है और इन पुस्तकों में इस उत्पीड़न का कारण साफ-साफ दिया है। ये पुस्तकें उन्हें बतलाती हैं कि आपस में मेल करो, संगठित हो, तुम्हारे लिए दूसरा रास्ता नहीं है। अनेक उदाहरण मिलेंगे जहाँ पढ़े-लिखे लोगों से मूर्ख अधिक समझते हैं। मैं यहाँ चारों ओर घूमता-फिरता रहता हूँ। मुझे यहाँ का अनुभव भी खूब है। यहाँ रहना कठिन नहीं है पर खूब सावधानी, बुद्धिमानी और चातुरी की आवश्यकता है। अधिकारी-वर्ग भी हरवक्त रुख देखा करते हैं। किसानों की ओर से उन्हें सदा भय बना रहता है। वे देखते हैं कि किसान हँसता कम है और अधिकारियों की ओर लोलुप दृष्टि से नहीं देखता है बल्कि उनसे सदा पिंड छुड़ाने के यत्न में रहता है। अभी थोड़ी दिन की बात है। पास के ही गाँव में वे मालगुजारी तहसीलने आए। किसान अकड़ गए और उत्तेजित हो उठे। पुलिस-कमिश्नर ने कहा—'पाजी कुत्तो! जार के प्रति इस अवज्ञा का क्या मतलब है?' एक ठिंगने किसान ने कहा—'जहन्नुम में जाओ तुम और तुम्हारे जार। हमें उस जार से क्या प्रयोजन जो प्रजा के तन पर वस्त्र तक नहीं रहने देता!' उन्होंने उस किसान को जेल में ठूँस दिया। पर उसकी बात लोग आज तक दोहराया करते हैं और उस गाँव के छोटे-छोटे बच्चे तक उसे याद रखते हैं। उसके शब्द अमर हैं और उसकी याद दिलाते हैं। वर्तमान युग में तो बातों का महत्त्व पहले से कहीं अधिक है। क्योंकि आज-कल लोग अपने पेट

भरने में ही इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें दूसरा कुछ सूझता नहीं।

पीटर ने भोजन नहीं किया वह बराबर बातें करता रहा उसकी शैतान आँखों में उल्लास भरा था। ग्राम्यजीवन के संबंध में उसने अनेक बातें माँ से कहीं।

स्टीपन जब कभी टोंक देता तो वह कौर उठाता पर फिर उसी तरह बातों का सिलसिला छेड़ देता। भोजन के बाद वह उठ खड़ा हुआ और बोला—'अब मुझे घर जाना चाहिए।'

उसने माँ को प्रणाम किया और फिर बोला—'संभव है कि फिर कभी आपके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त न हो। इतना तो निश्चय है कि आज आपसे मिलकर और आपकी बातें सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपके बेग में परचे और पुस्तकों के अतिरिक्त और भी कुछ है?'

माँ—एक दुशाला।

पीटर—दुशाला! (स्टीपन से) याद रखना भाई (माँ से) यह आपका बेग तुरत ला देंगे। अच्छा प्रणाम। भगवान आपका भला करें। (स्टीपन से) चलो चलें।

उसके चले जाने पर माँ ने कहा—बड़ा ही जिंदा दिल है।

टटियाना ने कनखियों से माँ की ओर देखा और बोली—'गंभीर प्रकृति का नहीं है। दिन भर इसी तरह बकवाद किया करता है।'

माँ—तुम्हारे पति?

टटियाना—'अच्छे किसान हैं। शराब नहीं पीते। हमलोग बड़ी

शांति से रहते हैं। सिर्फ कुछ डरपोक हैं।' अँगड़ाई लेकर उसने फिर कहना शुरू किया—'आजकल किस बात की नितांत आवश्यकता है? लोगों में उत्तेजना चाहिए, जोश चाहिए। उठ खड़े होने की शक्ति चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में यह विचार उठता है पर किसी को प्रगट होने का साहस नहीं होता। आवश्यकता इसी बात की है। किसी-न-किसी को तो आगे आना ही होगा।' वह बेंच पर बैठ गई और पूछने लगी—'क्या जवान औरतें भी इस आंदोलन में भाग लेती हैं? क्या वे भी मजूरों के पास जाती हैं और इस तरह की चर्चा करती हैं? क्या उन्हें भय नहीं लगता?'

वह चुपचाप माँ का उत्तर सुनने लगी और रह-रहकर ठंढी साँस लेने लगी। फिर पलकें गिराकर और हाथ मलकर उसने कहा—'किसी किताब में मैंने 'निरर्थक जीवन' शब्द पढ़ा था। मैं उस शब्द का अभिप्राय भलीभाँति समझ गई। मुझे उस जीवन का अनुभव है। वहाँ विचार है पर सामंजस्य नहीं है। बिना गड़ेरिया के भेड़ों की भाँति वे भटका करते हैं। उन्हें संगठित करनेवाला कोई नहीं है। उन्हें कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान नहीं है। इसी को 'निरर्थक जीवन' कहते हैं। मैं उस तरह का जीवन एक क्षण भी बरदाश्त नहीं कर सकती। मैं तो तुरत निकल भागूँगी। उस जीवन पर विचार करते ही हृदय व्यथित हो उठता है।

माँ ने देखा कि उसका चेहरा विषादमय है। उसकी आँखें सूख गई हैं। उसकी आवाज भर्राई हुई है। वह उसे धैर्य देकर शांत

करना चाहती थी। बोली–'आपने समझा कि क्या करना चाहिए ?'

टटियाना ने बाधा देकर कहा—'किसी व्यक्ति को........ विस्तरा तैयार है। आप सो रहें।'

वह चूल्हे के पास गई और चुपचाप खड़ी हो गई। माँ उसी प्रकार सो गई। उसने कपड़ा तक नहीं बदला। उसके अंग शिथिल हो गए थे। मारे थकान के वह धीरे-धीरे कराहने लगी। टटियाना टेबुल के पास गई। चिराग बुझा दिया और धीरे से बोली—'आप प्रार्थना नहीं करती हैं। मेरी भी धारणा है कि ईश्वर नहीं है। ये सब चमत्कारी बातें कुछ नहीं हैं। सिर्फ हमलोगों को डराने और धमकाने के लिये, हमलोगों को उल्लू बनाने के लिये धनिकों की चालें हैं।'

माँ ने करवट बदला और धीरे-धीरे कहने लगी—'ईश्वर के संबंध में मैं कुछ नहीं कह सकती पर महात्मा ईसामसीह में मेरा पूरा विश्वास है। उसकी आज्ञाओं में मुझे पूरा विश्वास है। उसने कहा है—'अपने पड़ोसी को अपने ही समान जानो।' मुझे उसके इन शब्दों पर पक्का विश्वास है। मैं पूछती हूँ कि यदि ईश्वर का अस्तित्व सही है तो वह हमलोगों पर दया क्यों नहीं करता। अपनी गुणशाली शक्ति को हमारे ऊपर से क्यों हटा लिया ? उसने जन-समाज को इस तरह दो विपरीत भागों में क्यों बाँटने दिया ? यदि वह सचमुच दयालु है तो इस तरह के अत्याचार वह क्यों होने देता है ? उसके सामने एक आदमी दूसरे को क्यों सताता है ?'

टटियाना चुपचाप खड़ी थी। उस अँधेरे में भी माँ ने दीवाल के सहारे खड़ी उस निश्चल मूर्ति को देखा। वेदना से उसने आँखें बंद कर लीं। उस निस्तब्धता को बेधते हुए टटियाना ने कहा—'मैं अपने उन अबोध बच्चों की मृत्यु के लिये किसी को क्षमा नहीं कर सकती। चाहे वह मनुष्य हो अथवा ईश्वर।'

माँ ने उसकी वेदना को पहचाना। वह अपने बिस्तरे से उठी और टटियाना को सांत्वना देते हुए बोली—'अभी तुम युवती हो। तुम्हें बाल-बच्चे होंगे।'

टटियाना थोड़ी देर चुप रही। फिर बोली—'असंभव है। डाक्टर ने मेरी परीक्षा की थी। उसने मुझे प्रसव के सर्वथा अयोग्य बतलाया।'

इसके बाद दोनों चुप हो गईं। पानी बरस रहा था। बड़ी-बड़ी बूँदें भूमि पर गिर रही थीं। इसी समय सड़क पर किसी के पैर की ध्वनि सुनाई दी। वह ध्वनि धीरे-धीरे और स्पष्ट सुनाई देने लगी। माँ की नींद खुल गई। दरवाजा खुला और किसी ने धीरे से पुकारकर पूछा—'टटियाना! तुम सो गई हो क्या?'

टटियाना—नहीं।

'और वह'?

'मालूम होता है कि वह सो गई हैं।'

इसके बाद प्रकाश हुआ और फिर अँधेरे में गायब हो गया।

किसान माँ के बिस्तरे के पास गया। उसे अच्छी तरह ओढ़ा दिया। इस सादगी से माँ का हृदय अभिभूत हो गया।

उसने फिर आँखें बंद कर लीं। स्टीपन ने कपड़े उतारे और चारपाई पर जाकर लेट रहा। चारों ओर सन्नाटा छा गया।

बारहवाँ परिच्छेद

माँ विस्तरे पर अर्धनिद्रित अवस्था में निश्चल पड़ी थी। उस अँधेरी रात में खून से लथपथ रिबिन की मूर्त्ति उसकी आँखों के सामने आ-आकर खड़ी हो जाती थी। उसके कान में किसी दो व्यक्ति के फुसफुसाने के शब्द पड़े। किसी ने कहा—'आप प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि कैसे-कैसे लोग इस आंदोलन में शामिल हो रहे हैं। ऐसे-ऐसे बूढ़े लोग भी इसमें भाग ले रहे हैं जिनका सारा जीवन दुख और विषाद में बीता है और अब जिनके विश्राम लेने का समय आ गया है। प्यारे स्टीपन! आप तो अभी नवजवान हैं।'

स्टीपन ने उत्तर में कहा—'बिना समझे-बूझे ऐसे कामों में हाथ डालना उचित नहीं। कुछ दिन और प्रतीक्षा करो।'

टटियाना—आप सदा यही कहकर टालमटोल कर देते हैं।

स्टीपन—हमलोगों को इस प्रकार काम करना चाहिए। पहले हमलोग उन किसानों को चुनें जो पढ़ना-लिखना जानते हैं। उन्हें एकांत में ले जाकर पुलिस की ज्यादती और अत्याचार का वर्णन सुनावें। इस तरह से हमलोगों का एक दल यहाँ कायम हो जायगा। तब हमलोग इनका पता लगा लेंगे और उनलोगों को

खोज लेंगे जिनकी चर्चा इन्होंने की है। मैं कंधे पर कुल्हाड़ा रख-कर शहर की ओर रवाना होऊँगा। यहाँ लोगों से कह दूँगा कि मैं शहर में लकड़ी चीरने और मजूरी करने जा रहा हूँ। इस मामले में बड़ी सावधानी रखनी होगी। इन्होंने ठीक ही कहा है कि मनुष्य को अपने जीवन का मूल्य आप ही निर्धारित करना चाहिए। जिसने इस काम में हाथ दिया उसे अपने जीवन को बहुत ही मूल्यवान समझना चाहिए। उसी किसान को देखो। पुलिस-कमिश्नर तो कुछ नहीं है यदि उसे ईश्वर के सामने भी खड़ा कर दो तो वह नहीं डिग सकता। वह अपने विश्वास पर दृढ़ और अटल है और एक किसान निकिता है। (निकिता का नाम स्मरण आते ही उसे कड़ी चोट लगी) दोनों में कितना अंतर है। पर यदि लोग एक होकर कोई काम करने निकलेंगे तो सभी लोग उनके अनुयायी हो जायँगे।

टटियाना—एकता और दोस्ती! लोगों की आँखों के सामने एक किसान पीटा जाता है और लोग चुपचाप खड़े होकर तमाशा देखते हैं।

स्टीपन—यही गनीमत समझो कि लोगों ने स्वयं उसे नहीं पीटा! कभी-कभी अधिकारी-वर्ग हमलोगों को विवश कर देते हैं और हमलोगों को मारना ही पड़ता है। संभव है इसके लिये तुम्हें हृदय में पीड़ा होती हो पर तुम्हें विवश होकर अप्रिय काम करना ही पड़ता है। उन बर्बर अधिकारियों की बात टालने का साहस कौन कर सकता है? क्योंकि उसे स्वतः पीटे

जाने का भय रहता है। वे जो चाहते हैं करवा लेते हैं। हमें पशु बनाकर रखते हैं। हम मनुष्य बनकर नहीं रह सकते। यदि किसी ने उनका सामना करने का साहस किया तो उसका अंत ही कर देते हैं। आवश्यकता है कि लोगों को साहसी बनाया जाय और विद्रोह खड़ा किया जाय।

स्टीपन देर तक बोलता रहा। वह इतना धीरे से बोलता था कि कभी-कभी माँ को कुछ भी सुनाई नहीं देता था। जब वह उत्तेजित होकर जोर से बोलता तो टटियाना उसे रोककर कहती--'इस तरह चिल्लाने से वे जग पड़ेंगी।'

माँ गाढ़ी नींद में सो गईं।

प्रातःकाल टटियाना ने माँ को जगाया। ऊषा की प्रथम किरणें खिड़कियों से झोपड़े में झाँक रही थीं और गिरजे के घंटे का तेज रव सुनाई दे रहा था।

टटियाना--मैंने चाय तैयार कर ली है। चाय पीकर बाहर निकलिए नहीं तो सर्दी लग जाने का भय है।

स्टीपन अपनी दाढ़ी को सँवारता हुआ माँ के पास आया। पूछा--'शहर में आपसे कहाँ मुलाकात होगी?' कल की अपेक्षा आज उसकी आकृति कहीं अधिक सौम्य थी। चाय पीते समय उसने कहा--'कौन कह सकता है कि कब क्या होगा?'

टटियाना—कैसे?

स्टीपन—इसी मिलन को देखो!

माँ--यह तो इसी तरह हुआ ही करता है।

माँ को बिदा करते समय उन दोनों ने पूरी उदासीनता का परिचय दिया। बहुत ही कम बातें कहीं पर उन्होंने उसके आतिथ्य में पूरी सहृदयता दिखलाई थी।

गाड़ी पर बैठने के बाद माँ इस घटना पर विचार करने लगी। उसने अपने मन में कहा—'यह किसान सावधानी से काम करेगा। यह कभी दम नहीं लेगा और उसकी स्त्री सदा उसे उत्साहित करती रहेगी। जब तक उसके हृदय में अपने उन मृत पुत्रों के लिये बदले की आग जलती रहेगी वह कभी भी चैन न लेगी।'

उसकी आँखों के सामने फिर रिबिन की मूर्ति खड़ी हो गई। खून से लथपथ उसका चेहरा, अंगार की भाँति जलती हुई उसकी आँखें और उसके साहस-पूर्ण शब्द उसी तरह माँ की स्मृति में जागृत हो उठे। अपनी बेकसी की दुखद स्मृति से उसका मन व्यथित हो गया। रास्ते भर वह उसी घटना पर विचार करती रही। रिबिन का दाढ़ी से भरा चेहरा, उसके फटे कपड़े, उसकी कसी मुश्कें, उसके बिखरे बाल और उसका अटल विश्वास उसकी आँखों के सामने नाच रहे थे। इसके साथ ही उसके हृदय में उन अगणित गाँवों की भी स्मृति जग उठी जो धूल में मिला दिए गए थे। उनलोगों की याद आ गई जो दीनता, हीनता और विषाद के साथ सत्य के प्रकाश की प्रतीक्षा कर रहे थे और उनलोगों की याद आ गई जो बिना किसी आशा और स्वार्थ के अपने जीवन भर अनवरत काम करते रहते हैं।

मानव जीवन उसे बिना जोता-कोड़ा पहाड़ी खेत के समान

प्रतीत होने लगा जो निर्मल और मौन रहकर किसान के श्रम की प्रतीक्षा करता है और स्वतंत्र तथा ईमानदार काम करनेवाले को सुंदर फसल का पुरस्कार देता है। वह कहता है—'विवेक और सत्य का बीज हममें बोइए, हम सौगुना फल देंगे।'

दूर से शहर के मकानों के बुर्ज दिखाई देने लगे। वह प्रफुल्लित हो उठी। उसके हृदय का सारा विषाद और वेदना जाती रही। अब उसे उनलोगों का ध्यान आने लगा जो पूर्ण आशा और विश्वास के साथ अनवरत परिश्रम कर रहे थे और पृथ्वी के कोने-कोने में सत्य-ज्ञान का प्रकाश फैला रहे थे। उनके हृदय में दृढ़ विचार उठा कि वह अपनी सारी शक्ति इनलोगों की सहायता में लगा दे। उनका विचार आते ही उसके हृदय में मातृ-स्नेह का स्रोत उमड़ आया।

द्वार पर ही निकोले इवानोविच से भेंट हुई। उसके बाल बिखरे हुए थे। वह हाथ में एक पुस्तक लिए हुए था। उसने प्रसन्न होकर कहा—'आप जल्दी लौट आईं। अच्छा हुआ मुझे बड़ी प्रसन्नता है।'

उसकी आँखों में उल्लास था। उसने माँ के कपड़े सम्हाले और स्नेह के साथ बोला—'कल हमारे घर की तलाशी ली गई थी। समझ में नहीं आता कि क्या कारण है! आप पर तो कोई विपत्ति नहीं आई थी? पर आप तो गिरफ्तार नहीं हुईं। यदि आप गिरफ्तार हुई होतीं तो मैं कभी भी नहीं बच सकता था। उनलोगों ने मुझे नौकरी से अलग कर दिया। इसकी मुझे लेश-

मात्र भी चिंता नहीं है। मैं उस नौकरी से थक गया था। मुझे इस काम में शर्म आती थी। आप-से-आप नौकरी छोड़ने में कठिनाई मालूम होती थी। मैं अपने साथियों का अतिशय कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे इस भार से मुक्त किया। मैं खुश हूँ।'

माँ ने चारों ओर विस्मय के साथ देखा। घर की दशा देखकर वह चकित थी। दीवाल पर के चित्र फर्श पर बिखरे हुए थे। कागज की दीवाल फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दी गई थी। फर्श का तख्ता उलट दिया गया था। खिड़की तोड़ दी गई थी। चूल्हे के पास राख की ढेर जमा कर दी गई थी। यह सब देखने से यही मालूम होता था कि किसी दैत्य ने दीवाल पर जोर से धक्का मारा है और सब कुछ उलट-पलट दिया है।

निकोले इवानोविच—उनलोगों ने यह साबित किया है कि उन्हें बेकार तनखाह नहीं दी जाती।

टेबुल पर चारों ओर जूठ और जूठे बरतन पड़े थे। माँ ने यह सब देखकर मुस्कुरा दिया। माँ की ओर देखकर निकोले इवानोविच ने भी हँस दिया। बोला—'मैंने इन सभों को फिर ठिकाने-ठिकाने कर देना बेकार समझा। क्योंकि मुझे आशा है कि दो ही चार दिन में फिर तलाशी होगी। इसलिए इस काम में श्रम व्यय करना व्यर्थ है। अस्तु, अपनी यात्रा का हाल कहिए।'

इस प्रश्न से माँ चौंक उठी। रिबिन की मूर्ति उसके सामने खड़ी हो गई। उस संवाद को अबतक न कह डालने में उसने अपने को अपराधी समझा। वह निकोले की ओर झुक गई और

शांत होकर कहने लगी। उसे भय था कि कहीं उत्तेजना के कारण वह कोई बात छोड़ न दे। बोली—'उनलोगों ने उसे (रिबिन को) गिरफ़ार कर लिया !'

निकोले काँप उठा। पूछा—'किस तरह ?'

माँ ने हाथ के इशारे से उसे कुछ पूछने से मना किया और इस प्रकार वर्णन करना आरंभ किया मानों वह न्यायाधीश के समक्ष किसी मनुष्य पर किए गए अत्याचारों का वर्णन कर रही हो। निकोले का चेहरा पीला पड़ गया। वह कुर्सी के सहारे लेट गया और अपना ओठ चबाने लगा। उसने चश्मा उतारकर टेबुल पर रख दिया और मुँह पर हाथ फेरने लगा मानों कोई चीज़ पोछ रहा हो। माँ ने उसकी ऐसी गंभीर आकृति कभी भी नहीं देखी थी।

माँ ने अपना बयान समाप्त किया। निकोले अपनी जगह से उठा। जेब में हाथ डाला और कमरे में चुपचाप टहलने लगा। क्षण भर के बाद उसने अपने को सम्हाला और माँ की ओर धैर्य के साथ देखा। माँ की आँखों में आँसू भर आए थे।

निकोले—हमलोगों को समय नष्ट नहीं करना चाहिए। उस काम को फौरन हाथ में लेना चाहिए। रिबिन असाधारण व्यक्ति दिखाई देता है। उसने अपूर्व साहस और वीरता दिखलाई। उसे जेल में बहुत कष्ट होगा। उसकी प्रकृति के लोग वहाँ सुखी नहीं रह सकते।'

वह माँ के सामने खड़ा हो गया और फिर बोला—'ये सब पुलिस के कर्मचारी कुछ नहीं हैं। येलोग चतुर खेलाड़ी के जादू

के डंडे के समान हैं। जिनसे वह जानवरों को पालतू बनाता है। पर यदि वह जानवर हिंसक बनने जा रहा है तो अच्छा है कि उसका अंत कर दिया जाय।'

वह हर तरह से अपनी उत्तेजना को सम्हालने का यत्न कर रहा था पर माँ को उसका आभास मिल गया। निकोले फिर टहलने लगा और क्रुद्ध होकर बोला—'कैसा अंधेर है! अपने जुल्म और अन्याय का सिक्का जमाने के लिये ये सब चांडाल लोगों पर इस तरह का अत्याचार करते हैं। पशु-बल की इस प्रकार बढ़ती हो रही है। जुल्म ही इस समय कानून हो रहा है। समस्त राष्ट्र को नष्ट-भ्रष्ट कर पंगु बना दिया गया है। एस हिस्सा हिंसक और मारनेवाला बन गया है। मारते-मारते उसका हौसला इतना बढ़ गया कि वह अब पूर्ण जालिम बन गया है। दूसरे हृदय में बदले की भयानक ज्वाला उठ रही है। तीसरे अत्याचार और जुल्म से जर्जर होकर चेतना-विहीन हो गए हैं। इस प्रकार समस्त देश पंगु बन गया है।'

इतना कहकर वह चुप हो गया। दोनों मुट्ठियों को बाँधकर वह दाँत पीसने लगा।

माँ—इस पशु-राज्य में सभी पशु हुए चले जा रहे हैं।

उसने सूखी हँसी हँस दी। माँ के पास गया और झुककर कान में पूछा—'आपका थैला कहाँ है?'

माँ—रसोई-घर में।

निकोले—दरवाजे पर गुप्तचर बैठा है। उसकी आँख बचाकर

हमलोग इतना कागज़ बाहर नहीं ले जा सकेंगे। घर में कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ इतना सामान छिपाया जा सके। आज रात को भी तलाशी होने की संभावना है। मैं नहीं चाहता कि तुम गिरफ़ार हो जाओ। इसलिए हानि का विचार न कर हमलोगों को उन कागजों को जला देना चाहिए।

माँ—कौन कागज ?

निकोले—आपके बेग में जो कुछ हो।

माँ निकोले का अभिप्राय समझ गई। उस शोक के समय भी अपनी सफलता के स्मरण से वह मुस्कुरा दी और बोली—'वह तो एकदम खाली है।'

उसने अभिमान के साथ बतलाया कि रिबिन की गिरफ़ारी के बाद उसने किस तरह उन किसानों में उन परचों और पुस्तकों को बाँट दिया। निकोले पहले तो घबराया, पीछे विस्मय के साथ बोल उठा—'खूब! आपने कमाल किया! इस आंदोलन में तथा जनसाधारण में आपका जो विश्वास बढ़ता जा रहा है उसे देखकर मेरा हृदय गद्गद हो गया है। आपकी आत्मा इतनी विशाल है! जितना आदर आज मेरे हृदय में आपके लिये है उतना मेरी माँ के लिये भी नहीं था।'

माँ का हृदय भर आया। उसने निकोले को हृदय से लगा लिया और रो पड़ी।

इस नए विचार से वह ज़रा घबरा गया, बोला—'आप मेरी

बातों का विश्वास भले ही न करें पर मैं सच कहता हूँ आप असाधारण औरत हैं।'

मारे खुशी के माँ का गला रुँध गया। वह बड़ी कठिनाई से बोली—'मैं तुम्हें हृदय से चाहती हूँ। मेरा तुम पर अपार अनुराग है।'

निकोले—आपमें असीम शक्ति है, अपार माधुर्य है। लोगों का हृदय आप-से-आप इधर खिंच जाता है। जितना उदार आपका हृदय है उतना ही उदार आपका पर्यवेक्षण है।

माँ—मैं तुमलोगों के जीवन के महत्व को अच्छी तरह समझती हूँ। उसे भलीभाँति पहचानती हूँ।

निकोले—सभी आपको चाहते हैं। अनुराग भी ईश्वर की देन है।

माँ ने निकोले के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—'तुमलोगों को जीवन दे रहे हो। तुमलोगों के सामने विशाल कार्यक्षेत्र फैला हुआ है। तुमलोगों को असीम शांति और धैर्य की आवश्यकता है। तुमलोगों की शक्ति का ह्रास नहीं होना चाहिए। तुमलोगों के जीवन के लिये यही सबसे आवश्यक है। वहाँ का थोड़ा किस्सा और बाकी रह गया है। उसे भी सुन लो। उन किसनों के बीच एक औरत भी थी। वह किसान स्टीपन की पत्नी थी।'

निकोले माँ के पास ही बैठा था लेकिन उसका प्रसन्न मुख दूसरी ओर झुका था। उसने मुँह फेरा और उत्कंठा के साथ माँ की बातें सुनने लगा। बोला—'आश्चर्य है! आपके पकड़े जाने

की पूरी संभावना थी। इससे तो स्पष्ट है कि किसानों में जागृति फैल रही है। यह होना ही है। देहातों में काम करने के लिये हम-लोगों को खास आदमी नियत करना चाहिए। पर हमलोगों के पास आदमी ही कम हैं। इस वक्त हजारों कार्य-कर्ताओं की आवश्यकता है।'

माँ—यदि इस वक्त पावेल और नखोद्का स्वतंत्र होते······।

निकोले ने माँ की ओर देखकर सिर नीचा कर लिया। बोला—'आपको मेरी बातों से पीड़ा होगी। पर मैं सच कहने के लिये विवश हूँ। मैं पावेल को खूब पहचानता हूँ। वे भागने के लिये कभी भी राजी नहीं होंगे। वे अभियोग चलाए जाने के पक्ष में हैं। वे न्याय का नाटक देख लेना चाहते हैं और लोगों को यह भी दिखला देना चाहते हैं कि एक क्रांतिकारी कितना दृढ़ हो सकता है। वह साइबेरिया से निकल भागेंगे।'

माँ ने ठंढी साँस ली और धीरे से बोली—'वह अच्छी तरह समझता है कि इस आंदोलन को किस बात से लाभ होगा।'

माँ की बात सुनकर निकोले उछल पड़ा और प्रसन्न होकर बोला—'यह क्षण मेरे जीवन का सबसे उत्तम प्रतीत होता है। मुझे ऐसा सुख कभी भी नहीं मिला था।'

इतना कहकर उसने माँ की ओर हाथ बढ़ाया। दूसरे ही क्षण दोनों एक दूसरे के बाहुपाश में बँधे दिखाई देने लगे।

क्षण भर के बाद निकोले ने कहा—'यदि आपके वे किसान दोस्त दौड़े-दौड़े यहाँ आवें तब? हमलोगों को रिबिन की घटना

लेकर देहातियों के लिये एक परचा लिख डालना चाहिए। जब उसने इतनी वीरता दिखाई है तो इस परचे की बातों से उसे कष्ट नहीं होगा और इससे इस आंदोलन को बहुत लाभ पहुँचेगा। परचे तो मैं आज ही लिख डालूँगा। लुडमिला तुरत छाप भी देगी। पर प्रश्न यह उठता है कि देहात में उन्हें ले कौन जायगा ?'

माँ—मैं !

निकोले—नहीं, आपको नहीं जाने दूँगा। क्या निकोले वेसोचिको यह काम नहीं कर सकता ?

माँ क्या मैं उससे पूछूँ ?

निकोले—हाँ, पूछकर देखिए।

माँ—तब मैं क्या करूँगी ?

निकोले - आप इसकी चिंता न करें।

निकोले कागज-कलम लेकर लिखने बैठ गया। माँ कमरे में अस्त-व्यस्त पड़ी चीजों को सम्हालने लगी। वह रह-रहकर निकोले की ओर देखती जाती थी। निकोले का हाथ काँप रहा था भौंहें तनी हुई थीं चेहरा तमतमाया हुआ था और आँखें चढ़ी हुई थीं। लिखते-लिखते वह अपना सिर पीछे की ओर झुका लेता था और आँखें बंद कर लेता था। इससे माँ का हृदय भर आया। जीभ दबाकर बोली—'खूब फटकारकर लिखो। उन चांडालों पर जरा भी दया मत दिखाओ।'

निकोले—(माँ के हाथ में कागज का टुकड़ा देकर) मैं लिख चुका। इसे आप अपने कपड़े में कहीं छिपा लें। पर इतना निश्चय

है कि इंस्पेक्टर आपके शरीर की तलाशी लिए बिना न रहेगा।

माँ—वे कुत्ते भला कब माननेवाले हैं ? उनका सर्वनाश हो।

शाम को डाक्टर इवान डानिलोविच आए। कहने लगे—'अधिकारियों को एकाएक क्या हो गया ? कल रात को सात जगह तलाशियाँ हुई थीं। कहाँ गया वह रोगी ?

माँ—वह कल ही अस्पताल से चला गया। आज शनीचर है। आज वह मजूरों को परचे सुनाता होगा। वह उन्हें परचे सुनाना नहीं छोड़ सकता था।'

निकोले—यह तो निरी मूर्खता है। सिर में चोट है। ऐसी हालत में पढ़ना हानिकर है।

डाक्टर—मैंने बहुत समझाया पर उसने एक नहीं माना।

माँ—वह साथियों पर अपनी धाक जमाना चाहता था। देखिए न, मैंने अपना खून बहा दिया है।

डाक्टर ने माँ की ओर देखा ! मुँह बनाकर बोला—'आप बड़ी खूँखार हैं !'

निकोले—डाक्टर, तुम्हें यहाँ रहना उचित नहीं। यहाँ कोई काम भी नहीं है। मेहमान लोग आते ही होंगे। आप यहाँ से चले जायँ। (माँ से) वह कागज आप इन्हें दे दें।

डाक्टर—दूसरा परचा भी ?

निकोले—तुम चुपचाप इसे ले जाकर छापनेवाले को दे दो।

डाक्टर—मैंने इसे ले लिया। इसे छापनेवाले के हवाले कर दूँगा। बस, इतना ही ?

निकोले—हाँ, इतना ही। दरवाजे पर गुप्तचर बैठा है।

डाक्टर—मैंने देखा है। मेरा दरवाजा भी अगोर रहा है। नमस्कार! हाँ, उस दिन के कब्रिस्तान के दंगे से तो बड़ा लाभ हो रहा है। शहर भर में उसी बात की चर्चा है। लोगों में उत्तेजना फैल रही है और लोग अपनी दशा पर विचार करने लग गए हैं। आपका वह लेख भी बड़ा सुंदर था और ठीक समय पर प्रकाशित भी हो गया था। मेरा सदा यही विचार रहा है कि बुरे काम में चुप रहने की अपेक्षा अच्छे काम के लिये लड़ मरना उत्तम है।

निकोले—अच्छी बात है पर आप कृपाकर यहाँ से चले जायँ।

डाक्टर—(माँ से) आप बड़ी अच्छी औरत हैं। आइए आपसे हाथ मिला लें। उस आदमी ने नासमझी से काम लिया। उसका पता क्या है?

निकोले ने पता बता दिया।

डाक्टर—कल मैं उसे देखने अवश्य जाऊँगा। बड़ा उत्साही आदमी है।

निकोले—हाँ।

डाक्टर—हमलोगों को उसे बचा लेना चाहिए। उसने बड़ा अच्छा दिमाग पाया है। ऐसे ही लोगों में तो त्याग का भाव भरना चाहिए ताकि हमलोगों के बाद वे इस काम को हाथ में ले लें। भगवान जाने कब क्या होगा?

निकोले—तुम बकवाद में फँस गए।

डाक्टर—मैं आज बड़ा ही प्रसन्न हूँ। यही कारण है। लो, मैं जाता हूँ। तुम्हारी गिरफ्तारी की संभावना है? अच्छा है। हवालात में जाकर तुम्हें कुछ आराम मिलेगा।

निकोले–इस शुभेच्छा! के लिये धन्यवाद पर मैं थका नहीं हूँ!

माँ उनकी बातें सुन रही थी। मजूरों के लिये उनकी चिंता और तत्परता देखकर माँ का हृदय पुलकित हो गया।

डाक्टर के चले जाने के बाद माँ और निकोले देरतक बातें करते रहे और तलाशी की प्रतीक्षा में बैठे थे। निकोले इवानो-विच ने माँ से अपने उन साथियों की चर्चा की जो अबतक निर्वासित हो चुके हैं तथा उनलोगों में-से कितने साइवेरिया में मौजूद हैं और कितने वहाँ से भागकर निकल आए हैं और नाम बदलकर काम कर रहे हैं। उनकी धीमी आवाज कमरे में गूँज उठती थी मानों स्वाधीनता के संग्राम में लिप्त उन वीरों के निस्पृह त्याग की कथा सुनकर मकान की दीवालें विस्मित होकर आश्चर्य प्रकट कर रही हैं।

माँ के हृदय में उनलोगों के लिये प्रेम का स्रोत उमड़ आया जिन्हें उसने देखा नहीं था पर जो पूर्ण उत्साह और अथक परि-श्रम के साथ एक होकर इस आंदोलन की सफलता के लिये अन-वरत यत्न कर रहे हैं। उनकी यह समवाय शक्ति अनवरत गति से शनैः शनैः पृथ्वी पर फैलकर, अंधकार को दूर कर रही है और सत्य जीवन का प्रकाश फैला रही है, जिसमें मानव-समाज सजीव होकर उठ रहा है और सबको समान अधिकार की तथा

अधिकारियों की लिप्सा, दगाबाजी, बेईमानी और कुचालों से रक्षा की आशा दिला रहा है। इस विचार से माँ का हृदय उसी प्रकार आशापूर्ण हो गया जिस तरह उस समय हुआ करता था जब वह प्रतिमा के समक्ष प्रार्थना के लिये हाथ जोड़कर खड़ी होती थी। प्रार्थना कर चुकने के बाद उसके हृदय का भार हलका जान पड़ता था। वे दिन उसे भूल गए। पर उसके हृदय में जो भाव उत्पन्न हुए थे वे दिन-दिन बढ़ते गए और दृढ़ होते गए। आज वे अधिक जागृत दीख पड़ते थे और अधिक प्रकाशित थे।

निकोले ने एकाएक कहा—'अभी तक तो तलाशी की कोई खबर नहीं है?'

माँ ने उसकी ओर देखा और चिढ़कर बोली—'उनका सर्वनाश हो।'

निकोले—यह तो उचित है। पर सोने का वक्त हो गया। आप थक गई होंगी। आपमें विचित्र शक्ति है। इतने जोश-खरोश और उत्तेजना में आपको रहना पड़ा पर आप जरा भी विचलित नहीं हुई। जरा भी घबराहट या परेशानी चेहरे पर नहीं दिखाई देती। हाँ, आपके केश तेजी से सफेद हो रहे हैं। जाकर सो रहिए।

दोनों ने हाथ मिलाया और बिदा हुए।

तेरहवाँ परिच्छेद

रात बीत गई थी पर ऊषा का आगमन अभी तक नहीं हुआ था। माँ बिस्तरे पर पड़ी सो रही थी। इतने में किसी ने द्वार पर खटखटाया। माँ उठ पड़ी। कपड़े सम्हाले और जाकर पूछा—'कौन है ?'

किसी अपरिचित व्यक्ति ने कहा—'मैं हूँ।'

माँ—आप कौन हैं ?

वही व्यक्ति—(धीरे से) आप मेहरबानीकर दरवाजा खोल दें।

माँ ने आहिस्ते से दरवाजा खोल दिया। इगनाटी द्वार पर खड़ा मुस्कुरा रहा था। बोला—'मुझे भटकना नहीं पड़ा, मैं ठीक-ठीक पहुँच गया।'

वह घुटने तक कीचड़ से सना था। उसका चेहरा स्याह हो गया था और आँखें धँस गई थीं। मकान के भीतर जाकर उसने दरवाजा बंद कर दिया। बोला—'हमलोग विपत्ति में फँस गए हैं।'

माँ—मुझे सब कुछ मालूम है।

माँ के उत्तर से उसे विस्मय हुआ। पूछा–'किस तरह ? सरसरी तौर से सब कुछ कहकर माँ ने पूछा—'क्या और लोग भी गिरफ्तार हो गए ?'

इगनाटी—सबलोग उपस्थित नहीं थे। प्रचार करने के लिये

देहातों में गए थे। रिबिन को मिलाकर पाँच गिरफ्तार हुए हैं पर मैं बच गया। वेलोग मेरी भी तलाश में हैं, पर किया करें तलाश! अब मैं वहाँ जाऊँगा ही नहीं। उस तरफ सात आदमी काम करनेवाले हैं। छः पुरुष और एक स्त्री। वे सब पक्के और दृढ़ हैं। उनसे किसी तरह का खटका नहीं है।

माँ—तुम्हें इस स्थान का पता कैसे लगा?

इगनाटी बेंच पर आराम से बैठ गया और चारों ओर देखकर कहने लगा—'उनलोगों ने अलकतरे के गोदाम पर रात को हमला किया। उनके आने के कुछ ही क्षण पूर्व जंगलियों ने हमलोगों को संवाद दिया कि पुलिस हमला करने आ रही है!'

इतना कहकर वह हँसने लगा। कोट से अपना मुँह पोछा और फिर कहना शुरू किया—'पर रिबिन चाचा अधीर होनेवाले या घबरानेवाले जीव नहीं हैं। उन्होंने मुझसे कहा—इगनाटी, तुम यहाँ से निकल भागो। सीधे शहर जाओ। वह बूढ़ी माँ तुम्हें याद है। उन्हें खोजकर यह खत देना। इतना कहकर उन्होंने मुझे बाहर ढकेल दिया। मैं रेंगता हुआ आगे बढ़ा और झाड़ी में छिप रहा। बगल से ही वे जा रहे थे। मैंने उनलोगों के पैर की आवाज साफ सुनी। उनकी संख्या अगणित रही होगी क्योंकि गोदाम के चारों ओर से उनकी आवाज आ रही थी। मैं झाड़ी में ही छिपा रहा। उनलोगों के चले जाने के बाद मैं वहाँ से बाहर निकला और इधर का रास्ता लिया। एक दिन और दो रात मैं बराबर चलता रहा। मेरे पैर बेकाम हो गए हैं।'

उसकी आँखों में उल्लास भरा था। उसके लाल ओठ चंचल थे। देखने से साफ मालूम होता था कि उसे अपने ऊपर संतोष है।

माँ—तुम हाथ-पैर धोओ। मैं आग जलाकर फौरन चाय तैयार करती हूँ।

इगनाटी -- 'पहले आपको चिट्ठी दे दूँ।' इतना कहकर उसने अपने पैर को बड़ी कठिनाई से ऊपर उठाया और कराहते हुए उसे बेंच पर रख दिया और पैर का बंधन खोलने लगा।

इसी समय निकोले ने कमरे में प्रवेश किया। इगनाटी घबराकर उठने लगा। लेकिन लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

माँ ने उसे सम्हालते हुए कहा 'तुम चुपचाप बैठो।'

निकोले ने अपनी प्राकृतिक मुस्कुराहट के साथ पूछा—'कहो मित्र क्या हालचाल है ? आओ ! हम तुम्हारी मदद करें।'

इतना कहकर वह इगनाटा के पैर के पास बैठ गया और उसके पैर का बंधन खोलने लगा।

इगनाटी ने सकुचाकर अपना पैर पीछे खींच लिया और विस्मय के साथ माँ तथा निकोले की ओर देखने लगा।

माँ—इनके पैर में शराब की मालिश होनी चाहिए।

निकोले—अभी बंदोबस्त कर देता हूँ।

इगनाटी घबराया हुआ था। निकोले ने खत ले लिया। खोलकर देखा और माँ के हाथ में खत रखता हुआ बोला—'आपके नाम है।'

माँ—पढ़ो।

निकोले खत पढ़ने लगा। रिबिन ने लिखा था—माँ, इस घटना को भूल मत जाना। उस मेहरबान औरत से कह दीजिएगा कि हम देहातियों के लिये सदा कुछ-न-कुछ लिखती रहें। यही मेरी विनीत प्रार्थना है। प्रणाम।

आपका—
रिबिन

माँ ने दुख से कहा—'जालिमों ने उस बिचारे का गला दबा दिया और वह ··· ·····।'

निकोले ने हाथ मोड़ते हुए आदर के साथ कहा—'यही उचित है। इससे शिक्षा भी मिलती है और असर भी पड़ता है।'

इगनाटी उन दोनों की ओर देखकर अपने पैर की धूलि अपने हाथों से पोछने लगा। माँ डबडबाई आँखों से उसके पास गई और बर्तन में पानी भरकर उसका पैर धोने के लिये हाथ बढ़ाया। इगनाटी ने पैर अपनी ओर खींच लिया और शर्माकर बोला—'आप यह क्या कर रही हैं?'

माँ—अपना पैर इधर लाओ।

निकोले—मैं अभी शराब लाता हूँ।

इगनाटी ने अपना पैर और अधिक बटोर लिया और बोला—'यह उचित नहीं है।'

माँ ने धीरे से उसका दूसरा पैर खोल डाला। इगनाटी

विस्मय से आँखें फाड़कर माँ को देखने लगा। बोला—'मुझे बरदाश्त नहीं हो रहा है। गुदगुदी मालूम होती है।'

माँ—धीरे-धीरे बरदाश्त होने लगेगा।

इतना कहकर वह उसका पैर धोने लगी। इगनाटी जोर से साँस लेने लगा और अपनी गर्दन घुमाकर माँ की ओर देखने लगा।

माँ ने कहा—'उनलोगों ने रिबिन को बहुत पीटा है।'

इगनाटी ने भयभीत होकर पूछा—'क्या ?'

माँ—निकोस्त में ले जाकर पुलिसवालों ने उन्हें यहाँ तक पीटा कि उनके मुँह से खून बहने लगा।

उस दिन की घटना की याद आने से माँ का गला भर आया, वह चुप हो गई।

इगनाटी ने आँखें नीची करके कहा—'वे सब हद दरजे के पाजी होते हैं। सब कुछ कर सकते हैं। यही कारण है कि मैं उनसबों की परछाईं से काँपता हूँ। पर किसानों ने तो उन्हें नहीं पीटा ?'

माँ—एक किसान ने दो थप्पड़ मारा था। पुलिस-कमिश्नर ने उसे आज्ञा दी। पर अन्य किसानों ने उसका पक्ष लिया और उस किसान को रोका।

इगनाटी—अब धीरे-धीरे किसान भी समझने लग गए हैं कि हमलोगों का उद्देश्य क्या है और सरकार क्या चाहती है।

माँ—उनमें भी समझदार लोग हैं।

इगनाटी—समझदार आदमी कहाँ नहीं हैं ? आवश्यकता

के अनुसार हर जगह पाए जा सकते हैं। पर उनका पता पाना कठिन है। वेलोग परदे की आड़ में छिपे रहते और अपने लाभ को देखा करते हैं। उनमें संकल्प और दृढ़ता नहीं है कि सबको संगठित कर सकें।

निकोले शराब का बोतल लेकर आया, बोरसी में आग जलाया और फिर वापस चला गया। इगनाटी उसे विस्मय से देखता रहा। बोला—'कोई भला आदमी मालूम होता है!'

माँ—यहाँ कोई मालिक नहीं है। इस दल में सब समान हैं।

इगनाटी—मैं तो यह दशा देखकर परेशान हूँ।

माँ—क्या?

इगनाटी—एक तरफ तो जालिमों का जुल्म है और दूसरी ओर आपलोगों का सेवा-कार्य! क्या कोई बीच का रास्ता नहीं है?

इसी समय कमरे का दरवाजा खुला और द्वार पर खड़े होकर निकोले बोला—'बीच में वेलोग हैं जो हमलोगों पर जुल्म करनेवालों और रक्त चूसनेवालों की खुशामद करते हैं।'

इगनाटी ने उसकी ओर आदर से देखा और बोला—'आपका कहना सच है!'

माँ ने आह भरकर कहा—'रिबिन भी इसी तरह कहा करता था।'

निकोले—माँ, आप थक गई होंगी। लाइए मैं इनका पैर धो देता हूँ।

माँ—इतना काफी है। (इगनाटी से) अब अपना पैर अच्छी तरह धो लो।

इगनाटी उठ खड़ा हुआ। पैर को हिलाया डुलाया और धरती पर रखकर बोला—'मेरी थकान एकदम से दूर हो गई। मेरे पैर बिलकुल ताजे मालूम हो रहे हैं। मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूँ।'

जलपान के वक्त इगनाटी कहने लगा—'मेरे जिम्मे परचा और पुस्तकें बाँटने का काम था। मैं चलने में तेज हूँ। रिबिन चाचा ने मुझे यही काम सौंपा था। वे कहा करते थे कि यदि तुम पकड़े भी गए तो कोई परवाह नहीं क्योंकि तुम्हारे ऊपर कोई भार नहीं है, तुम अकेले हो।'

निकोले—इन परचों और पुस्तकों को लोग खूब पढ़ते हैं?

इगनाटी—जो लोग पढ़ना-लिखना जानते हैं सभी पढ़ते हैं। धनीलोग भी पढ़ते हैं। पर उन्हें हमलोगों से नहीं मिलता क्योंकि हमलोगों को उनसे सदा भय बना रहता है कि वे पकड़वा देंगे क्योंकि वेलोग भलीभाँति समझते हैं कि यह उनके लिये फाँसी है।

निकोले—फाँसी क्यों?

इगनाटी—(विस्मय के साथ) और क्या? किसानलोग समस्त भूमि पर कब्जा कर लेने के यत्न में लगे हैं। वेलोग समस्त भूमि को आपस में बाँट लेंगे। मालिक-मजूर का भेद

उठ जायगा। सभी अपनी-अपनी जमीन के मालिक होंगे। यदि यह बात नहीं है तो इतना संकट क्यों उठाया जाय ?'

इगनाटी नाराज-सा हो गया। वह शंकित नेत्रों से निकोले की ओर देखने लगा। निकोले हँस पड़ा।

माँ ने हँसकर कहा—'नाराज मत हो।'

निकोले ने गंभीर होकर कहा—'रिबिन की गिरफ्तारीवाला परचा देहात में किस तरह भेजा जाय ?'

इगनाटी—'सतर्क होकर देखने लगा।'

माँ—मैं निकोले वेमोचिको से आज पूछूँगी।

इगनाटी—क्या परचा तैयार हो गया है ?

निकोले—हाँ !

इगनाटा—मुझे दीजिए। मैं ले जाऊँगा। मुझे सब ठिकाना मालूम है।

माँ चुपचाप हँसने लगी। बिना उसकी ओर देखे ही बोली-'तुम थके हुए हो। डर भी गए हो और तुम कहते थे कि मैं वहाँ कभी नहीं जाऊँगा।'

इगनाटी अपना ओठ चाटने लगा। अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला—'मैं थक गया हूँ। मैं सुस्ता लूँगा। मैं डर अवश्य गया हूँ क्योंकि वेलोग जिसे पाते हैं उसे मारते-मारते बेदम कर डालते हैं। आपने अपनी आँखों से सब कुछ देखा है। तब कौन जान-बूझकर प्राण देने जायगा। पर कोई हर्ज नहीं। मैं लुक-छिपकर रात में चला जाऊँगा। शाम तक मुझे परचे मिल

जाने चाहिएँ। मैं रवाना हो जाऊँगा। जंगल में जाकर इन परचों को छिपा दूँगा और अपने साथियों को खबर दूँगा—परचों को मँगाइए। यदि मैं स्वयं बाँटने लग जाऊँगा और पुलिस मुझे पकड़ लेगी तो ये सब परचे बेकाम हो जायँगे। इन बातों में सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि परचे आसानी से नहीं मिलते।'

माँ ने फिर हँसकर पूछा—'पर तुम्हारे भय के लिये क्या किया जाय ?'

इस युवक की सरल और सच्ची बातों से माँ प्रसन्न हो उठी थी।

उसने नाक सिकोड़कर कहा—'भय भय ही है और काम काम ही है। आपलोग मेरे ऊपर हँस क्यों रहे हैं ? क्या ऐसे मामलों में डर होना स्वाभाविक बात नहीं है ? पर इससे क्या। काम पड़ने पर आदमी आग में कूद सकता है।'

माँ—और तुम ?

इगनाटी ने घबराकर कहा—'मैं भी !'

निकोले उदार भाव से उसकी ओर देख रहा था। बोला—'आपको वहाँ नहीं जाना पड़ेगा।'

इगनाटी ने अधीर होकर पूछा—'तब मैं क्या करूँगा ? मैं कहाँ जाऊँगा ?'

निकोले—आपके एवज में दूसरा आदमी जायगा आप उसे रास्ता और पता बता दें।

इगनाटी ने दुख के साथ कहा—'जैसी आपकी इच्छा।'

निकोले—आपके लिये लाइसेंस का इंतजाम कर देते हैं। आप संप्रति जंगल की रखवारी का काम करें।

इगनाटी ने सिर उठाया। व्यग्र होकर कहने लगा—'पर वहाँ किसान लकड़ी काटने आवेंगे। उस वक्त हम क्या करेंगे? उन्हें बाँधेंगे? यह मुझसे नहीं हो सकता।'

इसपर निकोले और माँ दोनों हँस पड़े। इगनाटी शर्मा गया।

निकोले ने उसे तसल्ली देते हुए कहा—'आप इस तरह घबराएँ नहीं। आपको किसानों को बाँधना नहीं पड़ेगा। हम-लोगों पर भरोसा रखें।'

इगनाटी शांत हो गया। हँसकर बोला—'मैं तगड़ा आदमी हूँ। कारखाने में खूब काम कर सकता हूँ। मुझे किसी कारखाने में नौकरी दिला दीजिए।'

उसके विशाल वक्षस्थल के नीचे सतत आग जल रही थी। पर उसमें स्थिरता नहीं थी क्योंकि उसे अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं था। उसका प्रकाश उसकी आँखों में प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था। पर भय और आतंक के प्रभाव से वह किसी भी समय बुझ सकता था।

माँ अपने स्थान से उठी। खिड़की की राह से बाहर देखकर बोली—'यह भी कोई जीवन है। जिसमें दिन में चार बार रोना और चार बार हँसना पड़े। भगवान की इच्छा। इगनाटी! तुम थके हो। मेरे बिस्तरे पर जाकर सो रहो।'

इगनाटी—मैं सोना नहीं चाहता।

माँ—मैं कहती हूँ कि जाकर सो रहो।

इगनाटी—आप बड़ी कड़ाई दिखा रही हैं। आपकी कृपा और उदारता के लिये मैं अतिशय कृतज्ञ हूँ।

माँ के बिस्तरे पर लेटते हुए उसने कहा—'आपका बिस्तरा अलकतरे की गंध से मँहक उठेगा। इतनी खातिरदारी की तो आवश्यकता नहीं थी। मैं नहीं सोना चाहता। आपलोग अच्छे आदमी हैं। आपलोग मेरी इतनी सुश्रुषा क्यों कर रहे हैं। मैं कोई सौ मील की मंजिल तै करके नहीं आ रहा हूँ। उन्होंने मध्यम श्रेणी के लोगों के बारे में कैसी कड़ी बात कही। मध्यम श्रेणी में उनलोगों की गणना है जो मारनेवालों की खुशामद करते हैं।'

थोड़ी देर के बाद वह खर्राटे की नींद में सो गया।

× × × ×

बड़ी रात गए वेलोग निकोले वेसोचिको के पास गए। इगनाटी उसे मार्ग और वहाँ का संकेत समझाने लगा। बोला—'बीचवाली खिड़की पर चार बार खटखटाइएगा।'

निकोले वेसोचिको—'चार बार ?'

इगनाटी—'पहले तीन बार जोर-जोर से (उसने हाथ के इशारे से बताया)। उसके बाद जरा ठहरकर फिर एक बार खट-खटाइएगा।'

निकोले वेसोचिको—मैं समझ गया।

इगनाटी—लाल केशवाला एक किसान दरवाजा खोलने आवेगा। वह आपसे संकेत पूछेगा। आप कह दीजिएगा कि हमें मुखिया ने भेजा है। केवल इतने से ही वह आपका अभिप्राय समझ जायगा।

दोनों जवान और तगड़े थे। पास-पास बैठे दोनों सिर झुकाकर धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। माँ हाथ मोड़कर चुपचाप बैठी हुई दोनों की बातें सुन रही थी। उनलोगों के इशारे और सांकेतिक शब्दों को सुनकर वह मन-ही-मन हँसकर कहने लगी—'अभी लड़के ही हैं!'

ताख पर चिराग टिमटिमा रहा था। उसके मंद प्रकाश में कमरे की सभी चीजें दिखाई दे रही थीं। फर्श पर एक किस्म के पत्थर के पुराने बर्तन पड़े हुए थे। आकाश में इधर-उधर तारे चमक रहे थे। कमरे से सीड़ और रंग की गंध आ रही थी।

इगनाटी बालदार लबादा पहने हुए था। वह अपनी इस पोशाक से बहुत ही खुश था और रह-रहकर उसे निहारा करता था। माँ उसकी इस दशा पर मन-ही-मन प्रसन्न थी।

इगनाटी अपनी जगह से उठा और बोला—'आपको सभी बातें याद रहेंगी? पहले आप मुराटोव के पास जाइएगा और 'दादा' का पता पूछिएगा।'

निकोले वेसोचिको—मुझे सब बातें याद हैं।

पर इगनाटी को उसकी स्मरण-शक्ति पर भरोसा नहीं था। उसने हर बात को फिर एक बार दोहराया था। अंत में हाथ

मिलाते हुए बोला—'बस, इतना पर्याप्त है। उनलोगों से मेरा अभिवादन कह देना। मेरा कुशल कह देना। आप देखेंगे कि सभी लोग वहाँ सज्जन हैं।'

उसने अपने कोट की ओर एक बार फिर देखा। प्रसन्न होकर उस पर हाथ फेरा और माँ से पूछा—'क्या मैं जाऊँ ?'

माँ—तुम्हें रास्ता याद है ?

इगनाटी—हाँ।

इतना कहकर वह घर से बाहर निकला और सीना तन्न किए हुए आगे बढ़ा। उसके चेहरे पर संतोष और प्रसन्नता की रेखा दौड़ रही थी।

निकोले वेसोचिको ने माँ के पास जाकर कहा—'किसी तरह मुझे काम तो मिला ! मैं तो घबरा गया था। न जाने मैं क्यों जेल से बाहर चला आया ! वहाँ तो कुछ सीख भी रहा था और यहाँ छिपते-छिपते नाकों दम है। पावेल और नखोदका हमलोगों को शिक्षा दे रहे थे। हमलोगों का हृदय शुद्ध होता जा रहा था। उत्साह और उमंग भरा था। (माँ से) हाँ, तो जेल से निकल भागने के विषय में क्या तै हुआ ? क्या वेलोग तैयार हैं ?'

माँ—परसों तै करेंगे। दो दिन की देर है।

निकोले वेसोचिको माँ के कंधे पर हाथ रखकर कान में कहने लगा—'आप अधिक उमरवालों से कहिए। वे आपकी बात मानजायँगे। कोई कठिन काम नहीं है। लालटेन के खंभे के पास ही जेल की दीवाल है। उसके सामने लंबा-चौड़ा मैदान है।

बाईं ओर कब्रिस्तान है और दाहिनी ओर शहर को आनेवाली सड़क है। लालटेन जलानेवाला दिन को ही खंभे के पास जाता है, लैंप साफ करता है, सीढ़ी को दीवाल के सहारे खड़ा कर देता है, ऊपर चढ़ जाता है, दीवाल में काँटा ठोंक देता है, जेलखाने के भीतर रस्सा लटका देता है और वहाँ से चला जाता है। वेलोग अपना समय ठीक कर लें और ठीक उसी वक्त जेल में शोरगुल या बखेड़ा खड़ा कर दें। जिन्हें भागना है वे उसी रस्से के पास आ जायँ और उसे पकड़कर दीवालपर चढ़कर इस पार कूद पड़ें और चुपचाप शहर का रास्ता लें क्योंकि पकड़नेवाले पहले मैदान और कब्रिस्तान की ओर जायँगे।'

जेल से भागने के उपाय का सारा नकशा उसने माँ के साम खींच दिया। वह उपाय जितना चतुरतापूर्ण था उतना ही सुगम और सहज था। माँ सदा से उसे वाहियात और निकम्मा समझती आ रही थी। उसके दगीले चेहरे को उसने कभी प्रसन्न नहीं देखा था पर आज वह तेज से चमक रहा था। उसकी भूरी आँखें जो सदा रूखी, नीरस, शंकित और विश्वासहीन थीं आज नई भावनाओं से जल रही थीं जिन्हें देखकर माँ का हृदय भर आया।

निकोले वेसोचिको—आप मेरे उपाय पर विचार करें और दिन को ही प्रबंध करें। दिन में यह काम सहज है क्योंकि किसी को इस बात की शंका भी नहीं हो सकती कि दिन को कैदी जेल से भागने का साहस कर सकता है।

माँ ने भय से काँपते हुए कहा—'यदि उन्होंने गोली चलाई तब तो वह मारा ही जायगा।'

निकोले वेसोचिको—कौन ? जेल में एक भी सिपाही नहीं है और ओवरसियरों की रिवाल्वर से कुछ नहीं हो सकता।

माँ—तब तो यह बड़ा ही सहज मालूम होता है।

निकोले वेसोचिको—आप देखेंगी कि इस काम में पूरी सफलता मिलती है। आप उनलोगों से इस विषय में अवश्य बातें करें। मैंने सीढ़ी, रस्सा और खूँटी सब कुछ तैयार कर लिया है। मकान-मालिक से मुझसे बातें हो चुकी हैं; वह लैंप बालनेवाले का काम करने के लिये तैयार भी है।

इतने में किसी ने दरवाजा खटखटाया और जोर से खाँसा।

निकोले वेसोचिको—वह आ भी गए।

टिन का हौज दरवाजे के भीतर ठेलते हुए किसी ने चिल्लाकर कहा—'पाजी, भीतर क्यों नहीं जाता !'

साथ ही एक नंगे सिर का आदमी द्वार पर दिखाई दिया। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें और लंबी मोंछें भावपूर्ण थीं। निकोले वेसोचिको ने हाथ का सहारा देकर उसे भीतर किया। उसने जोर से खाँसा और जमीन पर थूकते हुए बोला—'आपका स्वागत है।'

निकोले वेसोचिको—(माँ से) आप इनसे पूछें।

आगन्तुक०—मुझसे ? कौन बात ?

निकोले वेसोचिको—भागने के बारे में।

आगन्तुक०—हाँ !

निकोले वेसोचिको—याकोब वेसिलेविच ! आपको (माँ को) विश्वास नहीं होता कि यह मामला इतना सहज है।

याकोब—आपको विश्वास नहीं है। इसका मतलब यह है कि आप विश्वास करना नहीं चाहतीं। हमलोग चाहते हैं इससे हमलोगों को विश्वास है।

इतना कहकर वह बुड्ढा आदमी झुक गया, जोर से खाँसने लगा और देर तक अपना सीना सुहलाता रहा। वह बीच कमरे में खड़ा होकर जोर से साँस लेने लगा। वह माँ की ओर घूरकर देख रहा था।

माँ—मेरे हाथ में तो अंतिम निर्णय नहीं है।

निकोले वेसोचिको—पर आप उनलोगों से बातें करें। उनसे कहें कि सब कुछ तैयार है। (हाथ मलकर) यदि मुझसे भेंट हो सकती तो मैं उन्हें हर तरह से बाध्य करता !

इतना कहकर उसने अपना हाथ इस प्रकार फैलाया और बटोरा मानों कोई चीज पकड़ रहा हो। उसका चेहरा उत्तेजित हो गया, आवाज तेज हो गई। माँ को विस्मय हुआ। उसने अपने मन में कहा—'यह कैसा आदमी है ! (प्रगट) पर अंतिम निर्णय तो पावेल और उसके साथियों के हाथ है।'

निकोले वेसोचिको सिर झुकाकर कुछ सोचने लगा। याकोब ने पूछा—'यह पावेल कौन है ?'

माँ—मेरा पुत्र !

याकोब—आप किस खानदान से हैं ?

माँ—वासोव।

याकोब ने अपना सिर हिलाया। हुक्का उठाया। चिलम साफ किया। उसमें तंबाकू सजाने लगा और बोला—'मैंने उनके बारे में सुन रखा है। मेरे भतीजे से उनका परिचय है। उसका नाम यचिनको है। क्या आप उसे जानती हैं? वह भी जेल में ही है। मेरा वंश गोडुन है। देखते-देखते येलोग सभी युवकों को जेल में ठूँस देंगे। तब हम बूढ़े लोग चैन की बंशी बजावेंगे। इंस्पेक्टर मुझसे कह रहा था कि मेरे भतीजे को निर्वासन का दंड दिया जायगा। वह साइबेरिया भेजा जायगा। पाजी कुत्ते उसे निर्वासित करेंगे।'

उसने चिलम में आग रखी और निकोले से कहने लगा-'आप भी नहीं चाहतीं। यह इनका काम है। प्रत्येक व्यक्ति सोचने विचारने के लिये स्वतंत्र है। यदि कोई जेल में ऊब गया है तो वह बाहर आ सकता है। यदि वह बाहर ऊब गया है तो आसानी से जेल में जा सकता है। उन्होंने सब कुछ छीन लिया है। एकदम अपाहिज बना दिया है। शरीर का स्वत्व खींच लिया है। पड़े-पड़े सब कुछ भोगिए। पर मैं तो अपना काम जारी रखूँगा इसमें किसी तरह का अंतर नहीं पड़ सकता। जो हो मैं अपने भतीजे को निकाल लाऊँगा। यह निश्चय है। उसके व्यंग-भरे शब्दों को सुनकर माँ व्याकुल हो उठी पर उसकी अंतिम बातों से माँ के मन में डाह उत्पन्न हुआ।'

इसके बाद माँ वहाँ से बिदा हुई। पानी बरस रहा था और

जोरों की हवा चल रही थी। रास्ते में माँ सोचने लगी—'इस निकोले वेसोचिको में कैसा परिवर्तन हो गया है।' याकोब गोडुन का स्मरणकर उसने कहा—'केवल मेरे ही हृदय में यह नई आग नहीं जल रही है बल्कि इसकी लपट चारों ओर फैल रही है और जो इसके संसर्ग में आता है उसी को अपनी ओर खींच लेती है।' दूसरे ही क्षण उसे पावेल की याद आई। उसने कहा—'यदि वह राजी हो जाता!'

× × × ×

अगले रविवार को वह पावेल से भेंट करने जेल में गई। बिदा होते समय पावेल ने धीरे से उसके हाथ में कागज का एक टुकड़ा रख दिया। माँ विस्मय के साथ पावेल की ओर देखने लगी। उसकी आँखों में विनय और उत्कंठा थी पर पावेल दृढ़ था। माँ ने उसमें कोई परिवर्तन नहीं पाया।

पावेल ने माँ के हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा—'माँ, प्रणाम! आप किसी तरह भी अधीर न हों और मेरे ऊपर नाराज न हों।'

पावेल के इस कथन का अभिप्राय स्पष्ट था। अब उसे कुछ पूछना नहीं रह गया था। उसने सिर नीचा करके कहा—'तुम्हारी इच्छा!' और वह तेजी से वहाँ से चली गई। उसके ओठ काँप रहे थे। आँखों में आँसू भर आए थे। वह अपनी दुर्बलता पावेल पर प्रगट करना नहीं चाहती थी।

घर पहुँचकर उसने कागज का टुकड़ा निकोले इवानोविच

को दे दिया और प्रतीक्षा में खड़ी होकर उसका मुँह देखने लगी। आशा का क्षीण प्रकाश उसके मन में एक बार फिर उठने लगा। इतने में निकोले ने खत पढ़कर कहा—उसने लिखा है—

'हमलोग भागना नहीं चाहते,हमलोगों में-से एक भी इसके लिये तैयार नहीं है। इसमें हमलोग अपनी अप्रतिष्ठा समझते हैं। सिर्फ उस किसान का ख्याल कीजिए जो अभी गिरफ्तार हुआ है। उस पर दया दिखलाना आवश्यक है। उसकी सहायता करना आपका धर्म है। यहाँ उसे बड़ा कष्ट है। अफसरों से रोज झगड़ा होता है। उसे काल-कोठरी तक की सजा मिल चुकी है। अफसर लोग उसे सताकर मार डालना चाहते हैं। मेरी माँ को सांत्वना देना और समझाना। उसे सब बातें समझाकर कह देना, वह मान जायगी।

तुमलोगों का—पावेल

माँ ने दृढ़ होकर कहा—'मुझसे क्या कहना है ? मैं खूब समझती हूँ। वेलोग अधिकारियों का हर तरह मुकाबला करना चाहते हैं। मैं ऐसे सत्य की पक्षपाती नहीं हूँ।'

निकोले ने मुँह फेर लिया और रुमाल से आँख पोंछते हुए कहने लगा—'मुझे जोरों की सर्दी हो गई है।' दोनों हाथों से आँख मूँदकर उसने धीरे से आँसू पोछे और चश्मे को ठीक करते हुए कमरे में टहलने लगा। बोला—'हमलोग इस प्रयास में सफल भी नहीं हो सकते थे।'

माँ ने नाराजगी के साथ कहा—'किसी तरह विचार का दिन भी तो आवे।'

निकोले—अभी सेंटपीटर्सवर्ग से मेरे मित्र ने मुझे एक पत्र लिखा है।

माँ—साइबेरिया से भी तो वे भाग सकते हैं?

निकोले—हाँ, बड़े मजे में। उस खत में मेरे साथी ने लिखा है—शीघ्र ही उनलोगों का विचार होगा। निर्वासन का दंड सबको मिलेगा। यह निश्चित है। देखिए, किस तरह न्याय का नाटक रचाया जाता है। अभी विचार हुआ नहीं पर सेंटपीटर्स-वर्ग में ही दंड की व्यवस्था हो गई।

माँ—ठहरिए। मुझे कुछ कहने-सुनने की जरूरत नहीं है। मैं जानती हूँ कि जो कुछ उचित और संगत नहीं है उसे पावेल कभी भी नहीं करेगा। बिना किसी प्रयोजन वह अपनी आत्मा को पीड़ा नहीं पहुँचा सकता। वह दूसरे को भी पीड़ा नहीं पहुँचा सकता। मैं जानती हूँ कि वह मुझे प्यार करता है। उसके हृदय में मेरा पूरा ख्याल है। उसने लिखा है—माँ को समझा देना। उन्हें सांत्वना देना।

उसका हृदय धड़कने लगा। साँस जोर से चलने लगी और चेहरा उत्तेजित हो उठा।

निकोले—आपका पुत्र अद्वितीय व्यक्ति है। मैं हृदय से उसकी श्रद्धा करता हूँ।

माँ—रिबिन के बारे में कुछ सोचना चाहिए।

निकोले—अवश्य! शशेंका को बुलाना चाहिए।

माँ—वह स्वयं आती होगी। जिस दिन मैं पावेल से भेंट करने जाती हूँ वह अवश्य आती है।

निकोले आराम-कुर्सी पर माँ के पास बैठ गया। उसकी आकृति गंभीर थी। ओठ काँप रहे थे। दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उसने कहा—'खेद है कि सोफिया यहाँ नहीं है। उसके हाथ में ही मैं यह काम सौंपना चाहता हूँ।'

माँ—पावेल के जेल में रहते ही यह काम हो जाना चाहिए। उसे इससे खुशी होगी।

इसी समय घंटी बजी। दोनों एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

निकोले—शशेंका मालूम होती है।

माँ—उससे क्या कहोगे?

निकोले—कठिन समस्या है।

माँ—मुझे उसकी दशा पर दया आती है।

फिर घंटी बजी। पर इस बार उसका शब्द उतना तेज नहीं था। मालूम होता था कि बजानेवाला व्यक्ति भी किसी चिंता में पड़ गया है।

माँ और निकोले दोनों साथ ही उठे। दरवाजे पर निकोले रुककर माँ को आगे करते हुए बोला—'आप ही उससे कहें।'

शशेंका ने दरवाजा खुलते ही माँ से पूछा—'क्या वे राजी नहीं हैं?'

माँ—नहीं।

शशेंका—मैं जानती थी।

उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसने कोट का बटन खोला। फिर चढ़ाया और फिर खोलकर कोट उतारने लगी। बोली—'आज-कल का समय कैसा खराब है। सर्दी, गर्मी, पानी, तूफ़ान ! सब एक साथ ही ! हाँ, वे अच्छे तो हैं।'

माँ—हाँ।

उसने अधीर होकर कहा—'अच्छे और खुश ! सदा उसी तरह और......।'

माँ ने आँखें फेरकर कहा—'उसने लिखा है कि रिबिन को निकाल लेना चाहिए।'

शशेंका—हमलोगों को इसी उपाय से काम लेना चाहिए।

निकोले उसके पास गया। कुशल-मंगल पूछा और कहने लगा—'मेरी भी यही राय है।'

शशेंका ने उससे हाथ मिलाया। पूछा—'किस बात की पूछ-ताछ हो रही है ? क्या सब इस बात को नहीं स्वीकार करते कि यह उपाय काम में लाने लायक है ? मेरी समझ में यही उपाय समाचीन है।'

निकोले—सबलोग तो फँसे हैं। कौन इस काम को अपने जिम्मे लेगा ?

शशेंका—इसे मेरे हवाले कीजिए। मुझे अवकाश है।

निकोले—पर दूसरों से भी सलाह कर लेना।

शशेंका—मैं तुरत सब प्रबंध करती हूँ।

माँ—तुम्हें सुस्ता लेना चाहिए।

शशेंका हँस पड़ी और नरमी से कहने लगी—'आप मेरी चिंता न कीजिए। मैं थकी नहीं हूँ।'

इतना कहकर वह घर से बाहर हो गई।

चौदहवाँ परिच्छेद

निकोले इवानोविच टेबुल के पास बैठकर कुछ लिख रहा था।

माँ ने पास आकर कहा—'वह इस काम में तन-मन से लग जायगी। उसे यह सहज प्रतीत होता है।'

निकोले इवानोविच—'होना ही चाहिए।' इतना कहकर उसने माँ की ओर देखा और हँसकर पूछा—'क्या तुम इस नशे से बची हो? क्या कभी इस जीवन में तुम्हें प्रियतम का वियोग नहीं उठाना पड़ा है?'

माँ—मैं किस वियोग और वेदना की चर्चा करूँ। हमारे घरवालों को सदा मेरे विवाह की चिंता पड़ी रहती थी कि किसके साथ मेरा विवाह करें।

निकोले०—और तुम किसी को नहीं चाहती थी।

माँ—बहुत दिन की बात है। मुझे याद नहीं रहा। पर मैं कैसे कह सकती हूँ कि मैं किसी को नहीं चाहती थी। मैं अवश्य किसी-न-किसी को चाहती थी पर मुझे स्मरण नहीं आता।

इतना कहकर उसने निकोले की ओर देखा और वेदना

से बोली—'मेरे पति ने मेरी इतनी अधिक दुर्दशा की कि मैं सब कुछ भूल गई।'

निकोले सिर झुकाकर लिखने लगा। माँ वहाँ से चली गई। पर दूसरे ही क्षण वह लौट आई। निकोले ने उसकी ओर स्निग्ध दृष्टि से देखकर कहा—'और मेरी दशा ठीक शशेंका के समान थी। मैं एक युवती से स्नेह करता था। वह अद्वितीय थी। नक्षत्र की भाँति प्रकाशमान थी। वह बड़ी ही उदार और सहृदय थी। बीस वर्ष पहले मेरी उससे भेंट हुई और तभी से मैं उसे चाहने लगा। आज तक मेरे हृदय में उसके लिये उसी तरह का स्नेह वर्तमान है।'

माँ ने देखा कि उसकी आँखें चमक उठीं। वह दोनों हाथों को पीछे ले गया और अपना सिर पकड़कर अँगड़ाई लेने लगा।

माँ—तुमने उससे विवाह क्यों नहीं किया?

निकोले—पाँच वर्ष हुए उसका विवाह हो गया।

माँ—उससे पहले? क्या वह तुम्हें नहीं चाहती थी?

क्षण भर चुप रहकर उसने कहा—'मेरी समझ में वह भी मुझे चाहती थी। पर संयोग ही नहीं मिला। जब मैं जेल में रहता वह बाहर रहती; जब मैं बाहर आता उसे जेल हो जाता। ठीक शशेंका की हालत थी। अंत में वह दस वर्ष के लिये निर्वासित होकर साइबेरिया भेज दी गई। मैं भी उसके साथ जाना चाहता था। पर हमदोनों को शर्म मालूम हुई और मैं यहीं रह गया। वहाँ मेरे एक साथी से उसकी परिचय हो गया। वह भी

बड़ा ही सज्जन था। दोनों वहाँ से निकल भागे। दोनों अब विदेश में रहते हैं।'

निकोले ने अपना चश्मा उतारा, उसे पोंछकर एक बार देखा और फिर पोंछने लगा।

माँ ने अपना सिर हिलाते हुए स्नेह भरे शब्दों में कहा—'आह! मेरे प्यारे लड़के!' निकोले के लिये उसे खेद था। पर किसी अज्ञात कारण से वह मुस्कुराने लगी।

निकोले इवानोविच ने अपना आसन बदला। कलम हाथ में ली और प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए कहने लगा—'गार्हस्थ्य-जीवन से क्रांतिकारी की शक्ति क्षीण हो जाती है। हर वक्त बाल-बच्चों की चिंता लगी रहती है और सबके पालन-पोषण का बोझ सिर पर सवार रहता है। क्रांतिकारी को अपनी शक्ति के प्रत्येक परिमाणु को पुष्ट करना चाहिए। इसके लिये समय की आवश्यकता है। उसे सदा आगे बढ़ते रहना चाहिए क्योंकि हमलोगों का उद्देश्य प्राचीन या प्रचलित अवस्था या प्रणाली का अंत कर नई प्रणाली अथवा सृष्टि की स्थापना है। पर यदि हमलोग दब जायँ, झुक जायँ, अथवा तात्कालिक लाभ की संभावना से रुक जायँ तो इससे आदर्श की हत्या होती है। हमलोगों को सदा स्मरण रखना चाहिए कि हमलोगों का उद्देश्य कुछ थोड़ा सुविधा प्राप्त करना नहीं है बल्कि हमलोग पूर्ण विजय चाहते हैं। इसलिए किसी भी क्रांतिकारी का मत साधारण व्यक्ति से नहीं मिल सकता और यदि

वह ऐसा करता है तो अपने विश्वास पर धक्का पहुँचाता है।'

ज्यों-ज्यों उसके वर्णन का वेग बढ़ता गया उसका चेहरा दृढ़ होता गया, आँखें तेज होती गईं और आवाज कड़ी होती गई।

फिर एक बार घंटी बजी और साथ ही लुडमिला ने कमरे में प्रवेश किया। वह बहुत ही हलका लबादा पहने हुई थी जो उस समय की सर्दी के लिये एकदम अपर्याप्त था। कमरे में प्रवेश करते ही उसने कहा—'अभियुक्तों के विचार का दिन नियत हो गया है। एक सप्ताह में आरंभ होगा।'

निकोले—सचमुच !

माँ शीघ्रता के साथ उसके पास चली गई। उसके मन में विचित्र हलचल मची हुई थी। पर वह यह नहीं समझ सकती थी कि वह भय के कारण है अथवा हर्ष के।

लुडमिला माँ के साथ ही आगे बढ़ी और व्यंग से कहने लगी—'सहकारी सरकारी वकील अभी परवाना लेकर आया है। वेलोग कचहरी में खुल्लम-खुल्ला कह रहे थे कि दंड की व्यवस्था तो हो चुकी है। पर इसके क्या माने हैं? क्या अधिकारियों को इस बात की आशंका थी कि जज लोग सरकार के शत्रुओं के साथ उदारता से पेश आवेंगे? इतने दिनों तक इनकी आत्मा को कलुषित करते रहने के बाद क्या अधिकारियों को इनके पूर्ण निर्दय और चांडाल होने में अब भी संदेह है?'

लुडमिला पलँग पर बैठ गई। उसकी आँखों से घृणा टपक रही थी और उसकी वाणी में कठोरता और क्रोध भरा था।

उसे शांत करते हुए निकोले ने कहा—'लुडमिला! इससे कोई लाभ नहीं। तुम्हारी बातें वे नहीं सुनते। तब क्यों अपनी शक्ति का इस प्रकार ह्रास करती हो?'

लुडमिला—किसी-न-किसी दिन तो उन्हें बाध्य होकर सुनना पड़ेगा।'

उसकी आँख की पुतलियाँ हिलने लगीं। वह अपना ओठ काटते हुए बोली—'हमलोग तुम्हारे शत्रु हैं। तुम हमलोगों के विरुद्ध जो चाहो कर सकते हो। पर अपनी शक्ति की रक्षा में, उसके समर्थन में जनसाधारण का हृदय क्यों कलुषित करते हो? ऐसी चाल क्यों चलते हो कि खामखाह हमलोग उनसे घृणा करने लगें। अपनी संकीर्णता से हमलोगों के हृदय को विषैला बनाने का क्यों यत्न करते हो?'

निकोले ने चश्मे के भीतर से ही उसकी ओर देखा और भौंह सिकोड़ते हुए दुख से सिर हिलाया। पर लुडमिला इस प्रकार कहती रही मानों उसके दुश्मन सामने खड़े हों। माँ ध्यान देकर उसकी बातें सुन रही थी। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था और वह आपही आप कहती जाती थी—'विचार—एक सप्ताह में विचार आरंभ होगा?'

वह नहीं समझ सकी कि विचार का क्या रूप होगा। जज लोग पावेल के साथ कैसा बर्ताव करेंगे। उसका दिमाग चक्कर खाने लगा, मन उद्विग्न हो उठा और आँखों के सामने अँधेरा छा

गया। इसका प्रभाव बढ़ता गया और उसके बोझ से वह दबती गई। उसकी चेतना लुप्त होने लगी।

उसी घबराहट और निराशा की अवस्था में, वेदना-भरी आशा में उसने दो दिन काटे। तीसरे दिन शशेंका ने आकर निकोले इवानोविच से कहा—'सब तैयारी हो गई। आज ही एक घंटे के बाद संपन्न हो जायगा।'

निकोले ने कहा—'इतनी जल्दी ?' वह चकित था।

शशेंका—उसमें कठिनाई ही क्या थी ? मुझे तो सिर्फ रिबिन के लिये कपड़ा और छिपने का स्थान ठीक करना था। बाकी सब भार तो गोडुन ने अपने ऊपर ले लिया था। रिबिन को सिर्फ एक ही महल्ला पार करना पड़ेगा। सड़क में निकोले वेसोचिको वेष बदलकर उसकी प्रतीक्षा करता रहेगा। ज्यों ही रिबिन वहाँ पहुँचेगा वह उसे लबादा और हैट देकर इशारे से रास्ता बतला देगा। मैं वहाँ तैयार रहूँगी। उसके कपड़े बदलवा दूगी और लेकर चली जाऊँगी।

निकोले—उपाय तो बुरा नहीं है। पर यह गोडुन कौन है ?

शशेंका—निकोले वेसोचिको के डेरे में जिस लोहार से मुलाकात हुई थी। तुम उसे जानते हो ?

निकोले—पर वह तो एकदम बुड्ढा आदमी है !

शशेंका—वह सेना में काम कर चुका है। साधारण पढ़ा-लिखा भी है। इन अत्याचारों और अत्याचारियों के लिये उसके रोम-रोम में घृणा भरी है। थोड़ा विचारवान भी है।

माँ चुपचाप उसकी बातें सुनती रही। उसके हृदय में धीरे-धीरे कोई नई बात उठने लगी।

शशेंका कहती गई—'वह अपने भतीजे को मुक्त कराना चाहता है। उसके भतीजे को तुम जानते हो। उसका नाम यचिनको है। गोडुन ने सब प्रबंध ठीक कर लिया है। पर उसकी सफलता पर हमें संदेह है। जेल के उन रास्तों से होकर सभी कैदी आते-जाते हैं और जब वेलोग वहाँ रस्सा लटकते देखेंगे तो बहुत से भागने का यत्न करेंगे और इस प्रकार वेलोग बाधा उपस्थित करेंगे।'

इतना कहकर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

तीनों खिड़की के सामने खड़े थे, माँ दोनों के पीछे थी। इनकी बातचीत से उसकी व्यग्रता और भी अधिक बढ़ती गई। वह एकाएक बोल उठी—'मैं वहाँ जाऊँगी!'

शशेंका—क्यों?

निकोले—आप वहाँ न जायँ। संभव है आप पकड़ी जायँ।

माँ ने उनलोगों की ओर देखा और नरमी तथा दृढ़ता के साथ कहा—'नहीं, मैं तो निश्चय जाऊँगी।'

निकोले और शशेंका ने एक दूसरे की ओर देखा। शशेंका ने कहा—'आशा बड़ी बलवती होती है।'

इतना कहकर वह माँ की ओर झुकी। उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उसके कंधे पर अपना सिर रखकर मधुर शब्दों

में बोली—'माँ आपकी आशा व्यर्थ है। वह कभी भी भागने का प्रयास नहीं करेंगे।'

माँ ने उसे अपनी छाती से लगा लिया, बोली—'बेटी ! मेरा विश्वास मानो। मैं तुम्हारे मार्ग में कभी भी बाधा न डालूँगी। मुझे विश्वास नहीं है कि निकल भागना संभव है !'

शशेंका ने निकोले से कहा—'माँ जायँगी ही।'

निकोले ने सिर नवाकर कहा—'तुम जानो,तुम्हारा काम जाने !'

शशेंका – माँ, हम दोनों साथ नहीं रहेंगी। आप लोगों के साथ बगीचे में जायँ। वहाँ से जेल की दीवाल साफ दिखाई देगी। पर यदि आपसे किसी ने पूछा कि आप यहाँ क्या कर रही हैं ?

माँ ने प्रसन्न होकर कहा – मैं इसका उत्तर दे लूँगी !

शशेंका –आपको स्मरण रखना चाहिए कि जेल के सब अधिकारी आपको पहचानते हैं। यदि उनलोगों ने आपको वहाँ देख लिया तब।'

माँ ने हँसकर धीरे से कहा – 'वे नहीं देख सकेंगे !'

घंटे भर बाद वह लोगों के साथ जेल के पास पहुँची। जोरों की हवा चल रही थी। उसके शरीर के वस्त्र उड़ते जाते थे। बगीचे की चहारदीवारी को हिला रहे थे और जेल की दीवाल से जा-जाकर टकराते थे। लोगों की आवाज लेकर ऊपर उड़ जाते थे और आकाश में फैला देते थे। आसमान में चारों ओर बादल दौड़ रहे थे।

जहाँ माँ खड़ी थी वहाँ से शहर पीछे पड़ता था। कब्रिस्तान सामने था और दाहिनी ओर करीब सत्तर फुट की दूरी पर जेल था। कब्रिस्तान के पास एक सिपाही घोड़े की लगाम पकड़े आगे आगे जा रहा था और उसके बगल में दूसरा सिपाही बकता झखता हँसता और सीटी बजाता चला जा रहा था। जेल के आसपास और कोई नहीं था। माँ ने एकाएक उनलोगों के पास पहुँचकर पूछा—'सिपाहियो! क्या आपलोगों ने यहाँ कहीं एक बकरा देखा है?'

एक सिपाही ने कहा—'नहीं।'

वह उनलोगों से आगे बढ़ गई और कब्रिस्तान की चहार-दीवारी के पास पहुँची। वह चलती जाती थी और कनखियों से दाहिनी ओर तथा पीछे देखती जाती थी। एकाएक उसके पैर काँपने लगे और बरफ के समान जम जए। उसी समय जेल की दीवाल के पास एक आदमी आता हुआ दिखाई दिया उसकी चाल लालटेन जलानेवाले की तरह थी। उसके कंधे पर सीढ़ी थी। माँ ने डर से काँपते हुए सिपाहियों की ओर देखा। वे दोनों एक जगह पर अड़कर खड़े थे और घोड़े को दौड़ा रहे थे। उसने उसकी ओर देखा। जेल की दीवाल के सहारे सीढ़ी लगाकर वह धीरे-धीरे उसपर चढ़ रहा था। ऊपर चढ़कर उसने जेल के अहाते के भीतर हाथ फैलाया और तुरत नीचे उतरकर गायब हो गया। दूसरे ही क्षण रिबिन की सूरत जेल की दीवाल पर दिखाई दी। उसके ठीक पीछे दूसरा आदमी था। दोनों धड़ाम-

धड़ाम जमीन पर कूद पड़े। एक तो तुरत गायब हो गया पर रिबिन उठ खड़ा हुआ और चारों ओर देखने लगा।

माँ अधीर होकर आगे बढ़ी। बोली—'भागो! भागो!! उसकी कान सायँ सायँ कर रही थी। जोरों की आवाज उसे सुनाई दे रही थी। उसी समय दीवाल पर उसने तीसरे व्यक्ति को देखा। उसने इस तरह उचककर देखा मानों भाग जाना चाहता हो पर दूसरे ही क्षण वह दीवाल के पीछे अहाते में गायब हो गया। माँ व्याकुल होकर हाथ मलने लगी। आवाज क्षण-क्षण पर तेज होने लगी। हवा के वेग के साथ आवाज चारों ओर फैलने लगी। रिबिन जेल की दीवाल से आगे बढ़ा। वह दीवाल पार-कर शहर की ओर जा पहुँचा था। माँ को मालूम हुआ कि रिबिन धीरे-धीरे जा रहा है और बेकार इधर-उधर देखता जा रहा है। उसने अपने मन में कहा—'जो एक बार भी उसे देखेगा उसकी सूरत न भूलेगा। बोली—'और तेज कदम बढ़ाओ।' जेल की दीवाल के पीछे कोई चीज खड़की और शीशा टूटने का शब्द सुनाई दिया। एक सिपाही ने अपना पैर जमीन पर पटककर घोड़े को अपनी ओर खींचा। घोड़ा उछल पड़ा, दूसरा सिपाही मुँह पर मुट्ठी रखकर जेल की ओर इशारा करके चिल्ला उठा। उसने अपना सिर घुमाया और कान खड़ा किया।

माँ गौर से चारों ओर देखने लगी। वह सब कुछ देख रही थी पर उसे किसी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। जिस काम को उसने अतिशय भयानक और दुरूह समझा था वह इतनी

आसानी से पूरा हो गया कि वह चकित थी। रिबिन का कहीं पता नहीं था। वहाँ पतला लबादा पहने एक आदमी टहल रहा था और एक युवती दौड़ रही थी। एकाएक तीन जमादार जेल से बाहर कूदे और हाथ फैलाए हुए दौड़े। एक सैनिक उनके सामने दौड़ा आया और दूसरा घोड़ा सम्हालने लगा जो अभी तक बेकाबू होकर उछल रहा था। सीटी अनवरत बज रही थी। उसकी भयानक आवाज माँ के कानों में पड़ रही थी और विपत्ति की आशंका से वह काँप रही थी। जमादारों के पीछे-पीछे वह काँपती हुई कब्रिस्तान की चहारदीवारी के बगल से आगे बढ़ी। तीनों जमादार और सैनिक जेल के दूसरे कोने की ओर दौड़े और लापता हो गए। उनके पीछे जेल का सरकारी अफसर दौड़ता हुआ आया। माँ उसे पहचानती थी। पुलिस भी आ पहुँची और बहुत से लोग जमा हो गए।

जोरों की हवा बह रही थी। मानों वह भी घटना से प्रसन्न होकर नाच रही है। लोगों का शोरगुल माँ को सुनाई दे रहा था।

किसी ने कहा—यह तो हमेशा यहीं खड़ा किया रहता है।

दूसरा—सीढ़ी ?

पहला—तब मामला क्या है ?

दूसरा—सैनिकों को गिरफ्तार करो।

पहला—पुलिस ! पुलिस !!

फिर सीटी बजी। इस हलचल से वह खुश थी। वह और

दृढ़ होकर आगे बढ़ी। मन में सोचने लगी—'यह संभव है। उसी ने यह सब किया हो।'

अब पावेल के लिये उसके हृदय में विषाद नहीं था। पर भय उसे अब भी उसी तरह सता रहा था। ज्योंही वह चहारदीवारी के कोने पर आई एक जमादार और दो सिपाही उधर से निकल पड़े। जमादार का दम फूल रहा था। उसने माँ को रोककर पूछा—'तुमने किसी दाढ़ीवाले आदमी को इधर से भागते देखा है?'

हाथ के इशारे से बाग की ओर दिखाकर माँ ने कहा—'उधर ही दौड़ता हुआ गया है।'

जमादार—कितनी देर हुई?

माँ—प्राय: एक मिनट होता है।

दोनों पुलिसों को बाग का इशारा करता हुआ जमादार उधर ही दौड़ पड़ा। माँ ने संतोष से अपना सिर हिला दिया और घर का रास्ता लिया। रास्ते में उसे एक किराए की गाड़ी मिली। उसमें एक युवक बैठा था। उसे छोटी-छोटी दाढ़ी थी। उसका चेहरा पीला और मुर्झाया हुआ था। वह तिरछा होकर बैठा था। उसने माँ को प्रणाम किया। उसे देखकर माँ ने अपने मन में सोचा कि इस तरह बैठने के कारण उसका दाहिना हाथ बाएँ हाथ से ऊँचा दिखाई देता है।

घर पहुँचते ही निकोले इवानोविच ने उससे पूछा—'क्या हुआ?'

माँ—मैं समझती हूँ कि सब काम पूरी तरह संपन्न हो गया।

धीरे-धीरे उसने सारा किस्सा कह डाला। इस सफलता पर निकोले को भी विस्मय था। बोला—'हमलोग बड़े भाग्यवान हैं। परमेश्वर जानता है कि मैं आपके लिये कितना चिंतित था। मेरी बात मानिए आप मोकदमे की चिंता छोड़ दीजिए। जितनी ही जल्दी उनलोगों का विचार हो जाय उतना ही पावेल के लिये अच्छा है क्योंकि उतनी ही जल्दी उसके मुक्त होने की संभावना है। मैंने सोफिया को लिख दिया है कि वह पावेल को किसी तरह मुक्त करने का प्रबंध अभी से करती रहे। संभव है वह उन्हें मार्ग से ही भगा लावे। विचार में क्या रखा है। वह तो एक प्रकार का नाटक होगा।' इसके बाद वह अदालत की कार्रवाई का वर्णन करने लगा। माँ ध्यान से उसकी बातें सुन रही थी। उसे उसकी बातों से मालूम हुआ कि निकोले के मन में किसी बात का भय है और वह माँ को दृढ़ करने का यत्न कर रहा है। बोली—'तुम्हें भय है कि मैं जजों से विनती करूँगी? मैं उनसे कुछ भीख माँगूंगी?'

निकोले उठ खड़ा हुआ और अपना हाथ हिलाता हुआ अपमानित की भाँति बोला—'क्या आप मेरा अपमान करना चाहती हैं?'

माँ मुझे क्षमा करो। मैं स्वयं नहीं जानती कि मुझे किस बात का भय समाया हुआ है।

इतना कहकर वह चुप हो गई और कमरे में इँधर-उधर

देखने लगी। फिर बोली—'कभी-कभी मुझे भय होता है कि वे-लोग पावेल की बेइज्जती करेंगे। उसे डाँटेंगे कहेंगे—अरे कमीने किसान के बच्चे! तूने यह क्या तूफान खड़ा किया है? पावेल भी आत्माभिमानी ठहरा। वह भी उसी शब्दों में उत्तर देगा। नखोदका उनपर हँसेगा। सभी साथी इमानदार और गर्म मिजाज के हैं। इससे मुझे आशंका है कि कोई दुर्घटना हुए बिना नहीं रहेगी। एक अधीर हो उठेगा, दूसरा उसका समर्थन करेगा। इससे उन्हें कड़ा-से-कड़ा दंड दिया जायगा कि फिर कभी उन-लोगों के दर्शन नहीं मिलेंगे।'

निकोले चुप था। वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। माँ फिर बोली—'यह ख्याल मेरे दिल से नहीं हटता। अभियोग की बात मुझे बड़ी भयानक प्रतीत होती है। जब वेलोग हर बात पर अलग-अलग विचार करने लगेंगे तब क्या होगा? मैं दंड से उतना नहीं डरती जितना अभियोग के विचार से डरती हूँ। मैं उस भय का वर्णन नहीं कर सकती।'

माँ ने समझा कि निकोले इवानोविच उसके भय का अनुमान नहीं कर रहा है। इसलिए उसने अपनी विभीषिका के संबंध में कुछ अधिक कहना उचित नहीं समझा। इससे उसकी बेकली बढ़ती गई। उसके वह तीन दिन बड़ी कठिनाई से कटे। चौथे दिन अभियुक्तों का विचार होनेवाला था।

रास्ते में देहातियों से मुलाकात हुई। उन्होंने उसे प्रणाम किया था। सबको उसने आसीस दिया और सिर झुकाकर इज-

लास पर चली गई। अदालत में अन्य अभियुक्तों के संबंधियों से मुलाकात हुई। उनलोगों में भी दबी जबान माँ की ही चर्चा थी। पर वह सब कुछ बेकार समझती थी। उसकी समझ में कुछ नहीं आता था। उसने देखा कि सबका हृदय उसी की तरह विषादपूर्ण था।

एक बेंच के पास जाकर सिजोव ने माँ से कहा—'आइए साथ ही बैठें।'

माँ सिजोव के पास ही बैठ गई। अपने कपड़े को सम्हाला और चारों ओर देखने लगी।

उसके बगल में बैठी एक स्त्री ने कहा—'तुम्हारे लड़के ने मेरे पुत्र को नष्ट कर डाला।'

सिजोव ने उसे डाँटकर कहा—'चुप रहो।'

माँ ने उस स्त्री की ओर देखा। वह समोलो की माँ थी। उससे कुछ दूर हटकर उसका पति बैठा था।

खिड़की के मार्ग से होकर कमरे में मंद प्रकाश आ रहा था। बाहर मैदान में बरफ गिर रही थी। खिड़कियों के बीच में जार का सुंदर चित्र सुनहले फ्रेम में जड़कर टाँगा हुआ था। खिड़कियों पर मखमली परदे पड़े थे। चित्र के सामने कमरे की चौड़ाई के बराबर का टेबुल रखा था और वह हरे रंग के कपड़े से ढँका हुआ था। दीवाल की दाहिनी ओर लकड़ी के दो बेंच और बाईं ओर दो कतार आराम कुर्सियाँ रखी हुई थीं। हरा पट्टा और पीला बुताम कोट में लगाए हुए चपरासी अस्तव्यस्त इधर-उधर दौड़ रहे थे।

एकाएक एक चपरासी ने जोर से कुछ कहा। माँ काँप उठी सबलोग उठ खड़े हुए। वह भी सिजोव का सहारा लेकर खड़ा हो गई।

बाएँ कोने का दरवाजा खुला। एक बूढ़े आदमी ने प्रवेश किया। एक लंबे नौजवान आदमी का सहारा लेकर वह चल रहा था। उसके पीछे तीन व्यक्ति जरी के काम का पोशाक पहने और तीन अफसराना पोशाक पहने धीरे-धीरे आ रहे थे। सबलोग आकर आराम कुर्सी पर बैठ गए। इसके बाद उनमें-से एक उठा और उस बूढ़े आदमी से कुछ कहने लगा। बूढ़ा ध्यान देकर उसकी बातें सुनने लगा।

टेबुल के कोने पर एक दूसरा आदमी बैठा कागज-पत्र इधर-उधर उलट रहा था।

बूढ़ा आदमी आगे की ओर झुका और बोला—'मैं खोलता हूँ।'

माँ को सचेत करते हुए सिजोव ने कहा —'उधर देखिए।'

दूसरा दरवाजा खुला और सिपाही की निगरानी में पावेल वगैरह सभी अभियुक्तों ने प्रवेश किया। पावेल और नखोदका ने मुस्कुराते हुए माँ को प्रणाम किया। उनसबों के आते ही उस स्थान में विचित्र परिवर्तन मालूम होने लगा। वह उदासी और मनहूसियत कहाँ गायब हो गई! पोशाकों की तड़क-भड़क अब आँखों को नहीं चौंधिया रही थी। माँ के हृदय में नई शक्ति और चेतना का संचार हुआ। उसके पीछे बेंचों पर जहाँ लोग इस

वक्त तक दम रोककर मनहूसियत के साथ बैठे थे, कानाफूसी के शब्द सुनाई देने लगे।

सिजोव ने धीरे से कहा—'वे सब जरा भी अधीर नहीं हैं।' समोलो की माँ उसी वक्त रो पड़ी। किसी ने डाँटकर कहा—शांति!

बूढ़ा जज—मैं सबलोगों को आरंभ में ही सावधान कर देता हूँ अन्यथा मुझे ......।

पंद्रहवाँ परिच्छेद

नखोदका पावेल के बगल में बैठा था। उसके बाद मेजिन, समोलो, और गुसेव वगैरह थे। नखोदका ने अपनी दाढ़ी मुड़वा ली थी। लेकिन उसकी मोंछ बढ़ गई थी इससे चेहरा गंभीर मालूम होता था। माँ का हृदय शांत था। वह चुपचाप बैठी उस बूढ़े जज के साथ पावेल का जो सवाल-जवाब हो रहा था उसे सुन रही थी। उसे उस वक्त यही मालूम होता था कि वह बूढ़ा जज और उसके साथी निर्दयी और अविवेकी नहीं हैं। उन्हें देखकर उसके हृदय में नई आशा जग उठी।

चिकने मुँहवाला एक आदमी लापरवाही के साथ एक कागज पढ़ रहा था। लोग चुपचाप उसकी बातें सुन रहे थे। चार वकील जाश के साथ अभियुक्तों से बातें कर रहे थे।

बूढ़े जज के बगल में आराम-कुर्सी पर मोटी तोंदवाला जज बैठा था। दूसरी ओर एक लाल मोंछवाला जज बैठा था। उसका

सिर पीछे की ओर झुका था, आँखें आधी बंद थीं। वह कुछ सोच रहा था। सरकारी वकील का चेहरा भी मलिन और मनहूस था। जज के पीछे नगर का मेयर कुलीनों का सरदार, और जिलाधीश बैठा था।

पावेल ने कड़ककर कहा—'यहाँ न तो कोई अभियुक्त है और न जज। यहाँ तो सिर्फ विजित और विजेताओं का इजलास है।'

इजलास में सन्नाटा छा गया। माँ के कान में केवल कागज पर कलम चलने का शब्द पड़ रहा था।

बूढ़ा जज मानों कहीं दूर की बात सुन रहा था। उसके साथी हिले तब उसने कहा—नखोदका! क्या तुम स्वीकार करते हो कि......।'

किसी ने कहा—'खड़े हो जाओ।'

नखोदका अपनी जगह पर खड़ा हो गया और मोंछें ऐंठता उस बूढ़े आदमी की ओर कनखियों से देखने लगा। बोला—'मैं किस बात का अपराध स्वीकार करूँ? न तो मैंने चोरी की है और न हत्या की है। मैं सिर्फ उस अवस्था का विरोधी हूँ जिसमें एक व्यक्ति जबर्दस्ती दूसरे को लूट रहा है।'

बूढ़ा आदमी—संक्षेप में 'हाँ' अथवा 'ना' कहो।

पीछे के बेंच पर कुछ हलचल मालूम हुई। लोग उत्तेजित होकर आपस में कानाफूसी करने लगे ऐसा मालूम होने लगा मानों चिकने चेहरेवाले के कथन का प्रभाव नखोदका के बयान से दूर हो गया हो और लोग मोहनिद्रा से उठ खड़े हुए हों।

सिजोव—आप उनकी बातें सुन रही हैं?

माँ—हाँ।

फीडिया मेजिन—'मैं भी अपराध नहीं स्वीकार करता।' उसका चेहरा जोश से लाल हो रहा था। उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं। उसने हाथ पीछे कर लिया।

सिजोव धीरे से गुर्राया और माँ चकित होकर देखने लगी। मेजिन ने कहा—'मैं सफाई नहीं दूँगा। मैं कुछ नहीं कहना चाहता। मैं इस अदालत को न्याययुक्त नहीं मानता। आप कौन हैं? क्या हमलोगों के विचार करने का अधिकार प्रजा ने आप को दिया है? कदापि नहीं। मैं तुम्हें नहीं मानता।' इतना कहकर वह बैठ गया और अपना उत्तेजित चेहरा नखोदका के पीछे छिपा लिया।

तोंदवाला जज बूढ़े जज की ओर झुका और उसके कान में कुछ कहा—'बूढ़े जज ने आँख उठाकर अभियुक्त की ओर देखा और सामने पड़े कागज पर पेंसिल से कुछ लिख लिया। इसके बाद वह लाल मोंछवाले जज से तेजी के साथ कुछ कहने लगा। वह कान लगाकर उसकी बातें सुनने लगा। कुलीनों का सरदार सरकारी वकील से बातें करता था। शहर के मेयर मुस्कुरा रहे थे और सबकी बातें सुन रहे थे। अब धीमी आवाज में बूढ़े जज की बोली सुनाई दी। चारों वकील गौर से उसकी बातें सुनने लगे। सभी अभियुक्त आपस में कानाफूसी करने लगे। फीडिया ने मुस्कुराकर अपना चेहरा छिपा लिया।

सिजोव ने माँ के कान में कहा—'इस कमसिन युवक ने बड़ा तीखा उत्तर दिया। उसकी बातें सबसे तेज थीं।'

माँ ने घबराहट के साथ मुस्कुरा दिया। अदालत की कार्यवाही उस भयानक परिणाम की भूमिका मात्र थी, जो सबको स्तब्ध कर देगी। पावेल और नखोदका इतने शांत, धीर और गंभीर थे मानों घर में बैठे हैं, अदालत के कमरे में नहीं। फीडिया की जोश-भरी बातों से वह प्रसन्न थी। उससे इजलास में नया उत्साह पैदा हो गया था जिसका प्रभाव सभी दर्शकों पर पड़ रहा था। माँ ने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया।

बूढ़े जज ने पूछा—'आपका क्या मत है ?'

सरकारी वकील उठा। एक हाथ डेस्क पर रखा और अंकों का हवाला देते हुए तेजी से कहने लगा—'उसकी बातें भयानक नहीं थीं।'

इस समय माँ को एक बात का खटका हुआ। इससे उसके दिल में खलबली मच गई। यह किसी विपरीत घटना की आशंका थी जो उसे भयभीत नहीं कर रही थी, पीड़ित नहीं कर रही थी, केवल अव्यक्त अदृश्य होकर उसके हृदय में फैल रही थी। उसे मालूम होने लगा कि वही भावना धीरे-धीरे विस्तृत रूप धारण करके जजों को भी घेर रही है और उससे घिर जाने के कारण बाहर की कोई वस्तु उन तक नहीं पहुँच सकती। उसने उनकी ओर देखा। पर उनका भाव वह कुछ भी समझ नहीं सकी। उसने देखा कि वे लोग पावेल अथवा फीडिया

से असंतुष्ट नहीं हैं। उसको उनलोगों ने डाँटा नहीं, कड़ी बातें नहीं कहीं। वे उनलोगों से प्रत्येक बात लापरवाही से पूछते हैं मानों सब बेकार समझते हैं। अंत तक उत्तर सुनने में वे घबरा जाते हैं। इन सब बातों से स्पष्ट था कि उन्हें किसी तरह की दिलचस्पी इस काम में नहीं थी क्योंकि वे सब बातें पहले ही जानते थे।

पुलिस-इंस्पेक्टर ने खड़े होकर कहा—'पावेल वासो सब का अगुआ था।'

तोंदवाले जज ने पूछा—'और नखोदका ?'

पुलिस-इंस्पेक्टर—वह भी..... ।

तोंदवाला जज—क्या मैं......?

बूढ़े जज ने कहा—'क्या तुम्हारे पास कुछ नहीं है ?'

माँ की दृष्टि में भी जज थके और परेशान मालूम होते थे। उनकी गतिविधि और बातों से उनकी परेशानी स्पष्ट व्यक्त होती थी। उन्हें सब कुछ भद्दा मालूम होता था—अफसराना पोशाक, इजलास, इंस्पेक्टर, वकील, आराम-कुर्सी पर बैठने की प्रथा और उन बातों के विषय में जबर्दस्ती पूछ-ताछ करना जिसका निर्णय पहले ही हो गया था। माँ को अधिकारियों का विशेष परिचय नहीं था। उसने उन्हें देखा भी नहीं था। इस समय जजों का चेहरा देखने से भय के स्थान में उसके हृदय में उनके लिये दया उत्पन्न हो गई।

पीले चेहरेवाला पूर्व परिचित अफसर जजों के सामने खड़ा होकर पावेल और नखोदका की हरकतों की चर्चा कर रहा

था। माँ मन-ही-मन हँसकर कहने लगी—'भाई, तुम्हें इन लोगों के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है।'

एक बार उसने उन अभियुक्तों की ओर देखा। अब उसके हृदय में उनके लिये भय नहीं था, वेदना नहीं थी, करुणा नहीं थी। उसके हृदय में केवल प्रेम था और वह उसी आनंद में विभोर थी। उसने देखा कि दीवाल का सहारे लेकर सब-के-सब आनंद से बैठे हुए थे। गवाहों के बयान, जजों के सवाल और उनके वकीलों के साथ सरकारी वकील की गर्मागर्म बहस से उन्हें कोई प्रयोजन नहीं था। कभी-कभी वे आपस में कुछ बातें करके हँस पड़ते थे। पावेल और नखोदका बराबर उस वकील से बातें कर रहे थे जिसे माँ ने एक दिन पहले निकोले इवानोविच के घर पर देखा था और जिसे निकोले ने अपने दल का बतलाया था। उनलोगों की बात में मेजिन सबसे अधिक उत्साह दिखला रहा था। कभी-कभी समोलो गुसेव से कुछ कह देता तो वह केहुनी से अपने पासवाले साथी को ठेल देता और हँसने लगता। उसका चेहरा लाल हो जाता और अपनी हँसी छिपाने के लिये उसे मुँह फेरना पड़ता। यही हालत प्रायः सभी साथियों की थी। सबके चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी। वह यह सब देखती और उस पर विचार करती थी। पर उसे अपनी परेशानी और विपरीत अवस्था का कारण समझ में नहीं आता था।

सिजोव ने माँ के हाथ में खोदा। माँ ने उसकी ओर देखा।

उसका चेहरा गंभीर तथा घृणा के भाव से भरा था। बोला—'आपने देखा कि इन सबों ने इन अधिकारियों की अवज्ञा किस साहस से की है! इन सबों में अपूर्व शक्ति है पर इन्हीं को दंड मिलेगा।'

माँ ने उसकी बात सुनी। उसके मुँह से आप-ही-आप निकल पड़ा—'कौन सजा देगा और किसको सजा देगा?'

गवाह सफाई के साथ अपना बयान देते जाते थे और जज बे-मन से सुनता जाता था। वे लापरवाही के साथ चारों ओर देख रहे थे। कोई नई बात देखने या सुनने की उन्हें आशा नहीं थी। कभी-कभी तोंदवाला जज हाथ से मुँह बंद करके जम्हाई लेने लगता था। लाल मोंछवाला जज का चेहरा और भी पीला पड़ गया था। जब कभी वह आँखें फाड़कर छत की ओर देखता वह अपने हाथ की अँगुलियों से गालों की हड्डियों को जोर से दबाता। सरकारी वकील कुलीनों के सरदार से बराबर बातें करता रहता था और कभी-कभी कागज पर कुछ नोट कर लेता था। शहर का मेयर पैर पर पैर रखकर चुपचाप बैठा अपनी अँगुलियों को नचा रहा था। जिलाधीश ही एक ऐसा व्यक्ति था जो सभी बातों को गौर से सुनता दिखाई दे रहा था। बूढ़ा जज आराम-कुर्सी पर निश्चल बैठा था। इसी तरह अदालत की कार्रवाई दीर्घकाल तक चलती रही। लोग फिर सुस्त और उदास होकर चुप हो गए।

माँ को इस इजलास में न्याय का वह सच्चा रूप कहीं नहीं

दिखाई दिया जो पूर्ण गंभीरता के साथ सभी परिस्थिति का पूर्ण जाँच करता है और कहीं से भी न्याय का पल्ला हलका नहीं होने देता। यहाँ न्याय की विभीषिका का कोई रूप नहीं था।

बूढ़ा जज—'मैं घोषणा करता हूँ कि...।'

इतना कहकर वह उठ खड़ा हुआ और बाकी बातें बहुत धीरे से कहने लगा।

थोड़ी देर के लिये अदालत का काम बंद हो गया। यह जलपान का वक्त था। जजों के जाने के साथ ही अदालत में शोरगुल मचने लगा। कैदियों को लेकर पुलिसवाले चले। जाते वक्त उनलोगों ने सगे-संबंधियों और परिचितों को हँसकर प्रणाम किया। इवान गुसेव ने दबी जबान में किसी से कहा—'ईगर, हिम्मत मत हारो।'

सिजोव माँ के साथ ही था। उसने पूछा—'डेढ़ घंटे का वक्त है। क्या आप मेरे साथ सराय में चाय पीने चलेंगी ?'

माँ—मुझे इच्छा नहीं है।

सिजोव—तब मैं भी नहीं जाऊँगा। वे सब विचित्र आदमी हैं। मालूम होता है कि उनकी दृष्टि में इतर लोग मनुष्य ही नहीं हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि सब-के-सब निर्दोष छूट जायँगे। जरा फीडिया को देखो न ?'

समोलो का पिता हाथ में हैट लिए हुए उनलोगों के पास आया और मुस्कुराकर कहने लगा—'मेरे लड़के ने सफाई देने से साफ इनकार कर दिया। यह बात सबसे पहले उसी के

दिमाग में आई। तुम्हारा लड़का तो वकील रखना चाहता था पर मेरे लड़के ने कहा—'मैं वकील नहीं चाहता।' उसके बाद चारों ने वकील रखना अस्वीकार किया।'

उसके बगल में उसकी पत्नी खड़ी थी। वह रह-रहकर आँखें बंद कर लेती थी और रुमाल से अपनी नाक पोंछती जाती थी। समोलो के पिता ने दाढ़ी पर हाथ फेरकर कहा—'सबसे विचित्र बात यह है कि उन्हें देखकर यही मन में उठता है कि इनसबों ने बेकार अपने को फँसाया है, व्यर्थ अपना सर्वनाश कर रहे हैं। पर दूसरे ही क्षण यह विचार उठता है कि इनसबों का ही विचार कदाचित ठीक हो। कारखाना अब खाली नहीं है। इन्हीं के विचारों के लोग पैदा होते जा रहे हैं। ऐसे लोग बराबर पकड़े जा रहे हैं पर उनका अंत नहीं हो रहा है। यह देखकर यही विचार उठता है कि कदाचित उन्हीं में वास्तविक शक्ति है।'

सिजोव—यह समस्या जटिल है। सहज में हमलोगों की समझ में नहीं आ सकती।

समोलो का पिता—आपका कथन सच है।

नाक से साँस लेते हुए उनकी पत्नी ने कहा—'उनसबों की आत्मा बलवती है।' माँ को लक्ष्यकर उसने मुस्कुराते हुए फिर कहा—'निलोना, मैंने अभी आपको बुरा-भला कहा। मेरा विश्वास था कि पावेल ने ही सब नवयुवकों को बरबाद किया है पर पुलिस-इंस्पेक्टर की वार्ता से यही झलकता है कि समोलो ने भी कम

उपद्रव नहीं मचाया है। उसने भी भरसक कोई बात उठा नहीं रखी है।'

उसे अपने पुत्र के लिये अभिमान था। यद्यपि वह अपने मन का भाव पूर्ण रीति से नहीं समझती थी। माँ उसके मन का भाव समझ गई। करुणा के साथ मुस्कुराकर बोली—'युवक-हृदय में सत्य का प्रवेश जल्दी होता है।'

लोग इधर-उधर घूम रहे थे और जोश के साथ बातें करते जाते थे। कोई भी अकेला नहीं दिखाई देता था। हर एक आदमी कुछ-न-कुछ कहना-सुनना चाहता था। रास्ते में धक्कम-धुक्का मचा हुआ था। प्रत्येक व्यक्ति किसी मजबूत स्थान पर बैठ जाना चाहता था।

बकिन का बड़ा भाई कांस्टेंटिन अपना हाथ हिलाते हुए इधर से उधर घूम रहा था। बोला—'जिलाधीश केपानो को इस मोकद्मे में स्थान नहीं मिला है!'

उसके पिता ने उसे चुप कराते हुए सावधानी से चारों ओर देखा।

उसने कहा—'मैं तो चुप नहीं रहूँगा। अफवाह गर्म है कि गत वर्ष उसने अपनी अदालत के एक मुहर्रिर को इसलिए मार डाला कि मुहर्रिर की पत्नी से उसका गुप्त प्रेम था। जो जज अपने क्लर्क की पत्नी से गुप्त संबंध रख सकता है, वह क्या न्याय करेगा? उस संबंध में क्या कहा जा सकता है? इसके अलावा वह चोर है!'

उसके पिता ने फिर उसे समझाकर रोकना चाहा।

समोलो का पिता—अदालतों में कहाँ न्याय है !

बकिन ने उसकी आवाज सुनी। दौड़कर उसके पास आया। उसके साथ खासी भीड़ थी। जोश से उसका चेहरा लाल हो रहा था। हाथ हिलाते हुए उसने कहा—'चोरी और खून के मामले का विचार जूरियों के हाथ में रहता है। क्योंकि किसान और सौदागर लोग साधारण व्यक्ति हैं ! पर सरकार के दुश्मनों का विचार सरकार के बड़े-बड़े अधिकारी करते हैं।'

कांस्टेंटिन—वेलोग सरकार के विरुद्ध क्यों हैं ? वे······।'

बकिन—(उसे बीच में ही रोककर) फीडिया मेजिन ने सच कहा था। तुम मेरा अपमान करते हो। मैं तुम्हें दो थप्पड़ देता हूँ। उसके लिये तुम मुझ पर अभियोग चलाकर मुझे अपराधी प्रमाणित करना चाहते हो। पर पहले किसने अपराध किया ? निश्चय तुमने।

पास खड़े चपरासी ने भीड़ को ठेलते हुए बकिन से कहा—'चिल्लाओ मत। याद है कहाँ खड़े हो ? यह सराय नहीं है।'

बकिन—मुझे खूब याद है कि मैं कहाँ हूँ। पर मैं आपसे पूछता हूँ कि यदि मैं आपको थप्पड़ मारूँ और आप भी बदले में मुझे थप्पड़ मारें। इस पर मैं आप पर मुकदमा चलाऊँ तो आप क्या कहेंगे ?

चपरासी ने कड़ाई से कहा—'मैं आपको निकाल दूँगा।'

बकिन—कहाँ और किसलिए ?

चपरासी—सड़क में ताकि आप यहाँ शोरगुल न मचावें।

बकिन—येलोग यही चाहते हैं कि हमलोग किसी भी हालत में अपना मुँह न खोलें।

बूढ़े ने पूछा – 'आप क्या चाहते हैं ?'

बकिन ने आँख फाड़कर चारों ओर देखा और धीरे से बोला—'सबलोगों को इजलास में क्यों नहीं आने दिया जाता ? सिर्फ संबंधी ही क्यों आने पाते हैं ? यदि तुम वास्तव में न्याय करना चाहते हो तो डरते क्यों हो ? सबके सामने विचार करो।'

समोलो के पिता ने जोर से कहा—'न्याय कौन करता है ?'

माँ कहना चाहती थी कि निकोले इवानोविच ने अदालत की बेईमानी के बारे में मुझसे बहुत कुछ कहा था। पर एक तो निकोले के अभिप्राय को उसने पूरी तरह समझा नहीं था और दूसरे उसकी कुछ बातें उसे भूल गई थीं। उन्हें याद करने के लिये वह भीड़ से अलग हो गई। उस समय उसकी निगाह एक युवक पर पड़ी जो उसकी ओर गौर से देख रहा था। उसका दाहिना हाथ पैंट की जेब में था जिससे बायाँ कंधा छोटा जान पड़ता था। माँ ने उसे कहीं देखा था। उसी समय वह दूसरी तरफ हट गया। माँ भी निकोले की बातों को याद करने की धुन में पड़ गई और उसे भूल गई। दूसरे ही क्षण उसके कानों में किसी का धीमा शब्द सुनाई पड़ा—'क्या यही बाईं तरफवाली औरत ?'

किसी ने प्रसन्नता के साथ जोर से कहा—'हाँ।'

माँ ने चारों ओर देखा। वही आदमी सामने खड़ा अपने

साथी से कुछ कह रहा था। उस आदमी की दाढ़ी काली थी। वह छोटा कोट और घुटने तक बूट पहने हुए था।

माँ की स्मृति पुनः जागृत हो उठी पर कुछ फल नहीं निकला।

इसी वक्त चपरासी ने चिल्लाकर कहा—'अभियुक्तों के संबंधी अपना-अपना टिकट दिखाकर भीतर जायँ।'

किसी ने कहा—'मानों तमाशा हो रहा है।'

लोगों में फिर उत्साह आ गया। लगे चपरासी से धक्कम-धुक्का करने।

बेंच पर बैठते हुए सिजोव ने कुछ कहा।

माँ—यह सब क्या है?

सिजोव—कुछ नहीं। सब बे-मतलब है। लोगों को समझ नहीं है। सदा अँधेरे में टटोला करते हैं।

किसी ने घंटी बजाकर कहा—'अदालत शुरू हो गई।'

सबलोग उठ खड़े हुए और पूर्ववत् जज और कैदी क्रमशः इजलास में आकर बैठ गए।

सिजोव ने माँ से कहा—'सरकारी वकील बहस करने जा रहा है, उसकी बातें ध्यान से सुनिए।'

माँ ने गर्दन उठाई और उचककर सामने की ओर देखा। उसके हृदय में नया भय उत्पन्न होने लगा।

सरकारी वकील उठा। उसने जजों की ओर मुँह फेरा। टेबुल पर केहुनी रखकर ठंढी साँस ली और दाहिना हाथ फैलाकर कहना शुरू किया।

पहला शब्द माँ के कान में नहीं पड़ा। सरकारी वकील के शब्द स्पष्ट थे। वह कभी धीरे से बोलता था और कभी तेज हो जाता था। वह अपने शब्द-भंडार को इस तरह खालीकर जजों का दिमाग भर रहा था जैसे गुड़ की डली को मक्खी घेरकर बैठ जाती हैं। पर उनमें भयानक कुछ नहीं था। उसके नीरस और तत्वहीन शब्द इस प्रकार इजलास में गूँज रहे थे जिस प्रकार पतझड़ में पत्ते झड़कर जमा हो जाते हैं। पर उसके शब्दाडंबर का पावेल और उसके साथियों पर किसी तरह का असर नहीं पड़ रहा था। वेलोग उसी प्रकार शांत और धीर थे। हँस-हँसकर बातें कर रहे थे और हँसी छिपाने के लिये कभी-कभी गंभीर हो जाते थे।

सिजोव—सरकारी वकील सब कुछ झूठ कह रहा है !

माँ ने यह कभी न कहा होता। वह स्पष्ट देख रही थी कि सरकारी वकील सभी अभियुक्तों को दोषी बता रहा है। वह किसी को बरी नहीं कर रहा है। उसने सबसे पहले पावेल के अपराधों का वर्णन किया फिर फीडिया मेजिन के बारे में कहा और उसके बाद बकिन के अपराधों का वर्णन किया और तीनों को एक ही श्रेणी का अपराधी बतलाया। उसके कथन का अभिप्राय यह था कि ये सब-के-सब अपराधी हैं और किसी का अपराध कम नहीं है। पर उसके शब्दों का जो साधारण अर्थ हो सकता है उनसे न तो वह घबराई, न डरी और न उसे संतोष था। उसे आशंका थी कि वह इससे भी भयानक बातें कहेगा

और शब्दों से भयानक उसकी आकृति उस वर्णन के समय हो जायगी।

उसने जजों की ओर देखा। उनके चेहरे से स्पष्ट था कि वे लोग सुनते-सुनते थक गए हैं। उनका मुर्झाया हुआ चेहरा भाव-शून्य था। सारा इजलास शून्य और मुर्दा-सा प्रतीत होता था और सरकारी वकील की बहस बिना किसी तरह का असर किए चारों ओर गूँज रही थी। उनमें-से एक रह-रहकर करवट बदलता था पर इससे उसकी मुर्दनी किसी भी तरह दूर नहीं होती थी। बूढ़ा जज उसी प्रकार आराम-कुर्सी पर बैठा था। माँ ने यह उदासीनता देखी। उसके मन में किसी प्रकार का रोष उत्पन्न नहीं हुआ। उसने मन-ही-मन कहा—'क्या यही न्याय है?'

यह बात उसके मन में बार-बार उठने लगी। जिस भयानक बात की उसने आशंका की थी वह उसके दिल से जाती रही। अब अन्याय के कारण उसका हृदय व्यथित हो उठा।

सरकारी वकील ने अपनी बहस समाप्त की। उसने जजों को झुककर सलाम किया और अपनी जगह पर बैठ गया। कुलीनों के सरदार ने सिर हिलाकर उसकी बातों का समर्थन किया। मेयर ने हाथ फैलाया और जिलाधीश ने मुस्कुरा दिया। लेकिन जजों पर उसकी बहस का कोई असर पड़ता नहीं दिखाई दिया क्योंकि वेलोग उसी तरह निश्चल थे।

बूढ़े जज ने फाइल उठाकर देखा। कहा—'अब अभियुक्तों के वकील बसह करें।'

सबसे पहले निकोले इवानोविच का साथी वकील उठा। वह शांति के साथ बहस करने लगा। पर माँ को उसकी बातें नहीं सुनाई देती थीं। सिजोव ने उसके कान में कहा—'आप उसकी बातें सुन रही हैं ? वह कह रहा है कि लोग गरीब हैं। सब-के-सब पागल हो गए हैं। वेलोग कुछ नहीं समझते। सब जंगली हैं।'

लोगों पर किए गए अत्याचारों का भाव उसके मन में जागृत हो उठा। उसने कहा—'लोगों को जिस दीनता का जीवन व्यतीत करना पड़ता है, जिस तरह के अन्याय सहने पड़ते हैं, जिस बेइमानी और दगाबाजी का शिकार बनना पड़ता है उसे देखकर कौन व्यक्ति व्यथित नहीं हो उठेगा ? इस जीवन के प्रति कौन व्यक्ति विद्रोह नहीं खड़ा करेगा ?'

एक जज ने बूढ़े जज के कान में कुछ कहा। इस पर बूढ़े जज ने वकील को लक्ष्यकर कहा—'जरा सावधानी से बहस कीजिए।'

सिजोव ने धीरे से कहा—'हूँ !'

माँ ने अपने मन में कहा—'क्या ये सब न्याय करने बैठे हैं?'

माँ सिजोव से कहने लगी—'ये तो मुर्दे मालूम होते हैं।'

सिजोव—डरिए मत। जिंदे होते जा रहे हैं।

माँ ने जजों की ओर देखा। उनके चेहरे पर परेशानी के लक्षण दिखाई देने लगे थे। दूसरा वकील बहस करने लग गया था। उसने अदब से कहना शुरू किया—'मैं अदब के साथ अदालत का ध्यान सरकारी वकील की बहस और खुफिया विभाग के गुप्तचरों की बातों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ·····।'

फिर उस जज ने बूढ़े जज से कुछ कहा। सरकारी वकील उठकर खड़ा हो गया। पर वह वकील कहता गया—'गुप्तचर जिमन अपने बयान में कहता है कि उसने गवाहों को धमकाया। सरकारी वकील ने भी अदालत के सामने ही गवाहों को धमकाया। अभियुक्तों की ओर से एतराज किए जाने पर अदालत ने उन्हें डाँटा भी है।'

सरकारी वकील क्रुद्ध होकर तेजी के साथ बोलने लगे। बूढ़ा जज भी क्रुद्ध होकर कुछ कहने लगा। वह वकील चुपचाप उनकी बातें सुनता रहा। बोला—'यदि सरकारी वकील समझते हैं कि मैंने शब्दों का ठीक प्रयोग नहीं किया है, मैं उन्हें बदल सकता हूँ पर मैं बहस का तरीका नहीं बदल सकता। मेरी बहस की वही बुनियाद रहेगी। मेरी समझ में नहीं आता कि सरकारी वकील इस प्रकार क्यों उत्तेजित हो उठे हैं।'

सिजोव—सब बातें खोलकर कह डालो। जरा भी कसर रखने की आवश्यकता नहीं है।

अदालत में जोश फैल गया। कोलाहल मच गया। सफाई के वकीलों ने हर तरह से आक्रमण शुरू किया। कड़े और भयानक शब्दों का प्रयोग शुरू हो गया। इससे जजों की शांति भंग हो गई। वे घबरा गए। जज लोग कभी आपस में सट जाते और सलाह करते अथवा एकाएक अलग होकर इस प्रकार शरीर हिलाने लगते मानों समस्त आक्रमणों को इसी प्रकार व्यर्थ कर देंगे। उनके आचरण से प्रगट होता था कि उन्हें भय है कि कहीं

विरोधी पक्ष की बातों और आक्रमणों का असर उनके हृदय पर न हो जाय और उनका हृदय पिघल जाय और इस तरह वे उस निश्चय को पूरा करने में असमर्थ हो जायँ जिसे किसी अन्य शक्ति ने जबर्दस्ती इनके सिर मढ़ दिया है। अदालत की यह दशा देखकर पीछे के बेंचों पर कानाफूसी होने लगी।

एकाएक पावेल उठा। चारों ओर शांति छा गई। माँ आगे की ओर झुककर सुनने लगी। उसने कहा—'अपने दल के अतिरिक्त मैं किसी दूसरी अदालत को नहीं मानता। इसलिए मैं किसी तरह की सफाई नहीं देना चाहता। मैं सिर्फ उन बातों को स्पष्ट कर देना चाहता हूँ जो आप नहीं समझ सकते हैं। सरकारी वकील ने बहस में कहा है कि हमलोगों ने साम्यवादी झंडे का जुलूस निकाला था। उनकी समझ में यह जार की अतुल शक्ति के प्रति बगावत है। मैं आपलोगों को बतला देना चाहता हूँ कि केवल जार की ही शक्ति इस देश को पंगु नहीं बना रही है। हमलोग उन सभी बाधाओं की जड़ खोदकर फेंक देना चाहते हैं जो जनसाधारण के सबसे निकट हैं और सबसे अधिक हानिकर हैं।'

पावेल के शब्द उस सन्नाटे में गूँज उठे। इस आचरण से उसने अपने को जनसाधारण से बहुत ऊँचा उठा दिया। माँ का हृदय अभिमान से भर गया। उसकी दृढ़ पर धीर और गंभीर आकृति, उसका उन्नत ललाट, नीली आँखें सभी चमक उठे।

सभी जज व्यस्त और परेशान हो गए। कुलीनों के सरदार ने तोंदवाले जज से कुछ कहा। उस जज ने अपना सिर हिलाया

और बूढ़े जज से कुछ कहा। उधर से दूसरा जज भी उससे कुछ कह रहा था। बूढ़ा जज आराम कुर्सी पर हिलने लगा और उसने पावेल से कुछ कहा; पर इस युवक की गंभीर और तीव्र ध्वनि में उसकी बातें न जाने कहाँ विलीन हो गईं। पावेल ने कहा—'हमलोग साम्यवादी हैं, अर्थात् हमलोग उस व्यक्तिगत संपत्ति के शत्रु हैं जो लोगों में भेद डालती फिरती है, एक को दूसरे का शत्रु बना देती है और लोगों में व्यक्तिगत स्वार्थों के लिये द्वंद्व कराती है। इस द्वंद्व की सार्थकता को प्रमाणित करने के लिये भूठा बोलवाती है, भूठे प्रमाण पेश कराती है। इस तरह समस्त समाज झूठा, बेईमान और दगाबाज बनता जा रहा है। हमलोगों का मत है कि जो लोग अपनी समृद्धि के लिये जनसाधारण को साधन बनाते रहते हैं वे मनुष्य नहीं हैं। हमलोग इसके विरोधी हैं। हमलोग उस अवस्था से कभी भी सहमत नहीं हो सकते। मानवसमाज के साथ उसका क्रूर व्यवहार हमलोगों को असह्य है। हमलोग इसी तरह के दल कायम करके उन अवस्थाओं के साथ अनवरत संग्राम करेंगे और इस तरह मनुष्य के शरीर और आत्मा को दास तथा पंगु बनाए जाने का सतत विरोध करेंगे! जिन-जिन बातों से हमलोग समाज की क्षति और व्यक्ति विशेष का लाभ देखेंगे उनका घोर विरोध करेंगे। हमलोग मजूर हैं। हमीं लोगों के श्रम से सब कुछ तैयार होता है। छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी चीजें हमींलोग बनाते हैं। पर हमलोग हर तरह के साधारण मानवी अधिकारों से वंचित हैं। हमलोगों

को अपने हक के लिये लड़ने का भी अधिकार नहीं है। जो चाहे अपने इच्छानुसार हमलोगों का उपयोग अपने लाभ के लिये कर सकता है। लेकिन अब हमलोग स्वाधीन होना चाहते हैं। हमलोग स्वाधीन होकर उन समस्त शक्तियों का मुकाबिला करना चाहते हैं जो हमें इस तरह अपने अधीन रखना चाहती हैं। हमलोगों का सिद्धान्त बहुत ही सरल है। जनसाधारण ही राष्ट्र की शक्ति है। राष्ट्र का सब कुछ उनका है। काम करना सबका कर्तव्य है। व्यक्तिगत संपत्ति का नाश होना चाहिए। यही हम-लोगों का उद्देश्य है। इससे आपलोगों को स्पष्ट हो जाना चाहिए कि हमलोग बागी या विद्रोही नहीं हैं।

इतना कहकर पावेल ने मुस्कुरा दिया। उसका चेहरा तेज से चमक रहा था।

बूढ़े जज ने पावेल की ओर देखकर कहा—'केवल विषय से संबंध रखनेवाली बातें कहो।' माँ ने देखा कि उसकी आँखों में क्रोध और क्षोभ भरा है। जिस भाव से अन्य सब जजों ने पावेल को देखा उसे लक्ष्यकर माँ काँप उठी। उसे ऐसा मालूम हुआ कि उनकी आँखें पावेल के रक्त की प्यासी हो रही हैं। वे उसके शरीर में धँसी जा रही हैं और वहाँ से रक्त खींचकर इन जजों के जर्जर शरीर को खींचना चाहती हैं। पर इसका पावेल पर कोई असर नहीं पड़ा वह उसी प्रकार अटल खड़ा रहा और अपनी बातें कहता गया—'हमलोग बागी और क्रांतिकारी बतलाए गए हैं। यह निश्चय है कि हमलोग तब तक क्रांतिकारी बने रहेंगे

जबतक व्यक्तिगत संपत्ति कायम रहेगी और व्यक्ति विशेष या दल विशेष के सुख और समृद्धि के लिये समस्त साधारण जन को काम करना पड़ेगा। जिस समाज के स्वार्थों की रक्षा के लिये आपलोग नियुक्त किए गए हैं उसके हमलोग कट्टर शत्रु हैं इसलिए आपके भी कट्टर शत्रु हैं और हमलोगों में तब तक मेल असंभव है जब तक हमलोग उस समाज का नाश न कर दें और पूर्ण विजय न लाभ करें। हमलोगों को पूर्ण विश्वास है कि एक दिन मजूरों की विजय निश्चय होगी क्योंकि आपमें शक्ति नहीं है। आपको अपनी शक्ति का केवल भ्रम है। जिस संपत्ति की अभिवृद्धि और रक्षा के लिये लाखों मनुष्यों को दासत्व के कठिन पाश में बाँधकर रखा गया है। जिस शक्ति के सहारे हमलोगों पर जुल्म और अत्याचार किया जाता है उसी के लिये आपस में ही फूट और विरोध पैदा होता है और उनलोगों की शारीरिक और मानसिक शक्ति का नाश होने लगता है! संपत्ति की रक्षा करना उसे सम्हालकर रखना साधारण काम नहीं है। इसलिए हमलोगों की दृष्टि में आप सब लोग—हमारे शासक—हमलोगों से कहीं बुरी दासता में फँसे हैं। हमलोगों का तो केवल शरीर बंधन में है पर आपलोगों की आत्मा ही बंधन में है। आपलोग अपनी प्रकृति और रहन-सहन तो नहीं बदल सकते और उसीका बोझ आपलोगों की आत्मा को अंध और बधिर बना रहा है। पर हमलोगों की आत्मा स्वतंत्र है। उसके मार्ग में किसी तरह की बाधा नहीं है। जान-बूझकर आपलोग हमलोगों को भी विष

पिलाते हैं उसका असर उस दवा के सामने कुछ नहीं होता जो आपही लोग अनजान में हमलोगों को देते हैं। यह दवा मजूरों के रग-रग में प्रवेश करके उनकी आत्मा को उन्मत्त बनाती जा रही है। यहाँ तक कि उनका आत्मिक विकास आपसे कहीं अधिक होता है। देखिए! आपमें एक भी ऐसा नहीं निकल सकता जो अपनी इस शक्ति को आदर्श मानकर उसके लिये संग्राम करे। वास्तविक न्याय से अपनी रक्षा करने के लिये आपने हर तरह की बातें कह डाली हैं। पर आप कोई भी नई बात नहीं पेश कर सकते क्योंकि आपकी आत्मा खोखली है। पर हमलोगों के आदर्श नित नया रूप धारण करते जाते हैं, उसका प्रकाश लोगों के हृदय में घुसकर उन्हें जागृत और सचेष्ट कर रहा है। जिससे जन साधारण स्वाधीनता के भावी युद्ध के लिये तैयार हो रहा है उनकी महत्ता का प्रभाव सब पर पड़ रहा है और विश्व भर के मजूर एकता के वृहत् और सुदृढ़ बंधन में बँधते जाते हैं। अत्याचार और जुल्म के अतिरिक्त आपके पास दूसरा कोई साधन इस बढ़ती शक्ति को रोकने का नहीं है। पर आपकी धूर्तता और अत्याचार का सबको पता चल गया है। अब सबकी आँखें खुल गई हैं। जिनके द्वारा आप आज हमलोगों पर अत्याचार करा रहे हैं वे ही कल हमसे भाई की तरह गले मिलेंगे और हाथ मिलाकर हमारे दल में शामिल हो जायँगे। आपकी अपनी शक्ति में भी एकता नहीं है। उसमें भी दलबंदी के कीड़े लग गए हैं और आपलोगों को खाकर ही छोड़ेंगे। हमलोगों की शक्ति

सजीव है क्योंकि उसका उद्देश्य समस्त मजूरों की एकता और अभिवृद्धि है। आपका प्रत्येक काम अपराध है क्योंकि उसमें जन-साधारण को पंगु बनाने का अध्यवसाय है। हमलोगों का प्रयास जनसाधारण को उस राक्षस से मुक्त करना है जो आपलोगों के कारण उनके हृदयों में समा गया है और उन्हें पंगु बनाए है। आपलोगों ने मनुष्य को निर्जीव बनाकर उसे टुकड़े-टुकड़े कर डाला है। साम्यवाद उन्हीं को एकता के सूत्र में बाँधकर उनमें पुनः जान डालेगा। यह ध्रुव सत्य है।'

क्षणभर चुप रहकर उसने फिर जोर देकर कहा—'यह ध्रुव सत्य है।'

जजों का चेहरा विकृत हो गया। वे आपस में बातें करने लगे। पर उनकी आँखें पावेल पर जमी हुई थीं। माँ को मालूम हुआ कि वे उसके हृष्ट-पुष्ट शक्तिशाली और ताजे शरीर से डाह कर रहे हैं। सभी अभियुक्त ध्यानपूर्वक पावेल की बातें सुन रहे थे। उनकी आँखें चमक रही थीं। माँ तन्मय होकर पावेल की बातें सुन रही थी। उसके प्रत्येक शब्द उसके दिमाग में बैठते जा रहे थे। बूढ़ा जज बीच-बीच में पावेल को रोककर कुछ कहता जाता था। एकबार उसने मुस्कुरा भी दिया था पावेल सदा शांत होकर उसकी बातें सुनता और फिर उसी प्रकार अपनी बातें कहना शुरू करता। पावेल देर तक बोलता रहा। अंत में बूढ़े जज ने हाथ हिलाते हुए उससे कुछ कहा। इसपर पावेल ने कहा—'अब मुझे अधिक कुछ नहीं कहना है। आपको

अपमानित करने के इरादे से मैंने कुछ नहीं कहा है। यदि सच पूछिए तो मुझे आपपर दया आती है कि आपको बेमन होकर इस तरह न्याय का नाटक रचाना पड़ा है। आप भी मनुष्य हैं और मनुष्य को इस प्रकार विवश होकर मनुष्य की हानि करते देखकर और मनुष्यता की मर्यादा से नीचे गिरते देखकर शर्म मालूम होती है।'

इतना कहकर वह जजों की ओर देखे बिना ही बैठ गया।

नखोदका के हर्ष की सीमा नहीं थी। उसने उल्लास के साथ पावेल से हाथ मिलाया। समोलो, मेजिन तथा अन्य सभी साथी उसकी प्रशंसा करने लगे। वह अपने साथियों की अवस्था पर चकित हो मंद मंद हँस रहा था। उसने माँ की ओर देखा और अपना सिर हिलाया। मानों वह उसकी अनुमति चाहता हो।

माँ काँप रही थी। उसने प्रसन्नता के साथ उसकी बातों का अनुमोदन किया।

सिजोव—पावेल ने मुँहतोड़ जवाब दिया! खूब!

माँ ने चुपचाप अपना सिर हिला दिया। उसे इस बात का संतोष था कि पावेल ने इतना नम्र होकर सब कुछ कह डाला। उसके हृदय में इस बात की आशंका बढ़ गई कि इससे पावेल के अहित की अधिक संभावना है पर उसका हृदय अभिमान से उछल रहा था और उसके प्रत्येक शब्द माँ के हृदय में गूँज रहे थे।

———

सोलहवाँ परिच्छेद

बूढ़े जज का ईशारा पाकर नखोदका उठकर खड़ा हुआ। अपने शरीर को हिलाया डुलाया और जजों की ओर देखकर कहने लगा—'सफाई देनेवाले सज्जन !'

एक जज ने उसे बीच में ही रोककर गुस्से से चिल्लाकर कहा—'तुम्हारे सामने अदालत है। सफाई देनेवाले नहीं हैं।'

नखोदका का भाव देखकर माँ समझ गई कि वह जजों को चिढ़ाना चाहता है। उसकी मोंछें हिलीं। उसकी आँखें चंचल हो उठीं। माँ इस चंचलता का अभिप्राय समझती थी। उसने अपने सिर को ठोंका और साँस ली तथा सिर हिलाकर कहने लगा—'क्या आपका कहना सच है ? मुझे विश्वास नहीं होता। आपलोग जज नहीं हैं बल्कि मुद्दालेह हैं। सफाई देनेवाले हैं।'

बूढ़े जज ने रुखाई से कहा—'सिर्फ अभियोग के संबंध में तुम्हें जो कुछ कहना हो कह सकते हो।'

नखोदका—अभियोग के संबंध में ही। अच्छी बात है। मैंने अपने दिल को समझा दिया है कि आपलोग सचमुच जज हैं। स्वतंत्र और ईमानदार हैं।'

बूढ़ा जज—अदालत को इन सब बातों की जरूरत नहीं है।

नखोदका—अदालत को इन सब बातों की जरूरत नहीं है। अच्छी बात है पर मैं सरसरी तौर पर सब बातें कह डालना चाहता हूँ। आपलोग अपने और पराए का भेद नहीं जानते।

आपलोग स्वतंत्र विचार के आदमी हैं। पक्षपातहीन हैं। आपके सामने दो दल खड़े हैं। एक दल कहता है कि इसने मुझे लूट लिया। मेरा सर्वनाश कर डाला। दूसरा दल उत्तर देता है कि मेरे हाथ में शक्ति है अधिकार है, इसलिए इस तरह लूटने का और सर्वनाश करने का मुझे हक है।'

बूढ़ा जज—कहानी की जरूरत नहीं है।'

नखोदका—क्यों? मैंने तो सुना है कि बूढ़े लोग कहानियाँ बहुत पसंद करते हैं और खासकर नटखट कहानियाँ।

बूढ़ा जज—यदि तुम्हें कुछ कहना है तो मजाक और ताना-जनी छोड़कर अभियोग के बारे में कहो अन्यथा मैं तुम्हें बोलने से रोक दूँगा।

नखोदका—(गंभीर होकर) केवल अभियोग के बारे में? पर मैं केवल अभियोग के बारे में क्यों कुछ कहूँ? उस संबंध में मेरे साथी ने पर्याप्त कह डाला है। इससे अधिक आपलोगों को समय पर आप ही विदित हो जायगा।

बूढ़ा जज खड़ा हो गया। बोला—'मैं तुम्हें रोक देता हूँ। तुम कुछ नहीं कह सकते। वैसिली, समोलो! तुम्हें कुछ कहना है?'

अपने ओठों को दबाते हुए नखोदका अपनी जगह पर बैठ गया। समोलो उठ खड़ा हुआ और बोला—'सरकारी वकील ने हमलोगों को असभ्य और सभ्यता का दुश्मन बतलाया है।'

बूढ़ा जज—सिर्फ अभियोग के संबंध में जो कुछ कहना हो कह सकते हो।

समोलो—इसका संबंध अभियोग से है। मैं पूछता हूँ कि कौन-सी ऐसी बात है जिसका संबंध ईमानदार आदमी से न हो। आप कृपाकर मुझे बाधा न दें। मैं आपसे पूछता हूँ कि आपकी वह सभ्यता कैसी है ?

बूढ़ा जज—(खिसियाकर) यहाँ हमलोग बहस करने के लिये नहीं बैठे हैं। मतलब की बातें कहिए !

नखोदका के व्यवहार से जजों का मिजाज बदल गया था। मानों उसके शब्दों ने उनके हृदय पर से कोई वस्तु हटा दी थी। उनके चेहरे पर झुर्रियाँ दिखाई देने लग गई थीं। पावेल की बातों से वे उत्तेजित अवश्य हो उठे थे पर शांत हो गए थे। उसकी बातों में सार्थकता थी, मार्मिकता थी, आदरणीय तत्व थे, जिसने उनके उद्वेग और उत्तेजना को बढ़ने से रोक दिया था। नखोदका ने इस रुकावट को हटाकर उनके भीतर के भाव को व्यक्त कर दिया। जजों ने समोलो की ओर देखा और आपस में कुछ कहने लगे। उनकी आँखें समोलो की ओर इस प्रकार झपट रही थीं मानों उसे निगल जायँगी।

समोलो उसी प्रकार कहने लगा—'आपलोगों ने गुप्तचर नियुक्त कर रखा है। आपलोग स्त्रियों और बालिकाओं का सर्वनाश करते हैं। लोगों को ऐसी अवस्था में डाल देते हैं कि वे मजबूर होकर चोरी, बेईमानी, दगाबाजी और जालसाजी करने लगते हैं। आपलोग उन्हें शराब पिलाकर नष्ट करते हैं उन्हें हर तरह की बुराइयों का शिकार बना देते हैं। "यही आप

की सभ्यता है और हमलोग इस सभ्यता के परम शत्रु हैं।'

बूढ़े जज ने समोलो को रोकना चाहा पर वह उसकी ओर ध्यान दिए बिना ही कहता गया—'हमलोगों का आदर्श दूसरी सभ्यता है। हमलोग उसे चाहते हैं। उसका आदर करते हैं। उस सभ्यता के जनक को आपलोगों ने कठोर दंड दिया है, उन्हें जेल में सड़ा डाला है, पागल बना दिया है .....।'

बूढ़ा जज—(उठकर) मैं तुम्हें बोलने से रोकता हूँ। फीडिया मेजिन ! तुम कुछ कहना चाहते हो ?

मेजिन उठा और उबल पड़ा—'मैं जानता हूँ कि आपलोगों ने मुझे दंड दे डाला है पर मुझे जहाँ कहीं भेजिए मैं भाग आऊँगा, निकल भागूँगा और इसी काम में लग जाऊँगा। यावज्जीवन यही मेरा धंधा रहेगा।'

सिजोव जोर से काँप उठा। तमाम लोग चंचल हो उठे। उत्तेजना का तूफान बह गया। एक स्त्री चिल्ला उठी। कोई खाँसने लगा। पुलिस के लोग कैदियों की ओर विस्मय के साथ देखने लगे। बूढ़े जज ने कहा—'इवान गुसेव !'

इवान गुसेव—मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

बूढ़ा जज—वेसिली गुसेव !

वेसिली गुसेव—मुझे भी कुछ नहीं कहना है।

बूढ़ जज-पीडर बकिन !

बकिन खड़ा हुआ और बोला—'आपको शर्म आनी चाहिए। मैं अकिल का मोटा हूँ फिर भी इतना समझता हूँ कि न्याय क्या

है।' इतना कहकर उसने अपना हाथ अपने सिर के ऊपर उठाया और आँखें मींचकर इस तरह देखने लगा मानों सुदूर की कोई वस्तु देखने का यत्न कर रहा हो।

बूढ़ा जज चकित था। उसने चिल्लाकर पूछा - 'यह सब क्या है?'

बकिन—सब कुछ बेकार है।

इतना कहकर वह बेंच पर बैठ गया। उसकी काली आँखें देखने से विचित्र धारणा होती थी। उनमें घृणा के भाव भरे थे। सभी ने इसे लक्ष्य किया। जजों को भी यही मालूम हुआ कि उसके शब्दों से कोई तीखी वस्तु उसकी आँख से निकलनेवाली है। पीछे की बेंच पर एकदम सन्नाटा छा गया। सरकारी वकील ने कुलीनों के सरदार के कान में कुछ कहा। इसी तरह की काना-फूसी चारों ओर आरंभ हो गई।

माँ को थकावट मालूम होने लगी। उसका चेहरा सुस्त हो गया। उसके ललाट पर पसीने की बूँदें छा गईं। समोलो की माँ हिली, गर्दन और कंधा हिलाया और अपने पति से धीमे स्वर में बोली—'क्या मामला है? क्या यह संभव है?'

समोलो का पिता—सब कुछ संभव है!

समोलो की माँ—पर समोलो का क्या होगा?

समोलो का पिता—चुप!

सभी दर्शकों के हृदय व्यथित थे पर वे उसका कारण नहीं समझ सकते थे। घबराहट से सबकी आँखें बंद हो गई थीं

मानों किसी अव्यक्त, गूढ़ और भयानक वस्तु की चकाचौंध से आँखें चौंधिया गई हों। इस घटना की विभीषिका का वेलोग अनुमान नहीं कर सकते थे इसलिए उसका कुछ मूल्य नहीं समझा और उसे बहुत साधारण-सी बात मान ली जिसका तात्पर्य वे भलीभाँति समझ सकते थे। इसलिए बकिन के भाई ने जोर से कहा—'सरकारी वकील जो चाहे कह सकता है, जितनी देर तक चाहे बोल सकता है पर अभियुक्तों को क्यों नहीं बोलने दिया जाता ?'

बेंचों के बीच-बीच में चपरासी खड़े थे। उन्होंने हाथ हिला-कर चुप रहने का आदेश दिया।

समोलो के पिता ने पीछे गर्दन फेरी और अपनी पत्नी के कान में कहने लगा—'आप उन्हें अपराधी कह सकती हैं ? पर उन्हें अपनी अवस्था समझाने दीजिए! उन्हें कहने दीजिए कि वेलोग किसके विरोधी हैं ? क्या वेलोग सबके विरुद्ध हैं ? हम-लोगों का भी स्वार्थ है। पावेल ने ठीक ही कहा है। हमलोग उनकी परिस्थिति समझना चाहते हैं। उन्हें अवश्य बोलने देना चाहिए।'

चपरासी ने अँगुली दिखाकर कहा—'चुप रहिए।'

सिजोव ने गुस्से से अपना सिर हिलाया।

माँ एकटक जजों की ओर देख रही थी। उसने उन्हें प्रति-क्षण अधिकाधिक उत्तेजित होते पाया। उनकी फुसफुसाहट उसके कलेजे में तीर के समान चुभ रही थी। उसे ऐसा मालूम हो रहा

था कि सभी जज ललचाई आँखों से पावेल और उसके साथियों के हृष्ट-पुष्ट शरीर को देख रहे हैं। धनी को देखकर गरीब तथा नीरोग शरीर को देखकर जिस तरह रोगी के मन में डाह उत्पन्न होती है उसी प्रकार की डाह इन जजों के मन में पैदा हो रही थी उनके हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ शरीर को देखकर—जिनमें कार्यक्षमता उद्योगशीलता और तत्परता थी—उन जजों के मुँह में पानी भर आया। जिस तरह शक्तिहीन हिंसक ताजे शिकार को देखता है पर उसे पकड़ने के लिये अपनी असमर्थता और हीनता का स्मरण-कर हाथ मलमलकर पछताता है और बदले की आग और वेदना से आपही जलने लगता है ठीक वही हालत उन जजों की मालूम होती थी।

यह विचित्र धारणा माँ के हृदय में जितनी प्रबल होती गई वह उन जजों को उतने ही गौर से देखने लगी। वे सब जज भी अपने क्षोभ को छिपाने में असमर्थ थे। उनका क्षोभ उस बेकस और लाचार भूखे के समान था जो किसी समय इच्छानुसार खा सकता था। एक तो नारी का हृदय योंही दयाशील होता है, दूसरे माता का हृदय! प्रत्येक माता को अपने पुत्र का शरीर ही कहीं अधिक प्यारा होता है। उसके भीतर रहनेवाले जीव अथवा आत्मा का वह ख्याल तक नहीं करती। माँ इस दृश्य को देखकर काँप उठी। उसे यह सह्य नहीं था कि वे गलित-पलित शरीर-वाले, जीर्ण-शीर्ण कायवाले, चिचुके गालवाले, सूखी और नीरस आँखोंवाले जज उन युवकों के हृष्ट-पुष्ट शरीर, विशाल वक्षस्थल,

उन्नत ललाट, तेजपूर्ण आँखें और गर्म रक्त की ओर इस प्रकार देखें। माँ को प्रतीत हुआ कि पावेल भी उनकी इस डाह भरी चितवन को समझ गया है। वह भय से काँपता हुआ सापेक्ष माँ की ओर देखने लगा।

माँ ने देखा कि उसकी आँखें सूखी थीं पर उनमें उसी तरह की शांति, धीरता और तेज वर्तमान था। कभी-कभी वह माँ को देखकर सिर हिला देता था और हँस पड़ता था। माँ इस हँसी का मतलब समझती थी। उसने कहा–'अब शीघ्र समाप्त होना चाहिए'।

टेबुल का सहारा लेकर बूढ़ा जज उठा और खड़ा होकर एक कागज पढ़ने लगा।

सिजोव—वह फैसला सुना रहा है।

इजलास में सन्नाटा छा गया। सभी की आँखें बूढ़े जज की ओर फिर गईं। दूसरे जज भी खड़े हो गए थे। जिले का हाकिम कंधे पर सिर झुकाकर छत की ओर देख रहा था। मेयर अपनी छाती पर दोनों हाथ रखकर चुपचाप बैठा था, कुलीनों का सरदार दाढ़ी पर हाथ फेर रहा था। तोंदवाला जज उसका साथी और सरकारी वकील अभियुक्तों की ओर ताक रहे थे। इन सब के पीछे दीवाल पर जार की तस्वीर टँगी थी। ऐसा मालूम होता था कि जार इन सबकी ओर देख रहा है। चित्र पर लगा मकड़ी का जाला हिल रहा था और कोई कीड़ा उसपर रेंग रहा था।

संतोष की साँस लेते हुए सिजोव ने कहा—'सबको निर्वासन का दंड दिया गया है। गनीमत है, मुझे तो भय था कि कहीं

सबों को सख़्त और सपरिश्रम कारावास का दंड न दिया जाय। (माँ से) आप दुखी न हों। यह कुछ नहीं है।

माँ अपने ही विचारों में निमग्न तथा परेशान थी। माँ ने उस बूढ़े के हर्ष का भलीभाँति अनुमान किया क्योंकि इससे निराशा में उसे बड़ा सहारा मिल गया। पर माँ को इससे जरा भी हर्ष नहीं हुआ। बोली—'यह तो मैं पहले से ही जानती थी'।

सिजोव—पर अब तो निश्चय हो गया। इससे पहले कोई भी निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता था कि अधिकारी लोग क्या करेंगे। फीडिया ने खूब दृढ़ता दिखाई।

वेलोग कटघरे के पास गए। माँ ने पावेल से हाथ मिलाया। माँ की आँखों से आँसू बह रहे थे पर फीडिया और पावेल प्रसन्न थे। हँस-हँसकर बातें कर रहे थे। सभी में जोश था, सब प्रसन्न थे। स्त्रियाँ रो रही थीं पर स्वभाव से अधिक और शोक से कम। उन्हें इस भीषण घटना की चोट नहीं थी सिर्फ उन्हें इस जुदाई का विषाद था। बल्कि इजलास में जो कुछ हुआ था उससे यह विषाद भी इतना भीषण नहीं प्रतीत होता था। उस समय की विचित्र हालत थी प्रत्येक माता और पिता के हृदय में एक साथ ही दो तरह के विचारों ने आसन जमा लिया था। जहाँ एक ओर वे-लोग अपने पुत्रों के सिद्धांतों को स्वीकार नहीं कर रहे थे और अपना बड़प्पन उन पर प्रगट करना चाहते थे वहाँ दूसरी ओर उनके हृदय में उनके लिये आदर और श्रद्धा थी। जहाँ एक ओर वेदना और विषाद-भरी निराशा थी वहाँ दूसरी ओर इन नव-

युवकों की आशा-भरी बातें थीं जो दृढ़ता और साहस के साथ चिल्लाकर कह रहे थे कि नए जीवन का उदय शीघ्र होनेवाला है जिसकी ये बड़े बूढ़े कल्पना नहीं कर सकते थे पर जिसका क्षीण प्रकाश दिखाई देने लग गया था। इस नवीन भाव और अनोखे विचार ने उनके हृदय को इस प्रकार घेर लिया था कि वे कुछ भी नहीं कह सकते थे पर जिसका क्षीण प्रकाश दिखाई देने लग गया था। इस नवीन भाव और अनोखे विचार ने उनके हृदय को इस प्रकार घेर लिया था कि वे कुछ भी नहीं कह सकते थे। शब्द तो मुँह से बहुत निकलते थे पर साधारण पूछताछ के अतिरिक्त उनमें कुछ नहीं रहता था। कोई कपड़े पोशाककी बात कहता था, कोई खाने-पीने के लिये सात भाग करता था और कोई व्यर्थ अधिकारियों को उत्तेजित और नाराज न करने का उपदेश देता था।

समोलो के पिता—हम और वे दोनों यह करते-करते थक जायँगे।

बकिन के भाई ने हाथ हिलाकर अपने छोटे भाई से कहा—"इसे कौन स्वीकार कर सकता है कि न्याय किया गया है!"

बकिन—आप मैना की हिफाजत रखिएगा। मैं उसे बहुत चाहता हूँ।

उसका भाई—वापस आकर उसे भला-चंगा पाओगे।

बकिन—वहाँ मुझे करना ही क्या है।

सिओव ने अपने भतीजे का हाथ पकड़कर धीरे से कहा—

'फीडिया ! तुमने प्रवास की तैयारी कर ली ! जाने के लिये तैयार हो गए ?'

फीडिया ने मुस्कुराकर अपने चाचा के कान में कुछ कहा। बूढ़ा भी हँस पड़ा पर दूसरे ही क्षण उसने गंभीर होकर कहा—'जाओ !'

माँ भी पावेल को उन्हीं बातों की ताकीद कर रही थी पर उसके हृदय में शशंका, पावेल और अपने बारे में पूछने के लिये हजारों प्रश्न उठ रहे थे। इन सब भावनाओं के भीतर उसके हृदय में एक नए भाव का उदय हो रहा था जो पावेल के लिये मातृप्रेम से सदा सराबोर था। वह पावेल को प्रसन्न करना चाहती थी और सदा उसके हृदय के पास रहना चाहती थी। उसके हृदय से सारी दुर्भावनाओं का अंत हो गया था सिर्फ जजों की स्मृति की क्षीण कल्पना रह गई थी। बोली 'युवकों का विचार करने के लिये युवक जज ही नियुक्त होने चाहिएँ, बूढ़े नहीं।'

पावेल—समाज का संगठन ही इस प्रकार होना चाहिए कि लोगों को अपराध करने के लिये बाध्य न होना पड़े।

माँ ने देखा कि नखोदका सबसे बातें कर रहा है। वह उससे बातें करने लगी क्योंकि उसकी समझ में पावेल से अधिक उसे मातृ-स्नेह की आवश्यकता थी। वह विविध विषयों पर नखोदका के साथ देरतक बातचीत करती रही। वह उसी प्रकार हस-हँसकर जवाब देता रहा। उसके चारों ओर लोग बातें कर रहे थे। वह सबकी बातें सुन रही थी, सब कुछ समझ रही

थी और मन-ही-मन प्रसन्न हो रही थी। अपने हृदय की इस उदारता पर उसे विस्मय था।

सिपाही कैदियों को लेकर चले गए। माँ इजलास से बाहर आई। रात हो गई थी। सड़कों पर लालटेन जल रहे थे। आकाश में तारे चमक रहे थे। बाहर युवकों का दल उत्कंठा के साथ खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था।

एक आदमी ने सिजोव से पूछा—'क्या सजा मिली ?'

सिजोव—निर्वासन !

वह—सबको ?

सिजोव—हाँ, सबको।

वह सिजोव को धन्यवाद देकर चला गया। उसी समय दस आदमियों के दूसरे दल ने उन्हें घेर लिया। उसमें युवक और युवतियाँ दोनों थे। लगे सवाल पर सवाल करने। और लोग भी आ गए। माँ और सिजोव रुक गए। लोग उनसे तरह-तरह के प्रश्न करने लगे कि क्या सजा मिली ? सजा सुनाए जाने पर अभियुक्तों की क्या दशा थी, किसने क्या कहा ? सभी के मुँह से एक ही तरह के प्रश्न निकलते थे। सभी विचार के संबंध में सब कुछ सुनने के लिये व्यग्र और उत्कंठित थे। उनकी वह दशा देखकर स्वभावतः उन्हें सब घटना सुनाकर संतुष्ट करने की इच्छा होती थी।

किसी ने कहा—'भाइयो, यही पावेल की माता हैं।'

उसकी यह बात सुनकर सब चुप हो गए। उसने माँ की

ओर अपना हाथ बढ़ाया और कहा—'आप मुझे हाथ मिलाने की अनुमति दें ।'

माँ ने उसके हाथ में अपना हाथ रख दिया । हाथ मिलाते हुए उसने माँ से कहा—'आपका पुत्र हमलोगों के लिये आदर्श है ।'

दूसरे ने चिल्लाकर कहा—'रूस के मजूरों की जय हो ।'

तीसरा—गरीब मजूरों की जय हो ।

चौथा—क्रांति चिरजीवी हो ।

यह जयघोष तेज और गंभीर होता गया । चारों ओर से लोग आ-आकर माँ और सिजोव के पास जमा होने लगे । पुलिस की सीटी की आवाज भी आने लगी, पर वह इतनी तेज नहीं थी । सिजोव हँस रहा था पर माँ को यह सब सुखद स्वप्न-सा प्रतीत होता था । उसकी आँखों से अनवरत आनंद के आँसू बह रहे थे । उसका गला रुँध गया था । जो कोई आता उससे वह हाथ मिलाती जा रही थी । उसके पास ही किसी ने कहा—'भाइयो, जो शैतान अपने राक्षसी उदर में रूस की प्रजा को रखता जा रहा है उस राक्षस ने अपने पेट में आज भी·· ·····।'

सिजोव—जो कुछ होना था हुआ ! चलिए माँ, घर चलें ।

इसी समय शशेंका आ पहुँची । वह माँ का हाथ पकड़कर तेजी के साथ उसे खींचकर सड़क के दूसरी तरफ ले गई और बोली—'यहाँ से चलिए । उनलोगों ने गिरफ्तारियाँ भी आरंभ कर दी हैं । सबको निर्वासन का दंड मिला !'

माँ—हाँ ।

शशेंका—उन्होंने क्या-क्या कहा ? आपके कहे बिना ही मैं सब कुछ समझ गई। उनमें अमोघ शक्ति है। पर वे उतने ही सरल हैं। अपने साथियों में सबसे कड़े हैं। वे भावुक और दयालु हैं। केवल अपने को प्रगट नहीं होने देना चाहते। वे सत्य के समान दृढ़, स्पष्ट और उन्नत हैं। वे सर्व गुण संपन्न हैं, वे विशाल हैं। पर कभी-कभी वे निष्प्रयोजन जिद्द कर जाते हैं, केवल इस आशंका से कि ऐसा न करने से कहीं उद्देश्य को हानि न पहुँचे। मैं इन्हें अच्छी तरह पहचानती हूँ।

उसके प्रेम-भरे उन्माद ने माँ की घबराहट और वेदना कम कर दी। उसमें नई शक्ति आ गई। उसने शशेंका का हाथ अपने हाथ में लेकर पूछा—'तुम पावेल से मिलने कब जाओगी ?'

शशेंका ने उसकी ओर देखकर कहा—'जिस वक्त मेरा काम सम्हालनेवाला आदमी मिल जायगा उसी वक्त मैं चली जाऊँगी। मेरे पास रुपया तो है पर मैं भी उसी तरह जाना चाहती हूँ। मुझे भी सजा मिलने ही वाली है। मुझे भी निर्वासन का ही दंड दिया जायगा। मैं उसी प्रांत में भेजे जाने की इच्छा प्रकट करूँगी जहाँ वे भेजे जायँगे।'

सिजोव दोनों के पीछे खड़ा था। बोल उठा—'तब पावेल से मेरा आशीस कह देना। मेरा नाम उन्हें बतला देना। वे समझ जायँगे। मेरा नाम सिजोव है। मैं फीडिया मेजिन का चाचा हूँ।'

शशेंका ने पीछे फिरकर उसकी ओर देखा। खड़ी होकर बोली—'मेरा मेजिन से परिचय है। मेरा नाम अलक्जेंड्रा है।'

सिजोव—तुम्हारे पिता का नाम !

शशेंका ने उसकी ओर देखा। बोली—'मेरे पिता नहीं हैं।'

सिजोव—क्या उनका देहांत हो गया ?

शशेंका—वे जीवित हैं। बड़े भारी जिमीदार और धनिक हैं। किसानों का रक्त चूसते हैं। ऐसे व्यक्ति को मैं अपना पिता नहीं मान सकती।

सिजोव चकित हो गया। क्षणभर बाद शशेंका की ओर कनखियों से देखकर बोला—'माँ, प्रणाम! मैं बाएँ तरफ जाऊँगा। रास्ते में ठहरकर चाय पीऊँगा और दो-चार बातें करूँगा। (शशेंका से) आप अपने पिता से रुष्ट हैं। आपके यही विचार हैं! आप इसके लिये स्वतंत्र हैं।'

शशेंका ने चिल्लाकर कहा—'यदि आपका लड़का बदमाश हो, लोगों को कष्ट देता हो, आपको सताता हो तो क्या आप भी यही बात उसके बारे में नहीं कहेंगे ?'

सिजोव ने धीरे से कहा—'यही कहूँगा।'

शशेंका—इससे यही तात्पर्य निकला कि न्याय के सामने आप अपने पुत्र की परवाह नहीं करते। तब मैं न्याय के समाने अपने पिता की परवाह क्यों करूँ ?

सिजोव ने मुस्कुरा दिया। उसने सिर हिलाया और ठंढी साँस लेकर बोला—'आप समझदार हैं। भगवान् आपको सुखी रखें। आप इसी तरह लोगों का उपकार करती रहें। आपसे पावेल की भेंट हो तो कह देना कि मैंने उसका भाषण सुना। सब बातें मेरी

समझ में नहीं आई, बातें भयानक अवश्य थीं पर सब सच हैं। हमलोगों की आँखें खुल रही हैं।'

इतना कहकर उसने अपना हैट उठाया और घूमकर दूसरी ओर चला गया।

शशेंका—भला आदमी मालूम होता है। इससे बड़ा काम चल सकता है। किताबें और परचे आसानी से इसके यहाँ छिपाए जा सकते हैं।

शशेंका का चेहरा अन्य दिनों की अपेक्षा आज मधुर और सरल दिखाई देता था। उसकी बातें सुनकर माँ ने अपने मन में कहा—'हमेशा क्रांति की बातें सोचा करती है। सदा उद्देश्य की चर्चा है। आज भी वह ध्यान से नहीं उतरा है।'

सत्रहवाँ परिच्छेद

माँ और शशेंका पलँग पर सटकर बैठी थीं। माँ ने फिर वही चर्चा छेड़ी। शशेंका से पावेल के पास जाने के बारे में पूछने लगी। शशेंका ने अपना सिर उठाया और उत्कंठा के साथ कहीं सुदूर देखने लगी। उसका मुर्झाया चेहरा गंभीर तथा चिंता-युक्त था।

माँ—तुम्हें बाल-बच्चे होंगे। मैं वहाँ आऊँगी और उन्हें प्यार से खेलाऊँगी। वहाँ भी हमलोग यहाँ से आराम से रहेंगे। पावेल को काम की कमी नहीं रहेगी। उसके हाथ में राजचिह्न है।

शशेंका ने गंभीर होकर कहा—'हाँ। बड़ा अच्छा होगा।' दूसरे ही क्षण वह चौंक पड़ी और आवाज बदलकर बोली—'वह वहाँ कभी भी नहीं बसेंगे। मुझे पक्का विश्वास है कि वे वहाँ से चले जायँगे।'

माँ—पर यदि बाल-बच्चे हो गए, तब ?

शशेंका—मैं कुछ नहीं कह सकती। वहाँ पहुँचकर मैं देखूँगी कि क्या होता है। ऐसी अवस्था में उन्हें मुझे अपने साथ नहीं समझना चाहिए। मैं उनके मार्ग में बाधा नहीं डाल सकती। वे सदा स्वतंत्र हैं। मैं उनकी सहधर्मिणी हूँ। पर उन्होंने अपने सिर पर जो काम उठाया है उसके सामने मैं अनेक वर्षों तक साधारण पत्नी के रूप में उनके साथ नहीं रह सकती। मैं जानती हूँ कि उनसे जुदाई कठिन होगी पर मैं उसका इंतजाम कर लूँगी। वे जानते हैं कि मैं किसी व्यक्ति को अपनी संपत्ति नहीं समझ सकती। मैं किसी भी तरह उनके मार्ग में बाधा नहीं डालूँगी।

माँ ने उसकी बातें ध्यान से सुनीं। वह जानती थी कि शशेंका सब कुछ सच कह रही है और जो कुछ कहती है उसे पूरा कर सकती है। यह सब यादकर उसे वेदना हुई। उसे गले लगाकर बोली—'बेटी, इसमें तुम्हें बड़ा कष्ट होगा।'

शशेंका ने मुस्कुरा दिया। उसका चेहरा लाल हो गया। वह अपना मुँह माँ के पास ले जाकर बोली—'इसमें बहुत दिन नहीं लगेगा और आप यह न सोचें कि इसमें मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। मैं कोई त्याग नहीं कर रही हूँ। मैं जो कुछ कर रही हूँ

उसे खूब समझती हूँ। मैं खूब जानती हूँ कि मेरी आशाएँ क्या हैं। यदि मैं उन्हें सुखी कर सकी तो मैं सुख पाऊँगी। मैं उनकी शक्ति को, उनके उत्साह को बढ़ाना चाहती हूँ। उन्हें पूर्ण सुख और आराम देना चाहती हूँ। मैं उन्हें चाहती हूँ और वे मुझे चाहते हैं। जो मैं उन्हें दूँगी वे मुझे बदले में देंगे। इस तरह हमलोग एक दूसरे की शक्ति बढ़ावेंगे और आवश्यकता पड़ने पर मित्र की भाँति अलग हो जायँगे।'

इतना कहकर शशेंका चुप हो गई। कमरे में सन्नाटा छा गया। माँ ने पावेल की यादकर शशेंका को हृदय से लगा लिया।

इसी समय निकोले इवानोविच ने प्रवेश किया। वह थका हुआ था पर उसमें उसी प्रकार उत्साह भरा था। उसने कहा—'शशेंका, यहाँ से जितनी दूर हो सके चली जाओ। आज सबेरे से दो गुप्तचर मेरा पीछा कर रहे हैं। और पुलिस इतना लुकछिपकर चल रही है कि मुझे गिरफ्तारी की संभावना है। मुझे मालूम हो रहा है कि कहीं कोई घटना अवश्य हुई है। खैर, यह पावेल का बयान है। इसे फौरन प्रकाशित किया जायगा। इसे लुडमिला के पास ले जाओ। पावेल का बयान बड़ा ही सुंदर हुआ है। इसका बड़ा असर पड़ेगा। गुप्तचरों से सावधान होकर जाना। थोड़ी देर ठहर जाओ। इन कागजों को भी छिपाकर रख लो। इन्हें इवान को दे देना।'

वह बातें करता जाता था और अपना हाथ मलता जाता था, जो शीत से सर्द हो रहा था और साथ ही टेबुल का दराज खोलकर

कागजों को उलटता-पुलटता और छाँटता जाता था। कुछ कागजों को वह फाड़ता जाता था और कुछ को अलग रखता जाता था। वह व्यस्त और परेशान था। बोला—'इस स्थान की सफाई किए अभी कितने दिन हुए हैं। पर इतने ही दिनों में यहाँ फिर कागजों का ढेर हो गया है। (माँ से) आपको भी आज यहाँ रहना उचित नहीं है। वह घटना बड़ी दारुण होगी। वे तुम्हें भी गिरफ्तार कर सकते हैं। पावेल के बयान को जगह-जगह ले जाकर बाँटने के काम में आप बड़ी सहायता करेंगी।'

माँ—भला मुझे वेलोग किसलिए गिरफ्तार करेंगे? तुम भूल कर रहे हो।'

निकोले ने दृढ़ता से कहा—'मेरा अनुमान गलत नहीं हो सकता। इसके अलावा आप लुडमिला की सहायता कर सकती हैं। आप भी यहाँ से भागें।'

उसने देखा कि लुडमिला के पास रहने में वह पावेल का बयान छापने में उसे सहायता देगी। वह प्रसन्न हो उठी। बोली—'यदि ऐसी बात है तो मुझे जाने में कोई आपत्ति नहीं है पर यह न समझना चाहिए कि मैं डर से भाग गई।'

निकोले इवानोविच—अच्छी बात है। मेरा बेग और ओढ़ना कहाँ है? आपने सब चीजों को इस तरह अपने हाथ में कर लिया है कि मैं अपनी व्यक्तिगत संपत्ति का भी निपटारा नहीं कर सकूँगा। मैं पूरी तैयारी कर रहा हूँ। इससे उनलोगों को दुख होगा।

शशेंका चुपचाप कागजों को जला-जलाकर उनकी राख को चूल्हे की राख में मिलाती जाती थी।

निकोले इवानोविच—शशेंका! अब तुम जाओ! पुस्तकों को भूल नहीं जाना यदि नया और दिलचस्प निकले। पूरी सावधानी से रखना।

शशेंका—क्या यह जुदाई अधिक दिनों की होगी?

निकोले इवानोविच—यह तो वे ही सब जानते होंगे। पर मेरे विरुद्ध होनेवाला कुछ अवश्य है। (माँ से) आप भी शशेंका के साथ जाइए क्योंकि दो आदमियों का एक साथ ही पीछा करना कठिन है। अच्छी बात है, जाइए।

'मैं भी जा रही हूँ।' इतना कहकर माँ कपड़ा बदलने चली गई। उसके दिल में उठा कि येलोग—जो जनसाधारण की स्वाधीनता के लिये इस तरह यत्नशील हैं—अपनी स्वतंत्रता की कितनी कम चिंता करते हैं! गिरफ्तारी की संभावना पर भी निकोले इवानोविच की कार्यतत्परता और सादगी देखकर उसे विस्मय था। उसका हृदय भर आया। उसने गौर से उसे देखा, उसके चेहरे पर किसी तरह की परेशानी नहीं थी। उसी तरह की कार्यतत्परता और स्निग्धता उसके चेहरे पर विद्यमान थी। उसमें जरा भी बनावटीपन नहीं था। उसका ध्यान हर बातों पर बराबर था। वह उसी तरह शांत और धीर था और अपने उद्देश्य के अतिरिक्त अन्य सभी काम की ओर वह उसी तरह उदासीन था।

जब माँ कपड़ा बदलकर आई। निकोले शशेंका से कह रहा

था—'सुंदर ! मुझे पूरा विश्वास है। यह दोनों के लिये अच्छा है। थोड़े सुख की आकांक्षा में कोई आपत्ति नहीं है पर उसकी मात्रा बढ़ने न पावे क्योंकि इससे उसका मूल्य घट सकता है। (माँ से) आप तैयार हैं ?' वह उसके पास गया और अपना चश्मा सम्हालते हुए हँसकर बोला—'मैं यह सोचना चाहता हूँ कि छः मास का जीवन कम नहीं है। छः मास में मनुष्य बहुत कुछ कर सकता है। सावधानी से रहना।'

इतना कहकर उसने माँ से हाथ मिलाया और फिर बोला—'कल सावधान रहना। सबेरे लड़के को भेज देना। लुडमिला ने हाल-चाल लेने के लिये एक लड़का रख लिया है। लड़के से कह देना कि वह आकर जमादार से पूछ ले कि मैं घर पर हूँ कि नहीं। मैं जमादार से पहले ही कह दूँगा वह बड़ा अच्छा आदमी है। मुझसे उससे दोस्ती हो गई है।'

रास्ते में शशेंका ने माँ से कहा—'यदि आवश्यकता पड़े तो ये इसी तरह हँसते-हँसते मौत के मुँह में जा सकते हैं। वह इसी तरह स्थिरता के साथ आगे बढ़ेंगे और जब मौत घूरकर इनकी ओर देखगी तो इसी तरह चश्मा सम्हालते हुए कहेंगे—'सुन्दर !' और प्रसन्नतापूर्वक उसे आलिंगन करेंगे !'

माँ—मैं उसे प्यार करती हूँ।

शशेंका—मैं तो उनकी दशा देखकर चकित हूँ। पर प्यार—नहीं। मैं उनका आदर करती हूँ। वे सज्जन हैं पर नीरस हैं। वे सहृदय हैं पर मनुष्य के सभी गुण उनमें वर्तमान नहीं हैं।

(इधर-उधर देखकर) मालूम होता है कि गुप्तचर हमलोगों का पीछा कर रहा है। इससे हमलोग अलग-अलग हो जायँ। पर ख्याल रखिएगा कि यदि गुप्तचर पीछे लगा रहे तो लुडमिला के डेरे पर मत जाइएगा।

माँ—मैं समझती हूँ।

शशेंका—देखिए, इस बात को भूलिएगा मत। उस दशा में आप सीधे मेरे डेरे पर चली आइएगा।

इतना कहकर वह पीछे फिरी और अपना रास्ता लिया।

थोड़ी ही देर में माँ लुडमिला के घर पहुँच गई। उसका शरीर सर्द हो रहा था। वह चूल्हे के पास जाकर बैठ गई। लुडमिला कमरे में टहल रही थी। उसके पैर की गंभीर ध्वनि और आवाज से कमरा गूँज रहा था। चूल्हे में आग जल रही थी। लुडमिला जोर से कह रही थी—'लोग उतने बुरे नहीं हैं जितने बेवकूफ हैं। वे तात्कालिक लाभ पर ही दृष्टि रखते हैं। क्योंकि उसमें अधिक झंझट नहीं है पर दूर की वस्तु प्राप्त करने में अधिक झंझट है। यदि जीवन इससे भिन्न होता, सरल होता और लोग समझदार होते तो सब सुखी और संपन्न रहते। पर उस सुदूर के लाभ के लिये तात्कालिक लाभ का ख्याल छोड़ना पड़ेगा।

माँ इसी खोज में थी कि यह स्त्री छपाई का काम कहाँ करती है। इस कमरे में सड़क की ओर तीन खिड़कियाँ थी। कमरे में पलँग, आलमारी, कुर्सी और टेबुल था। कोने में हाथ धोने का बर्तन रखा था दूसरे कोने में स्टोव रखा था और दीवार पर

तस्वीरें टँगी थीं। सभी चीजें साफ और सुथरी थीं और सब वस्तुओं पर मालकिन के सादगी के जीवन की प्रत्यक्ष छाया पड़ रही थी। यहाँ कोई वस्तु छिपाकर अवश्य रखी हुई थी पर उसका पता लगाना कठिन था। माँ ने गौर से दरवाजों की ओर देखा—स्टोव के पास ही एक छोटा और ऊँचा दरवाजा था। लुड-मिला को अपनी ओर ताकते हुए देखकर माँ ने घबराकर कहा—'मैं आपके पास काम से आई हूँ।'

लुडमिला—यह तो मैं जानती हूँ। मेरे पास बेकार कोई नहीं आता।

लुडमिला की आवाज में नवीनता थी। माँ ने उसकी ओर देखा। लुडमिला के ओठों पर मुस्कुराहट की मंद रेखा दौड़ गई। उसकी आँखें चश्मे के भीतर चमकने लगीं। माँ ने मुँह फेरकर पावेल का बयान उसे दिया। बोली—'इसे फौरन छापने के लिये कहा है।' इसके बाद उसने निकोले इवानोविच की गिरफ्तारी के लिये तैयारी का वर्णन किया।

लुडमिला ने उस लेख को अपनी कमर में खोंस लिया और कुर्सी पर बैठ गई। उसका चेहरा लाल हो गया और आँखें चमकने लगीं। बोली—'अगर वे लोग मुझे पकड़ने आवेंगे तो मैं उन्हें गोली मार दूँगी। अत्याचार से अपनी रक्षा करना मेरा धर्म है। यदि मैं दूसरों से लड़ने के लिये कह सकता हूँ तो मुझे अवश्य लड़ना चाहिए। मेरा विश्वास शांति में नहीं है। मुझे शांति पसंद नहीं है।

उसके हृदय का जोश उसके चेहरे पर नाचने लगा। वह गंभीर हो गई।

माँ ने अपने मन में सोचा—'इसका जीवन सुखद नहीं है।'

लुडमिला पावेल का बयान पढ़ने लगी। शुरू में तो वह उदासीन थी पर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती गई। वह लिखे पत्तों पर झुकती गई और पत्रों को तेजी से उलटने लगी। भाषण समाप्त कर वह उठी, अँगड़ाई ली और माँ के पास जाकर कहने लगी—'पावेल का बयान सुंदर है। इसी तरह की बातें मुझे पसंद हैं यद्यपि इसमें भी शांति की झलक है पर इस भाषण में पर्याप्त तत्त्व है और कहनेवाले की दृढ़ता और साहस कितना स्पष्ट है।

वह क्षण भर चुप रही। फिर बोली—'मैं आपके पुत्र के संबंध में बातें नहीं करना चाहती। एक तो मैं उन्हें जानती नहीं दूसरे इस तरह के विषादमय और दुखद विषय की चर्चा उचित नहीं। क्योंकि प्रिय-वियोग की वेदना का मर्म मैं समझती हूँ पर मैं इतना अवश्य कह सकती हूँ कि आपका पुत्र महान व्यक्ति है। यह तो स्पष्ट है कि वे नवयुवक हैं। उनकी आत्मा भी विशाल है। ऐसे पुत्र की माता होना जितना सुखद है उतना ही दुखद है।

माँ—यह सुखद है। पर अब वेदना का अवशेष नहीं रहा।

लुडमिला ने अपने सँवारे केश को सम्हाला और ठंढी साँस ली। उसके गालों पर लाली दौड़ गई। बोली—'हमलोग इसे छाप देंगे। क्या आप हमलोगों की मदद करेंगी?'

माँ—अवश्य!

लुडमिला—मैं फौरन् हरफ बैठा देती हूँ। तब तक आप आराम करें। आज का दिन आपके लिये दुखद रहा है। आप थक गई होंगी। आप मेरे विस्तरे पर सो रहें। मैं आज नहीं सोऊँगी। संभव है रात को मैं मदद के लिये आपको जगाऊँ। आप सोने जायँ तो लैंप बुझा दें।

लुडमिला ने चूल्हे में लकड़ी डालकर उसी छोटे दरवाजे से होकर भीतर चली गई। पीछे से उसने दरवाजा कसकर बंद कर दिया। माँ उसे गौर से देखती रही। उसके जाने के बाद उसने कपड़ा उतारा और अपने मन में कहा—'लुडमिला कड़ी है। पर उसका हृदय जल रहा है। वह उस जलन को छिपा नहीं सकती। जिसे मैं देखती हूँ सबके हृदय में प्रेम की जलन है। बिना प्रेम के कोई जीवित नहीं रह सकता।

थकान से माँ का सिर भारी हो रहा था। पर उसका हृदय शांत था। उसके हृदय में किसी वस्तु का शांत प्रकाश फैल रहा था जो बाहर की सभी वस्तुओं को प्रकाशित कर रहा था। वह इसका कारण जानती थी क्योंकि प्रथम उत्तेजना के बाद ही उसने इसका अनुभव किया था। पहले-पहल तो इससे वह घबरा-सी गई थी पर धीरे-धीरे उसकी आत्मा उन्नत और बलिष्ठ होती जाती थी। हर वक्त उसकी आँखों के सामने पावेल, नखोदका, निकोले इवानोविच और शशेंका की मूर्त्ति आकर खड़ी हो जाती थी। वह उन्हें देखकर आनंदित होती थी। वे एक-एक कर आते थे और उसके विचारों को उत्तेजित किए बिना ही चले जाते थे सिर्फ एक

मीठी वेदना छोड़ते जाते थे। उसने लैंप बुझा दिया। बिस्तरे पर लेट गई और प्रगाढ़ निद्रा में सो गई।

अठारहवाँ परिच्छेद

जिस समय माँ सोकर उठी सबेरा हो गया था। कमरे में सूर्य का प्रकाश फैल रहा था। लुडमिला पलँग पर लेटी एक पुस्तक पढ़ रही थी। माँ को आँखें खोले देखकर उसने मुस्कुरा दिया। माँ घबराकर उठ बैठी। बोली-'क्या मैं देर तक सोती रही?'

लुडमिला—दस बजना चाहता है।

माँ—आपने मुझे जगाया क्यों नहीं?

लुडमिला—मैं आपको जगाना चाहती थी। आपके पास आई भी। पर आप गहरी नींद में सो रही थीं और नींद में ही मंद-मंद हँस रही थीं।

वह शीघ्रता के साथ पलँग से उठी, माँ के बिस्तरे के पास गई और झुककर माँ का चेहरा देखने लगी। उसकी आँखों से प्रेम-रस टपक रहा था। बोली—'मुझे खेद था कि मैंने आपको बाधा दिया। आप कोई सुखद स्वप्न देख रही थीं।'

माँ—मैंने तो कोई स्वप्न नहीं देखा।

लुडमिला—एक ही बात है। पर आपकी मुस्कुराहट देखकर बड़ा सुख मिलता था। इस मुस्कुराहट में असीम शांति, सौंदर्य

और महत्ता भरी थी। मुझे उस वक्त केवल आपकी और आपके जीवन की याद आई आपका जीवन दुखमय है।

माँ की पलकें झप गईं। वह मौन और गंभीर थी।

लुडमिला ने जोर से कहा—'आपका जीवन अवश्य दुखमय है।

माँ ने सावधानी से कहा—'मेरी समझ में ठीक-ठीक नहीं आता। कभी-कभी मालूम होता है कि अवश्य दुखमय है। लेकिन उसमें इतना जल्दी-जल्दी परिवर्तन हो रहा है कि ······।'

उत्तेजना का एक वेग उठा और उसने उसके हृदय को घेर लिया। उसके हृदय में अनेक तरह के विचार उठने लगे। वह उठकर बिस्तरे पर बैठ गई और अपने विचारों को एक सूत्र में गूँथकर कहने लगी—'जीवन का स्रोत अनवरत गति से एक ओर बहता रहता है और आग की लपट की भाँति इसकी ज्वाला कभी इधर से उठती है कभी उधर से। हरएक लपट पहली से तेज और जोरदार दिखाई देती है। दुखों का तो अंत नहीं है। लोगों को दुःसह दुख उठाना पड़ता है, लोग पीटे जाते हैं, बेरहमी से पीटे जाते हैं, उनपर जुल्म किया जाता है और वे सताए जाते हैं। इस यातना से बचने के लिये वे छिपकर रहते हैं, साधु और फकीर बन जाते हैं। दुनियाँ के अनेक सुख से वे बंचित हो जाते हैं। क्या यह कम दुखमय है। आप उनकी ओर देखिए आपको मालूम होगा कि उनके चारों ओर दुखों का पहाड़ खड़ा है।'

लुडमिला ने शीघ्रता से सिर उठाया और गौर से माँ की ओर

देखा। माँ ने देखा कि वह अपने हृदय के भाव को शब्दों में पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकती है। उसे खेद हुआ।

लुडमिला ने नरमी से कहा—'आप अपने बारे में नहीं कह रही हैं!'

माँ ने उसकी ओर देखा। कपड़ा सम्हालते हुए बिस्तरे से उठी और कहने लगी—'मैं अपने बारे में कुछ नहीं कह रही हूँ। जिस तरह का जीवन हमलोग बिता रहे हैं उसमें अपनी चिंता कैसे समा सकती है! जब तक हमलोगों के हृदय में सबके लिये प्रेम है, सबके लिये स्नेह है, सबके लिये संताप है, सबके लिये वेदना है और सबके लिये करुणा और दया है तब तक हमलोग केवल अपनी चिंता किस तरह कर सकते हैं? जब सभी के लिये हमारे हृदय में स्थान है, सभी हमारे हृदय को अपनी ओर खींच सकते हैं तब सबको छोड़कर केवल अपनी चिंता मैं किस तरह कर सकती हूँ? यह कठिन है।'

लुडमिला हँस पड़ी। नरमी से बोली—'पर यदि यह आवश्यक न हो?'

माँ—मैं यह नहीं जानती कि यह आवश्यक है कि नहीं पर मैं इतना अवश्य कह सकती हूँ कि आपलोग कहीं अधिक दृढ़ और समझदार होते जा रहे हैं। यह प्रत्यक्ष है।

माँ बीच कमरे में खड़ी कुछ सोच रही थी। उसके हृदय की संकीर्णता का लोप हो गया था। जो हृदय केवल पावेल की चिंता में रत था, उसके ही सुख-दुख के विचारों में निमग्न था,

उसका सहसा लोप हो गया था अथवा वह किसी अज्ञात देश में चला गया था या उत्तेजना की आग में जलकर भस्म हो गया था। इससे उसका हृदय स्वच्छ और निर्मल हो गया और उसमें एक नई शक्ति अथवा ज्योति का संचार हुआ। वह अपनी अवस्था पर विचार करने लगी। वह अपने हृदय का अवलोकन करने लगी। उसे भय था कि कहीं फिर उसमें किसी चिंता का उदय न हो जाय।

लुडमिला माँ के पास गई। पूछा—'आप किस चिंता में हैं ?'

माँ—मैं कुछ नहीं कह सकती।

दोनों स्त्रियाँ सामने खड़ी चुपचाप एक दूसरे को देख रही थीं। दोनों हँस पड़ीं। लुडमिला कुछ कहती हुई कमरे से बाहर हो गई।

माँ ने खिड़की से बाहर देखा। चारों ओर शीतल प्रकाश फैल रहा था। उसके हृदय में भी प्रकाश फैल रहा था पर वह गर्म था। वह बहुत कुछ कहना चाहती थी, किसी अज्ञात व्यक्ति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट करना चाहती थी। बहुत दिनों से उसने प्रार्थना करनी छोड़ दी थी। आज अकस्मात् उसे प्रार्थना करने की इच्छा हुई। किसी का कोमल चेहरा उसकी स्मृति में जाग उठा। किसी की दृढ़ आवाज उसके कानों में गूँज उठी कि यही पावेल की माँ है। हर्ष से उल्लसित शशेंका की आँखें चमक उठीं, रिबिन का मुर्झाया और सूखा चेहरा सामने खड़ा हो गया, पावेल की दृढ़ मूर्ति मुस्कुरा पड़ी, निकोले आँखें मींचता सामने

खड़ा हो गया। पर एक ही क्षण में सब कुछ गायब हो गया।

लुडमिला ने पुनः प्रवेश किया और बोली—'निकोले इवानोविच का अनुमान ठीक था। निश्चय ही उसकी गिरफ्तारी हो गई है। आपके कहने के अनुसार मैंने लड़के को भेजा था। उसने वापस आकर कहा—'आँगन में चारों ओर पुलिस छिपी बैठी है। जमादार का कहीं पता नहीं है।' उसने फाटक के पास पुलिस को छिपे बैठे देखा। गुप्तचर चारों ओर गश्त लगा रहे थे। वह उन्हें पहचानता है।'

माँ—हा! बिचारा निकोले!

इतना कहकर उसने ठंढी साँस ली पर उसे वेदना नहीं थी। उसे इससे विस्मय हुआ।

लुडमिला ने भौहें चढ़ाकर कहा—'इधर वह शहर के मजूरों के बीच प्रचार का काम तेजी से करने लग गए थे। उन्हें हट जाने का समय था। साथियों ने उन्हें लाख समझाया पर उन्होंने एक न सुनी। मेरी समझ में ऐसे समय में किसी को समझाना नहीं चाहिए बल्कि मजबूरकर भगा देना चाहिए।'

इसी समय काले केश और लाल चेहरेवाले एक सुंदर लड़के ने कमरे में प्रवेशकर पूछा—'क्या चाय लाऊँ?'

लड़के का नाम सरोहा था।

लुडमिला—हाँ, लाओ। (माँ से) यह मेरा शिष्य है। आप इसे जानती हैं?

माँ०—नहीं।

लुडमिला—मैं इसे निकोले के यहाँ अकसर भेजा करती थी !

आज लुडमिला में बहुत अंतर दिखाई देता था। उसकी प्रकृति एकदम कोमल हो गई थी। उसकी शक्ति और उसका सौंदर्य भी अपार दिखाई देता था। उसका रूखापन बहुत कुछ गायब हो गया था। रात भर में उसकी आँखें सूख गई थीं, चेहरा मुर्झा गया था। उसकी आकृति से थकान और परेशानी की झलक आ रही थी।

सरोहा चाय लेकर आया। लुडमिला ने कहा—'आओ, तुम्हारा इनसे परिचय करा दें। कल जिन्हें निर्वासन का दंड मिला है ये उसी मजूर पावेल की माता निलोना हैं।'

सरोहा ने माँ को प्रणाम किया और चाय तथा रोटी लाकर टेबुल पर रख दिया और आप भी बैठ गया।

लुडमिला ने माँ से कहा—'जब तक यह पता न लग जाय कि पुलिस वहाँ किसकी खोज में है आप वहाँ न जायँ। संभव है आपकी ही खोज में हो। यह तो निश्चय है कि वेलोग आपकी जाँच अवश्य करेंगे।'

माँ—कोई आपत्ति नहीं। यदि उन्होंने मुझे गिरफ्तार ही कर लिया तो क्या हर्ज है! मैं केवल पावेल के बयान को ही बँटवा देना चाहती हूँ।

लुडमिला—हरफ बैठा दिया गया है। कल छपकर तैयार हो जायगा। शहर, देहात और जिलों में सब जगह भेज दिया जायगा। क्या आप नटाशा को जानती हैं ?

माँ—अच्छी तरह !

लुडमिला—उसे ले आइएगा !

सरोहा अखबार पढ़ने में इस तरह तल्लीन था मानों उनकी बातें वह नहीं सुन रहा हो। पर कभी-कभी वह अखबार से निगाह हटाकर माँ की ओर देखता था। उसे अपनी ओर ताकते देखकर माँ खुश हो जाती थी और हँस पड़ती थी। माँ को अपनी इस हँसी से दुख होता था। लुडमिला ने फिर निकोले की गिरफ्तारी की चर्चा छेड़ी। उसकी गिरफ्तारी पर उसे विषाद नहीं था। माँ को इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं मालूम हुआ।

अन्य दिनों की अपेक्षा वह दिन जल्दी समाप्त होने लगा। जिस समय वेलोग चाय पीकर उठे दोपहर हो गया था। लुडमिला कुछ कहना ही चाहती थी कि बाहर से किसी ने दरवाजा खटखटाया। सरोहा लुडमिला की ओर देखने लगा। वह बोली—'दरवाजा खोलकर देखो कौन है !'

लुडमिला ने अपनी जेब में हाथ डाला और माँ से बोली—'यदि पुलिस के आदमी हों तो—आप माँ, इस कोने में खड़ी हो जायँ और तुम सरोहा ?'

सरोहा ने कहा—'मैं वह रास्ता पकड़ूँगा।' इतना कहकर वह गायब हो गया।

माँ ने मुस्कुरा दिया। इस तैयारी का उसपर कोई असर नहीं हुआ। उसे किसी तरह की विपत्ति की आशंका नहीं थी।

इसी समय डाक्टर ने कमरे में प्रवेश किया। बोला—'निकोले

इवानोविच गिरफ्तार हो गया। (माँ को देखकर) आप यहाँ हैं ! पुलिस आपकी तलाश में है। क्या आप उसकी गिरफ्तारी के समय वहाँ नहीं थीं ?

माँ—उन्होंने मुझे यहाँ भेज दिया था।

डाक्टर—मैं नहीं समझता कि इससे तुम्हारी रक्षा हो सकेगी। कल रात को कुछ युवकों ने हाथ से लिखकर पावेल के बयान की पाँच सौ प्रतियाँ तैयार की हैं। लिखावट खराब नहीं है। साफ और पढ़ने लायक है। रात को वेलोग उसे शहर में बाँट देना चाहते हैं। मैं इसके विरुद्ध हूँ। शहर में छपी प्रतियाँ बाँटी जानी चाहिएँ और लिखित प्रतियों को कहीं अन्यत्र भेज देना चाहिए।

माँ ने उत्साह से कहा—'उन्हें मेरे हवाले कीजिए, मैं नटाशा को दे आऊँगी।'

माँ यथाशीघ्र पावेल के बयान को चारों ओर फैला देना चाहती थी। वह देश के कोने-कोने में पावेल का बयान पहुँचा देना चाहती थी। उसने डाक्टर की ओर इस तरह देखा मानों वह इस बात की भीख माँग रही हो।

डाक्टर ने शिथिलता से कहा—'इस वक्त आपको इस काम में हाथ डालना चाहिए कि नहीं।' इतना कहकर उसने जेब से घड़ी निकाली। समय देखकर बोला—'बारह बजकर दस मिनट हो गया है। दो बजकर पाँच मिनट पर गाड़ी छूटती है और सवा पाँच बजे वहाँ पहुँचती है। पर मुख्य प्रश्न यह नहीं है।'

लुडमिला—मुख्य प्रश्न यह नहीं है।

माँ उनके पास जाकर बोली—'तब ? मुख्य प्रश्न उस काम को खूबी के साथ संपन्न करना है और मैं उसे उसी तरह पूरा करूँगी ।'

लुडमिला ने उसकी ओर देखा और अपना माथा सुहराते हुए बोली—'इसमें आपके लिये खतरा है !'

माँ ने उत्तेजित होकर कहा—'क्यों ?'

डाक्टर—निकोले की गिरफ्तारी के एक घंटा पहले आप घर से गायब हो गईं । आप कारखाने में जायँगी । वहाँ आप निकोले की चाची के नाम से प्रसिद्ध हैं । वहाँ से आपके वापस आते ही परचों का उदय होगा । यह सब आपके विरुद्ध प्रमाण होगा ।

माँ ने कहा—'मैं आपलोगों को विश्वास दिलाती हूँ कि वहाँ कोई मुझे देख नहीं सकेगा । वहाँ से वापस आने पर वेलोग मुझे पकड़ेंगे और पूछेंगे कि मैं कहाँ थी ।' इतना कहकर वह क्षणभर के लिये रुक गई और बोली—'मैं उन्हें जवाब दे लूँगी । वहाँ से मैं नगर के बाहर चली जाऊँगी । वहाँ मेरा एक दोस्त रहता है । उसका नाम सिजोव है । मैं उनलोगों से कहूँगी कि इजलास से मैं सीधे उसके घर चली गई । मैं शोक से अभिभूत थी । उसका भी भतीजा निर्वासित किया गया है । इससे उसकी भी वही हालत थी । मैं बराबर वहीं पड़ी रही । वह मेरी बातों का समर्थन करेगा । यह निश्चय है ।'

माँ ने देखा कि उसकी बातों का असर उनपर हो रहा है। उसने और जोर किया। अंत में लोग राजी हो गए।

डाक्टर ने बेमन होकर कहा—'अच्छी बात है। आप जाइए।'

लुडमिला चुपचाप कमरे में टहलने लगी। उसकी आकृति चिंतायुक्त थी। उसका चेहरा उतर गया, उसकी गर्दन झुक गई मानों उसके सिर पर कोई बोझ आ पड़ा हो। माँ ने यह स्पष्ट देखा। उसके मुँह से सर्द आह निकल पड़ी।

माँ ने कहा—'आपलोग मेरी रक्षा का प्रयत्न तो करते हैं पर अपनी चिंता नहीं करते।'

डाक्टर ने कहा—'आपका कहना सच नहीं है। हमलोग अपनी रक्षा का पूरा यत्न करते हैं। हमलोग यह आवश्यक समझते हैं। साथ ही हमलोग उनलोगों को भी सम्हालते हैं जो अपनी शक्ति का बेकार ह्रास करते हैं। खैर, अब आपको क्या करना है सो सुनिए। स्टेशन पर आपको पावेल के बयान की प्रतियाँ मिलेंगी।' इसके बाद उसने माँ को अन्य सभी आवश्यक बातें समझाकर कहा—'अब तो आप खुश हैं। भगवान् आपकी सहायता करें।'

इतना कहकर वह वहाँ से चला गया। वह उदास और क्षुब्ध था। उसके चले जाने पर लुडमिला माँ के पास गई और हँसकर बोली—'आपका हृदय विशाल है। मैं आपको खूब समझती हूँ।' इतना कहकर उसने माँ का हाथ पकड़ा और बोली—'मुझे भी एक पुत्र है। उसकी अवस्था लगभग तेरह वर्ष की है। वह अपने पिता के पास रहता है। मेरे पति सहकारी सरकारी वकील

हैं। सरकारी वकील भी हो गए होंगे। लड़का उन्हीं के पास रहता है। मैं हर वक्त यही सोचा करती हूँ कि उसका भविष्य क्या होगा?' उसकी आवाज काँपने लगी। उसने फिर तेजी के साथ कहना शुरू किया—'मेरे लड़के की शिक्षा-दीक्षा और भरण-पोषण का भार ऐसे व्यक्ति के हाथ में है जिसे मैं उनलोगों का परम शत्रु समझती हूँ, जो मुझे अतिशय प्रिय हैं। मुझे भय है कि वह लड़का भी उन्हीं की प्रकृति प्राप्त करेगा और मेरा शत्रु हो जायगा। वह मेरे साथ नहीं रह सकता। मैंने अपना नाम बदल दिया है। आठ वर्ष से मैंने उसे देखा भी नहीं है। कितने दिन हो गए!'

वह खिड़की के पास खड़ी हो गई और आकाश की ओर देखकर बोली—'यदि वह मेरे पास होता तो मुझमें दुगुना बल होता। मैं इस वेदना का अनुभव न करती जो मुझे हरदम जलाया करती है। यदि वह मर गया होता तो भी मुझे संतोष होता।' इतना कहकर वह रुक गई और जोर से बोली—'उस वक्त मुझे यह ज्ञान रहता कि वह मर गया है। वह उनका शत्रु तो न होता जिनका मूल्य मातृ-स्नेह से कहीं बढ़कर है और जीवन से भी मूल्यवान है।'

माँ ने स्नेह के साथ उसकी ओर देखकर कहा—'प्यारी लुडमिला!'

लुडमिला—आप भाग्यवती हैं। माँ और पुत्र एक ही उद्देश्य में एक साथ लगे हों, यह कैसा सुंदर सुयोग है।

माँ अकस्मात् बोल उठी—'यह बहुत ही सुंदर है। यह दूसरा

जीवन है। यहाँ मैं इस आंदोलन में भाग लेनेवाले आप सभी को पास पाती हूँ। सभी लोग भाई-बंधु हो गए हैं। मैं सब कुछ समझती हूँ। केवल शब्द ही मेरी समझ में नहीं आते। अन्यथा मैं सब कुछ समझती हूँ।'

लुडमिला—ऐसा होता ही है।

माँ ने लुडमिला के शरीर पर हाथ रखा और इस तरह बोली मानों प्रत्येक शब्द पर विचार कर रही हो। उसने कहा—'मैं देखती हूँ कि सभी युवक एक ही उद्देश्य लेकर आगे बढ़ रहे हैं। सभों का एक ही ध्येय है। सभों का हृदय शुद्ध है, विचार उन्नत है। सभी बुराई और अन्याय से संग्राम करने में लगे हैं। सभी अनाचार को दूरकर न्याय की स्थापना करना चाहते हैं। मनुष्य की विपत्तियों को दूर करने के लिये उन्होंने कमर कस ली है। संसार से वे दैन्य और दारिद्रय को मार भगाने के लिये उद्यत हैं। वे इस काम में अवश्य सफल होंगे। वे निश्चय ही नए युग की स्थापना करेंगे। विश्व में नई ज्योति फैलावेंगे। वे सबको एक सूत्र में बाँधेंगे और संगठित शक्ति को जन्म देंगे। वे मानव-जीवन को शुद्ध बनावेंगे।'

लुडमिला ने हाथ के इशारे से आकाश की ओर दिखाकर कहा—'एक सूर्य तो आकाश में चमक रहा है।'

माँ—वेलोग प्रत्येक मनुष्य के हृदय में एक-एक सूर्य का जन्म देंगे। उसकी ज्योति से सबका हृदय प्रकाशित होगा। उससे

पृथ्वी चमक उठेगी। सबके हृदय में एक प्रेम का भाव जागृत हो उठेगा।

चिरकाल से विस्मृत प्रार्थना के शब्द उसे याद आ गए। उसके हृदय में नए विश्वास का उदय हुआ। उसने इस तरह कहना शुरू किया मानों उसके हृदय से कोई ज्योति निकल रही हो। बोली—'सत्य और विवेक के पथ पर चलनेवाले इन युवकों के हृदय में सबके लिये प्रेम भरा है। वे सब में नई ज्योति फैला रहे हैं। इस तरह विश्व-प्रेम के प्रभाव से नई ज्योति का उदय हो रहा है। इस ज्योति को कौन बुझा सकता है? इसके सामने कौन शक्ति ठहर सकती है? इसे कौन दबा सकता है? यह शक्ति पृथ्वी से उदय हुई है। सभी इसकी विजय चाहते हैं। खून की नदियाँ ही क्यों न बहा दी जायँ पर यह दब नहीं सकती।'

वह लुडमिला से अलग हट गई। हर्षातिरेक से थकी-सी मालूम होने लगी और बैठ गई। उसका दम फूल रहा था। लुडमिला भी उससे अलग होकर इतनी सावधानी से पीछे हटी मानों उसे भय है कि वह कोई वस्तु नष्ट कर देगी। वह चुपचाप कमरे में टहलने लगी और अपने सामने की ओर आँखें गाड़कर देखने लगी। उसकी आकृति गंभीर थी। कमरे की निस्तब्धता ने माँ को शांत कर दिया। उसने लुडमिला की असाधारण अवस्था देखी और अपराधी की भाँति बोली—'क्या मैंने कोई बात मिथ्या कही है?'

लुडमिला माँ की ओर घूम पड़ी और इस तरह देखा मानों

भयभीत हो गई हो। माँ की ओर हाथ फैलाते हुए बोली—'आपने सब कुछ सच कहा है पर अब उस विषय की चर्चा छोड़ दीजिए। जो कुछ कहा गया उतना ही पर्याप्त है। आपके जाने का भी समय हो गया है। यहाँ से स्टेशन दूर है।'

माँ—आपने ठीक याद दिलाई। आज मैं परम प्रसन्न हूँ। आप मेरी खुशी का अनुमान नहीं कर सकतीं। मैं अपने पुत्र का संदेश लेकर जा रही हूँ। उसमें मेरा ही रक्त—मेरी ही आत्मा है।

उसने मुस्कुरा दिया पर उस मुस्कुराहट का असर लुडमिला पर नहीं पड़ा। माँ ने समझा कि लुडमिला अपनी गंभीरता से उसके हर्ष को दबा रही है। उसके मन में आया कि वह उसके शून्य हृदय में भी अपने हर्ष की एक मात्रा डालकर उसे भी उसी प्रकार प्रकाशित कर दे। उसने लुडमिला का हाथ अपने हाथ में लेकर जोर से दबाया। बोली—'प्यारी लुडमिला! कैसी सुंदर बात है कि तुम्हें इस बात का ज्ञान है कि जिस ज्योति से सबका हृदय प्रकाशित होगा उसका उदय हो गया है और वह समय शीघ्र ही आनेवाला है जब सबलोग उस ज्योति को पहचानेंगे, उसे अपनावेंगे और शक्ति ग्रहण करेंगे।'

उसका शरीर काँप रहा था। उसकी आँखें चमक रही थीं और उसकी भौंहें चंचल हो रही थीं। इस अलौकिक विचार से वह उन्मत्त थी। उसने अपने हृदय के सभी विचारों को उसी में गूँथ दिया और सुंदर शब्दों में उसे इस प्रकार प्रगट किया—'यह हम-लोगों के लिये नए देवता के समान हैं। सबकी वस्तु सबके लिये!

सबका जीवन एक और सब समस्त जीवन के लिये ! मेरी समझ में केवल इसीलिए आपलोगों का जन्म हुआ है। आपलोग सच-मुच साथी हैं। आप सबलोग एक ही माता की संतान हैं। सत्य ही आपलोगों के माता-पिता हैं। केवल सत्य के लिये ही आप-लोगों का जन्म हुआ है और उसी के सहारे आपलोग जीते हैं।'

उसके हृदय में फिर उत्तेजना उठी। वह चुप हो गई। साँस ली और हाथ फैलाकर बोली—'यदि मैं अपने मन में "साथी" शब्द का प्रयोग करती हूँ तो मैं उन्हें गाते देखती हूँ। वेलोग झुंड-के-झुंड एक ही उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। मैं उनकी गंभीर ध्वनि सुन रही हूँ। हजारों गिरजों के घंटों की ध्वनि वहाँ सुनाई दे रही है। सभी प्रसन्न हैं, सभी उत्सुक हैं।'

उसका काम पूरा हो गया। लुडमिला का चेहरा चमक उठा। उसके ओंठ काँपने लगे। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

माँ अपनी विजय पर फूल उठी। उसने लुडमिला को हृदय से लगा लिया। बिदा करते समय लुडमिला ने माँ से कहा—'आपका हृदय उसी प्रकार प्रकाशित है जिस तरह प्रभात-सूर्य की किरणों से किसी पर्वत की चोटी प्रकाशित रहती है।'

———

उन्नीसवाँ परिच्छेद

कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। माँ का सारा शरीर मारे सर्दी के काँप रहा था। उसे साँस लेना कठिन हो रहा था। वह एक स्थान पर रुक गई और चारों ओर देखने लगी। सड़क के कोने पर गाड़ीवाला खड़ा था। उससे कुछ दूर पर एक आदमी जा रहा था। मारे सर्दी के वह सारा अंग सिकोड़े हुए था और उस आदमी के सामने से एक सिपाही छलाँग मारता चला जा रहा था।

माँ ने सोचा—'निश्चय ही यह सिपाही गोदाम की ओर भेजा गया है।' वह संतुष्ट होकर आगे बढ़ी। उसके पैर के नीचे बरफ के कड़कड़ टूटने का शब्द सुनाई दे रहा था। स्टेशन पर वह समय से पहले ही पहुँच गई। गाड़ी छूटने में देर थी पर तीसरे दर्जे का मुसाफिरखाना यात्रियों से भर गया था। रेलवे के कुली, गाड़ीवान तथा बिना घर-द्वार के लोग आ-आकर उसमें शरण ले रहे थे और सर्दी से बचने का उपाय कर रहे थे। यात्रियों में कुछ किसान थे, एक मोटा सौदागर था, अपनी लड़की को साथ लिए एक पुरोहित था, एक चेचक के दागवाली लड़की थी और करीब पाँच-छः सिपाही थे। लोग सिगरेट, चाय और शराब पी रहे थे, आपस में बातें कर रहे थे और खिलखिलाकर हँस रहे थे। उनके सिर पर धुआँ गुंबज बाँधकर उठ रहा था। दरवाजे

और खिड़कियों के खुलने तथा बंद होने का शब्द लगातार जारी था और मारे बदबू के नाक नहीं दी जाती थी।

माँ दरवाजे के पास चुपचाप बैठ गई। हवा के झोंके से दरवाजा खुल गया। ठंढी हवा उसे भली मालूम हुई। उसने साँस खींची। हाथ में गठरी लिए लोग आ-आकर जमा हो रहे थे। गठरी को फर्श अथवा बेंच पर पटक देते थे और अपने शरीर पर जमी बर्फ को झाड़ने लग जाते थे।

पीला बैग लिए हुए एक युवक भी आया। उससे चारों ओर देखा और माँ के पास गया। पूछा—'मास्को अपनी भतीजी के पास जा रही हैं?'

माँ—हाँ, टानिया को देखने जा रही हूँ।

युवक—बहुत अच्छा!

उसने बेंच पर बेग रख दिया। सिगरेट जलाया और दूसरे दरवाजे से होकर बाहर चला गया। माँ ने बैग टोया और उस पर केहुनी रखकर बैठ गई और चारों ओर देखने लगी। थोड़ी देर बाद वह अपनी जगह से उठी और प्लेटफार्म के पास दूसरी बेंच की ओर चली। बैग उसके हाथ में था। न वह बहुत बड़ा था और न बहुत छोटा। वह लोगों को गौर से देखती आगे बढ़ी।

रास्ते में वह एक आदमी से टकरा गई। वह कद का नाटा था और छोटा कोट पहने हुए था। वह कूदकर बगल में चला गया। माँ को वह परिचित-सा जान पड़ा। उसने सिर उठाकर

उसकी ओर देखा। वह माँ की ओर तिरछी निगाह से देख रहा था। उसका इस तरह देखना माँ को खटका। उसका बेगवाला हाथ काँपने लगा। बोझ भारी हो गया और कंधे में दर्द मालूम होने लगा।

उसने अपने मन में कहा—'मैंने इस पुरुष को कहीं देखा है।' इस ख्याल के आते ही उसका दिल धड़कने लगा, वह घबरा गई और फिर उसकी ओर देखा। ज्योंही माँ ने उसकी ओर देखा वह दूसरी ओर घूम गया मानों वह किसी फिराक में था जिसे पूरा न कर सका। उसका दहिना हाथ कोट के बटन के बीच में था और बायाँ जेब में जिससे दाहिना कंधा बायें से ऊँचा मालूम होता था।

वह धीरे-धीरे बेंच पर जाकर बैठ गई। वह इतनी सावधान थी मानों जरा भी जल्दीबाजी में वह कुछ बड़ा नुकसान कर देगी। भावी विपत्ति का ख्याल दिल में आते ही उसे स्मरण हो आया कि इस व्यक्ति को उसने दो बार देखा है। एक बार तो रिबिन के भागने के बाद उस मैदान में और दूसरी बार उस दिन रात को इजलास में। इसी के साथ पुलिस का वह जमादार था जिसे उसने रिबिन के भागने का गलत रास्ता बतलाया था। अब माँ को स्पष्ट हो गया कि वेलोग उसे पहचान गए हैं और पीछा कर रहे हैं।

उसके मन में प्रश्न उठा—'क्या मैं फँस गई ?' उसने तत्काल आप-ही-आप उत्तर दिया—'हो सकता है अभी···।' पर दूसरे ही

क्षण उसे स्पष्ट हो गया कि वह फँस गई। उसने अपने मन में कहा—'मैं फँस गई। अब सब व्यर्थ है!'

उसने चारों ओर देखा। उसके मन में अनेक ख्याल पैदा होने लगे। उसने सोचा—'क्या बेग इसी तरह छोड़कर मैं भाग जाऊँ?' पर दूसरे ही क्षण यह ख्याल पैदा हुआ—'इससे बड़ी भारी क्षति होगी। अपने पुत्र के संदेश को मैं किसके पास छोड़ूँ।' वह काँप रही थी। उसने बेग को कलेजे से लगा लिया और मन में कहने लगी—'इस बेग को लेकर भाग जाना भी कठिन है?'

ये सब विचार उसे स्वाभाविक नहीं मालूम होते थे। उसे प्रतीत होता था मानों कोई अपरिचित व्यक्ति जबर्दस्ती इन विचारों को उसके दिमाग में ठूँस रहा है। ये उसके हृदय को जला रहे थे और उसके शरीर में डंक मार रहे थे। इससे उसने अपना अपमान समझा। उसे ऐसा मालूम हुआ कि ये विचार उसे अपने से, पावेल से तथा उन उज्वल विचारों से—जो उसके हृदय में उदय हुए हैं—कहीं दूर ढकेलकर ले जा रहे हैं। उसने देखा कि कोई विरोधी शक्ति उसके अंग को तोड़-मरोड़ रही है और उसे भय के गंभीर गड्ढे में ढकेल रही है। उसके रोंगटे खड़े हो गए और दिल धड़कने लगा।

उसने एक ही झटके में इन सभी दुर्बल और मलिन विचारों को दूर कर दिया और दृढ़ता के साथ मन में कहने लगी—'बस।'

उसका भय दूर हो गया। मन हलका हो गया और उसमें नई

शक्ति आ गई। उसने अपने मन में कहा—'इस दल में कोई नहीं डरता तब मैं ही अपने लड़के का नाम क्यों बदनाम करूँ?'

इस घबराहट और परेशानी ने उसे और भी दृढ़ कर दिया। वह शांत हो गई। सोचने लगी—देखें अब क्या होता है? वे मेरे साथ किस तरह पेश आते हैं।

गुप्तचर ने गार्ड को बुलाया और माँ की ओर इशारा करके उसके कान में कुछ कहा। गार्ड ने उसकी ओर देखा और चला गया। दूसरा गार्ड आया। उसने उसकी बातें सुनीं, भौंहे सिकोड़ीं और आँखें नीची कर लीं। गुप्तचर की बातें सुनकर उसने सिर हिलाया और माँ की ओर चला। गुप्तचर गायब हो गया।

वह गुस्से से माँ की ओर देखता हुआ उसकी ओर चला। वह बेंच के कोने पर बैठी सोच रही थी—'यदि वे मुझे मारें-पीटें नहीं।'

वह गार्ड माँ के पास आकर खड़ा हो गया। माँ ने उसकी ओर देखा। गार्ड ने धीरे से पूछा—'क्या देख रही हो?'

माँ—कुछ नहीं।

गार्ड—तू चोर है। इतनी उम्र हुई पर········।'

उसकी बातें माँ के कलेजे में तीर के समान चुभ गईं। उसका बदन जलने लगा। उसने तड़पकर कहा—'तू झूठा है। मैं चोर नहीं हूँ।' मारे क्रोध के वह पागल हो रही थी। उसने बेग खोला और उसमें-से कागज का बंडल निकालकर खड़ी होकर चिल्लाने लगी—'सज्जनो, आपलोग देखें।'

उसकी चिल्लाहट सुनकर लोग उसकी ओर दौड़ पड़े और उसे घेरकर खड़े हो गए।

एक ने कहा—क्या मामला है ?

दूसरा—गुप्तचर मौजूद है !

तीसरा—क्या मामला है ?

चौथा—लोग कहते हैं कि यह चोर है।

पाँचवाँ—क्या यह ?

छठाँ—क्या चोर इस तरह चिल्ला सकता है ?

सातवाँ—यह कोई प्रतिष्ठित रमणी मालूम होती है !

आठवाँ—उनलोगों ने किसे पकड़ा है ?

लोगों को जमा होते देख माँ शांत हो गई। उसने चिल्लाकर कहा—'मैं चोर नहीं हूँ। आपलोगों को मालूम है कि कल अदालत में राजनैतिक कैदियों का विचार हुआ है। उनमें मेरा लड़का पावेल वासो भी है। अदालत में उसने जो बयान दिया है उसी का यह नकल है। मैं इसे लोगों में बाँटती फिरती हूँ कि लोग इसे पढ़ें। इसपर विचार करें और सत्य को पहचानें।'

उसने बंडल खोला और भीड़ में बिखेर दिया।

एक आदमी ने डर से काँपते हुए कहा—'इसके लिये कोई इसकी प्रशंसा नहीं करेगा।'

दूसरे ने कहा—हाँ !

माँ ने देखा कि लोग परचे पर झपट रहे हैं और उसे ले-लेकर अपनी जेब में छिपा रहे हैं। उसे साहस हो गया। अभिमान और

उत्साह से उसका दिल उमड़ आया। उसने दूसरा बंडल निकाला और उसी तरह चारों ओर बाँटने लगी। लोग चाव से परचे को लेने लगे। उसने कहा—'इसीलिए अधिकारियों ने मेरे लड़के को तथा उसके साथियों को दंड दिया है। आप मेरी बातों पर विश्वास कीजिए। मैं बूढ़ी हुई। झूठ नहीं कहूँगी। माँ के हृदय का विश्वास कीजिए। उन्होंने उन युवकों को इसीलिए दंड दिया है कि वेलोग आपके पास सत्य का संदेश पहुचा रहे थे। आपको आपकी सच्ची दशा का ज्ञान कराते थे। आपको बतलाते थे कि आप किस तरह का जीवन बिताते हैं और आपको किस तरह का जीवन बिताना चाहिए।'

भीड़ स्तब्ध और शांत थी। लोग आ-आकर चुपचाप माँ के चारों ओर इकट्ठा होकर उसे घेर रहे थे। वह कहने लगी—'हम गरीब दिन-रात परिश्रम करते हैं। मजूरी में हमलोगों को दरिद्रता, भूख और बीमारी मिलती है। इससे हमलोग चोरी करते हैं और समाज को भ्रष्ट कर देते हैं। हमलोगों के श्रम की कमाई से धनी लोग सुख और आनंद से रहते हैं। हमलोगों को अपने अधीन रखने के लिये उन्होंने पुलिस-सैनिक और अधिकारी सबको अपने हाथ में कर लिया है। ये सब हमलोगों के विरुद्ध हैं। सभी हमारे शत्रु हैं। हमलोग जिंदगी भर मिहनत करते हैं पर सदा दुर्दशा में रहते हैं। हमलोगों के परिश्रम से दूसरे आनंद करते हैं और हमलोगों को सदा बेड़ी में जकड़े रहते हैं और मूर्ख बनाए रहते हैं। हमलोग कुछ समझते

नहीं और सदा डरते रहते हैं। हमलोगों का जीवन अंधकारमय है। उसमें प्रकाश है ही नहीं। उनलोगों ने हमें विषैला जहर दे दिया है और हमें बेहोशकर सदा हमारा रक्त चूसते रहते हैं। वेलोग इतना अधिक खा जाते हैं कि पेट में समाता नहीं। वे लोभ के पुतले हैं। क्या मैं सच नहीं कह रही हूँ?'

किसी ने धीरे से कहा—'आपका कहना सर्वथा सच है।'

माँ ने भीड़ के पीछे उस गुप्तचर के साथ दो पुलिस इंस्पेक्टरों को देखा। उसके पास परचों का सिर्फ एक बंडल रह गया था। उसने उसे निकालने के लिये बेग में हाथ डाला। इसी समय किसी का हाथ उसके हाथ पर पड़ा। उसने कहा—'ले जाओ। पूरा बंडल अपने साथ ले जाओ।'

एक मलिन व्यक्ति माँ को देख रहा था। उसने धीरे से पूछा—'किसे सूचित करना होगा?'

माँ ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। वह बराबर बोल रही थी। उसने कहा—'इस जीवन को सुधारने के लिये, सबलोगों को स्वतंत्र और मुक्त करने के लिये, उन्हें इस हीन दशा से ऊपर उठाने के लिये जिस तरह मेरा उत्थान हुआ है—कुछ लोग पैदा हो गए हैं, जिन्हें सत्य का परिचय गुप्तरूप से मिल गया है। मैंने गुप्तरूप से इसलिए कहा है कि सत्य की शिक्षा कोई भी प्रगट नहीं दे सकता। धनिक लोग उनकी हत्या करते हैं, उन्हें पंगु बना देते हैं और उन्हें जेलों में सड़ाते हैं। धन सत्य का साथी नहीं है वह उसका शत्रु है। क्योंकि सत्य-ज्ञान धनिकों की

शक्ति का सहज शत्रु है। दोनों में कभी मेल हो ही नहीं सकता। हमलोगों के लड़के उसी सत्य का प्रचार चारों ओर कर रहे हैं। अभी तक उनकी संख्या परिमित है। उनकी ताकत कमजोर है पर धीरे-धीरे उनकी संख्या बढ़ रही है। वे अपनी सारी शक्ति को उसी सत्य के समर्थन में लगा रहे हैं और उसे अजेय बना रहे हैं। उनके हृदयों की राह होकर यह हमलोगों में प्रविष्ट होगी, हमलोगों को सजग और प्रकाशित करेगी। धनिकों के जुल्म से हमारी रक्षा करेगी। इसे ध्रुव सत्य मानिए।'

लोगों को धक्का देते हुए पुलिस इंस्पेक्टर ने चिल्लाकर कहा—'हटो, चलो, रास्ता छोड़ो।' इच्छा न रहते भी लोग सटने लगे। धक्कम-धुक्का से इंस्पेक्टर को दबाने लगे और न चाहते हुए भी उसका रास्ता रोकने लगे। उस बूढ़ी स्त्री की सच्ची बातों ने उन्हें अपनी ओर खींच लिया था। उसकी उन निर्भय बातों को सुनकर—जिन के लिये उनका जुल्म, अपमान और अत्याचार से पीड़ित हृदय चिरकाल से लालायित था—वे जो सदा से एक दूसरे के शत्रु थे, आज एक हो गए। सभी चुपचाप खड़े थे। माँ ने देखा कि उनका चेहरा उदास है, आँखें तनी हैं, भौंहें सिकुड़ी हैं। उनके हृदय में उसने जलन प्रत्यक्ष देखा।

उनलोगों ने कहा—'आप बेंच पर खड़ी हो जायँ।'

माँ—मैं अभी गिरफ्तार हो जाऊँगी। कोई आवश्यकता नहीं है।

वेलोग—जो कुछ कहना हो जल्दी से कह जाइए। वेलोग आ रहे हैं।

माँ—आपलोग उन सच्चे आदमियों की तलाश कीजिए। गरीबों के उन मित्रों के पास जाइए। इन शक्तिशालियों की शक्ति के सामने सिर न झुकाइए। उनसे कभी भी दबिए मत। ऐ मजूर-लोग! आपलोग उठ खड़े हों। आप ही जीवन के मालिक हैं। सभी आपके परिश्रम पर जीते हैं और केवल आपसे काम लेने के लिये ही धनिकों ने आपके हाथ को खोल रखा है। नहीं तो आपका सर्वांग जकड़कर बाँधा हुआ है। उन्होंने तुम्हारी हत्या कर डाली है। तुम्हें लूट लिया है। आपलोग दिल वो जान से एकता के सूत्र में बँध जायँ बस, विजय आपकी है। आपका कोई सहायक नहीं है। आप स्वयं अपने सहायक हैं। आपके वे सच्चे मित्र जो आपके लिये जेल और निर्वासन का दंड भोग रहे हैं—आपको यही बतलाते हैं। बेईमान और ठग इस तरह की बातें आपको कभी नहीं बतला सकते।

इतने में कई इंस्पेक्टर आ गए और धक्का देकर लोगों को हटाने लगे। लोग धक्का खाकर बगल होने लगे और एक दूसरे को पकड़कर अपने को सम्हालने लगे।

किसी ने पूछा—बेग में इतना ही था कि और कुछ?

माँ ने चिल्लाकर कहा—'ले लो! जो कुछ है ले लो।' उसकी आवाज गिरने लग गई थी और शब्द स्पष्ट नहीं निकल रहे थे। उसे वेदना हुई। पर वह बोलती गई—'मेरे लड़के का बयान एक

मजूर की सच्ची बातें हैं, एक मुक्त आत्मा का सच्चा उद्गार है। उसे पढ़कर आप उसके तथ्य को भलीभाँति समझेंगे। जो कुछ उसने कहा है निर्भय होकर कहा है। क्योंकि सत्य के लिये वह अपनी भी हत्या कर सकता है। वही सत्य का संदेश आपको हमने दिया है। आप उसे सच्चे दिल से ग्रहण करें और उस पर विचार करें। उसमें आपको वह शक्ति मिलेगी जिससे आपका ज्ञान बढ़ेगा और आप भी सत्य के लिये, जन-समाज को मुक्त करने के लिये कटिबद्ध हो जायँगे। उसपर विश्वास कीजिए; दिल खोलकर उसे ग्रहण कीजिए और सबके सुख के साधक बनिए, नए जीवन को विकसित कीजिए।'

इसी समय किसी ने उसकी छाती पर मुक्का मारा। वह लड़खड़ाकर बेंच पर गिर पड़ी। पुलिस इंस्पेक्टर लोगों पर झपट पड़ा और पकड़-पकड़कर ढकेलने लगा। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। लेकिन उसने अपने को सम्हाला और अपनी समस्त शक्ति बटोरकर जोर से बोली—'सज्जनो, अपनी समस्त शक्ति बटोरकर एक सूत्र में बाँध दो।'

एक लंबे तगड़े इंस्पेक्टर ने उसकी गर्दन पकड़कर हिलाई और कहा—'चुप रह।'

उसकी गर्दन दीवाल से टकरा गई। उसका हृदय भय से अभिभूत हो गया। पर दूसरे ही क्षण उसने पुनः साहस ग्रहण किया।

इंस्पेक्टर ने कहा—'आगे बढ़ो।'

माँ—आपलोग किसी बात से डरें नहीं। जो जुल्म आप पर

सदा से होते आ रहे हैं उनसे भयानक और कुछ नहीं हो सकता।

इंस्पेक्टर ने उसका हाथ पकड़कर आगे की ओर खींचते हुए कहा—'चुप रह।' दूसरे इंस्पेक्टर ने उसका दूसरा हाथ पकड़ा और दोनों उसे खींचकर सीढ़ियों द्वारा आगे ले चले।

माँ ने फिर कहा—'जो जुल्म आपके ऊपर प्रतिदिन किया जाता है और जो आपके हृदय के रक्त को सदा चूस रहा है उससे भयानक कुछ नहीं हो सकता।'

गुप्तचर उछलकर माँ के पास आया और थप्पड़ तानकर बोला—'तू चुप रहेगी कि नहीं?'

माँ की आँखें चमकने लगीं! उसके जबड़े हिलने लगे। फर्श पर उसने पैर अड़ाकर फिर चिल्लाकर कहा—'जागृत आत्मा की कोई भी हत्या नहीं कर सकता।'

गुप्तचर ने उसके मुँह पर एक थप्पड़ मारकर कहा–'चुप कुत्ती!'

उसके मुँह से खून बहने लगा। क्षण भर के लिये उसकी आँखें बंद हो गईं। लोगों ने जोश में आकर चिल्लाकर कहा—'उन्हें मारिए मत।'

माँ ने फिर कहा—'वेलोग इस रक्तपात से सत्य की हत्या नहीं कर सकते। विवेक का गला नहीं घोंट सकते।'

किसी ने उसका गला पकड़कर ढकेला और पीठ पर मारा। शोर-गुल चारों ओर बढ़ने लगा। उसके हृदय में अँधेरा होने लगा। उसे मालूम होने लगा कि उसके पैर तले की धरती काँप रही है। उसका सिर झुक गया। शरीर काँपने लगा। पर उसकी आँखों

में उसी तरह की ज्योति वर्तमान थी। उसने चारों ओर देखा। कितनी ही आँखों में उसने उस ज्योति की प्रभा देखी जो उसे अतिशय प्रिय थी।

वह एक कमरे के भीतर ठेल दी गई। इंस्पेक्टर से अपना हाथ छुड़ाकर उसने चौखट पकड़ लिया। बोली—'रक्त की नदियाँ बहाकर भी तुमलोग सत्य को नहीं छिपा सकते।'

इंस्पेक्टर ने उसके हाथ में मारा।

माँ—तुम अपने लिये पाप बटोर रहे हो। इसका फल तुमलोगों को किसी-न-किसी दिन अवश्य भोगना पड़ेगा।

किसी ने उसकी गर्दन पकड़कर दबाया। उसकी गर्दन की हड्डियाँ कड़कड़ाने लगीं।

उसने कहा—'अभागो!'

समाप्त